THE Globe

Globen · Le Globe
El Globo · O Globo · विश्व

WORLD'S CHILDREN'S PRIZE MAGAZINE #60/61 2015

VOTE! RÖSTA!
¡VOTA! मत
வாக்களிப்பீர் رای دهید
ဆန္ဒမဲထည့်ခြင်း!
တၢ်ထၢနၥ်တၢ်ဖး!
ลงคะแนน! ووټ:!
ووٹ:! صوِّت!
HÃY BẦU!

WORLD'S CHILDREN'S PRIZE FOR THE RIGHTS OF THE CHILD

PRIX DES ENFANTS DU MONDE POUR LES DROITS DE L'ENFANT

PREMIO DE LOS NIÑOS DEL MUNDO POR LOS DERECHOS DEL NIÑO

PRÊMIO DAS CRIANÇAS DO MUNDO PELOS DIREITOS DA CRIANÇA

बाल अधिकारों हेतु विश्व बाल पुरस्कार

World's Child
for the Rights of the

नमस्ते!
दि ग्लोब पत्रिका तुम्हारे और उन सभी युवा लोगों के लिए है जो वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम में भाग लेते हैं। यहाँ पर तुम विश्व भर के मित्रों से मिल सकते हो, अपने अधिकारों के बारे में जान सकते हो, और इस संसार को एक बेहतर जगह बनाने पर सुझाव ले सकते हो!

दि ग्लोब के ऊपरी कवर पर बनी लड़की नोइमिया, 12 को एक वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ बाल अधिकार राजदूत के रूप में प्रशिक्षित किया गया है। वो डब्ल्यू.सी.पी. ग्लोब को पकड़े हुए है जो उसे एवं अन्य माज़ाम्बीक के बाल अधिकार राजदूतों को पुरस्कृत किया गया है।

मुख्य संपादक एवं उत्तरदायी प्रकाशकः मैग्नस बर्गमार
संस्करण 60–61 में योगदान कर्ताः कार्मिला फ्लाइड, किम नेलर, जोज़फ रोड्रिग्ज़, जोहैना हैल्लिन, एवेलीना फ्रेडरिक्सन, एलेक्ज़ेन्ड्रा एल्लिस, एन्ड्रियास लॉन, जोहान बजर्के, एवा–पिया वारलैण्ड, मार्लीन विन्बर्ग, शेन विनबर्ग, क्रिस्टिएन सॉमपाओ, सोफिया मास्सैटिक, जैन–ऐके विनक्विस्ट **अनुवादकः** सिमैनटिक्स (अंग्रेजी, स्पैनिश), सिन्ज़िया ग्विनिएट (फ्रैन्च), ग्लैन्डा कोयब्रान्ड (पुर्तगाली), प्रीति शंकर (हिन्दी) **डिजाइन एवं रिप्रोः** फिडेलिटी कवर **चित्रः** जोहान बजर्के **मुद्रकः** पुनामुस्ता ऑय

ren's Prize
Child

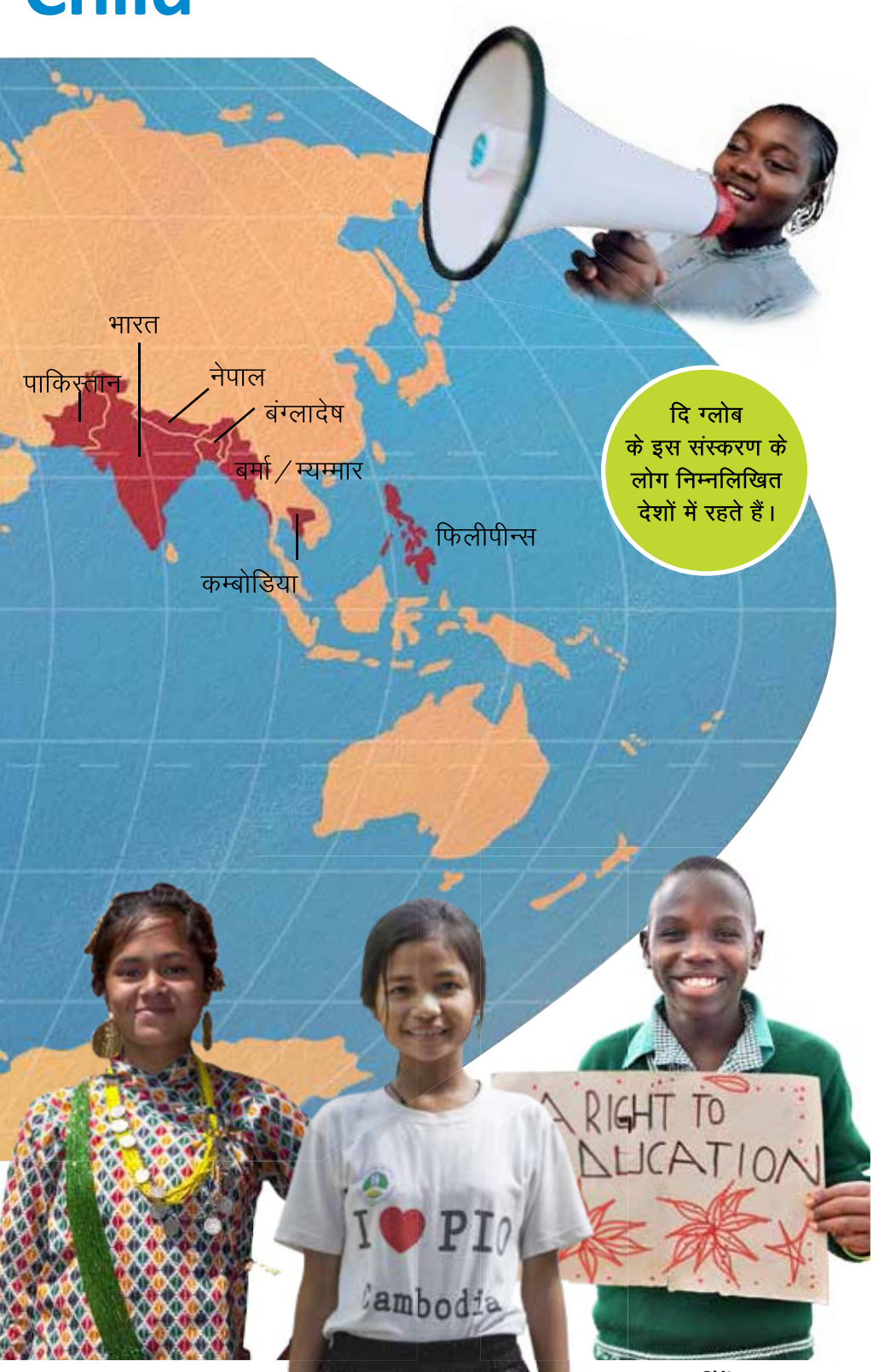

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ क्या है? 4

बाल निर्णायक दल से मिलो!..... 6

नदाले की कहानी..... 10

बाल अधिकार क्या हैं?..... 12

कैसे हैं विश्व के बच्चे? 14

विश्व भर में मतदान दिवस 16
युगान्डा एवं अन्य देशों में घूमो जहाँ बच्चे अपने अधिकारों के लिए मतदान दे रहे हैं!

प्रजातंत्र का मार्ग 28

इस वर्ष के बाल अधिकार हीरो
फायमीन नाउन, कम्बोडिया..... 32
जेवियर स्टौरिंग,
संयुक्त राज्य अमरीका 52
कैलाश सत्यार्थी, भारत 72

लड़कियों अधिकारों के लिए लड़ो..... 93
डी.आर. काँन्गो, मोज़ाम्बीक तथा नेपाल में बाल अधिकार राजदूतों से मिलो जो लड़कियों को समान अधिकार दिलाने के लिए काम करते हैं।

बाल अधिकारों के लिए संगीत समूह 112

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के संरक्षक..... 113

विश्व बाल पत्रकार सम्मेलन..... 114

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ समारोह..... 115

World's Children's Prize Foundation
Box 150, 647 24 Mariefred, Sweden
Tel. +46-159-12900 Fax +46-159-10860
info@worldschildrensprize.org
www.worldschildrensprize.org
facebook.com/worldschildrensprize
twitter.com/worldschildrensprize

THE WORLD'S CHILDREN'S PRIZE FOR THE RIGHTS OF THE CHILD

ISSN 1102-8343

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम द्वारा, तुम एवं विश्व के अन्य सभी बच्चे अपने अधिकारों एवं प्रजातंत्र के बारे में जान सकते हो, बाल अधिकारों के सम्मान की मांग कर सकते हो। प्रति वर्ष तीन अद्भुत बाल अधिकार हीरो का नामांकन वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ में किया जाता है, वह बाल अधिकारों का अकेला पुरस्कार जो बच्चों द्वारा स्वयं दिया जाता है।

तुम और लाखों अन्य बच्चे पुरस्कृत प्रत्याशियों के बारे में दि ग्लोब पत्रिका में पढ़ सकते हो और उन बच्चों के बारे में भी जिनके लिए वो लड़ते हैं। डब्ल्यू.सी.पी कार्यक्रम के अन्त में सब बच्चे विश्व मतदान में अपने बाल अधिकार हीरो को मतदान देते हैं। लगभग 71 लाख बच्चे पूर्व वर्षों में मतदान दे चुके हैं।

सन् 2015 का वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज 25 फरवरी से 5 अक्टूबर तक चलता है।

1

सन् 2015 के वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ का उद्घाटन होता है

यह कार्यक्रम तब शुरू होता है जब इस वर्ष के तीन प्रत्याशी, बाल अधिकार हीरो जिन्होंने बेसहारा बच्चों को सहायता देने में विशेष योगदान दिये हैं, के नामों को बताया जाता है। तुम स्वयं निर्णय ले सकते हो कि तुम इस वर्ष के कार्यक्रम के बारे में कब पढ़ना शुरू कर रहे हो। अनेकों स्कूल इस कार्यक्रम की शुरूआत एक उद्घाटन समारोह के आयोजन द्वारा करते हैं।

5

विश्व मतदान दिवस

पहले मतदान दो और फिर एक दावत एवं कुछ प्रस्तुतियों द्वारा उसको मनाओ! अपने स्कूल के मतदान के परिणाम को अपने देश में डब्ल्यू.सी.पी. संपर्क करने वाले व्यक्ति को दर्ज करो (यदि तुम्हारे वहाँ कोई हो, अन्यथा वेबसाइट पर मतदान पेटी द्वारा)।

6

वह बड़ी घोषणा!

विश्व भर मे एक ही दिन, बच्चे अपने स्वयं के पत्रकार सम्मेलनों को आयोजित करते हैं। वो उनमें बताते हैं कि उन तीन प्रत्याशियों में से किसको लाखों मतदान देने वाले बच्चों द्वारा 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ फॉर दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' के लिए चुना गया है, और उनमें से किन दो को 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स ऑनरेरी पुरस्कार' मिलेगा। अपने क्षेत्र में मीडिया को एक विश्व बाल पत्रकार सम्मेलन में आमन्त्रित करो, अन्यथा, अपने सारे स्कूल को एकत्रित करके परिणामों की घोषणा करो। तुम बाल अधिकारों के सम्बन्ध में उन सुधारों पर भी बात कर सकते हो जो तुम उनमें देखना चाहोगे।

(पृष्ठ 112 पर पढ़ें)

उसके बारे में पता लगाओ
और अपनी कहानियों को आपस में बाँटो!

youtube.com/worldschildrensprize
facebook.com/worldschildrensprize
twitter.com/wcpfoundation
Instagram.com/worldschildrensprize
www.worldschildrensprize.org

क्या है?

अभी तक विश्व भर के 3 करोड़ 64 लाख बच्चे वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम के ज़रिये बाल अधिकारों एवं प्रजातंत्र के बारे में जान चुके हैं। 112 देशो के 60,000 से अधिक स्कूल, जिनमें 3 करोड़ छात्र हैं, ग्लोबल फ्रेन्ड स्कूल के रूप में अपना पंजीकरण करा चुके हैं जो वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ का समर्थन करते हैं।

2

तुम्हारे जिन्दगी में अधिकार और प्रजातंत्र

पता लगाओ कि क्या 'यू.एन. कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' का पालन वहाँ पर किया जाता है जहाँ तुम रहेते हो, तुम्हारे परिवार में, स्कूल में और तुम्हारे देश में। दि ग्लोब पत्रिका में अपने देश के बारे में बाल अधिकारों के तथ्य पत्र को पढ़ो (वो तुम्हें दि ग्लोब पत्रिका के साथ मिलेंगे, अन्यथा तुम उनको वेबसाइट से डाउनलोड भी कर सकते हो) और प्रजातंत्र का इतिहास। इस पर चर्चा करो कि तुम्हारे देश में बच्चों की स्थिति और बेहतर कैसे हो सकती है। उदाहरण के लिए, क्या तुम्हारी बात उन मुद्दों पर सुनी जाती है जो तुमको और तुम्हारे मित्रों को प्रभावित करते हैं? अन्य छात्रों, अभिभावकों, अध्यापकों, राजनेतिज्ञों, एवं मीडिया को बताओ। तुम अपने स्कूल में एक डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार क्लब भी शुरू कर सकते हो। (तथ्य पत्र और पृष्ठ 12–13, 28–30)

3

विश्व में बाल अधिकार

बाल अधिकार सभी बच्चों पर लागू होते हैं, हर जगह। उनके बारे में और जानकारी प्राप्त करने के लिये बाल निर्णायक दल, बाल अधिकार हीरो, लड़कियों के अधिकारों के लिये नियुक्त बाल अधिकार राजदूतों, एवं जिन बच्चों के लिए वे लड़ते हैं, उनसे मिलो। यह पता लगाओ कि आज विश्व के बच्चों की ज़िन्दगी वास्तव में कैसी है।

(पृष्ट 6–11, 14–15, 32–92, 93–111)

मैं बाल अधिकारों के सम्मान की मांग करती हूँ।

4

अपने विश्व मतदान की तैयारी करो

अपने विश्व मतदान की तिथि को इस प्रकार चुनो कि उस दिन तुम्हें पर्याप्त समय मिल जाये और एक प्रजातंत्रिक चुनाव के लिये उन सभी चीजों की तैयारी करो जिनकी तुम्हें जरूरत हो। निर्वाचन अधिकारियों, मत गणना काउन्टर एवं निर्वाचन पर्यवेक्षकों की नियुक्ति करो और मतदान पेटियाँ, मत पत्रों एवं मतदान कक्षों को बनाओ। अपने विश्व मतदान दिवस का अनुभव करने के लिए मीडिया, अभिभावकों, राजनीतिज्ञों को आमन्त्रित करो।

(पृष्ठ 16–27)

वह अन्तिम महोत्सव!

डब्ल्यू.सी.पी. पुरस्कार समारोह का नेतृत्व बाल न्यायमूर्ति दल द्वारा स्वीडन के मेरीफ्रेड शहर में ग्रिपशॉम कासल में किया जाता है। सभी तीन बाल अधिकार हीरो को सम्मानित किया जाता है और उनको अपने बच्चों के प्रति किये गये कार्यों के लिए पुरस्कृत धनराशि दी जाती है। (कुल 1,00,000 यू.एस. डॉलर)। स्वीडन की महारानी सिल्विया बाल निर्णायक दल के बच्चों को पुरस्कार देने में सहायता करती हैं। अनेकों स्कूल अपने स्वयं के समापन समारोह आयोजित करते हैं, जब वो पुरस्कार समारोह का वीडियो दिखाते हैं एवं बाल अधिकारों को मनाते हैं।

(पृष्ठ 114–115)

7

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन प्राइज़ की आयु सीमा!

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ हर किसी के लिए दस वर्ष की आयु से उस वर्ष तक लागू रहता है जब जक वो 18 वर्ष का नहीं हो जाता। 'यू.एन. कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' कहता है कि तुम तब तक बच्चे हो जब तक तुम 18 वर्ष के नहीं हो जाते। निम्न आयु सीमा अनेकों कारणोवश है। विश्व मतदान में भाग लेने के लिए, तुमको पहले, सभी प्रत्याशियों के कार्य के बारे में सब कुछ जानना चाहिए। जिन बच्चों के लिए वो लड़ते हैं उन्होंने अक्सर अपने अधिकारों के भीषण उल्लंघन होना अनुभव किया है, और उनकी कहानियाँ छोटे बच्चों को डरा सकती हैं। यहाँ तक कि बड़े बच्चों को भी इन कष्टमय अनुभवों को पढ़ने में कठिनाई हो सकती है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि उनके पास बाद में इस पर बात करने के लिए एक वयस्क हो।

बाल निर्णायक दल से मिलो!

'वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़' बाल निर्णायक दल के सदस्य अपने स्वंयं के जीवन के अनुभवों के आधार पर बाल अधिकारों में निपुण हैं। प्रत्येक बाल निर्णायक दल का सदस्य विश्व के उन सब बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है जिनके एक जैसे अनुभव रहे हैं। वो अपने देश एवं महाद्वीप के बच्चों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। जहाँ तक सम्भव हो पाता है निर्णायक दल के सदस्य सभी महाद्वीपों और सारे मुख्य धर्मों के बच्चो को सम्मिलत करता है।

- बाल निर्णायक दल के सदस्य अपने जीवन की कहानियों को आपस में बाँटते हैं और जिन अधिकारों के उल्लंघन होने का उनका अनुभव रहा है या जिनके विरुद्ध वे लड़ते हैं। इस प्रकार, वे विश्व भर में लाखों बच्चों को बाल अधिकारों के बारे में बताते हैं। वो बाल निर्णायक दल के सदस्य साल के अन्त तक बने रह सकते हैं जब तक वो 18 वर्ष के नहीं हो जाते।
- प्रति वर्ष, बाल निर्णायक दल 'वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़ फॉर दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' के लिए उन सब बच्चों में से तीन अन्तिम प्रत्याशियों का चयन करता है जिनको नामित किया गया है।
- बाल निर्णायक दल के सदस्य अपने देशों में और विश्व भर में 'वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़' के राजदूत होते हैं।
- बाल निर्णायक दल 'वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़' कार्यक्रम के वार्षिक महान समापन – 'पुरस्कार समारोह' का नेतृत्व करता है। उस सप्ताह बाल निर्णायक दल के सदस्य स्वीडन के स्कूलों में जाते हैं और अपनी जिन्दगियों एवं बाल अधिकारों के बारे में बताते हैं।

www.worldschildrensprize.org पर तुम बाल निर्णायक दल के अनेकों सदस्यों के बारे में और अधिक लम्बी कहानियाँ पढ़ सकते हो।

बाल निर्णायक दल के एक सेल्फी गायक एवं डब्ल्यू.सी.पी. की समर्थक लॉरीन के साथ।

पायल

झॉन्न नारा

नदाले

एम्मा

❤ पायल जंगिद, 13

भारत

उन गरीब बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने अधिकारों, बाल मजदूरी एवं बाल विवाह के विरुद्ध के लिए लड़ते हैं।

पायल राजस्थान के एक गरीब गाँ में रहती है, जो भारत का एक भाग है जहाँ पर अनेकों लोग गरीबी में रहते हैं और लड़कियों को अक्सर जबरदस्ती बाल विवाह करना पड़ता है। लेकिन पायल ने अपने गाँव के बाल संसद की नेता है, और बदलाव के लिए लड़ती है। अपने गाँव के वयस्क नेताओं के साथ, वो एवं अन्य बच्चे अपने गाँव को 'बाल–मैत्रीपूर्ण' बनाने के लिए काम कर रहे हैं। ''हम बच्चों से उनके घर पर मिलते हैं और उनके माता–पिता को समझाते हैं कि स्कूल क्यों महत्वपूर्ण है। हम उनके पिताओं से यह भी कहते हैं कि वो अपने बच्चों एवं पत्नियों को न पीटें। यदि वो प्रेम भरा व्यवहार करेंगे तो सबके लिए जिन्दगी बेहतर हो जायेगी,'' पायल कहती है जो अपने गाँव में एक अध्यापिका बनने का सपना देखती है।

❤ झॉन्न नारा, 14

ब्राज़ील

उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो स्वदेशी समूहों के हैं और अपने अधिकारों के लिए लड़ते हैं, और साथ ही उन बच्चों के लिए भी जिनके अधिकारों का उल्लंघन दुराचार, जातिभेद एवं पर्यावरण के बिगड़ने से हुआ है।

झॉन्न नारा ब्राजील के एमाज़ोनाज़ में पैदा हुई थी। वो ग्वारानी स्वदेशी लोगों के सबसे कम आयु के नेताओं में से एक है। वो वर्षा वाले जंगल के बहुत अन्दर रहा करते थे, लेकिन अब वर्षा वाले जंगल को काट डाला गया है और उसकी जगह पर बड़े–बड़े पशु चारागाह एवं कारखाने बना दिये गये हैं जो वातावरण को हानिकारक रसायनों एवं दूषित जल से प्रदूषित कर रहे हैं।

झॉन्न नारा और उसके लोगों को अपने गाँवों से खदेड़ दिया गया है। अब वो सड़क के किनारे सिमटे हुए कैम्पों में रहते हैं, जहाँ पर वो न तो मछली पकड़ सकते हैं और न ही शिकार कर सकते हैं। निर्धनता से निराश होकर वयस्क लोग शराब पीते हैं, नशा करते हैं और लड़ते हैं। झॉन्न नारा स्वयं के साथ उसके हिंसक सौतेले पिता द्वारा दुराचार किया गया है।

जब वो दस साल की थी, तब 14 नकाबपोश आदमी उसके गाँव में आये और उसके दादा को गोली मार दी, जो वहाँ के लोगों के नेताओं में से एक थे। ''जब हम इस अन्याय का विरोध करते हैं, तब हमको धमकाया जाता है, गालियाँ दी जाती हैं और मार डाला जाता है। वो हमको बाहर निकाल देना चाहते हैं, लेकिन हम कभी हार नहीं मानेंगे,'' झॉन्न नारा कहती है।

❤ नदाले न्येंगगेला, 17

डी.आर.कॉन्गो

उन बाल सैनिकों एवं बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है जो सशस्त्र संघर्षों में भाग ले चुके हैं।

जब नदाले 11 वर्ष का था और अपने स्कूल जा रहा था तब एक सशस्त्र समूह ने उसका अपहरण कर लिया और उसे जबरदस्ती एक बाल सैनिक बना दिया गया।

''हम तीन दिन बिना खाये और सोये पैदल चलते रहे। जब हम बहुत धीमे चलते थे तब वो हमें लात मारते थे और हम पर चिल्लाते थे। जैसे ही हमने अपने हथियारों को चलाना सीख लिया, तब उन्होंने हम से कहा कि अब हमे लोगों को मारना सीखना होगा। एक दिन हम जंगल में, एक सड़क के किनारे, छिपे हुए थे। किसी ने गोली चलानी शुरू कर दी। मेरे पास लोग मर कर गिर रहे थे। मैं आतंक से बिल्कुल भयभीत हो गया था। जब मैंने छिपने की कोशिश की, तब अन्य सैनिकों ने मुझे आगे धकेल दिया और कहाः 'यदि तुम्हारा मित्र मर जाए, तो कोई फर्क नहीं पड़ता। बस उसके ऊपर चले जाओ! यह तुम्हारा कर्तव्य है!'''

तीन वर्ष बाद नदेला भागने में सफल हुआ। बी.वी. ई.एस. ने उसके अनुभवों को भुलाने में उसकी सहायता की और वो फिर से स्कूल जाने लगा। ''मैं इतना खुश था। मुझे अपनी जिन्दगी में एक नई शुरूआत मिली थी। अपनी पढ़ाई के बाद मैं सेना में अपनी जिन्दगी के बारे में और बाल अधिकारों पर संगीत बनाना चाहता था। मैं निश्चित करना चाहता हूँ कि बच्चों को सैनिक न बनाया जाए। सभी वयस्कों को याद रखना चाहिए कि वो भी कभी बच्चे थे।''

❤ एम्मा मोगस, 16

कनाडा

उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो सभी बच्चों के समान अधिकारों के लिए लड़ते हैं, विशेष रूप से स्वदेशी समूहों के बच्चों के लिए।

जब एम्मा नौ वर्ष की हुई, तब उसे पता चला कि कनाडा की स्वदेशी जनसंख्या, 'दि फर्स्ट पीपुल्स' या 'फर्स्ट नेशन्स' के बच्चों के साथ अन्याय हो रहा था। उनमें से अनेकों गरीबी में रहते थे और उनको अच्छे स्कूल एवं पुस्तकें नहीं उपलब्ध हो पाती थीं। एम्मा और उसकी बड़ी बहन जूलिया ने एक अभियान चलाया। उन्होंने चिट्ठियाँ लिखीं और राजनीतिज्ञों एवं मीडिया को बुलाया, और इस पर भाषण दिये कि कैसे स्वदेशी समूहों के बच्चों को वही अधिकार मिलने चाहिए जो अन्य कनाडा के बच्चों को मिलते हैं। उन्होंने पुस्तकें बटोरना भी शुरू कर दिया, जो उन बच्चों को भेज दी जाती थीं जिनके पास कोई पुस्तक नहीं थी। आज एम्मा और उसकी बहन अपनी स्वयं की संस्था चलाते हैं जो बच्चों के शिक्षा प्राप्त करने एवं पुस्तकें उपलब्ध कराने के अधिकार के लिए संघर्ष करती हैं, और उन्होंने बेसहारा बच्चों के लिए 60,000 से अधिक पुस्तकें भेज दी हैं।

बाल निर्णायक दल, महारानी सिल्विया एवं स्वीडन के प्रधानमंत्री, अन्तर्राष्ट्रीय विकास में सहयोग के मंत्री एवं बच्चों के मंत्री के साथ।

❤ ब्राएन्ना ऑडिनेट, 17

संयुक्त राज्य अमेरिका

उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो बेघर है और उन बच्चों का भी जो बेघर बच्चों के लिए लड़ते हैं।

जब ब्राएन्ना ग्यारह वर्ष की थी, तब उसकी माँ ने उसके हिंसक पिता को छोड़ दिया। ब्राएन्ना और उसके तीन भाई लॉस एंजिलस मे बेघर हो गए। अन्त में उन्होंने एक शरण में एक जगह ढूँढ ली। वो यहाँ पर कई महीने रहे, एक हॉस्टल के बंक पलंगों में अन्य बेघर लोगों के साथ सोते रहे। उन्हें हमेशा शान्त रहना पड़ता था, और वो बहुत कम खेल पाते थे। लेकिन उनके हॉस्टल के सामने एक संस्था थी जिसने ब्राएन्ना और उसके भाईयों को खेलने के लिए जगह दी, स्कूल सामग्री दी और उनके स्कूल से मिला गृहकार्य करने में उनकी सहायता की।

''जब मैं बड़ी होंऊँगी तब मैं एक डॉक्टर बनना चाहूँगी, और विशेषतः बेघर लोगों की सहायता करूँगी। उनके पास कोई पैसे नहीं हैं, लेकिन फिर भी मैं उनकी सहायता करूँगी,'' ब्राएन्ना कहती है। अन्त में बहुत दिन बाद उसके एवं उसके परिवार के पास अपना स्वयं का घर है और उन्होंने बेघर बच्चों के लिए संघर्ष करने हेतु अपने स्वयं की संस्था शुरू कर दी है।

❤ माइ सिगोविआ, 16

फिलीपीन्स

उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जिनका बाल सेक्स व्यापार द्वारा शोषण किया गया है और जो बच्चे तस्करी एवं दुराचार के विरुद्ध लड़ते हैं।

जब माई नौ वर्ष की थी, तब उसको स्कूल छोड़ना पड़ा और अपने परिवार को सहारा देने के लिए काम करना पड़ा। उसको जबरदस्ती एक इंटरनेट कैफे में एक कैमरे के सामने नाचना पड़ा और अपने वस्त्र उतारने पड़े। उसकी तस्वीरें इंटरनेट द्वारा सारे विश्व में भेजी गयीं। दो वर्ष बाद, उस कैफे का मालिक जिसने माई का शोषण किया था, पुलिस द्वारा पकड़ा गया। वो अब जेल में है, और साथ ही उनमें से अनेकों लोग जिन्होंने इन तस्वीरों को देखा था। लेकिन माई अपने परिवार के साथ नहीं रह सकी। उसे डर था कि उसे गरीबी के कारण फिर से भुगतना पड़ेगा। अब वो बेसहारा लड़कियों के लिए बने एक सुरक्षा गृह में रहती है। वो स्कूल जाती है और अन्य लड़कियों के अधिकारों के लिए लड़ती है जिन्होंने दुराचार सहन किया है।

''मुझे अपने परिवार की याद आती है, लेकिन मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है और मेरी जिन्दगी यहाँ पर बेहतर है,'' वो कहती है।

❤ लिव कजेलबर्ग, 16

स्वीडन

उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जिनको धमकाया जाता है और जो बच्चे इस धमकाने के विरुद्ध लड़ते हैं।

''इसकी शुरूआत किसी बात पर मुझे चिढ़ाने से होती है, जैसे गलत वस्त्र पहनना, शर्माना या सबसे अलग दिखना,'' लिव कहती है। ''फिर वो धक्का देने और धकेलने से चालू रहती है, और फिर वो और बद्तर होती चली जाती है।''

लिव ने अपने स्कूल के प्रथम वर्ष से ही स्वयं को अन्य लड़कियों से अलग हुआ पाया। उसको स्कूल की कैन्टीन में अकेले बैठना पड़ता था, और उसको धकेला और चिढ़ाया जाता था।

''अध्यापक हमेशा इस बात से सचेत नहीं रहते हैं कि उनके शिष्यों के बीच में क्या हो रहा है, और जब बच्चों को धमकाया जाता है तब यह जरूरी नहीं कि वे कुछ कहें। वे सोचते हैं कि कल बेहतर होगा, और यह कि वे अन्य लोगों के साथ समय बिता लेंगे।''

लिव ने यह मामला अपने हाथों में लिया और उसने अपने स्कूल में धमकाने के विरुद्ध एक प्रयास शुरू करने के लिए चन्दा जमा किया।

''अब मेरी कक्षा में स्थिति बेहतर है और कोई किसी को धमकाता नहीं है। और स्कूल में मेरी बहुत सारी निकटतम दोस्तें हैं।''

❤ नुज़हत तबस्सुम प्रोमी, 17

बंग्लादेश

उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जिनके अधिकारों का उल्लंघन प्राकृतिक आपदाओं एवं पर्यावरण के बिगड़ने के कारण हुआ है।

''यदि समुद्र का स्तर एक मीटर ऊँचा हो जाएगा, तो बंग्लादेश का दक्षिण भाग, जहाँ मैं रहती हूँ, पानी के नीचे चला जायेगा। मैं इसके बारे में अक्सर सोचती हूँ। पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर तथा हिमालय में भूमण्डलीय ऊष्मीकरण बर्फ को पिघला रहा है। फलस्वरूप हम समुद्री तूफानों एवं बाढ़ से अधिक पीड़ित हैं। जिस दिन बड़ा समुद्री तूफान आया था, के अगले दिन जब मैं स्कूल जा रही थी, तब हर जगह मरे हुए और घायल लोग पड़े हुए थे,'' नुज़हत कहती है। वो दक्षिण बंग्लादेश के एक छोटे शहर में रहती है जो प्राकृतिक आपदाओं से ग्रसित है।

''साइक्लोन, जो बहुत तीव्र तूफान होते हैं जो हर साल बंग्लादेश को प्रभावित करते हैं। पर देश पूरी तरह तैयार है, और उसके पास एक अच्छी समुद्री तूफान से सचेत करने वाली प्रणाली है। सबसे बुरी बात जो मेरी जिन्दगी में हुई थी वो तब जब मैंने सोचा कि मेरा स्कूल उस बड़े तूफान से नष्ट हो गया होगा।''

❤ नेट्टा एलेक्ज़ेन्ड्री, 15

इज़राईल

उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो संघर्ष वाले क्षेत्रों में रहते हैं और उन बच्चों का जो शान्ति के लिए एक वार्ता करना चाहते हैं।

''जब मैं छोटी थी तब मुझे उस समय चल रहा युद्ध याद है। मेरे माता–पिता बहुत चिन्तित हो गए थे इसलिए उन्होंने मुझे और मेरी बहन को हमारी बुआओं के साथ रहने के लिए भेज दिया। मैं लम्बे समय तक अपने माता–पिता को नहीं देख पाई। यह मुझे भयभीत करता था। मुझे पता नहीं था कि क्या हो रहा है अतः मैं चिन्तित और बहुत डरी हुई थी। मैं ज्यादा नहीं समझती थी कि क्या हो रहा है लेकिन मैं सोच रही थीः मैं मरना नहीं चाहती, मैं अपना घर नहीं छोड़ना चाहती!''

नेट्टा सोचती है कि वार्ता करना – एक–दूसरे से बात करना – शान्ति होने के लिए सबसे अच्छा उपाय है।

''एक–दूसरे से बात करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है। और यह आवश्यक है कि हम बच्चों को अपने अधिकार पता हों, जिससे कोई इनको हमसे अलग न कर सके।''

हमूदी

एमेल्डा

केवल

मनचला

❤ हमूदी एल सलामीन, 17

फिलिस्तीन

उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है जो संघर्ष के क्षेत्रों में रहते हैं और जो बच्चे इज़राइल के कब्ज़े वाले क्षेत्र में रहते हैं तथा उन बच्चों का जो शान्ति की वार्ता में भाग ले रहे हैं।

हमूदी एक गरीब गाँव में रहता है जो वेस्ट बैंक पर हेब्रोन शहर के दक्षिण में है, एक क्षेत्र जिस पर इज़राइल का कब्ज़ा है।

''एक रात, इज़राइली सैनिक हमारे गाँव टैंको में आये। उन्होंने एक लाउड स्पीकर द्वारा निर्देश दिये, और सबसे कहा कि वो अपनी लाइटें जला लें। उन्होंने हर दिशा में गोलियाँ चलाईं, जिसमें तीन लोग मारे गये।''

जब वो पाँच वर्ष का था और उसने सुना कि एक छोटा लड़का मारा गया है, तो हमूदी ने कहा, ''मुझे एक बन्दूक चाहिए!'' पर अब वो शान्ति के प्रयासों में भाग लेता है। उसके यहूदी मित्र हैं, और वो इज़राइल में उनके साथ एक महीने में अनेकों बार फुटबाल खेलता है।

''मुझे फुटबाल खेलना अच्छा लगता है, लेकिन हमारे गाँव में खेलने का कोई मैदान नहीं है। हम अधिकतर एक मैदान में खेलते हैं जो कुछ दूरी पर है, पर जब इज़राइली सैनिक किसी को गिरफ्तार करने के लिए आते हैं, तब वो हमें भगा देते हैं। वे हमारी सारी मनोरंजन की वस्तुएँ ले जाते हैं,'' हमूदी कहता है।

❤ एमेल्डा जमाम्बो, 16

मोज़ाम्बीक

अनाथ बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है एवं उन बच्चों का जो गरीब बच्चों के अधिकारों के लिए लड़ते हैं।

जब एमेल्डा छह वर्ष की थी, तब उसके पिता को चोरों ने गोली मार दी, और उसके कुछ महीने बाद ही उसकी माँ मलेरिया से मर गई।

''सब कुछ बिखर गया। मुझे नहीं लगता था कि कुछ भी फिर से अच्छा हो पायेगा। मैं घबराई हुई थी कि मैं अकेली रह जाऊँगी और अन्त में मुझे सड़क पर रहना पड़ेगा। पर इन सब बुरी घटनाओं के बावजूद, मैं बड़ी भाग्यशाली रही।''

एमेल्डा की दादी और उसके चाचा के परिवार ने खुले हाथों से उसका स्वागत किया। उसको रहने के लिए एक जगह मिली, भोजन, वस्त्र और स्कूल जाने का अवसर।

''सबसे बड़ी बात यह रही कि मुझे एक परिवार मिला जो मुझे चाहता था।''

एमेल्डा अन्य बच्चों की सहायता करना चाहती थी, अतः उसने दोपहरों में अपना खुद का स्कूल चलाना शुरू कर दिया, उन बच्चों के लिए जिनको अन्यथा स्कूल जाने का अवसर नहीं मिल पाता। उसने उनको पढ़ना, लिखना और गिनना सिखाया।

❤ केवल राम, 17

पाकिस्तान

उन बाल मजदूरों, ऋण मज़दूर बच्चों और उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है जो 'नहीं हैं' क्योंकि किसी ने उनके जन्मों का पंजीकरण नहीं कराया है।

जब केवल आठ वर्ष का था, तब उसकी माँ बहुत बीमार हो गई। केवल के पिता ने एक आदमी से दवाई के लिये पैसा उधार लिया जिसके कालीन बुनने के कुछ करघे थे।

''उसकी शर्त यह थी कि मेरे परिवार में से किसी एक को उसका ऋण वापस लौटाने के लिये उसके व्यवसाय में काम करना होगा, और क्योंकि मैं सबसे बड़ा था इसलिए मुझे जाना पड़ा और उसके कालीन के कारखाने में काम करना पड़ा। यह बहुत खराब समय था। वे हमको बहुत कम खाना देते थे और वो ऋण कभी घटता नहीं था, चाहें मैं कितना भी काम करता। तीन वर्षों के बाद, मैं वहाँ से भाग निकला। मेरे परिवार ने कारखाने के मालिए से विनती की कि वो मुझे कारखाने के बजाय गाँव में ही काम करने दे, जिससे मैं सवेरे स्कूल जा सकूँ।''

फिर भी हर रोज़ स्कूल के बाद, केवल कालीन के करघे पर तब तक बैठा रहता जब तक इतना अंधेरा नहीं हो जाता कि उसको दिखाई नहीं देता, और रविवारों पर दिन भर। वो कम से कम 40 घण्टे प्रति सप्ताह काम करता था, लेकिन उसको अपने काम के लिये कोई पैसे नहीं मिलते थे। उसका आधा वेतन कारखाने के मालिक को मिलता था, और दूसरा आधा अगले गाँव में एक व्यापारी के अन्य ऋणों को देने में व्यय हो जाता था। लेकिन केवल जब 14 वर्ष का था तब उसके चाचा ने कालीन बुनने और ऋण वापस करने की ज़िम्मेदारी ले ली, और अब वो सारे समय पढ़ाई कर पाता था।

''मेरा सपना एक दिन एक डॉक्टर बनने का है,'' वो कहता है।

❤ मनचला, 16

नेपाल

उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो तस्करी के शिकार रहे हैं और उन बच्चों का जिनका यौन शोषण किया गया है।

मनचला बिना माँ के बड़ी हुई, लेकिन वो अपनी दादी के नज़दीक थी जो उसको बहुत प्यार करती थी।

''मेरी दादी मर गई जब मैं 13 साल की थी। उसके कुछ ही समय बाद मैने स्कूल जाना बन्द कर दिया और काम करना शुरु कर दिया, पहले एक चाय की फैक्ट्री में और फिर एक खान में। मैं हमेशा एक बेहतर ज़िन्दगी बिताने का सपना देखती थी।''

एक दिन मनचला को दो आदमी मिले जिन्होंने उसको पड़ोसी देश भारत में एक अच्छे वेतन वाली नौकरी दिलाने का वायदा किया। लेकिन इसके बजाय उन्होंने उसको एक घर में नौकरानी की तरह बेच दिया। वो बड़ी मेहनत से काम करती थी लेकिन उसको कभी वेतन नहीं मिला और उसको बन्द करके रखा जाता था।

लेकिन सबसे बुरी बात तब हुई जब आदमियों में से एक जिन्होंने मनचला को बेचा था, उसके साथ दुष्कर्म करने के लिए उसके घर आने लगा। यह लम्बे समय तक अनेकों बार होता रहा। अन्त में, मनचला भागने में कामयाब हुई और उस आदमी को पुलिस ने पकड़ लिया। पर फिर मनचला को अपने सम्बन्धियों और मित्रों से मृत्यु की धमकियाँ मिलने लगीं और उसे शरण ढूँढनी पड़ी। अब मनचला नेपाल में एक बेसहारा लड़कियों के घर में रहती है, और उसने फिर से स्कूल जाना शुरू कर दिया है।

''मैं अन्य बच्चों को बताती हूँ कि उनके भी अधिकार हैं और उनको तस्करों द्वारा बेवकूफ बनने से सचेत करती हूँ।''

MADE BY GOOD MOTION

NDALE

एक बाल सैनिक की कहानी

वो एक साधारण दिन था। हमें स्कूल जाने में देर हो गई थी अत: हमने जंगल से होता हुआ छोटा रास्ता पकड़ा।

अचानक हमें दो सैनिकों ने रोक लिया।

हम तीन दिनों तक बिना कुछ खाये पिये चलते रहे।

उन्होंने हमारे स्कूल की यूनीफार्म जला दीं...

और उसके बजाय हमें सैनिकों वाली वर्दी दे दीं।

उन्होंने हमको अन्य लोगों की हत्या करना सिखाया।

एक रात उन्होंने कहा कि हमें युध में जाना होगा। उन्होंने जबरदस्ती हम बच्चों को आगे भेज दिया।

हमें गोलियाँ चलने की आवाज़ सुनायी दी, तब मैंने छिपने की कोशिश की।

उस रात मेरे स्कूल के दो मित्र मारे गये।

मैं अपनी ज़िन्दगी के तीन वर्षों तक सैनिक बना रहा।

अन्त में, एक रात हम भाग निकलने में सफल हुये।

हम मुक्त कराये गये बाल सैनिकों के एक केन्द्र में पहुँचे।

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम ने मुझे बाल अधिकारों के बारे में बताया। अब मैं अपने अधिकारों के सम्मान की मांग कर सकता हूँ और अन्य बच्चों को भी उनके अधिकारों के बारे में बता सकता हूँ।

WORLDSCHILDRENSPRIZE.ORG/NDALENYENGELA
पर नदाले की कहानी पर बनी एक छोटी फिल्म देखो।

बाल अधिकारों

'दी युनाइटेड नेशन्स कन्वेन्शन ऑन दी राइट्स ऑफ दी चाइल्ड' अधिकारों की एक लम्बी कड़ी को एकत्रित करता है जो विश्व के सभी बच्चों पर लागू होते हैं। हमने उनमें से कुछ का संक्षप्तिकरण नीचे किया है। इस कन्वेन्शन का पूरा लेख तुम www.worldschildrensprize.org पर पढ़ सकते हो।

कन्वेन्शन के मूल सिद्धान्तः

सभी बच्चे बराबर हैं और उनके समान अधिकार हैं।

हर बच्चे को अधिकार है कि उसके या उसकी मूल आवश्यकताओं को पूरा किया जाये।

हर बच्चे को अधिकार है कि वे स्वयं को दुराचार तथा शोषण से सुरक्षित रखें।

हर बच्चे को अधिकार है कि वह अपने विचारों को व्यक्त करे और उनका सम्मान किया जाये।

कन्वेन्शन क्या है?

कन्वेन्शन एक अन्तर्राष्ट्रीय समझौता है, विभिन्न देशों के बीच एक अनुबंध। 'दी कन्वेन्शन ऑन दी राइट्स ऑफ दी चाइल्ड' मानवाधिकारों पर उन छः यू.एन. कन्वेन्शनों में से एक है।

शिकायत करने का अधिकार!

'यू.एन. कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' का एक बिल्कुल नया नवाचार कहता है कि जिन बच्चों के अधिकारों का उल्लंघन किया गया है वो 'यू.एन. कमेटी ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' पर अपनी शिकायतें सीधे दर्ज कर सकते हैं, यदि उनको स्वयं के देश से सहायता एवं पुनर्वास नहीं मिला है। यह विश्व के देशों पर इस बात का दबाव बढ़ा देता है कि वो बाल अधिकारों को गम्भीरता से लें। अतः जिन देशों ने इस नवाचार को हस्ताक्षरित कर दिया है (मान्यता दे दी है) वहाँ के बच्चों को अपने अधिकारों से सम्बन्धित अपनी आवाजों को सुनवाने का बेहतर अवसर मिलता है। अभी तक लगभग 30 देशों ने इस नवाचार को हस्ताक्षरित किया है। www.worldschildrensprize.org/op3 पर जाकर यह पता लगाओ कि क्या तुम्हारे देश में बच्चों को सीधे यू.एन. में अपनी शिकायत दर्ज करने का अधिकार दिया है। यदि नहीं, तो तुम अपने राजनीतिज्ञों से सम्पर्क कर सकते हो और ऐसा करने की मांग कर सकते हो। तुम सबको यह भी बता सकते हो कि तुम्हें op3 के बारे में मालूम है, जिससे तुम लोग मिलकर काम करके अपने देश की सरकार को प्रभावित कर सकते हो।

ILLUSTRATION: LOTTA MELLGREN/ESTER

20 नवम्बर विश्व के सभी बच्चों के लिए खुशियाँ मनाने का दिन है। सन् 1989 में इसी दिन यू.एन. (संयुक्त राज्य) ने 'कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' को अपनाया था। यह उन सभी बच्चों पर लागू है जो 18 वर्ष की आयु से कम हैं।

संयुक्त राज्य अमरीका एवं दक्षिण सूडान को छोड़कर विश्व के सभी देशों ने इस कन्वेन्शन को हस्ताक्षरित स्वीकृति दी है (पालन करने का वचन दिया है)। इसका मतलब यह है कि वो बाल अधिकारों को संज्ञान में लेने के लिए बाध्य हैं और उन बातों को सुनने के लिए भी जो बच्चे कहते हैं।

का जश्न मनायें

अनुच्छेद-1
ये अधिकार उन सभी बच्चों पर लागू होते हैं जो कि 18 वर्ष की आयु से कम हों।

अनुच्छेद-2
सभी बच्चे समान हैं। सभी बच्चों के समान अधिकार हैं व किसी के प्रति कोई भेदभाव नहीं होना चाहिये। किसी भी बालक के प्रति उसकी वेशभूषा, रंग, जाति, धर्म या विचारों की वजह से दुर्व्यवहार नहीं किया जाना चाहिये।

अनुच्छेद-3
जो लोग बच्चों को प्रभावित करने वाले विषय पर कोई भी निर्णय लेते हैं, उन्हें पहले यह देखना होगा कि बच्चों के लिए क्या श्रेष्ठ है।

अनुच्छेद-6
आपको अपने जीवन पर व अपने आपको विकसित करने का पूर्ण अधिकार है।

अनुच्छेद-7
आपको अपने नाम व अपनी राष्ट्रीयता का अधिकार है।

अनुच्छेद-9
आपको अपने माता–पिता के साथ रहने का अधिकार है जब तक यह आपके लिये हानिकारक न हो। यदि सम्भव हो, तब आपको, अपने माता–पिता द्वारा पालन–पोषण पाने का अधिकार प्राप्त है।

अनुच्छेद-12-15
आपको यह अधिकार है कि आप जो सोचते है वह कह सकें। अपकी राय ली जानी चाहिए और आपसे संबन्धित मामलों में आपके विचारों का आदर किया जाना चाहिये। घर पर, स्कूल में, अधिकारियों द्वारा व न्यायालयों में।

अनुच्छेद-18
आपके पालन–पोषण व विकास के लिये आपके माता पिता संयुक्त रूप से ज़िम्मेदार हैं। उनको आपका हित सर्वोपरि रखना चाहिये।

अनुच्छेद-19
आपको यह अधिकार प्राप्त है कि आप अपने आपको हर प्रकार की हिंसा, अनदेखी, दुराचार से व सुरक्षित रखें। आपके अभिभावकों व संरक्षकों द्वारा आपका शोषण नहीं होना चाहिए।

अनुच्छेद-20-21
यदि आपने अपने परिवार को खो दिया है अथवा अनाथ हों, तो आप देखभाल के लिये अधिकृत हैं।

अनुच्छेद-22
यदि आपको अपना देश छोड़ने के लिये विवश किया गया है, तो आप अपने नये देश में समान अधिकार पा सकते हैं जैसे कि नये देश के दूसरे बच्चों को प्राप्त है। यदि आप अकेले हैं, तो आप विशेष संरक्षण और सहायता के लिये अधिकृत है। यदि सम्भव हो तो आपको अपने परिवार से मिला देना चाहिये।

अनुच्छेद-23
सभी बच्चों को एक अच्छी जिन्दगी का अधिकार प्राप्त है। यदि आप विकलांग हैं, तो आप अतिरिक्त सहायता एवं सहयोग पाने के लिये अधिकृत हैं।

अनुच्छेद-24
जब आप अस्वस्थ हों तो आपको हर प्रकार की सहायता व देखभाल पाने का अधिकार है।

अनुच्छेद-28-29
आपको स्कूल जाने का व महत्वपूर्ण चीजें सीखने का अधिकार प्राप्त है, जैसे दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना और दूसरी की संस्कृतियों को सम्मान देना।

अनुच्छेद-30
प्रत्येक बच्चे के विचारों और भावनाओं की कद्र की जानी चाहिये। यदि आप अल्पसंख्यक की श्रेणी में आते हैं, तो आपको अपनी भाषा, अपनी संस्कृति और अपने धर्म का पूर्ण अधिकार है।

अनुच्छेद-31
आपको एक स्वस्थ पर्यावरण में खेलने, विश्राम करने और जीने का अधिकार प्राप्त है।

अनुच्छेद-32
आपको ऐसे खतरनाक कार्य के लिये विवश नहीं किया जा सकता जिससे आपकी पढ़ाई छूटती या समाप्त होती हो और जो आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो।

अनुच्छेद-34
कोई भी आपको दुराचार अथवा वेश्यावृत्ति के लिए बाध्य नहीं कर सकता। यदि ऐसा दुर्व्यवहार आपके साथ हुआ हो तो आप संरक्षण एवं सहायता पाने के अधिकारी है।

अनुच्छेद-35
आपका अपहरण करने या बेचने की किसी को भी आज्ञा नहीं है।

अनुच्छेद-37
आपको कोई क्रूर व हानिकारक ढंग से सज़ा नहीं दे सकता है।

अनुच्छेद-38
आपको एक सैनिक बनना व किसी सशस्त्र संघर्ष में भाग लेना बाधा नहीं है।

अनुच्छेद-42
सभी वयस्कों और बच्चों को बाल सम्मेलन के इन बाल अधिकारों की जानकारी होनी चाहिये। आपको अपने अधिकारों के बारे में जानने का अधिकार है।

कैसे हैं विश्व के

विश्व में 18 वर्ष से कम आयु के 22 करोड़ बच्चे

इनमें से 8 करोड़ बच्चे संयुक्त राज्य अमरीका एवं दक्षिण सूडान में रहते हैं, केवल यही दो देशों ने 'यू.एन कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' को हस्तांतरण द्वारा स्वीकृति नहीं दी है। अन्य सभी देशों ने बाल अधिकारों का सम्मान करने का वचन दिया है, लेकिन इन अधिकारों का उल्लंघन होना सभी देशों में साधारण बात है।

ILLUSTRATION: LOTTA MELLGREN/ESTER

जीवित रहना और बढ़ना

आपको जीवित रहने का अधिकार है। प्रत्येक देश जिसने बाल अधिकारों का अनुमोदन किया है, उसे अपना पूर्ण प्रयास करना होगा कि बच्चों को जीवन व विकास का पूर्ण अवसर व सुविधा प्राप्त हो।

18 में से 1 बच्चा और बहुत गरीब देशों में 11 में से 1 बच्चा 5 वर्ष की आयु से पहले मृत्यु का शिकार हो जाता है
अधिकतर उन कारणों से जिन्हें रोका जा सकता था।

स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य सेवा

तुम्हें भोजन, शुद्ध जल एवं चिकित्सा देखरेख उपलब्ध होने का अधिकार है।

हर रोज, पाँच वर्ष से कम आयु के 18,000 बच्चे (प्रति वर्ष 66 लाख बच्चे) उन बीमारियों के कारण मरते हैं जो भोजन, शुद्ध जल, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य सेवा न मिलने के कारण हो जाती हैं। बच्चों में होने वाली सर्वसाधारण बीमारियों के विरुद्ध टीकाकरण से 20–30 लाख जिन्दगियाँ हर साल बच जाती हैं। लेकिन 6 में से 1 बच्चे का टीकाकरण कभी नहीं होता। प्रति वर्ष, 20 लाख बच्चे उन बीमारियों के कारण मरते हैं जो टीकाकरण द्वारा रोकी जा सकती थीं। विश्व के सबसे गरीब 50 देशों में 100 में से 35 बच्चों को स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं होता। हर रोज, पाँच वर्ष से कम आयु के 1,500 बच्चे (लगभग 5,00,000 बच्चे प्रति वर्ष) मलेरिया के कारण मरते हैं। केवल 10 में से 3 बच्चों को ही मलेरिया की चिकित्सा प्राप्त हो पाती है, और विश्व के सबसे गरीब मलेरिया से पीड़ित देशों में सिर्फ 10 में से 4 बच्चे ही मच्छरदानी में सो पाते हैं।

नाम व राष्ट्रीयता

जिस दिन से आप पैदा हुए हो उस दिन से एक नाम रखने तथा अपनी मातृभूमि के नागरिक के रूप में पंजीकृत होने का आपको अधिकार है।

प्रति वर्ष, 13 करोड़ 80 लाख बच्चे पैदा होते हैं, उनमें से 4 करोड़ 80 लाख बच्चों का कभी पंजीकरण नहीं होता। उनके पैदा होने के दस्तावेज के रूप में कोई प्रमाण नहीं होता!

एक घर, वस्त्र, भोजन तथा सुरक्षा

तुमको एक घर, भोजन, वस्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा एवं सुरक्षा उपलब्ध होने का अधिकार है।

विश्व के आधे से अधिक बच्चे गरीबी में रहते हैं। लगभग 44 करोड़ बच्चे प्रतिदिन 1.25 यू.एस. डॉलर (0.80 पाउण्ड) से कम में गुजारा करते हैं।

विकलांग बच्चे

यदि आपमें कोई अक्षमता है तो भी आपके अधिकार दूसरे जैसे ही हैं समाज में सक्रिय भूमिका निभाने लायक बनने के लिए सहायता पाने का आपको अधिकार है।

विश्व में विकलांग बच्चे सबसे बेसहारा लोगों में से हैं। अनेको देशों में उनको स्कूल नहीं जाने दिया जाता। उनके साथ अनेकों बच्चों की अपेक्षा घटिया व्यवहार किया जाता है, तथा उनको छिपा दिया जाता है। विश्व में लगभग 20 करोड़ विकलांग बच्चे हैं।

बच्चे?

सड़क पर रहने वाले बच्चे

आपको एक सुरक्षित पर्यावरण में रहने का अधिकार है। सभी बच्चों को शिक्षा, चिकित्सा व एक उत्तम जीवन स्तर का अधिकार है।

लगभग 10 करोड़ बच्चे सड़को पर रहते हैं। अनेकों के लिए, सड़क ही उनका घर है। अन्य बच्चे सड़कों पर ही काम करते हैं और वहीं दिन गुजारते हैं, पर रात को अपने परिवारों के साथ रहने के लिये वो वापस आ जाते हैं।

खतरनाक बाल मज़दूरी

आपको आर्थिक शोषण तथा ऐसे काम, जो तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हैं तथा स्कूल जाने से रोकते है, से बचने का अधिकार है। 12 वर्ष की आयु से कम वाले सभी बच्चों के लिए कोई भी कार्य वर्जित है।

लगभग 2 करोड़ 64 लाख बच्चे काम करते हैं, और उनमें से अधिकतर बच्चे वो काम करते हैं जो उनकी सुरक्षा, स्वास्थ्य, स्वाभिमान एवं शिक्षा के लिए सीधा–सीधा हानिकारक होता है। लगभग 55 लाख बच्चों को जबरदस्ती सबसे घटिया प्रकार की बाल मजदूरी करनी पड़ती है, ऋण मजदूरों की तरह, बाल सैनिकों की तरह अथवा बाल यौन शोषण व्यापार से पीड़ित। प्रति वर्ष, 1 करोड़ 20 लाख बच्चों की आधुनिक समय में मजदूरी व्यापार में तस्करी होती है।

अपराध व सज़ा

बच्चों को कारागार में डालना अन्तिम उपाय होना चाहिए व कम से कम समय के लिए होना चाहिए। किसी भी बच्चे को क्रूर व्यवहार व अन्य प्रकार से प्रताड़ित नहीं करना चाहिए। जिन बच्चों ने अपराध किये हैं उन्हें सहायता व देखरेख मिलनी चाहिए। बच्चों को आजीवन कारावास की सजा नहीं देनी चाहिए न ही उनको मृत्यु दण्ड मिलना चाहिए।

विश्व में कम से कम 10 लाख बच्चे जेलों में बन्द हैं। बन्दी बच्चों के साथ अक्सर बुरा व्यवहार किया जाता है।

अल्पसंख्यक बच्चे

जो बच्चे अल्पसंख्यक समूहों के हैं अथवा स्वदेशी लोग, उनको अपनी भाषा, संस्कृति एवं धर्म का अधिकार है। उदाहरण के लिए स्वदेशी लोगों में स्थानीय अमरीकन, आदिवासी आस्ट्रेलियन एव उत्तरी यूरोप के सामी लोग शामिल हैं।

स्वदेशी तथा अल्पसंख्यक बच्चों के अधिकारों का अक्सर उल्लंघन किया जाता है। उनकी भाषाओं का सम्मान नहीं किया जाता और उनको धमकाया जाता है अथवा उनसे मतभेद किया जाता है। अनेकों बच्चों को चिकित्सा सेवा उपलब्ध नहीं है।

युद्ध और देशांतरण काल में सुरक्षा

तुम्हें युद्ध के समय या यदि तुम शरणार्थी हो, तो तुमको सुरक्षा एवं सेवा का अधिकार है।
संघर्ष से प्रभावित बच्चों एवं शरणार्थी बच्चों के वही अधिकार होते हैं जो अन्य बच्चों को मिले हैं।

पिछले 10 वर्षों में कम से कम 20 लाख बच्चे युद्ध में मारे जा चुके हैं। 60 लाख बच्चे गम्भीर रूप से घायल हुए हैं। 1 करोड़ बच्चों को गम्भीर मानसिक हानि पहुँची हैं। 10 लाख बच्चों ने अपने माता–पिता को खो दिया है या उनसे अलग हो गये हैं। लगभग 2,50,000 बच्चों को सैनिकों, वाहकों अथवा खानों की सफाई करने के लिए इस्तेमाल किया जा चुका है (1000 से अधिक बच्चे हर साल खानों के कारण मर जाते हैं या घायल हो जाते हैं।) 2 करोड़ 50 लाख बच्चों को अपने घरों या देशों को छोड़कर भागना पड़ा है।

स्कूल और शिक्षा

आपको स्कूल जाने का अधिकार है। प्राइमरी और सेकेन्ड्री स्कूल सबके लिए निःशुल्क होने चाहियें।

विश्व में 10 में 9 से अधिक बच्चे स्कूल जाते हैं, लेकिन अभी भी 5 करोड़ 70 लाख बच्चे हैं जिन्हें किसी भी प्रकार की शिक्षा नहीं मिलती है। इनमें से आधी से अधिक लड़कियाँ हैं।

हिंसा से संरक्षण

आपको हिंसा, लापरवाही, दुर्व्यवहार तथा शोषण के सभी रूपों से सुरक्षा का अधिकार है।

विश्व में (लगभग 10 करोड़ बच्चों में), प्रति वर्ष 10 में से 6 बच्चे, 2 से 14 वर्ष की आयु के बीच वालों को बराबर अपने माता–पिता अथवा अन्य अभिभावकों द्वारा भौतिक दण्ड एवं हिंसा को भोगना पड़ता है। अनेकों देश स्कूलों में दैहिक दण्ड की अनुमति देते हैं। 44 देशों ने बच्चो के लिये सभी प्रकार के दैहिक दण्डों पर रोक लगा दी है।

तुम्हारी आवाज सुनी जानी चाहिए

तुम्हे इसका अधिकार है कि तुम कोई भी अपने प्रभावित करने वाले मुद्दे पर वो कहो जो तुम सोचते हो। वयस्कों को अपने फैसले लेने से पहले बच्चों की राय ले लेनी चाहिए, जो उनके सबसे अच्छे हित में हों।
क्या तुम्हारे देश में और विश्व में आज इसी प्रकार की स्थिति है? तुम्हें और विश्व के सारे बच्चों को ही सबसे बेहतर पता है!

पूर्वी डी.आर. कॉन्गो में बेनी ने अनेकों स्कूलों के छात्र अपना विश्व मतदान दिवस मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं। इस क्षेत्र में पिछले वर्ष अनेकों बार सशस्त्र समूहों द्वारा आक्रमण किये जा चुके हैं। बहुत सारे लोग मारे गये। बच्चों का अपहरण किया गया है और उनको जबरदस्ती बाल सैनिक अथवा सैनिकों के लिए सेक्स मजदूर बनाया गया है।

विश्व मतदान का समय

तुमको विश्व मतदान में अपना मतदान देने का अधिकार है जब तक तुम 18 वर्ष के नहीं होते। विश्व मतदान के माध्यम से, तुम यह निर्णय लेते हो कि किसको सन् 2015 का *'वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़ फॉर दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड्'* मिलेगा।

जैसे ही तुम इस वर्ष के वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम शुरू करते हो, तब यह महत्वपूर्ण है कि तुम अपने विश्व मतदान दिवस की तिथि निर्धारित कर लो। कुछ जगहों पर, अनेकों स्कूल अथवा सारे शहर या स्कूलों के जिले एक ही दिन अपना विश्व मतदान मनाते हैं। यह आवश्यक है कि तुम्हारे पास अपने विश्व मतदान दिवस से पहले बहुत सारा समय हो, कई सप्ताह या महीने, जिससे जहाँ तुम रहते हो, वहाँ बाल अधिकारों के बारे में जान सको और उन पर वार्ता कर सको। और सारी 'दि ग्लोब' पत्रिका को पढ़ने के लिए!

गुप्त मतदान

बहुत सारी तैयारी करनी पड़ती है यह देखने के लिए कि तुम्हारा विश्व मतदान एक प्रजातंत्रिक चुनाव हो, जहाँ पर तुमको यह सुनिश्चित कर लो कि तुम्हारा मतदान गोपनीय रखा जायेगा। तुम्हारे निर्णय को कोई और न प्रभावित कर सके – न तुम्हारे मित्र, न ही तुम्हारे अध्यापक, न तुम्हारे माता–पिता। किसी को यह नहीं पता लगना चाहिए कि तुमने किसको अपना मतदान दिया है, जब तक तुम स्वयं उनको न बताओ।

तुम्हें आवश्यकता पड़ेगी:

अध्यक्षता करने वाले अधिकारियों, निर्वाचन पर्यवेक्षकों एवं मतदान काउन्टरों को नियुक्ति करने की।

अध्यक्षता करने वाले अधिकारी निर्वाचन रजिस्टर में नामों को चिन्हित कर देते हैं और साथ ही मत पत्र दे देते हैं। निर्वाचन पर्यवेक्षक यह निश्चित करते हैं कि मतदान, स्याही का निशान एवं मत गणना सही की जाये। मतदान काउन्टर्स मतों की गणना करते हैं।

निर्वाचन रजिस्टर

हर किसी का नाम जिसे मतदान देने का अधिकार है, नामों की सूची में सम्मिलित होना चाहिए। नामों को सावधानी से चिन्हित कर देना चाहिए जब वो व्यक्ति अपना मत पत्र प्राप्त करता है, या फिर जब वह मतदान पेटी में अपना मतदान देता है।

मत पत्र

तुम उन मत पत्रों का प्रयोग कर सकते हो जो वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ से मिलते हैं, कुछ फोटो कापियाँ बनवा सकते हो, अन्यथा अपने स्वयं के बना सकते हो।

मतदान कक्ष

अपने स्वयं के मतदान कक्ष बनाओ, अथवा कुछ कक्ष वयस्क चुनावों से मांग लो। कक्ष में एक समय पर एक ही व्यक्ति प्रवेश करे, जिससे उसे कोई देख न सके कि वो अपना मतदान किसे दे रहा है।

मतदान पेटी

एक बड़े टीन, बक्से या गमले को मतदान पेटी के रूप में प्रयोग करो, अन्यथा अपनी स्वयं की मतदान पेटी को दफ्ती बुने हुए ताड़ के पत्तों से बनाओ।

स्याही जो बेईमानी रोकती है

यह निश्चित करने के लिए कि कोई दोबारा अपना न दे सके, तुम उन सब पर एक निशान बनाते जाओ जिन्होंने मतदान दिया है, उदाहरण के लिए, उनके अंगूठों पर स्याही लगा कर, उनके नाखून पर पेन्ट लगा कर अथवा उनके हाथ या चेहरे पर एक एक रेखा खींच कर। ऐसी स्याही का प्रयोग करो जो आसानी से नहीं धुल पाये!

इन सभी तीन प्रत्याशियों के लिए अपने परिणामों को भेजना मत भूलो!

मीडिया को आमंत्रित करो

अपने विश्व मतदान दिवस पर स्थानीय मीडिया को काफी अग्रिम में आमंत्रित करना याद रखो। तुम बच्चों को उन्हें आमंत्रित करना चाहिए, उन्हें बाल अधिकारों के लिए किये गये कार्यों के बारे में सब कुछ बताना चाहिए। तुम अभिभावकों एवं स्थानीय राजनीतिज्ञों को भी आमंत्रित कर सकते हो।

पृष्ठों 17–31 पर तुम बहुत सारे विभिन्न देशों के विश्व मतदान दिवसों को देख सकते हो।

कम्बोडिया में मतदान का तूफान

वहाँ पर तेज हवायें चल रही होती हैं जब सीम रीप, कम्बोडिया में ओपेल स्कूल के बच्चे अपना मतदान देने जाते हैं। लेकिन बच्चों को कोई फर्क नहीं पड़ता, और एक लड़की कहती है: ''आज सुबह ऐसा लग रहा था कि एक तूफ़ान आ रहा है, और मेरी माँ ने कहा कि मुझे विश्व मतदान में नहीं जाना चाहिए। लेकिन फिर भी मैं चली आयी, और मैं खुश हूँ कि मैंने ऐसा किया।''

घाना में मतदान की शक्ति

घाना के टेस्सार्क स्कूल में मतदान देने का समय है: ''यहाँ पर मतदान दो! तुम्हारा मतदान तुम्हारी शक्ति है!''

भारत में विश्व मतदान

फिल्लौर, भारत में देव सेन्टीनरी पब्लिक स्कूल के छात्रों ने स्कूल का विश्व मतदान आयोजित किया है।

स्याही जो बेइमानी को रोकती है।

मैक्सिको में डिजिटल मतदान पेटी

जेलिस्को, मैक्सिको में वो मतदान देने की लम्बी कतार एक साँप की तरह आगे–पीछे होती है। यहाँ पर उनके पास कोई मतदान कक्ष और यहाँ तक कि मत पत्र तक नहीं हैं – हर कोई मतदान देने के लिए डिजिटल मतदान पेटियों का प्रयोग करता है।

बेनिन में मतदान की कतार

मतदान अधिकारी मतदान कतार को आगे बढ़ने की अनुमति दे देते हैं जैसे ही वो बड़ी मतदान पेटी अपनी जगह पर रख दी जाती है।

PHOTO: PETER ÖSTLUND

घाना में सुन्दर मतदान कक्ष बने हैं

PHOTO: REBECCA GOTHE

स्वीडन में ज्वालामुखी के रूप में मतदान पेटी

डैनियल, 17, स्वीडन के वान्गे स्कूल में एक ज्वालामुखी के आकार की मतदान पेटी में अपना मतदान देता है। इसका कारण स्कूल की एक छात्रा, एन्जिलीना बताती है: ''मैं वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम को एक ज्वालामुखी के रूप में देखती हूँ जो फूटता है और अच्छे समाचार एवं हमारे अधिकारों का ज्ञान बाहर फेंकता है। डब्ल्यू.सी.पी. ने हम विश्व के बच्चों को एक साथ एकत्रित किया है। हम दि ग्लोब को पढ़ कर एक–दूसरे को समझते हैं, और हमें लगता है कि हमारे साथ एक अन्य परिवार भी है।''

विश्व मतदान के लिये एक हेलमेट में गोंद

''हम अपने विश्व मतदान के लिए मतदान क्षेत्र की तैयारी कर रहे हैं। मैं गोंद बना रही हूँ जिससे हम पोस्टर एवं अन्य सजावटें लगा सकें। मैं गोंद बनाने के लिए आटा और पानी इस्तेमाल करती हूँ जिसे मैं हाथ से मिला लेती हूँ। मैंने एक कटोरा ढूँढने की कोशिश की थी जिसमें मैं इसे मिलाऊँ लेकिन वो मुझे नहीं मिला। भाग्य से मुझे खेलने के मैदान में यह निर्माण में इस्तेमाल किया जाने वाला हेलमेट मिला। अतः मैं इसी को इस्तेमाल कर रही हूँ! यहाँ पर निर्माण कार्यकर्ता हैं, जो लगभग सारे स्कूल को दोबारा बना रहे हैं। जब स्कूल की इमारत अच्छी और नई होती है, तो तुम्हें अभिमान होता है और तुम यह समझ लेते हो कि स्कूल जाना कितना महत्वपूर्ण है। यदि वो पुराना और टूटा हुआ सा दिखता है, तो तुम्हें ऐसा बिल्कुल भी नहीं लगेगा। हमने अपने विश्व मतदान को आयोजित करने के लिए अपने स्कूल की सबसे अच्छी इमारतों में से एक को चुना है। विश्व मतदान एक विशेष समारोह है क्योंकि इसमें हम अपने अधिकारों को मना रहे हैं। हम चाहते हैं कि हमारा यह जश्न एक सुन्दर जगह पर आयोजित किया जाये।

स्टेफेमी, 11, डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूत, यूनीडेड 10 प्राइमरी स्कूल, मपूटो, मोज़ाम्बीक

एक बाल अधिकार राजदूत मत पत्रों को अलग–अलग काटते हैं...

...उन्होंने मतदान पोस्टर, अखबारों से बनी मालाएँ, मतदान कक्ष बनाये...

राजदूत जो दूसरों की

''हम बाल अधिकार राजदूतों ने हर कक्षा की सभी लड़कियों को एकत्रित किया और उनको लड़कियों के अधिकारों के बारे में बताया। हमने दि ग्लोब पत्रिका का प्रयोग किया। सब कुछ बहुत अच्छा रहा,'' अम्बेल्लीना कहती है।

''हम बाल अधिकार राजदूतों ने आज के विश्व मतदान का प्रबन्ध किया और उसको आयोजित किया। लगभग सब कुछ हमारी योजना के अनुकूल हुआ, इसलिए मैं सचमुच खुश हूँ। वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ मेरे लिए महत्वपूर्ण है। प्रत्याशी बाल अधिकार हीरो हैं जो बच्चों के लिए इतने सारे अच्छे काम करते हैं। जब मैं इन प्रत्याशियों में से एक को मतदान देती हूँ तब मैं यह दिखाती हूँ कि उनका कार्य मेरे लिए महत्वपूर्ण है।

विश्व मतदान से पहले मैंने दि ग्लोब का अध्ययन किया और बहुत कुछ जाना जो मुझे पहले नहीं पता था। उदाहरण के लिए, यह बात कि सभी बच्चे बराबर होते हैं और उनके साथ बराबर का बर्ताव किया जाना चाहिए। दोनों लड़के और लड़कियाँ। यहाँ पर, बहुत सारे लोग लड़कों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं और लड़कियों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं। उत्तरी मोज़ाम्बीक में यह साधारण बात है कि माता–पिता अपनी बेटियों का विवाह 13 या 14 साल की आयु में ही कर देते हैं। अभिभावक अपनी बेटियों से कहते हैं कि वो स्कूल छोड़ दें और इसके बजाय विवाह कर लें। मुझे लगता है कि यह बहुत गलत है। लड़कियों को अपनी शिक्षा समाप्त करने देना चाहिए और पहले उन्हें काम करना शुरू कर देना चाहिए। एक बार लड़कियाँ वयस्क हो जायेंगी, तो वो स्वयं अपने बारे में निर्णय ले लेंगी कि वो विवाह करना

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: JOHAN BJERKE

...मतदान क्षेत्र को सजाया...

...सबको मतदान पत्र दिये...

...अपने मित्रों की सहायता की और उनको इसके बारे में बताया...

...मतदान रजिस्टर में नामों को चिन्हित किया...

...और हर किसी की उंगलियों पर निशान लगाये जिसने अपना मतदान दिया जिससे वो दोबारा मतदान न दे सके।

''मैंने रसोई तक में सहायता की, उनके लिए स्वादिष्ट सैंडविच बनाये जिसे सब विद्यार्थियों ने मतदान के बाद आपस में बांट लिया। मैंने उन पर मक्खन लगाया और उनके अन्दर सॉसेज एवं म्योनेज़ भर दिया। हर कोई को सोडा अथवा मिनरल पानी भी दिया गया। वो एक सचमुच की दावत थी!'' अम्बेल्लीना कहती है।

सहायता करते हैं

चाहती हैं या नहीं। उनके अभिभावकों को उनसे जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए जब वो सिर्फ बच्ची ही हों। मैंने जाना है कि विश्व में ऐसी जगहें हैं जहाँ पर लड़कियों को बिल्कुल भी स्कूल जाने नहीं दिया जाता। यह बहुत खराब है!''

लड़कियों के अधिकार

''मैं एक डब्ल्यू.सी.पी. राजदूत हूँ, और यह सचमुच महत्वपूर्ण है कि यहाँ मोज़ाम्बीक में बाल अधिकार राजदूत हैं जो लड़कियों के अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं। अपने राजदूत बनने का प्रशिक्षण मिलने से पहले, हम देख सकते थे कि हम वो चीजें देख सकते थे जो गलत लगती थीं – उदाहरण के लिए, यह कि हमारे कुछ मित्र गरीबी के कारण स्कूल नहीं जाते थे, या फिर वो अन्य तरह से पीड़ित थे – लेकिन हमें नहीं पता था कि हम इस समस्या का क्या करें। अब, हम राजदूतों की तरह, इस बात में सीधे शामिल हो जाते हैं। पहले हम बच्चे से बात करते हैं और पता लगाते हैं कि क्या गलत हो रहा है। फिर हम उसके माता–पिता से बात करते हैं और उसकी सहायता करने की कोशिश करते हैं।

एक दिन मुझे अपने क्षेत्र की एक गरीब 13 वर्षीय लड़की मिली, जो स्कूल नहीं जाती थी और पढ़–लिख नहीं सकती थी। मैंने सोचा कि हम बाल अधिकार राजदूत उसकी माँ से मिलेंगे और देखेंगे कि हम इस मामले में क्या कर सकते हैं। वहाँ जाने से पहले, हमने धन का प्रबन्ध किया और स्कूल की पुस्तकें जमा कीं और भोजन का प्रबन्ध किया। अतः जब हम गये तब हम अपने साथ लड़की के स्कूल का शुल्क का पैसा लेकर गये, जिसे विद्यार्थियों एवं अध्यापकों ने जमा करने में सहायता की थी।

लड़की की माँ ने हमें बताया कि हमारा परिवार इतना गरीब था कि वो अपनी बेटी को स्कूल में नहीं पढ़ा सकता था, और यह कि वो अक्सर रात को भूखे ही सो जाते थे। जब हमने उन्हें बताया कि हमने प्रधानाचार्या से बात कर ली है और उससे आग्रह किया है कि वो उनकी लड़की को निःशुल्क स्कूल शुरू करने दे, तब दोनों माँ और बेटी खुशी से फूले न समाये।''

अम्बेल्लीना, 11, डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूत, यूनीडेड 10 प्राइमरी स्कूल, मपूटो, मोज़ाम्बीक

विश्व मतदान के लिए अच्छा दिखना

फुलमाया ने कवरेपालन चौक, नेपाल में विश्व मतदान दिवस के लिए अपने हाथों को सुन्दरता से रंगा है। यह गाँव में एक महत्वपूर्ण दिन है। यहाँ पर बहुत सारे बच्चे हैं जिनको यह नहीं पता था कि बाल अधिकार भी होते हैं जब तक उन्होंने दि ग्लोब को नहीं पढ़ा। अनेकों ने अब यह जान लिया है कि लड़कियों के भी वही अधिकार हैं जो लड़कों के, और यह कि उन्हें तस्करों से सावधान रहना होगा।

क्रम से मतदान देने की कतार।

विश्व मतदान के लिए छप्पर से बने मतदान कक्ष के सामने की जमीन को बिल्कुल साफ कर दिया गया है।

पहले उन्होंने दि ग्लोब पत्रिका को दोनों अंग्रेजी तथा नेपाली भाषा में पढ़ लिया है।

रिपब्लिक ऑफ कॉन्गो के बच्चों के वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़

डब्लू.सी.पी. बाल अधिकार क्लब का सदस्य

''यह मेरा दूसरा वर्ष है जब मैंने वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ में भाग लिया है और अब मैं लड़कियों के अधिकारों को जागरूक करने के लिए एक बाल अधिकार क्लब की सदस्य हूँ। मैं वंचित बच्चों के लिए एक आवाज बनना चाहती हूँ और अनाथ बच्चों के लिए घर खोलना चाहती हूँ जहाँ पर उन्हें अच्छी शिक्षा मिल सके।''
चेरिफ, 16

वयस्कों को पढ़ाना जरूरी है

यहाँ कॉन्गो में, सभी बच्चों को अपने अधिकारों का नहीं पता है। उनमें से कितने अनाथ एवं लावारिस हैं। यहाँ पर हम अपने अधिकारों के लिए मतदान दे सकते हैं। और यह हमारे ऊपर है कि हम सभी कॉन्गो वासियों को स्पष्ट रूप से बता दें, जिसमें हमारे माता–पिता भी शामिल हैं, कि बाल अधिकारों का सम्मान किया जाना चाहिए!''
अटीपो, 15

लड़कियों को दि ग्लोब पढ़नें की सलाह देनी चाहिए

''मुझे अपने अधिकार नहीं मालूम थे जब तक मैंने दि ग्लोब को नहीं पढ़ा था। मैं सभी लड़कियों को सलाह देता हूँ कि वो स्कूल जायें और इस पत्रिका को पढ़ें जिससे वो अपने अधिकारों को जानें।''
एडोरेसियास, 14

PHOTOS: KIM NAYLOR

क्या मेरा नाम मतदान रजिस्टर में है?

यह रहा तुम्हारा मत पत्र!

बेइमानी रोकने के लिए चिन्ह लगाना।

एक बाल अधिकार हीरो के लिए मेरा मतदान।

विश्व मतदान दिवस बाल अधिकारों के लिए एक दावत है, और हर किसी को जूस और मिठाईयाँ मिलती हैं।

एवं बाल अधिकारो पर विचार:

दि ग्लोब ने मेरी ज़िन्दगी बदल दी

"हमने दि ग्लोब पत्रिका में अपने अधिकारों को पढ़ने के बाद एक क्लब शुरू किया। दि ग्लोब ने मेरी जिन्दगी बदल दी क्योंकि मैंने अपने अधिकारों को जाना और यह कि मेरे अभिभावकों को उनका सम्मान करना चाहिए।"
सराह, 14

समान अधिकारों के बारे में पढ़ना

"हम यह निश्चित करना चाहते हैं कि लड़कों और लड़कियों के बीच कोई अन्तर नहीं रह गया है। सब बच्चों को पता होना चाहिए कि उनके समान अधिकार हैं। दि ग्लोब को धन्यवाद, जिसने हमें बात बतायी, और मुझे अपने अधिकार मालूम हैं। दि ग्लोब ने मुझे दूसरों के लिए सहानुभूति रखना भी सिखाया।"
एम्मैन्यूएल्ली, 13

काका, दायीं ओर, डब्ल्यू.सी.पी. क्लबों के साथ अपहरण की गयी लड़कियों की रिहाई की मांग करते हुए, इगारा कॉम्प्रीहेन्सिव हाई–स्कूल के छात्रों के साथ।

काका और डब्लू.सी.पी. अपहरण की गई लड़कियों के लिए लड़ती हैं

अप्रैल, सन् 2014 में, बोको हरम नामक आतंकवादी समूह ने चिबोक, नाइजीरिया में 234 स्कूल की लड़कियों का अपहरण कर लिया। नाइजीरिया के वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ क्लबों की अध्यक्ष, काका, 18, ने लड़कियों की रिहाई के लिए आवाज उठायी है।

काका को बाल अधिकारों के उल्लंघनों की बहुत जानकारी है।

''जब मैं सिर्फ दो साल की थी, तभी मैंने अपनी दादी के साथ पानी और कुलीकुली (मूंगफली की गेंदें) सड़क पर बेचना शुरू कर दिया था। जब मेरे पिता मरे तब मैं नौ वर्ष की थी, मुझे एक परिवार के साथ उनकी घरेलु नौकरानी बनकर जाना पड़ा। उस परिवार की माँ मुझे हर रोज पीटती थी और धमकियाँ देती थी।''

इस सब के बावजूद, काका ने स्कूल जाना शुरू किया, और 13 साल की आयु में उसने अपनी पहली संस्था शुरू की – 'काका गर्ल्स चाइल्ड फाउन्डेशन'। जल्द ही 122 विभिन्न स्कूलों की लड़कियाँ इसमें शामिल हो गयीं।

''उसके बाद हमने एक डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार क्लब अपने स्कूल में शुरू किया और मैं उसमें प्रवक्ता थी। तब से मैंने डब्ल्यू.सी.पी. क्लबों को अनेकों स्कूलों में शुरू करने में सहायता की है, और साथ ही विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम के बारे में शिक्षा दी है। सन् 2013 में मुझे चुनाव द्वारा सब डब्ल्यू.सी.पी. क्लबों का अध्यक्ष चुना गया जिनमें 137 स्कूलों के 1207 बच्चे शामिल थे।

दि ग्लोब पत्रिका मेरे लिये पानी की तरह है, और कौन पानी के बिना जीवित रह सकता है? मेरे लिए, दि ग्लोब एक आवश्यक रोज पढ़ने वाली किताब है! वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ मेरे दूसरे धर्म की तरह है, और उसने मुझे न्याय, समानता, प्रेम, एकजुटता, प्रजातंत्र एवं शान्ति के बारे में पढ़ाया है। जब चिबोक की लड़कियों का अपहरण किया गया था, तब यह स्पष्ट हो गया था कि मैं, काका गर्ल्स चाइल्ड फाउन्डेशन और सभी डब्ल्यू.सी.पी. क्लब इस बात का विरोध करें और नाइजीरिया की सरकार से मांग करें कि वो लड़कियों की रिहाई के लिए जो भी सम्भव हो वो करें।

इस वर्ष, डब्ल्यू.सी.पी. क्लब की अध्यक्ष के रूप में मेरे बाद किसी और का चयन किया जायेगा। मैं वित्तीय सहायता प्राप्त करने की कोशिश कर रही हूँ जिससे मैं विश्वविद्यालय में पढ़ सकूँ, लेकिन जिन लोगों से मैं कहती हूँ वो मेरे विश्वविद्यालय के शुल्क के बदले में मेरे साथ सेक्स करना चाहते हैं।''

काका

हम बच्चे ही हैं जिनकी आवश्यकता है

ऐल्ड्रिन, 14, फिलीपीन्स में ओकाम्पो का रहने वाला, डब्ल्यू.सी.पी. मतदान पेटी को कस कर पकड़े है जो एक बड़ी कांच की बोतल से बनी है। उसने कभी प्यार का अनुभव नहीं किया है, अपने स्वयं के परिवार में भी नहीं। उसे पीटा गया है और धमकाया गया है और हर साल उसको गन्ने के खेतों में काम करना पड़ता है। लेकिन जब उसने दि ग्लोब को पढ़ा तब उसको पता चला कि उसके भी अधिकार हैं।

मेरा सपना है कि मेरा टूटा हुआ परिवार फिर से जुड़ जाये जिससे हमारा एक घर हो जहाँ पर हम अपनी खुशी और प्यार को बांट सकें। मुझे तो प्यार शब्द का अर्थ ही नहीं मालूम, क्योंकि किसी ने मुझे कभी इसका एहसास नहीं कराया। मुझे सदैव उन लोगों ने पीटा है जिनके साथ मैं रहता हूँ। यदि मैं बिल्कुल वो नहीं करता हूँ जो वो चाहते हैं सीधे–सीधे। मैं अपने दादा–दादी एवं चाचाओं के साथ रहता हूँ। वो मुझे हर समय चिढ़ाते हैं, इसलिए मेरे अन्दर कोई आत्मविश्वास नहीं है। मुझे फसल के समय गन्ने काटने का काम ही करना पड़ता है और नई फसल लगाते समय जमीन में से घास निकालनी पड़ती है। मैं इस काम से खुश नहीं हूँ, लेकिन मैं अपने छोटे भाई–बहनों के बारे में सोचता हूँ। यदि मैं काम नहीं करूंगा, तो उनको भोजन और दूध नहीं मिलेगा। मैं घर के कामों के लिए भी जिम्मेदार रहा हूँ जैसे लकड़ी लाना और खाना पकाना जब से मैं सात वर्ष का था।

दि ग्लोब को पढ़ने के बाद मैंने अपने अध्यापक को बताया कि मुझे इस बात का एहसास हुआ है कि हम बच्चों को विश्व में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। दि ग्लोब ने मुझे यह बात समझने में सहायता की कि हम बच्चे अपने देश, सारे विश्व की आशा हैं।

जब मैं एक पेड़ के नीचे बैठा इस पत्रिका को पढ़ रहा था, तब मैंने स्वयं से कहा कि बच्चों में शक्ति है कि वो अपने अधिकारों के लिए अपनी आवाजों को सुनवायें और यह कि हम बच्चे ही है जिसकी विश्व को

यह ऐल्ड्रिन का काम है कि लकड़ियाँ इकट्ठा करे।

ऐल्ड्रिन को गणित प्रिय है और अक्सर वो अपने सहपाठियों को इसे पढ़ाने में सहायता करता है। वो एक कम्प्यूटर इंजीनियर बनना चाहता है।

विश्व को

आवश्यकता है, क्योंकि हमारे भ्रष्टाचार रहित विचार रहे हैं जो जमीर हमारे अन्दर है, उसके रहते हम गलत नहीं कर सकते, और बच्चे होते हुए हमको सही और गलत के बीच का अन्तर पता है।

मुझे लगा कि मैंने अपने अधिकारों के बहुत सारे उल्लंघनों का अनुभव किया है। मैं डब्ल्यू.सी.पी. निर्णायाक दल से भी प्रोत्साहित हुआ, क्योंकि उनमें से अनेकों ने बाल मजदूरी के अपने अनुभवों को मेरे साथ बांटा। डब्ल्यू. सी.पी. कार्यक्रम मुझे अनेकों तरीकों से सहायता करता है। मैंने अपने सभी अधिकारों को जान लिया है और मैं इस ज्ञान को दूसरों के साथ बांटना चाहता हूँ।''

मतदान की कतार में अनेकों बच्चे घन्टों तक और यहाँ तक कि पूरे दिन भर पैदल चल के विश्व मतदान में भाग लेने के लिए आये हैं।

बच्चों द्वारा बनाये गये एक मतदान कक्ष में निर्वाचन अधिकारी मतदान रजिस्टर में नामों को चिन्हित करते रहते हैं और मत पत्र देते जाते हैं।

बच्चों का प्रजातंत्रिक चुनाव इस देश में हो रहा है जो कई वर्षों तक एक तानाशाही के शासन में रहा है।

बर्मा में प्रजातंत्र एवं अधिकारों के लिए मतदान करना

बर्मा के कैरेन प्रदेश के सात गाँव वाले स्कूलों का एक मिलाजुला विश्व मतदान दिवस मनाया जा रहा है, वो देश जिसको म्यनमार भी कहते हैं, जिसने अनेकों वर्ष एक सख्त तानाशाही के शासन में गुजारे हैं। बच्चों के गाँवों तक पहुँचने के लिए कोई सड़कें नहीं हैं, और उनमें से अनेकों को सॉ बिवे डर्न तक पहुँचने में पूरा दिन पैदल चलना पड़ा

बहुत वर्षों से, दि ग्लोब पत्रिका को तस्करी द्वारा गाँव के स्कूलों में पहुँचाया जा रहा है। कुली द्वारा दि ग्लोब का अंग्रेजी संस्करण पहुँचाया जा रहा है, जिसमें उसकी सारी रंगीन तस्वीरें बनी हैं, और एक पुस्तिका भी जिसमें पत्रिका की सारी लेखी अपनी भाषा, कैरेन में है। तानाशाही के अन्दर रहते हुए भी, बच्चों ने बाल अधिकारों के बारे में जान लिया है और अपने स्वयं के प्रजातंत्रिक चुनाव में मतदान किया है। बर्मा में अब स्थिति थोड़ी बेहतर है, और जब प्रजातंत्रिक चुनाव फिर से इस देश में होंगे, तब बच्चे सॉ बिवे डर्न में एकत्रित हुए है, उनको सही से पता होगा कि प्रजातंत्र कैसे चलता है।

''मै पिछले चार वर्षों से वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ में भाग ले रही हूँ और मैंने अन्य बच्चों के बारे में जानकारी प्राप्त की है और जिन कठिनाईयों का सामना उन्हें करना पड़ता है, साथ ही मैंने अपने अधिकारों के बारे में भी जाना है और यह कि उनका सम्मान किया जाना चाहिए। हर रोज घर पर, मैं अपने छोटे भाईयों की देखभाल करती हूँ, चावल को कूटती हूँ और खाना पकाती हूँ। मैं एक अध्यापिका बनना चाहती हूँ और अपने गाँव में गरीब बच्चों की मदद करना चाहती हूँ, जिससे कैरेन की लड़कियाँ भी स्कूल जा सकें,'' नौ रो, 14 कहती है।

''मेरा सर्वप्रिय विषय कैरेन है और मुझे दि ग्लोब के लेखों को कैरेन में पढ़ना अच्छा लगता है, जबकि मैं अंग्रेजी संस्करण में चित्रों को देखता हूँ। मेरे देश में अनेकों बच्चों के पास कोई काम नहीं है, यद्यपि बच्चों को काम नहीं करना चाहिए। मैं एक डॉक्टर बनना चाहता हूँ और अपने गाँव में लोगों की सहायता करना चाहता हूँ,'' सॉ एह, 11 कहता है।

सौ एह

नौ रो

युगान्डा में वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़

''युगान्डा में, अनेकों बच्चे कठिन ज़िन्दगी जीते हैं। अक्सर निर्धनता के कारण, लेकिन शिक्षा के अभाव के कारण भी। इसी लिए वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ यहाँ पर महत्वपूर्ण है। यदि हम दि ग्लोब पत्रिका को स्कूल में पढते हैं और अपने अधिकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं, तो हम अपने माता–पिता, सम्बन्धियों एवं पड़ोसियों को उसके बारे में बता सकते हैं। जैसे वो सीखेंगे, वैसे–वैसे उनके हृदय धीरे–धीरे बदलेंगे, और अन्त में वो हम लड़कियों के साथ भी अच्छा बर्ताव करेंगे। वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ युगान्डा के बच्चों के भविष्य को और उज्जवल बनाता है!'' अडेला, 13 कहती है। वो युगान्डा की राजधानी वाले शहर कम्पाला के अमका क्लासिक स्कूल में आज हो रहे विश्व मतदान के लिए जिम्मेदार लोगों में से एक है।

लड़कियों के लिए अति आवश्यक!

''मैं अपने स्कूल के उन छात्रों में से एक हूँ जिन्होंने वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ एवं बाल अधिकारों पर अतिरि. क्त पाठ पढ़े हैं। अब मैं अन्य बच्चों, और वयस्कों को भी, बाल अधिकारों के बारे में बताती हूँ। आज मैंने अपने स्कूल के विश्व मतदान को आयोजित करने में सहायता की और मुझे इस पर गर्व है। मुझे इतनी महत्वपूर्ण चीज में भाग लेना बड़ा महान लगता है। मेरे लिए, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि डब्ल्यू.सी.पी. हमारी इस तथ्य पर सहायता करता है कि लड़कियों को भी स्कूल जाने का अधिकार है। यहाँ युगान्डा में, विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों में, बहुत सारे अभिभावक हैं जो अपनी बेटियों को स्कूल नहीं भेजते हैं। लड़कियों की बस शादी कर देनी होती है। लड़की का काम है घर पर रहना और खाना पकाना, लकड़ियाँ बटोरना और अपने विवाह के लिए अन्य तैयारियाँ करना। जो लड़कियाँ स्कूल जाने के लिए हठ करती हैं उनके साथ उनके पिताओं द्वारा अक्सर बुरा व्यवहार किया जाता है। इन बेटियों को घर पर जबरदस्ती और अधिक काम करना पड़ता है, और कुछ को पीटा भी जाता है। अन्त में वो इतनी थकी और डरी हो जाती हैं कि उनमें स्कूल जाने के लिए न तो शक्ति होती है और न ही संकल्प। जो माताएँ लड़कियों को जन्म देती हैं उनकी भी सराहना नहीं की जाती। जब मैं पैदा हुई थी, तब मेरे पिता इतने निराश हुए थे कि उन्होंने मेरी माँ और मुझे घर के बाहर फेंक दिया था। हमें अपनी मौसियों के पास भाग. ना पड़ा। तब से, मैं कभी अपने पिता के साथ नहीं रही हूँ। और उन्होंने कभी मेरे स्कूल का शुल्क देने या मेरी किसी और जरूरत को पूरा करने में सहायता नहीं की है। लेकिन, उन्होंने अपने उन पुत्रों की सहायता की है जो उनकी नई पत्नी द्वारा पैदा हुये हैं। यह मुझे अजीब सा और गलत लगता है।''

पिता द्वारा पिटाई

''एक बार जब मेरी माँ मुझे अपने पिता के घर पर सहायता लेने के लिए गई जिससे मैं अपना स्कूल जाना जारी रख सकूँ, तो उन्होंने बस इतना कहा, 'तुम यहाँ पर इस कूड़े के अंश को घसीट कर क्यों लाई हो?' एक अन्य बार जब मैंने उनसे सहायता के लिए कहा तो उन्होंने कहा कि वो अब मेरे पिता नहीं हैं। फिर उन्होंने मुझे पीटा। वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज में शामिल होने से पहले मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि हम बच्चों के भी अधि. काार होते हैं। जब मैंने दि ग्लोब पढ़ी तब मुझे लगा कि हम लड़कियों को भी शिक्षा ग्रहण करने और एक अच्छी ज़िन्दगी बिताने का अधिकार है। इस बात ने मुझमें बहुत सारी आशा जगा दी है!

मैं एक विमान चालक बनना चाहती हूँ। मैं गरीब बच्चों को एक यात्रा पर निःशुल्क ले जाना चाहती हूँ जिससे वो एक सचमुच के जोखिम का अनुभव कर सकें। कल्पना करो कि जिन बच्चों को एक विमान में बैठने तक का अवसर नहीं मिला हो, वो अचानक विश्व को ऊपर से देखें। यह भी क्या अनुभव है!'' अडेला हंसते हुए कहती है।

मेरी सर्वप्रिय बात जो मैंने दि ग्लोब में पढ़ी थी वो मलाला के बारे में, जिसे गोली मारी गई थी क्योंकि वो लड़कियों के स्कूल जाने के अधिकार के लिए लड़ती है। यद्यपि वो लगभग मर ही गई थी फिर भी उसने हार नहीं मानी। यह मुझको बहुत प्रोत्सा. हित करता है! मैं चाहती हूँ कि मेरे अन्दर भी उतना ही साहस हो और मैं युगान्डा में लड़कियों के अधिकारों के लिए लड़ूँ।''

महत्वपूर्ण है

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: JOHAN BJERKE

ऊपर से विश्व मतदान

युगान्डा के अमका स्कूल के सभी केन्द्रों पर लोग रह रहे हैं, और विश्व मतदान होना अभी–अभी शुरू हुआ है।

6. मतदानों की गणना!

5. अब मतदान पेटी में अपना मतदान देने का समय हो गया है।

4. एक परात में मतदान! मतदान की गोपनीयता का सम्मान करने के लिए, यह आवश्यक है कि तुम बिना किसी के देखे उस पर चिन्ह लगाओ जिसको तुम अपना मतदान दे रहे हो।

1. क्रमानुसार मतदान देने की कतार

2. मतदान रजिस्टर पर?

3. यह लो अपना मत पत्र!

हिप–हॉप कलाकार बनने के सपने

''युगान्डा में कुछ लोग बाल अधिकारों का सम्मान करते हैं, लेकिन सब लोग नहीं। मै एक गरीब परिवार से आती हूँ। कुछ समय मैं अपनी बुआ के साथ रही, क्योंकि मेरे पिता हमारी ठीक से देखभाल करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। उनके घर में मेरे साथ बहुत बुरा व्यवहार किया गया। उनके बच्चों को कभी काम नहीं करना पड़ता था लेकिन मुझे ज़बरदस्ती भोजन पकाना पड़ता था, कपड़े धोने पड़ते थे, बर्तन माँझने पड़ते थे, छोटे बच्चों को नहलाना पड़ता था और वस्त्रों पर स्त्री करनी पड़ती थी। मेरे सौतेले भाई बहन आराम करते थे और खेलते थे, अथवा मुझको काम करते हुए देखा करते थे। वो अक्सर मुझ पर हंसते थे। उनको सोने के लिए आरामदायक गद्दे मिलते थे, जबकि मुझे फर्श पर सोना पड़ता था। मेरी बुआ मुझे पीटा करती थी, और कभी–कभी मुझे पूरे सप्ताह बिना भोजन किये रहना पड़ता था।

मेरे अधिकारों का उल्लंघन किया गया, और यही बात युगान्डा में अनेकों बच्चों के साथ होती है। यहाँ पर बच्चों के साथ बहुत दुराचार किया जाता है, और अनेकों बच्चों को स्कूल जाने के बजाय काम करना पड़ता है। इसीलिए यहाँ पर वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ इतना महत्वपूर्ण है। हम युवा लोग स्कूल में बाल अधिकारों के बारे में पढ़ते हैं, और फिर अपने माता–पिता को पढ़ाते हैं। हम यह भी सीखते हैं कि प्रजातंत्र कैसे चलता है। दि ग्लोब पत्रिका में हम पुरस्कृत प्रत्याशियों की कहानियाँ पढ़ते हैं जो हमें प्रोत्साहित करती हैं जिससे हम अपने जीवन में कोई बड़ा और महत्वपूर्ण काम करें। मेरा सपना एक हिप–हॉप कलाकार बनने का है। हिप–हॉप लोगों को महत्वपूर्ण संदेश देने का एक महान तरीका है, ठीक उसी प्रकार जैसे बच्चों का स्कूल जाना महत्वपूर्ण है।

ओबोथ, 14, अमका क्लासिक स्कूल, युगान्डा

हम विश्व मतदान दिवस मना रहे हैं।

दैहिक दण्ड एवं सड़क के बच्चों पर रोक!

''आज हमारे स्कूल में विश्व मतदान मनाया गया। हमने उन लोगों को मतदान दिया जो बाल अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं। यह हमें महान लगा क्योंकि हम चाहते हैं कि बाल अधिकारों का सम्मान किया जाये। जब हम दि ग्लोब पत्रिका पढ़ रहे थे, तब हमने 'यू.एन. कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' का अनुच्छेद 2 पढ़ा था, जो कहता है कि सभी बच्चों के समान अधिकार होते हैं। यहाँ पर वैसी स्थिति नहीं है। जरा कम्पाला में सड़के के बच्चों को देखो। उनके अनेकों अधिकारों का सदैव उल्लंघन होता रहता है – उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं होता, रहने के लिए कोई जगह नहीं होती, और वो स्कूल नहीं जाते। यह बिल्कुल ठीक नहीं है!

मेरे पास जो थोड़ा सा भोजन होता है, उसमें से मैं उन बच्चों को देने की कोशिश करती हूँ, जिससे किसी और को कुछ खाने को मिल जाये। मैं भाग्यवान हूँ। मेरे माता–पिता मेरी देखभाल करते हैं और मुझे लगता है कि मेरे पास दूसरों से बाँटने के लिए पर्याप्त है। दि ग्लोब पत्रिका ने मुझे सिखाया कि दैहिक दण्ड एवं बाल दुराचार हमारे अधिकारों के उल्लंघन हैं, लेकिन यहाँ पर यह साधारण बात है।

माता–पिता अपने बच्चों को पीट कर उन्हें छोटी बातों के लिए दण्ड देते हैं। कभी–कभी बच्चों को बांध दिया जाता है और उनकी बेंत से पिटाई की जाती है। इससे बच्चे डर जाते हैं। उनमें से कुछ भाग जाते हैं और सड़कों पर रहने लगते हैं। वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ युगान्डा में महत्वपूर्ण है। पहले, मुझे अपने अधिकारों के बारे में अधिक जानकारी नहीं थी, लेकिन अब मुझे बहुत कुछ पता है। यदि हम अपने अधिकारों के बारे में जानेंगे, तो भविष्य में स्थिति बेहतर हो जायेगी। फिर कोई दैहिक दण्ड नहीं दिया जायेगा और न ही सड़क के बच्चे होंगे, क्योंकि उनको सहायता मिलेगी।

मैं एक डॉक्टर बनना चाहती हूँ और बहुत सारा धन कमाना चाहती हूँ। फिर मैं बच्चों के अस्पताल बनाऊँगी, सड़के के बच्चों के लिए घर और गरीब लोगों के लिए स्कूल।

गुटी, 12, अमका क्लासिक स्कूल, युगान्डा

बाल अधिकारो के चिन्ह

अपने विश्व मतदान की तैयारी में लगे, अमका क्लासिक स्कूल के बच्चों ने विभिन्न बाल अधिकारों के लिए चिन्ह बनाये हैं। लेकिन अदेला, गुटी, इमेल्डा एवं ओबोथ के लिए कौन सा चिन्ह सबसे अधिक महत्वपूर्ण है?

मैं भी शिक्षा को ही चुनती हूँ!

''यदि तुम एक अच्छा भविष्य चाहते हो, तो स्कूल जाना ही तुम्हारे लिए सिर्फ एक अवसर है, अतः शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार ही सबसे महत्वपूर्ण है। हमें भाषायें सीखनी पड़ती हैं। बिना अंग्रेजी जाने, यह सम्भव नहीं हो पाता कि हम अपने स्थानीय क्षेत्र के आगे किसी अन्य व्यक्ति से संपर्क कर सकें,'' ओबोथ कहता है।

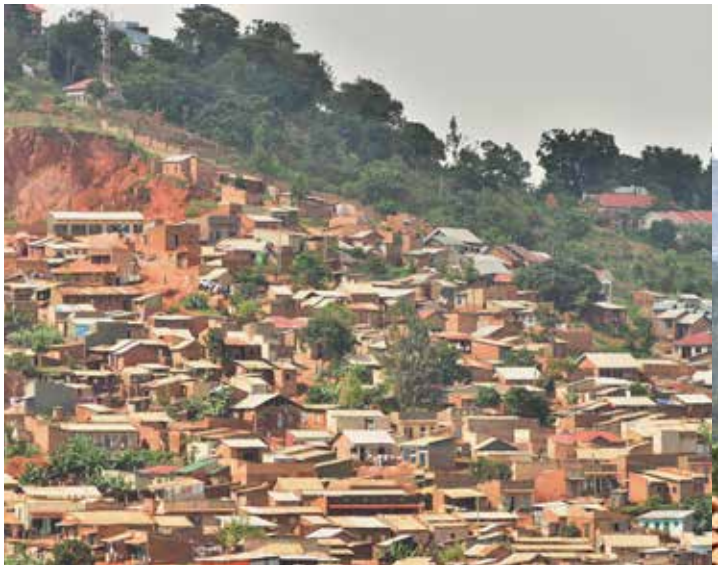

अमका स्कूल, युगान्डा की राजधानी कम्पाला मे है, जहाँ पर टॉवर ब्लाक एवं छोटे घर सटे–सटे एकत्रित हैं।

प्रजातन्त्र महत्वपूर्ण है!

''वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ में भाग लेना बहुत मज़ेदार रहा है। मैने विभिन्न प्रत्याशियों की कहानियों द्वारा अपने अधिकारों के बारे में बहुत कुछ सीख लिया है। स्कूल में हर कोई इसमें शामिल रहा है। हमने बहुत सारी बातें पढ़ीं और अवकाश के समय, दोपहर के भोजन के समय और यहाँ तक स्कूल के बाद भी उन पर चर्चा की। एक बार तुमको ज्ञान हो जायेगा तभी तुम कोई अन्तर डाल सकते हो। इसीलिए यहाँ पर वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ इतना महत्वपूर्ण है।

बहुत सारे मुद्दे हैं जिनके बारे में हमें यहाँ पर बात करने की आवश्यकता है, क्योंकि युगान्डा में अनेकों बच्चों का उल्लंघन होता है। अनेकों के पास पर्याप्त भोजन नहीं होता, स्कूल नहीं जाते और उनके साथ दुर्व्यवहार एवं दुराचार किया जाता है। हम लड़कियों के लिए स्थिति और बद्तर है। अभी भी लड़के और लड़कियों के साथ यहाँ पर अलग व्यवहार किया जाता है। लड़कियों के लिए स्कूल जाना अधिक कठिन होता है, और अनेकों का जबरदस्ती बाल विवाह कर दिया जाता है। यह बिल्कुल दक्षिण अफ्रीका के रंगभेद करने वाले शासन की तरह है, यहाँ पर काले लोगों का सफेद लोगों की अपेक्षा बुरा व्यवहार किया जाता है। सिर्फ उनकी खाल के रंग के कारण। लड़कियों के साथ लड़कों की अपेक्षा बुरा व्यवहार क्यों किया जाये? केवल उनके लिंग के कारण? हम सब बराबर हैं! विश्व मतदान में हमे बताया है कि प्रजातंत्रिक चुनाव कितने निष्पक्ष तरीके से आयोजित किये जाते हैं। पहले तुम सावधानी से तैयारी करके ज्ञान प्राप्त करते हो, फिर तुम स्वतंत्र हो कि तुम किसी भी प्रत्याशी को मतदान दो जिसे तुम चाहते हो। प्रजातंत्र महत्वपूर्ण है। हम केवल प्रजातंत्र के जरिये ही हर किसी के स्वतंत्रता से बोलने के अधिकार की रक्षा कर सकते हैं। मैंने यह बात वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज के द्वारा जानी। भविष्य में मैं एक वकील बनना चाहती हूँ जो बाल अधिकारों के लिए लड़ती है।''

इमेल्डा, 12, अमका क्लासिक स्कूल, युगान्डा

प्यार सबसे महत्वपूर्ण है!

''मेरे लिए प्यार किये जाने का अधिकार सबसे महत्वपूर्ण है। यहाँ पर लड़कियों को उतना प्यार नहीं मिलता जितना लड़कों को। युगान्डा में यह बाल अधिकारों के उल्लंघनों में से सबसे साधारण उल्लंघन है,'' अदेला कहती है।

मेरे लिए भी प्रेम ही!

''मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें प्यार मिलने का अधिकार मिले, क्योंकि इसमें सब कुछ सम्मिलित होता है। यह प्रेम के कारण ही होता है कि कोई देखता है तुम स्कूल जा सको, अपने विचारों को व्यक्त करो, चिकित्सीय देखरेख प्राप्त करो यदि तुम बीमार हो... सब कुछ!'' गुटी कहती है।

शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है!

''शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार सबसे महत्वपूर्ण है। बिना शिक्षा के, एक अच्छी जिन्दगी बिताना अधिक कठिन है। यदि तुम्हारे पास शिक्षा एवं ज्ञान है, तो तुम्हारे लिए अपने अधिकारों की रक्षा करना आसान होता है, क्योंकि तुम्हें मालूम है कि यह कैसे करना है,''
इमेल्डा कहती है।

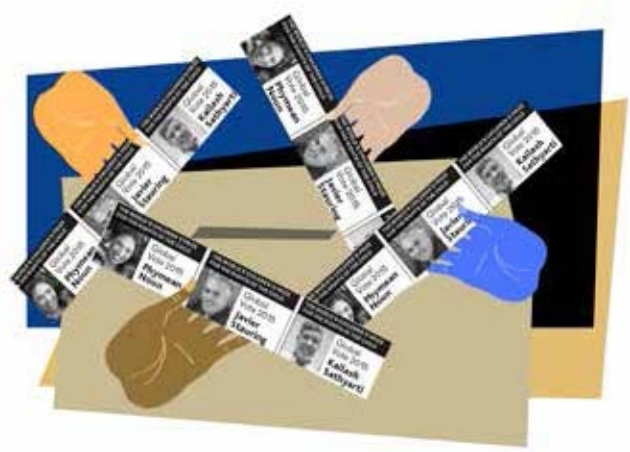

प्रजातंत्र की ओर

प्रति वर्ष वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम एक प्रजातंत्रिक विश्व मतदान से समाप्त होता है जिसके हकदार एवं आयोजक तुम ही हो! आओ तुम्हें समय की एक ऐसी यात्रा पर ले चलते हैं जिसमें समय के आधार पर प्रजातंत्र के विकास का उल्लेख है।

प्रजातंत्र क्या है?

हो सकता है कि तुम और तुम्हारे मित्रों के कुछ मुद्दों पर एक जैसी राय हों। अन्य मुद्दों पर हो सकता है तुम्हारे बिल्कुल अलग विचार हों। शायद तुम एक–दूसरे की बात सुनकर और उस मुद्दे पर चर्चा करो जब तक कि उसका कोई समाधान न निकल जाये जिसको हर कोई स्वीकार करे। यहाँ पर, तुम्हारी आपस में सहमती है और सबने एक समझौता कर लिया है।

कभी–कभी तुमको किसी बात पर समझौता न होने पर ही उस बात को मान लेना होता है। उस परिस्थिति में, जो सबसे अधिक संख्या में होता है – सबसे बड़ा समूल – वो ही निर्णय लेता है। इसी को प्रजातंत्र कहते हैं।

एक प्रजातंत्र में, सभी लोग बराबर के होने चाहिए और उनको समान अधिकार मिलने चाहिए। हर किसी को अपनी राय देने और निर्णयों को प्रभावित करने का अधिकार होना चाहिए। प्रजातंत्र का विपरीत तानाशाही है। वो तब होती है जब एक या कुछ लोग सभी बातों का फैसला करते हैं और किसी को विरोध नहीं करने दिया जाता।

एक प्रजातंत्र में, हर किसी को अपनी आवाज सुनवाने का अधिकार मिलना चाहिए। लोगों को आपस में समझौता कर लेना चाहिए, और सब बातों का मतदान द्वारा निर्णय लेना चाहिए। यहाँ पर सीधा प्रजातंत्र होता है और प्रतिनिधि प्रजातंत्र होता है। सीधे प्रजातंत्र में हर कोई को किसी विशेष प्रश्न पर अपना मतदान देने की अनुमति होती है, उदाहरण के लिए, तुम्हारा विश्व मतदान, जहाँ पर तुम यह निर्णय लेते हो कि 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ फॉर दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' किसको दिया जाये। एक अन्य उदाहरण है जब कोई देश एक जनमत संग्रह धारण करता है। अधिकतर प्रजातंत्रिक देश पर एक प्रतिनिधि प्रजातंत्र द्वारा शासन होता है। इसमें देश के नागरिक अपने प्रतिनिधियों का चयन करते हैं – राजनीतिज्ञों – जो देश का परिचालन लोगों की इच्छाओं के अनुसार करते हैं।

युगों से होते हुए

संयुक्त निर्णय

युगान्तरों से लोग मिलकर निर्णय लेने के लिए एकत्रित होते आये हैं। निर्णयों को समूहों, जातियों अथवा गाँवों में लिया जाता है, शायद शिकार करने या कृषि पर। कुछ समूहों के संस्कार होते हैं जिनकी सहायता से इस बात पर वार्ता की जाती है कि समूह के लिए सबसे अच्छा क्या होगा और फिर आपस मिले–जुले फैसले किये जाते हैं। कभी–कभी एक वस्तु, जैसे एक पर को सबके बीच दिया जाता है, और जो भी उसको पकड़े होता है उसे बोलने दिया जाता है। *क्यों न इसको अपनी कक्षा में करके देखो?*

प्रजातंत्र शब्द की उत्पत्ति

सन् 508 बी.सी.ई. में प्रजातंहत्र शब्द का जन्म होता है, ग्रीक शब्दों डेमोस (लोग) और क्रैटीम (अधिकार या शासन)। ग्रीक के नागरिकों को एक सीढ़ी चढ़नी होती थी और महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी राय देनी होती थी। यदि वो किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाते थे, तो लोग अपने हाथों को उठाकर उस मुद्दे पर अपना मतदान देते थे। लेकिन इस समय केवल पुरुषों को ही मतदान देने का अधिकार है। महिलाओं, दासों एवं विदेशियों को नागरिक नहीं समझा जाता है और उन्हें मतदान नहीं देने दिया जाता।

तानाशाही करने वाले शासक

1700 ई० में यूरोप के अधिकतर देशों में, उदाहरण के लिए, तानाशाही करने वाले राजाओं एवं महाराजाओं का शासन था, जो लोगों की इच्छाओं की परवाह नहीं करते थे। लेकिन कुछ विचारक प्राचीन विचारों में रुचि लेने लगते हैं कि सभी लोग स्वतंत्र और बराबर पैदा हुए हैं, जिनके समान अधिकार हैं। क्यों समाज के कुछ समूहों को अन्य समूहों की अपेक्षा अधिक शक्ति और दौलत मिले? अन्य लोग शासकों के दबाव की निन्दा करते हैं और उनका मानना है कि यदि लोगों में और ज्ञान होगा तो वो समाज में हो रहे अन्याय को समझेंगे और उसका विरोध करेंगे।

जाने वाला मार्ग

1789

अमीरों की आवाज़

सन् 1789 वो वर्ष भी है जब फ्रांसीसी आन्दोलन शुरू होता है। उसके पीछे के विचार और मांगें यूरोप भर में फैलते हैं और समाज को प्रभावित करते हैं। फिर भी, केवल पुरुषों को नागरिक समझा जाता है। इसके अतिरिक्त, केवल जिन पुरुषों को मतदान देने और राजनीतिज्ञ बनने की अनुमति होती है वो अमीर लोग होते हैं जिनके पास स्वयं की जमीन और इमारतें हैं।

कोई महिला अथवा दास नहीं

सन् 1789 में संयुक्त राज्य अमरीका का पहला संविधान लिखा जाता है। यह प्रजातंत्र के इतिहास में एक महत्वपूर्ण कदम है। वो कहता है कि लोगों को समाज में लिये गये निर्णयों पर अपनी राय देने का अधिकार मिलना चाहिए, और यह कि लोगों को वो सब कुछ लिखने और सोचने का अधिकार होना चाहिए जो वे चाहते हैं। लेकिन यह संविधान महिलाओं एवं दासों पर लागू नहीं होता है।

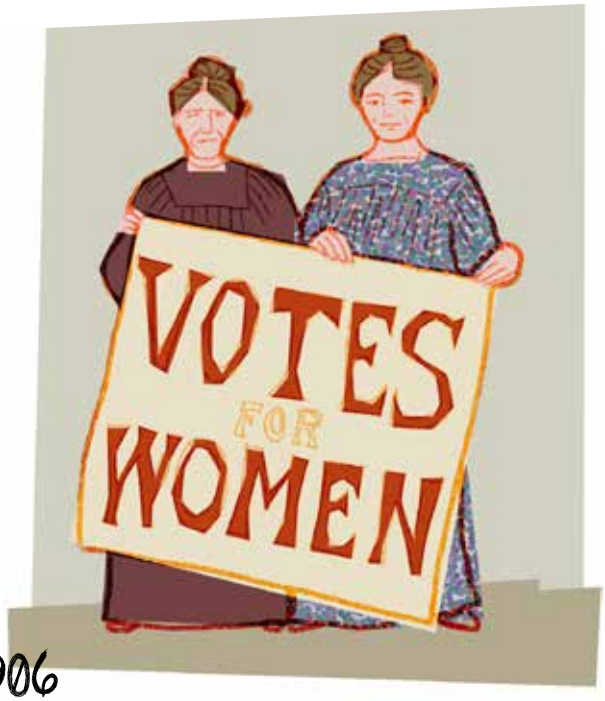

1906

1921

1945

महिलाएँ मतदान देने का अधिकार मांगती हैं

1800 ई0 के अन्त में, अधिक और अधिक महिलायें राजनीतिज्ञ चुनाव में अपना मतदान देने का अधिकार मांगने लगती हैं। सन् 1906 में, फिनलैण्ड यूरोप का सबसे पहला देश है जो महिलाओं को मतदान देने की अनुमति देता हे। इसके बाद सन् 1921 में, स्वीडन और यू.के. भी ऐसा ही करते हैं। यूरोप के अधिकतर देशों, अफ्रीका एवं एशिया में महलाओं को 1945 के द्वितीय महायुद्व के बाद ही मतदान नहीं देने दिया गया और कहीं कहीं पर उसके बाद भी मतदान नहीं देने दिया गया।

प्रथम गोपनीय मतदान

सन् 1856 में सबसे पहला गोपनीय मतदान तसमानिया, ऑस्ट्रलिया में आयोजित किया गया, जिसमें मत पत्रों का प्रयोग किया गया जिन पर प्रज्याशियों के नाम छपे हुए थे।

1856

1947

विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र

सन् 1947 में भारत ब्रिटिश साम्राज्य से स्वयं को मुक्त कराता है और विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र बन जाता है। आजादी की लड़ाई का नेतृत्व महात्मा गांधी करते हैं, जो बिना हिंसा किये उत्पीड़न को रोकने में विश्वास करते हैं – अहिंसा।

1957

अफ्रीका में पहला प्रजातंत्र

सन् 1957 में दक्षिण अफ्रीका में घाना अपने उपनिवेशकीय शासक ग्रेट ब्रिटेन से आज़ाद हो जाता है। क्वामें नकरुमा देश का पहला नेता बनता है। यूरोप के अधिकतर देशों, अफ्रीका, एशिया एवं लैटिन अमरीका का उपनिवेश सैंकड़ों वर्ष पहले शुरू हुआ था। यूरोप की महान शक्तियों ने अपने सैनिकों एवं खोजकर्ताओं को भेजा, जिससे वो भूमि पर कब्जा करें, प्राकृतिक संस्साधनों को चुरायें, और लोगों को दासों में परिवर्तित करें।

TEXT: CARMILLA FLOYD & MAGNUS BERGMAR ILLUSTRATIONS: JAN-ÅKE WINQVIST

अमरीका में समान अधिकार

सन् 1955 में, रोज़ा पार्क्स नामक एक महिला, जो कि काली है, एक सफेद आदमी को अपनी बस की सीट देने से इन्कार कर देती है। रोज़ा पर जुर्माना लग जाता है क्योंकि दक्षिण अमरीका में काले लोगों को वही अधिकार नहीं मिलते हैं जो सफेद लोगों को मिलते हैं। उनको वही स्कूलों में नहीं जाने दिया जाता है जहाँ सफेद बच्चे जाते हैं, और कभी कभी उनको मतदान नहीं देने दिया जाता। सार्वजनिक अधिकारों के निपुण मार्टिन लूथर किंग उस बस कम्पनी का बहिष्कार शुरू करता है। यह सारे संयुक्त राज्य अमरीका में, जातिवाद के विरुद्ध एवं स्वतंत्रता तथा समान अधिकारों के लिए एक बड़े विरोधी आन्दोलन की शुरूआत कर देता है।

'दि अरब स्प्रिंग'

सन् 2010 में, ट्यूनीशिया में, एक गरीब सब्ज़ी वाले के ठेले को पुलिस ने ज़ब्त कर लिया। वो स्वयं को आग लगा देता है, और जब यह समाचार फैलता है, तो हज़ारों लोग सड़कों पर विरोध में नारे लगाने के लिये बाहर निकल आ जाते हैं। वो तानाशाही करने वाले देश के शासक बेन अली का तख्तापलट करने में कामयाब होते हैं। लोग प्रोत्साहित होते हैं और ईजिप्ट एवं लिबिया की तानाशाही सरकारें भी सामूहिक विरोधों द्वारा गिरा दी जाती हैं। मिडिल ईस्ट में प्रजातंत्र के लिये हो रहे इस आन्दोलन को 'दि अरब स्प्रिंग' कहा जाता है।

दक्षिण अफ्रीका में हर किसी को मतदान देने का अधिकार

सन् 1994 में, नेलसन मण्डेला दक्षिण अफ्रीका का प्रथम प्रजातंत्रिक चुनाव द्वारा राष्ट्रपति बन जाता है। वो जेल में 27 वर्षों तक रहा है क्योंकि उसने देश की जातिवाद रंगभेद प्रणाली के विरुद्ध संघर्ष किया है। मण्डेला के चुनाव में यह पहली बार हुआ है कि सभी दक्षिण अफ्रीकी नागरिक बराबर के स्तर पर किसी चुनाव में भाग ले सके हैं।

बर्मा में प्रजातंत्र की ओर

सन् 2010 में औंग सैन सूई बाई को बर्मा की तानाशाही से मुक्त कराया जाता है जब वो 23 वर्षों बन्दी रही है जिसमें से 15 वर्ष उसने ग्रह बन्दी में गुज़ारे हैं क्योंकि उसने बर्मा में प्रजातंत्र लाने के लिये बहादुरी से संघर्ष किया है। सन् 2011 में वो वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ फाउण्डेशन की एक समर्थक बन जाती है।

तानाशाही अभी भी है

सन् 2014 में, विश्व के कुछ देशों पर अभी भी तानाशाही करने वालों का राज है, पर अब भी अनेकों प्रजातांत्रिक देशों में मानवाधिकारों का उल्लंघन किया जाता है। बाल अधिकारों का उल्लंघन सभी देशों में किया जाता है। तानाशाही वाले देशों में लागों को मतदान देने और अपनी विचारों को व्यक्त करने का अधिकार नहीं मिलता – अपने राय देने की इजाज़त। शासक हर बात पर निर्णय लेते हैं, और अकसर धन एवं जायदाद को स्वयं तथा बपने परिवारों के लिये ज़ब्त कर लेते हैं।

बच्चों का प्रजातंत्रिक विश्व मतदान

सन् 2015 में वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम पन्द्रहवीं बार आयेजित किया जाएगा। अब तक, इस कार्यक्रम के ज़रिये, 3 लाख 60 हज़ार से अधिक बच्चों ने अपने अधिकारों एवं प्रजातंत्र के बारे में के बारे में जानकारी प्राप्त कर ली है। यह आवश्यक है कि हर नई पीढ़ी इस ज्ञान को सीखे। यह तुमको और तुम्हारे मित्रों को अपनी ज़िन्दगी बिताने में सहायक होगा और तुम्हारा देश एक बेहतर स्थान बनेगा जहाँ प्रजातंत्र सशक्त होगा और मानवाधिकारों का सम्मान किया जाएगा।

जब तुमने बाल अधिकारों के गारे में एवं पुरस्कृत प्रत्याशियों के कार्य के बारे में सब कुछ जान लिया हो, तब तुम अपने प्रजातंत्रिक विश्व मतदान की तैयारी करना शुरू कर सकते हो। तुम्हारा मत ही तुम्हारा निर्णय है। कोई नहीं, न तुम्हारे मित्रों और न तुम्हारे अधापकों को तुम्हें बताना चाहिए कि तुम अपना मतदान किसे देना है। जिस व्यक्ति को सबसे अधिक मतदान मिलेंगे – लोगों का सबसे बड़ा समूह – उसी को सन् 2015 का 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज फॉर दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' मिलेगा!

रेडियो संवाददाता बाल अधिकारों के लिए

ब्राजील के एमाज़ोनाज़ में, ऐसी लड़कियाँ हैं जो प्रशिक्षित वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ बाल अधिकार राजदूत हैं। रेडियो संवाददाताओं की तरह काम करते हुए, वो अन्य बच्चों को पढ़ाती हैं – और वयस्कों को भी – कि बाल अधिकार होने चाहिए और उनका सम्मान किया जाना चाहिए!

उन चीजों के बारे में बात करना जो हमारी जिन्दगी को प्रभावित करती है।

''ब्राजील में बड़ी असमानता है। अनेक बच्चों के साथ बुरा व्यवहार किया जाता है, लेकिन उनको उस हिंसा एवं दुराचार के बारे में बोलने का मौका नहीं मिल पाता जिससे उन्हें गुजरना पड़ता है। वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के जरिये हमें उन बातों के बारे में बोलने का अवसर मिलता है जो हमारी जिन्दगी को प्रभावित करती हैं।

मैंने विद्यार्थियों के लिए आयोजित एक कार्यक्रम में भाग लिया था जो यहाँ पर एमाज़ोनाज़ में बाल अधिकार राजदूत बनना चाहते थे उसमें बाल एवं युवा न्यायालय की न्यायाधीश भी आयी थी। हमने उससे प्रश्न पूछे, और उसने बताया कि पुलिस एवं न्यायाधीश किस प्रकार बाल अधिकारों की रक्षा करने के लिए काम करते हैं, और बच्चों का बलात्कार करने वाले लोगों को कैसे दण्ड दिया जाता है।

जो भी ज्ञान हम वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के जरिये प्राप्त करते हैं वो हमको रेडियो पेला एड्यूकाकाओ के बेहतर संवाददाता बनने में सहायक होता है। मैंने उन स्कूलों के लोगों का साक्षात्कार लिया है जो हर साल डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम में भाग लेते हैं। मैं अपने स्कूल के विश्व मतदान में एक पर्यवेक्षक अधिकारी थी। मैंने मतदान कतार का पर्यवेक्षण किया और मतदान रजिस्टर पर लोगों के नामों को चिन्हित किया।''

निकोले, 10, एसीला नोब्रे डॉस सेन्टॉस स्कूल, सेन्टारेम

वो हमें अपने अस्तित्व पर विचार करवाते हैं

''वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ प्रत्याशी हमें बताते हैं कि बिना लगन के, हम अधिक दूर नहीं जा पायेंगे। मैंने रेडियो पर दि ग्लोब में लिखी प्रत्याशियों की कहानियों को पढ़ दिया था। यह सच्ची कहानियाँ हैं जो वास्तव में हमें हिला देती हैं, वो हमें अपने अस्तित्व पर विचार करवाती हैं, और उन लोगों के बारे में भी जो हमसे भिन्न हैं। और सम्मान एवं समानता के बारे में भी।

मेरे स्कूल में, अनेकों लड़कियों से उनके शरीर के आकार या उनके काले वर्ण के कारण बुरा व्यवहार किया जाता है। इसे बदलना होगा। मैं इस तरह की बात से लड़ने के लिए, और लड़कियों के अधिकारों के लिए एक बाल अधिकार राजदूत बनी। मैं यह निश्चित करना चाहती हूँ कि सभी लड़कियों को स्कूल जाने को मिले, और मैं बच्चों के लिए संघर्ष करना चाहती हूँ जिससे उनकी आवाजें मीडिया में सुनायी दें। बच्चों को रेडियो, टी.वी. तथा अखबारों में पर्याप्त जगह नहीं दी जाती।

मैं रेडियो पेला एड्यूकाकाओ (रेडियो फॉर एजूकेशन) में एक संवाददाता हूँ जिसका काम है बाल अधिकारों पर सबका ध्यान जाग्रत करे। मैं उन विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों का साक्षात्कार लेती हूँ जो डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम का प्रयोग करते हैं।''

लरिस्सा, 10, एसीला नोब्रे डॉस सेन्टॉस स्कूल, सेन्टारेम

डब्ल्यू.सी.पी. अभियानः लड़कियों के अधिकारों के लिए लड़ो!

''वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ विश्व भर में लड़कियों को एक बेहतर जिन्दगी बिताने की आशा देता है। डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम एक अच्छा ऊपरी दृश्य दिखाता है कि विभिन्न देशों में लड़कियों की जिन्दगी कैसी होनी चाहिए। यह हमको एक अभियान भी चलाने देता है – कि हम हर लड़की के शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार के सम्मान के लिए संघर्ष करें।

मैंने यहाँ सेन्टारेम में, जहाँ मैं रहती हूँ, लड़कियों की स्थिति के बारे में जाना है। जो कुछ भी मैंने सीखा है, वो मैंने रेडियो पेला एड्यूकाकाओ के कार्यक्रमों द्वारा अन्य लोगों को पढ़ाया है। जो मैंने सीखा है उसे अन्य लोगों के साथ बांटना मुझे बड़ा महान लगता है। इससे और अधिक लड़कियों को अपने अधिकारों की रक्षा करने में सहायता मिलती है।

मैंने बच्चों को सिखाया है कि वो एक प्रजातंत्रिक चुनाव को कैसे आयोजित करें और उसमें भाग लें। मैं अपने स्कूल के विश्व मतदान में एक निर्वाचन पर्यवेक्षक थी। हमारे मतदान बिल्कुल अपने थे!

मेरे क्षेत्र में शायद ही किसी को मालूम हो कि बच्चों के भी अधिकार होते हैं। हमें बाल अधिकारों के बारे में और अधिक लोगों को जाग्रत करने की आवश्यकता है। मेरे माता, पिता, भाई एवं अध्यापक मुझे एवं अन्य लोगों को यहाँ एमाज़ोनाज़ में बाल अधिकार राजदूत बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

विटोरिया, 11, एसीला नोब्रे डॉस सेन्टॉस स्कूल, सेन्टारेम

TEXT: CHRISTIANE SAMPAIO PHOTOS: ROZINALDO SIQUEIRA GARCIA & SOCORRO CARVALHO

फायमीन को क्यों नामित किया गया है

बाल अधिकार हीरो नामित • पृष्ठ 32–51

Phymean Noun

फायमीन नाउन को सन् 2015 के वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स पुरस्कार के लिए नामित किया गया है क्योंकि उसने 13 वर्ष तक कम्बोडिया में उन बच्चों के लिए एवं उनके शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार के लिए संघर्ष किया हैं जो कचड़े के ढेरों में काम की वस्तुएँ ढूँढा करते हैं।

जब फायमीन छोटी थी, तब कम्बोडिया में सारी शिक्षा पर रोक लगी थी, और उसके सारे परिवार को मार डाले जाने का भय होता था। वो सपना देखती थी कि एक दिन वो स्कूल जाएगी, और अन्त में वो शिक्षा प्राप्त करने में सफल हो गई। जब फायमीन को लगा कि कम्बोडिया में अभी भी एसे बच्चे हैं जिन्हें अपनी ज़िन्दगियों के लिए संघर्ष करना पड़ता है, तब उसने उनकी सहायता करने के लिए अपनी अच्छे वेतन वाली नौकरी त्याग दी। जिन बच्चों की वो सहायता करती है वो राजधानी वाले शहर, फ्नॉम पेन्ह के कचड़े के ढेरों के पास और झुग्गी–झोपड़ियों में रहते हैं। वो कचड़ा बटोरने के काम में अपनी ज़िन्दगियों को खतरे में डालते हैं और इसमें अनेकों बच्चों ने अपनी ज़िन्दगियाँ गवाँ दी है जब उन पर कचडे वाले ट्रक चढ़ गये या जब वो कचड़े के ढेरों में जीवित ही दफन हो गये। फायमीन इन्हीं बच्चों के लिए लड़ती है जिससे वे स्कूल जा सकें, और उन्हें उनके मूल अधिकार प्राप्त हो सकें। अपनी संस्था 'पीपुल इम्प्रूवमेन्ट ऑर्गनाईज़ेशन' (पी.आई.ओ.) द्वारा, उसने कचड़े के ढेरों और झुग्गी–झोपड़ियों के पास तीन स्कूल और एक बाल गृह बनाये हैं। एक हजार से अधिक बच्चे वहाँ पर स्कूल जाते हैं, जहाँ उनको भोजन, जल एवं स्वास्थ्य सेवाएँ मिलती हैं। पी.आई.ओ. परिवारों को औद्योगिक प्रशिक्षण देता है और उनकी सहायता भी करता है।

कम्बोडिया की राजधानी, फ्नॉम पेन्ह में कचड़े के ढेर पर बच्चों से मिलने के लिए पहली बार जब फायमीन जाती है तो कचड़े की गन्ध से उसको बीमारी महसूस होती है। उनके पास न तो जूते हैं न स्वच्छ पानी है, और वो तिरपाल के नीचे मिट्टी और कचडे के बीच रहते हैं। यद्यपि बच्चों के पास कुछ नहीं है, फिर भी जो चीज़ उनको सबसे अधिक चाहिए वो है शिक्षा।

फायमीन को यह सही से पता है कि कचड़े के ढेर वाले बच्चों को कैसा लगता है। जब उसकी माँ मैलिस मरी, तब फायमीन ने उसको वचन दिया कि वो अपनी लड़ाई जारी रखेगी। वो 15 वर्ष की थी, और स्वयं शिक्षा प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रही थी।

फायमीन को कठिन परिश्रम और भय से भरा हर दिन याद है। अतः जब वो पहली बार कचड़े के ढेर पर बच्चों से मिलती है, तब वो सीधे वापस शहर जाती है और अपनी कार्यालय वाली नौकरी को त्याग देती है।

''जब तक बच्चे कचड़े के बीच में रहते रहेंगे, तब तक ऐसा नहीं हो सकता कि मैं बैठी रहूँ और कुछ न करूँ। किसी ने मेरी सहायता नहीं की, लेकिन मैं उनकी सहायता अवश्य करुँगी।''

शहर से बाहर निकलो

फायमीन की कहानी अप्रैल, सन् 1975 में शुरू हुई, जब वो चार वर्ष की थी। काली पोशाकें पहने सैनिकों ने शहर में प्रवेश किया। उन्होंने अपने हथियारों को हवा में लहराते हुए सबसे शहर छोड़ने को कहा।

''सिर्फ तीन दिनों के लिये,'' उन्होंने कहा, और फिर तुम सब वापस अपने घर आ सकते हो।''

फायमीन के माता–पिता अपने साथ कुछ नहीं लेकर गए, केवल कुछ भोजन और एक मोटर साइकिल।

सड़कें इतनी भरी हुयी थीं कि कहीं भी जाना अन्यन्त कठिन था। सैनिकों ने उनको खदेड़ दिया, बाहर और बाहर। कुछ गड़बड़ थी।

हमको दूर गोलियों की आवाज़े सुनायी दे रही थीं। जो भी पीछे मुड़ने की कोशिश करता था उसे गोली मार दी जाती थी।

सैनिकों ने उनको बेवकूफ बनाया था। उन्हें वापस नहीं लौटने दिया गया।

माँ को झूठ बोलना पड़ा

फायमीन की कहानी अप्रैल, सन् 1975 में शुरू हुई, जब वो चार वर्ष की थी। काली पोशाकों में सैनिकों ने शहर में प्रवेश किया। उन्होंने अपने हथियार हवा में लहराये और सबको शहर छोड़ने के लिये कहा।

TEXT: JOHANNA HALLIN & EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: ALEXANDRA ELLIS

फायमीन, जो अपनी माँ के सबसे पास खड़ी है, वो सन् 1973 में सिर्फ दो वर्ष की है और परिवार को अभी तक मजबूर हो कर अपना घर छोड़ कर नहीं जाना पड़ा है।

कम्बोडिया का भयानक इतिहास

कम्बोडिया विश्व के सबसे गरीब देशों में से एक है और उसका बड़ा बुरा इतिहास रहा है। 40 वर्ष पहले इस देश पर हिंसक खमेर राउज और उनके नेता पॉटपॉट ने कब्जा कर लिया था। तीन वर्ष, आठ महीने एवं बीस दिन तक खमेर राउज का इस देश पर कब्जा रहा, जिसमें 18 लाख लोग उत्पीड़न, फांसी, बीमारी, अकाल एवं थकान से मार गये थे। जब उनका शासन गिरा, तब वहाँ शायद ही कोई अध्यापक, चिकित्सक, लेखक अथवा अन्य शिक्षित लोग बचे रह गये। अतः कम्बोडिया को स्वयं सम्भलने और निर्धनता पर काबू पाने में अधिक समय लग रहा है।

सड़कें इतनी भरी हुयी थीं कि कहीं पर भी जाना बहुत मुश्किल था। सैनिकों ने उनको खदेड़ दिया, बाहर और बाहर। कुछ गड़बड़ थी।

हमको दूर गोलियों की आवाज़ें सुनायी दे रही थीं। जो भी पीछे मुड़ने की कोशिश करता था उसे गोली मार दी जाती थी।

कुछ दिनों तक पैदल चलने के बाद, हमको एक बड़े फार्म पर रुकने दिया गया। हमको काले कपड़े और कार के टायरों से बने जूते दिये गये। यह वो पोशाक थी जो खमेर राउज चाहता था कि हर कोई पहने। खमेर राउज उस सशस्त्र समूह का नाम था जिसने कम्बोडिया पर कब्ज़ा कर लिया था। फायमीन की माँ बहुत सजग थी। उसने सुन रखा था कि उन्हें शिक्षित लोग नहीं अच्छे लगते हैं। फायमीन की माँ केवल शिक्षित ही नहीं थी, बल्कि फ्रांस के विश्वविद्यालय में भी जा चुकी थी। किसी को इसका पता नहीं चलना चाहिए था।

इसलिए उसने झूठ बोला। उसने कहा कि वो पढ़ नहीं सकती, और यह कि वो एक फार्म पर बड़ी हुई है। उसने सैनिकों से मजाक किया, यह कहते हुए कि वो उनके कपड़े ठीक कर सकती थी।

अतः सैनिकों ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया। काले वस्त्रों वाले सैनिकों में से, अनेकों सैनिक केवल दस या बारह वर्ष के ही थे जिनके पास बड़े–बड़े शस्त्र थे। वो फायमीन की माँ को पसन्द करते थे और जब उसने उनसे आग्रह किया कि वो फायमीन और उसकी बड़ी बहन हेन्गलीप को उस कैम्प में न भेजें जहाँ बच्चे अपने अभिभावकों के बिना रहते हैं, तो उन्होने उसको वहीं पर रहने दिया।

सारे रिश्तेदार मारे गये

फायमीन लगभग हमेशा भूखी रहती है। एक ही बार, थोड़ी देर के लिये उसे लगा कि उसका पेट भरा गया है जब उसकी माँ ने नदी में से एक मछली पकड़ी और रात्रि के मध्य

फायमीन एवं पी.आई.ओ. (पीपुल इम्प्रूवमेन्ट ऑर्गनाईज़ेशन') यह चाहते हैं

- बच्चों के सपने साकार करने में उनकी सहायता करें: कूड़ के ढेर पर काम करने वाले अनेकों बच्चों को अपने भविष्य पर भरोसा नहीं है। स्कूल में, फायमीन और अध्यापक, बच्चों को प्रो. त्साहित करते हैं कि वे सपने देखें और उनकी रुचियों का विकास हो।
- बच्चों को आशा दें: बच्चों की प्रगति को देख कर और उनके लिए अवक. ाशों को उपलब्ध कराएँ जिससे वे अपने कौशलों का प्रदशन कर सकें। फायमीन और अध्यापक यह दर्शाते हैं कि बच्चों की परिस्थितियाँ बदल सकती हैं।
- बच्चों को ऐसा प्यार दें जिस पर वो विश्वास कर सकें: फायमीन एवं पी.आ. ई.ओ. बच्चों के संपर्क में रहते हैं। ''वे मेरे बच्चों की तरह हैं,'' फायमीन कहती है। ''मैं उनको सफल और खुश देखना चाहती हूँ।''

पी.आई.ओ. द्वारा बच्चों के लिए किये गये कार्य

- पुराने कचड़े के ढेर और फ्नॉम पेन्ह की झुग्गी झोपड़ियों में तीन स्कूल।
- खमेर भाषा एवं अंग्रेजी भाषा में शिक्षा, भाषाओं एवं कम्प्यूटर पर केन्द्रित रहते हुए।
- एक बाल गृह, जहाँ अनाथ एवं लावारिस बच्चे एक सुरक्षित वातावरण में बड़े हो सकें।
- परिवारों के लिए सर्मथन जिससे वे अपने बच्चों, विशेषतः बेटियों, को स्कूल भेज सकें।
- स्कूल में सभी बच्चों के लिए तथा उस क्षेत्र के बच्चों एवं वयस्कों के लिए स्वच्छ पानी।
- किशोरों के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण, उदाहरणतः बाल काटने में अथवा कपड़े सिलने में।
- नर्सों, डॉक्टरों एवं दन्त चिकित्सकों की उपलब्धि।

सभी बच्चे जिनसे फायमीन कचड़े के ढेर पर मिलती है स्कूल जाने के लिये तरसते हैं।

में पलंगों में से एक के नीचे छिपी आग में पका कर उसे दी।

एक दिन, उसकी माँ उदास लगी और उसकी आँखें खाली–खाली दिखीं। तभी उसे पता चला था कि उसके ग्यारह भाई–बहन, जो कि डॉक्टर, वकील, पुलिस अधिकार एवं अध्यापक थे, मारे जा चुके हैं। उसके सारे परिवारों को खमेर राउज ने मार डाला।

मृत्यु दण्ड

फायमीन 6 वर्ष की हो गई, लेकिन वो स्कूल जाना नहीं शुरू कर पायी। खमेरे राउज ने सारे स्कूलों और पुस्तकों पर रोक लगा रखी थी। फायमीन का काम था पानी को पम्प करना, और उसके पिता को चिंता रहती थी क्योंकि यह काम उसको थका देता था। वो जिस मोटर साइकिल को शहर से लाये थे, उसका मोटर निकाल दिया और उसको एक पम्प में परिवर्तित कर दिया। वो सारे फार्म को पानी उपलब्ध कराता था, और हर कोई फायमीन के पिता के इतने कौशलपूर्ण मैकेनिक होने की प्रशंसा करता था।

लेकिन गाँव के नेताओं में से एक को उनसे ईष्या होती थी। उसे फायमीन के पिता की बड़ाई किया जाना अच्छा नहीं लगता था, और इससे भी कि उसका परिवार नहीं बिखरा था। वो सबसे बड़े नेता के पास गया और उसको बताता कि फायमीन के पिता ने एक मुर्गे को मार कर खा लिया। यह एक घोर अपराध समझा जाता था क्योंकि वहाँ भोजन की बहुत कमी थी।

सैनिक फायमीन के पिता को उसके घर से घसीट कर लाये। फायमीन अपनी माँ की तीव्र आँखों में एक झलक देखते ही समझ गई कि यह एक बड़ी समस्या हो गई है। सैनिक उसके पिता को प्रताड़ित करते रहे जब तक उन्होने यह मान नहीं लिया कि उन्होंने मुर्गा खाया था, जो कि झूठ था।

इस अपराध की सज़ा मौत थी। केवल फायमीन के पिता के लिए ही नहीं, बल्कि उसकी माँ, उसकी बड़ी बहन, और स्वयं फायमीन के लिए भी।

सैनिकों ने उनको नहीं मारा। लेकिन उनका भय बना रहा, पहले से बहुत अधिक।

वियतनामियों का आगमन

एक दिन, जब फायमीन आठ वर्ष की हुई, तो उसको दूर बमों की आवाज़ें सुनायीं दी। वियतनामी लोग आ रहे थे।

''जल्दी करो!'' उसकी माँ ने कहा, उसको बगीचे के एक कोने में ढकेलते हुए। ''यहाँ पर जमीन के

नीचे एक कमरा है, जिसमें भोजन और कम्बल हैं।'' फायमीन ने इसे पहले नहीं देखा था। उसकी माँ ने छिप कर उसको खोदा था और उस पर एक बांस का दरवाजा बुन कर लगा रखा था जिससे वो बगीचे की हरियाली में लुप्त हो जाये। वो एक सप्ताह तक उस कमरे में सोये।

जब वियतनामी सैनिक आये, तो फायमीन के पिता बाहर निकले। वो वियतनामी भाषा बोलता थे। वो वियतनामी सेना के अनुवादक बन गये, और उनको अपने सारे परिवार को वापस घर लाने के लिए एक टैंक में यात्रा करने को मिल गई। जैसे वो चलने लगे, फायमीन ने अपना सिर पीछे हिलाया और जोर से कहा, ''हमारे पास एक कार है! हम घर जा रहे हैं!''

अन्त में स्कूल जाना

अन्त में, नौ वर्ष की आयु में, फायमीन ने स्कूल जाना शुरू कर दिया। वो दुनियाँ भर की सारी पुस्तकें पढ़ना चाहती थी, और जल्द ही कक्षा 2 से कक्षा 4 और फिर कक्षा 7 में चढ़ गई।

वियतनामी नेता ने फायमीन के पिता को फ्रांस का मेयर बना दिया, लेकिन उसकी माँ को नहीं लगा कि उन्हें उनके आदेशों का पालन करना चाहिए। हत्याएँ जारी रही – लेकिन अब सब कुछ उसके पिता के नियन्त्रण में था।

''तुम्हें यह सब रोक देना चाहिए। मैं उस आदमी के साथ नहीं रह सकती जो अपने साथ के लोगों को उनकी मृत्यु के लिए उन्हें भेज दिया करता हो,'' उसकी माँ ने कहा।

लेकिन उसके पिता अपनी नौकरी नहीं छोड़ना चाहते थे। इसके बजाए उन्होंने अपने परिवार को ही छोड़ दिया।

माँ बीमार हो गई

परिवार ठीक से रहते रहा। उसके पास एक मोटर साइकिल, एक कपड़ा सिलने की मशीन, दो साइकिलें, एक घर एवं फर्नीचर था। लेकिन जब फायमीन 13 वर्ष की हुई, तो सब कुछ फिर से बदल गया। उसकी बहन हेन्गलीप, एक नवजात पुत्री, मालिदा, का जन्म देकर, थाईलैण्ड भाग निकली। भागते समय, जंगल की कठिन यात्रा में भी उसकी पुत्री जीवित बची गई।

ठीक उसके बाद, फायमीन की माँ गम्भीर रूप से बीमार हो गई। यद्यपि अनेकों वर्ष बीत गये, फिर भी कम्बोडिया में कोई चिकित्सक नहीं था। खमेर राउज ने सभी चिकित्सकों को मार डाला था, और उन सब अध्यापकों को भी जो नए चिकित्सकों को प्रशिक्षण दे सकते थे।

फायमीन को अपनी माँ और भतीजी की देखभाल करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ा। एक के बाद एक, उन लोगों ने अपनी सारी वस्तुएँ फेंक दीं।

''तुम को स्कूल जाना है,'' उसकी माँ ने एक कमजोर आवाज में कहा।

लेकिन फायमीन उसको छोड़ कर नहीं जाना चाहती थी, स्कूल भी नहीं, जो उसको प्रिय था।

''हाँ,'' उसकी माँ ने कहा, ''तुम्हें शिक्षा प्राप्त करनी है। ज्ञान एक बेहतर ज़िन्दगी की कुँजी है। धन एवं वस्तुएँ – लोग तुमसे छीन सकते हैं। लेकिन कोई तुम्हारा ज्ञान नहीं ले सकता।''

हर संध्या, फायमीन अपनी माँ को कस कर पकड़ लेती थी। एक संध्या, उसकी माँ ने उससे फुसफुसायाः

''अपने सपनों को कस कर पकड़े रहो, फायमीन। तुम जो भी करने के लिए बाहर निकलोगी उसके लिए तुम सक्षम हो।''

फिर उसकी माँ मर गई।

अपनी भाँजी के साथ अकेली

अब फायमीन घर में अकेली है। वो अनेकों भयानक अनुभवों से गुजर चुकी है, लेकिन वो पहले कभी अपनी ज़िन्दगी में इतनी भयभीत नहीं हुई। जो भी फायमीन के पास बचा है वो

कूड़े के ढेर से मिली वस्तुओं को बेचने के लिए छांटा जाता है।

स्कूल बन जाता है जुल्म का कक्ष

खमेर राउज एक नये समाज का निर्माण करना चाहता था और उन सभी चीजों का सफाया करना चाहता था जो उनको गलत लगती थी। इसी लिए उन्होंने देश में सारे स्कूल बन्द करा दिये, जिससे कोई भी जना ऐसी चीज न सीख सके जो खमेर राउज को अच्छी नहीं लगती। लगभग सभी शिक्षित वयस्कों को मार दिया गया।

राजधानी वाले शहर फ्नॉम पेन्ह के चाओपॉनहिया यैट हाई स्कूल का बड़ा बुरा इतिहास रहा है, क्योंकि उसको बन्दियों से दुर्व्यवहार करने के लिए एक जेल में बदला गया था। उसकी कक्षाएँ कैदियों की कोठरियाँ बन गयी थीं। जिन लोगों को अपराधों के लिए पकड़ा जाता था उन्हें वहाँ रखा जाता था।

अक्सर पूरे परिवारों को बन्दी बना दिया जाता था, यहाँ तक कि बच्चे भी। बन्दियों को यह नहीं पता होता था कि उन्हें वहाँ क्यों रखा गया है, किन्तु उनके साथ तब तक दुर्व्यवहार किया जाता था जब तक कि वे उस अपराध को कुबूल नहीं देते थे जिसका इल्ज़ाम उन पर लगाया जाता था। एक बार वो कुबूल देते थे फिर उनको मृत्यु दण्ड दिया जाता था। लगभग सभी 17,000 बच्चे एवं वयस्क जो उस स्कूल में बन्दी बनाये गये थे, को मार डाला गया।

अब वो स्कूल एक संग्रहालय है जिसमें वो भयानक घटनाओं का स्मरण है जो वहाँ घटी थीं। उन कमरों में से एक कमरा फिर से कक्षा बन गया है। कम्बोडिया एवं सारे विश्व से लोग यहाँ यह सीखने के लिए आते हैं कि कैसे इन भयानक घटनाओं को दोबारा न होने दिया जाए।

शिक्षा आवश्यक है!

एक बड़ा पीला स्कूल बनाना चाहती है

''मुझे लगता है कि गणित महत्वपूर्ण है, विशेषतः गुणा करना। जब मैं इंजीनियर बनूँगी तब बच्चों के लिए एक बड़ा पीला स्कूल बनाऊँगी।''

सोखगिम, 13

विश्व के सभी लोगों से बात करना चाहती है

''अंग्रेज़ी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे मैं विश्व भर के लोगों से बात कर सकती हूँ। मैं अंग्रेजी की किताबें पढ़ना चाहती हूँ और कम्प्यूटर द्वारा अपने मित्रों को संदेश भेजना चाहती हूँ।''

सोमाली, 14

पी.आई.ओ. के स्कूल में बच्चे।

पी.आई.ओ. स्कूल के खाना खाने वाले कमरे में बच्चों के साथ, जहाँ सब को दोपहर का भोजन मिलता है।

उस घर की चार दीवारें हैं, और एक साइकिल। हर सुबह सवेरा होने से पहले वो बगीचे से पानी बटोरती है और एक टंकी में डाल देती है। जब वो भर जाती है, तब वो उस पानी को पेय जल की तरह बेच देती है। फायमीन को एक सचिव की नौकरी मिल जाती है। वो ज्यादा धन नहीं कमाती, लेकिन उसको अनुमति मिल जाती है कि वो अपने काम में अपने साथ अपनी दो वर्षीय भतीजी को ला सके, जहाँ पर उसको सारे दिन मेज पर बैठना होता है।

काम करने के बाद फायमीन साइकिल द्वारा एक संध्या वाले विद्यालय में जाया करती है और जब वो स्कूल समाप्त हो जाता है तब वो अन्धेरे में साइकिल से घर वापस आती है। जब वो घर पहुँचते हैं, तब फायमीन चावल पकाती है और अपनी भतीजी को पलंग में लिटा देती है। फिर वो अपनी तीसरी नौकरी शुरू करती है – कहानी की पुस्तकों को हाथ से उतारती है, एक–एक अक्षर। वहाँ पर कोई फोटो कापी की मशीनें नहीं हैं, पर एक प्रकाशक है जिसको फायमीन की साफ लेखी पसन्द आती है। वो देर रात तक काम करती है।

फायमीन अनेकों वर्षों तक संघर्ष करती है। वो शिक्षा प्राप्त करने में सफल होती है और अपनी बहन को फिर से ढूँढ लेती है, जिससे उसकी भतीजी को उसकी माँ वापस मिल जाती है।

फायमीन को संयुक्त राष्ट्र के लिए काम करने की नौकरी मिल जाती है, और वो कम्बोडिया में हो रहे पहले स्वतंत्र चुनावों में सहायता करती है। वो कम्बोडिया के राजधानी वाले शहर, फ्नॉन पेन्ह में रहने के लिए चली जाती है, और एक कार्यालय

बच्चे फायमीन के स्कूल में हर रोज़ सुबह जाना पसन्द करते हैं।

पी.आई.ओ. का इतिहास पेन्ट करना चाहता हूँ

''मुझे परिदृष्य और जानवरों, खासतौर से खरगोशों, को पेन्ट करना पसन्द है। जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तब मैं एक कलाकार बनना चाहूँगा। मैं पी.आई.ओ. के इतिहास को पेन्ट करूँगा। *पिच, 13*

खमेर और कम्प्यूटर महत्वपूर्ण हैं

''खमेर भाषा मेरे लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि मैं उद्योग में काम करना चाहती हूँ। अतः मेरे लिए यह आवश्यक है कि मैं कम्प्यूटर पर पढ़ सकूँ और काम कर सकूँ। *ककाडा, 11*

दूसरे ग्रह पर उड़ कर जाना चाहता हूँ

''सीखने के लिए कम्प्यूटर सबसे महत्वपूर्ण चीज है। मैं एक विमान चालक बनना चाहता हूँ और उसका कॉकपिट एक विशाल कम्प्यूटर की तरह होता है। या फिर मैं एक अंतरिक्ष यात्री बनना चाहूँगा और किसी दूसरे ग्रह पर उड़कर जाना चाहूँगा। *कुन, 12*

में काम करती है, एक कार खरीदती है और उसके बैंक में पैसा होता है। अचानक, उसकी ज़िन्दगी सीधी हो जाती है।

मुर्गे की टाँगों के लिए लड़ना

एक दिन फायमीन दोपहर के भोजन में मीकॉन्ग नदी के तट पर एक भुना हुआ मुर्गा खा रही है। वो मुर्गे की टाँगों को एक कचड़े के ढेर में फेंकती है, और एकाएक पाँच बच्चे निकल आते हैं। वो उस पर लड़ते हैं और एक–दूसरे को पंजे मारते हैं जिससे उनको मुर्गे के शेष मिल जाए। यह देख कर फायमीन प्रभावित हो जाती है।

''रुको, रुको!'' वो चिल्लाती है। ''रुक जाओ! मैं तुम्हारे लिए नया मुर्गा खरीद दूँगी, आओ बैठो।''

जैसे बच्चे उसे खाते हैं, वो उसे बताते हैं कि वो एक ग्रामीण क्षेत्र से आये हैं, क्योंकि उनके अभिभावक काम ढूँढ रहे थे। लेकिन उनको केवल कचड़े के ढेर पर कचड़ा उठाने का ही काम मिल सका, और वो यहीं पर रहते हैं। वो बताते हैं कि वो कैसे स्वयं को जीवित रखने के लिए हर रोज संघर्ष करते हैं।

''मैं तुम्हारी सहायता कैसे कर सकती हूँ?'' फायमीन पूछती है।

''मैं बस स्कूल जाना चाहता हूँ,'' लड़कों में से एक कहता है।

जब फायमीन बच्चों को छोड़कर जाती है, तो उसका मन अशान्त हो जाता है। वो उस कचड़े के ढेर वाले बच्चों के बारे में सोचती रहती है। वो लड़ा करते हैं, उनको कोई सहायता नहीं मिलती, ठीक उसी प्रकार जैसे उसके साथ होता था।

अगले दिन, फायमीन फ्नॉम पेन्ह के सबसे बड़े कचड़े के ढेर पर जाती है जो एक पहाड़ जैसा ऊँचा

औद्योगिक प्रशिक्षण

जैसे बच्चे बड़े होते हैं, कुछ बच्चे पढ़ते रहना चाहते हैं और अन्य बच्चे चाहते हैं कि वे कोई कौशल सीखें। पी.आई.ओ. विद्यार्थियों को अवसर देता है कि वो बाल काटने एवं कलाकारों का मेकअप करना सीखें। सीता, 14 तथा स्रेचपिच, 15, भविष्य में अपना स्वयं का सैलून खोलना चाहती हैं, और स्रेचपिच एक फैशन डिज़ाइनर बनना चाहती है।

फायमीन की हरी स्कूल की इमारत पहले वाले कचड़े के ढेर के पास है, जहाँ पर अब बच्चे खेलते हैं और बकरियाँ चरती हैं।

अब सन् 2002 है और फाइमीन पहली बार लड़कियों से मिलने जाती है।

है। वहाँ वो बच्चों और अभिभावकों से मिलती है, उन तिरपाल की छतों को देखती है जिनके नीचे वो रहते हैं, उन कचड़े के ट्रकों को देखती है जो वहाँ पर चलते चले जाते हैं बिना उन बच्चों की परवाह किये जो उनके रास्ते में होते हैं। वो उनके खुले जख्मों को देखती है जो कभी नहीं भर पायेंगे। हर जगह गन्ध आ रही है। फायमीन को लगता कि वहाँ पर आना नरक में आने जैसा है,

वो अपनी नौकरी छोड़ देती है, बैंक से अपना सारा पैसा निकाल लेती है, और कचड़े के ढेर पर अपना काम करना शुरू कर देती है। अधिकतर बच्चे स्कूल जाने के लिए बेताब हैं, लेकिन उनके अभिभावकों को पक्का नहीं पता कि वो उन्हें भेजें या नहीं। बच्चों को अपने परिवारों का खर्चा सहन करने में सहायता करनी पड़ती है, नहीं तो उनके परिवार भूखे रह जाएँगे।

पहले दिन, 25 बच्चे फायमीन के स्कूल में आते हैं। फिर अधिक और अधिक। फायमीन पहले उस नल को जोड़ देती है जो कचड़े वाले ढेर में साफ पानी पहुँचाता है। उन्हें भोजन और अध्यापकों की आवश्यकता भी

है।

फायमीन हर रोज कचड़े के ढेर पर जाती है। वो उन बच्चों की अध्यापक, नेता, पहरेदार, सलाहकार है – वो उनके लिए सब कुछ है। धीरे–धीरे, स्कूल स्थापित हो जाता है। उसमें और अधिक बच्चे एवं अध्यापक हो जाते हैं, और दो वर्षों बाद, फायमीन एक और स्कूल खोल देती है।

कभी हार नहीं मानना!

तेरह वर्ष बीत चुके हैं जब से फायमीन ने अपनी संस्था शुरू की थी। अब यहाँ उसके तीन स्कूल हैं और अनाथ एवं लावारिस बच्चों के लिए एक बाल गृह। उसकी संस्था कचड़े वाले ढेर के परिवारों एवं समुदायों की भी सहायता करती है।

''कभी हार नहीं मानो! इसी तरह मैं सोचती हूँ और यही मैं स्कूल के बच्चों से भी कहती हूँ। उनकी ज़िन्दगी बड़ी कठिन होती है। उन पर गिरोहों एवं ड्रग्स का खतरा बना रहता है। फिर भी हम उनके लिए संघर्ष करते हैं और उनकी सहायता करते हैं जिससे वो अपने सपनों को साकार कर सकें। अगर मैं सफल हो सकती हूँ, तो वो भी सफल हो सकते हैं। और हम वो सब कुछ प्राप्त करने में सक्षम हैं जिसके लिए हम निकल पड़ें हैं!''

होर फायमीन से अपने सपनों के बारे में बात करता है।

उनके सपनों के लिए लड़ना

फायमीन के बहुत से सपने थे जब वो छोटी थी। वो सपना देखती थी कि वो अंग्रेजी बोलेगी, एक हवाई जहाज़ में उड़ेगी, और उन बच्चों की सहायता करेगी जिनकी कठिन ज़िन्दगियाँ थीं। अब वो अंग्रेजी में बोल सकती है और वो हवाई जहाज़ों एवं हेलीकाप्टरों में उड़ चुकी है। और उसने हजारों बच्चों को एक बेहतर ज़िन्दगी बिताने में सहायता की है।

अब उसका सपना है कि वो एक और स्कूल बनाए और कुछ बसें उपलब्ध कराये जिससे वो अपने स्कूलों में बच्चों को अन्य क्षेत्रों से पहुँचा सके। इसके बाद, उसका एक और सपना है कि वो विश्वविद्यालय में एक डॉक्ट्रेट की डिग्री प्राप्त करने के लिए पढ़े।

''लेकिन विश्वविद्यालय को तब तक रुकना पड़ेगा जब तक मैं सेवानिवृत्त नहीं हो जाती!'' वो कहती है।

तुम्हारा सपना क्या है?

''मैंने कचड़े के ढेर पर तब से काम किया है जब मैं नौ वर्ष का था,'' होर, 16 कहता है, जो नए कचड़े के ढेर पर काम करता है। ''मैंने बहुत सारे बच्चों को कचडे के ढेर में ज़िन्दा दबे हुए देखा है। यह मेरे दो मित्रों के साथ हुआ था जब हम मिल कर काम करते थे। मैं आखिरी समय पर बच निकलने में कामयाब हुआ, किन्तु वो दोनों कचड़े में दबे रह गये। जब हमने उनको ढूँढा तब उनमें से एक ही जीवित था।''

''यहाँ पर काम करने के बजाए तुम क्या करना चाहोगे?'' फायमीन पूछती है।

''मुझे यहाँ पर काम करना है,'' होर कहता है। ''मैं लिख नहीं सकता, और मैंने कोई और कौशल नहीं सीखा, इसलिए मैं सपने नहीं देख सकता। मेरा कोई सपना नहीं है।''

''क्या? तुम्हें कोई सपना अवश्य देखना होगा!'' फायमीन अचम्भित होकर कहती है। वे भविष्य के सपनों के बारे में बात करते हैं और अन्त में होर हंस कर कहता है:

''अच्छा, अच्छा! मैं मोटर साइकिलों की मरम्मत सीखना चाहता हूँ। एसा करके मैं अच्छा पैसा कमा सकता हूँ। वास्तव में मैं कुछ सीखना चाहता हूँ!''

स्कूल जाने के सपने सच हो गये

छोटी बहनें
किएन एवं फल्ली अपने चाचा की शादी पर अपने गाँव वाले घर में।

बड़ी बहनें
छोटी बहन फल्ली और किएन दोनों कचड़े के ढेर पर काम करती थीं और स्कूल जाने के सपने देखती थीं।

किएन अपना बोरा भरती है, प्लास्टिक के टुकड़ों से एक के बाद एक। वो कचड़े के ढेर में गहरे गड्ढो में से एक के तले में खड़ी होती है। अचानक उसको एक मोटर के चलने की तेज़ आवाज़ सुनाई देती है और यह ध्वनि केवल एक ही बात का संकेत हो सकती हैः गिरता हुआ कचड़ा! किएन स्वयं को बटोरती है और जैसे तैसे उस कचड़े के पहाड़ से अपने को बचाती है जिसका गिरना ट्रैक्टर द्वारा शुरू हुआ है, जो उस गड्ढे को भर देता है जिसमें वो खड़ी थी।

कुछ वर्षों बाद, जब किएन आठ वर्ष की होती है, तब वो और उसकी छोटी बहन फल्ली दक्षिण कम्बोडिया में स्थित अपने गाँव वाले घर को छोड़ कर चले जाते हैं। वो अपने माता–पिता से गुड बाई कहते हैं और अपनी दादी के साथ एक मिनी बस में घुस जाते हैं। 3 घन्टे बाद वो अपनी मंजिल पर पहुँच जाते हैं: राजधानी वाले शहर फ्नॉम पेन्ह, के 'स्टंग मीन छे' नामक कचड़े वाले ढेर पर, जहाँ पर वो सुबह से रात तक काम करेंगे, सप्ताह के हर रोज।
कचड़े का ढेर एक खतरनाक कार्यस्थल है। किएन और फल्ली जल्द ही समझ

लड़कियाँ अपने दोनो पैरों पर खड़ी हैं!

''कम्बोडिया में अभी भी साधारण बात है कि लड़कियाँ स्कूल नहीं जा पातीं, क्योंकि उनके परिवार वाले यह सोचते हैं कि उनको इसकी आवश्यकता नहीं है। आखिर, लड़कियों से उम्मीद की जाती है कि उनकी शादी हो जाएगी और उनका एक पति होगा जो उनकी जिम्मेदारी लेगा। पति स्वतः सब कुछ देख लेगा। लेकिन मुझे लगता है कि यह गलत है। शिक्षा के ज़रिये अधिक लोगों को यह बात समझ में आ जाएगी कि महिलाएँ भी अपने क्षेत्र अथवा परिवार का नेतृत्व कर सकती हैं। यदि एक औरत एक पुरुष के सहारे अपना गुज़ारा करती है, तो वो अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो सकती अगर वो गायब हो जाता है। इसी लिए मैं लड़कियों को अपने स्वयं के दो पैरों पर खडा होना सिखाना चाहती हूँ। और अपने सपनों को साकार करना!'' फायमीन कहती है।

लड़कियों पर ध्यान देना

फायमीन की संस्था पी.आई.ओ. दोनो लड़कों एवं लड़कियों की सहायता करती है। लेकिन फायमीन नाउन को पता है कि लड़कियाँ अधिक असुरक्षित होती है, उनके दोनो बाहर एवं परिवार के भीतर जोखिम में पड़ने की आशंका रहती है। उनको अक्सर अपना स्कूल जाना जल्दी छोड़ना पड़ जाता है और अपने माता–पिता के साथ काम करना पड़ता है। उनको अक्सर घर पर अधिक काम करना पड़ता है अतः उनके पास स्कूल का गृहकार्य एवं विश्राम करने के लिए कम समय बचता है। फलस्वरूप, प्रायः लड़कियों को ही स्कूल से अतिरिक्त सहायता मिलती है, उदाहरण के लिए, हर महीने अपने परिवार के लिए चावल। अभिभावकों को चाहिए कि वो एक समझौते पर हस्ताक्षर करें, जिसमें वो वचन दें कि वे अपनी पुत्री को पढ़ने में सहायता करेंगे और यह कि उसे संध्या अथवा रात्रि के समय काम नहीं करना पड़ेगा।

TEXT: JOHANNA HALLIN & EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: ALEXANDRA ELLIS

जाते हैं कि उन बच्चों का क्या होता है जो गिरते हुए कचड़े के ढेरों से बच नहीं पाते। पहली बार जब किएन उसको देखती है, तब वो एक लड़के से कुछ मीटर की दूरी पर है जो कि कचड़े के ढेर के और पास खड़ा हुआ है। ट्रैक्टर का चालक जो कचड़े के ढेर के टीले पर है उनको देख नहीं पाता, और सीधे लड़के के ऊपर कचड़ा डाल देता है।

किएन और हर कोई जो लड़के को कचड़े के अन्दर गायब होते देखते हैं, एक दूसरे को शोर मचाकर कहते हैं। वयस्क एवं बच्चे जल्द ही मिल कर उसको बाहर निकालने में लग जाते हैं। जब लड़का बाहर निकलता है, तब किएन देखती है कि वो कितना भयभीत है। लेकिन अगले दिन ही वो वापस कचड़े के ढेर पर आ जाता है और काम करने लगता है जैसे मानो कुछ न हुआ हो। किएन को पता है कि यदि लड़के को भोजन चाहिए तो उसके पास और कोई विकल्प नहीं है।

एक और समय, एक लड़का कचड़े के अन्दर गायब हो जाता है और केवल बच्चे ही उसको देख पाते हैं। वे मदद के लिए चिल्लाते हैं, और अन्त में जब तक एक वयस्क उसकी सहायता करने के लिए आता है, तब तक उस लड़के को बाहर निकालने में बहुत देर हो जाती है। बाद में, किएन को पता चलता है कि वो मर गया था।

बोरे में बच्चा

किएन क्षेत्रकों से दूर रहने की कोशिश करती है और वो जलते हुए कचड़े के ढेर के पास लोहा तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुएं ढूँढ़ने जाती हैं। लेकिन यहाँ पर और भी खतरे हैं। आग में बोतले फट सकती हैं, जो काँच के टुकड़ों को उड़ता हुआ फेंकती हैं। केवल कचड़े के ढेर के ऊपर चलना ही तुम्हारे लिए अपनी जिन्दगी को खतरे में डालना है। किएन अक्सर कमर तक की गहराई के गड्ढों में गिर जाती है जो कचड़े

सर्वप्रिय

लिली नामक कंगारू, उसका नाम एक स्वयंसेवक के नाम पर रखा गया है जो पी.आई.ओ. में काम करता है।

Kean, 14

सबसे अच्छा क्षणः जब मेरी दादी ने कहा कि हम स्कूल जाना शुरू कर सकते हैं।
सबसे बुरा क्षणः जब उसने कहा कि हमें स्कूल जाना बन्द करना होगा।
गर्व महसूस करती हैः जब मैं किसी को कोई बात सिखा पाती हूँ।
प्रिय हैः कढ़ाई एवं नृत्य करना।
डरती हूँः कचड़े के ढेर के उस भाग से जहाँ अधिकतर लोग मर चुके हैं – वहाँ पर भूत हो सकते हैं।

किएन और फल्ली स्कूल में दोपहर का भोजन करती हैं। जब वो कचड़े के ढेर पर काम करती थीं तब वो अक्सर भूखी रहती थीं, और खासतौर से फल्ली को भूखा रहने पर बहुत गुस्सा आता है।

फल्ली की पहली मित्र

जब वो बाल गृह पर पहुँचे थे, तब फल्ली के पहली नयी मित्र जो बनी थी उसका नाम था लीक। ''उसने मेरा हाथ पकड़ा और मेरा नाम पूछा जब हम एक खेल खेलने वाले थे जिसको 'बिल्ली पकड़े चूहा' कहते हैं। हर कोई एक घेरे में खड़ा हो जाता है और उसमें दो टीमें होती हैं। दो लोगों को 'कैंची, कागज़, पत्थर' करने के लिए चुना जाता है । हारने वाला चूहा बन जाता है और जीतने वाला बिल्ली। चूहा घेरे के बाहर भागता है और बिल्ली उसका पीछा करती है। चूहे वाली टीम के लोग बिल्ली को घेरे से बाहर निकलने से रोकते हैं।''

Phally, 13

उत्सुक हैः बर्फ के बारे में।
याद आती हैः अपनी दादी की, जो अब मर चुकी है।
खुश हैः इस बात से कि वो स्कूल जा पाती है।
प्रिय हैः नये लोगों से बातें करना।
सर्वप्रिय रंगः पीला।

के बीच में बन जाते हैं। उनको जान पाना असम्भव होता है। क्योंकि सतह पर तैरते हुए प्लास्टिक के बैग एवं अन्य कचड़ा होता है जिससे उसकी गहराई का पता नहीं चल पाता। जो कोई भी इस तरह के गड्ढे में गिरता है और अन्दर चला जाता है वो फिर कभी नहीं मिलता। किएन और उसकी बहन अपना सारा दिन उस कचड़े को ढूँढ़ने में गँवाते हैं जिसे वे बेच सकते हैं। कभी–कभी वो इतने भूखे होते हैं कि वो उस भोजन को खाते हैं जिसे और लोगों ने फेंक दिया होता है। जो कपड़े वो पहनते हैं वो भी कचड़े में से उनको मिले होते हैं। कभी कभी उनको ठीक–ठाक कपड़े मिल जाते हैं जिनको केवल इसलिए फेंक दिया गया होता है क्योंकि उन पर छोटे निशान पड़े होते हैं। बहनों को इस बात पर क्रोध आता है कि ऐसे धनी व्यक्ति भी हैं जो अच्छे कपड़ों एवं ऐसे भोजन को फेंक देते हैं जिसे खाया जा सके। एक दिन किएन को एक वस्तु दिखती है जो उसे लगता है कि एक अच्छी खोज है। एक ऐसी चीज जिसे वो कभी नहीं भूलेगी। उसने अभी–अभी अपने दिन का काम शुरू किया है जब उसे एक बड़ा काला बोरा मिलता है। उसका पहला विचार होता है कि शायद यह कोई ऐसी वस्तु है जिसे वो बेच सकती है। जब वो उसके और पास जाती है और बोरे को पकड़ती है तब उसे लगता है कि इसमें मीट भरा होगा। वो उसके कांटे को पकड़ती है और बोरे को खोल देती है। जो उसकी आँखो को दिखता है वो उसको लम्बे समय तक याद रहेगा। उस बोरे में एक मरा हुआ बच्चा होता है। किएन जितनी तेज़ी से भाग सकती है, भागती है।

स्कूल वाली महिला

एक दिन, किएन और फल्ली एक और महिला को कचड़े के ढेर के पास चलते हुए देखते हैं, वो उन लोगों को बचाव के मास्क बांट रहे हैं और उनसे बाते कर रहे हैं जो, वहाँ पर काम करते हैं।

किएन और फल्ली दोनों एक–एक मास्क ले लेते हैं और ध्यान से उस महिला को सुनते हैं जो उन्हें एक स्कूल के बारे में बताती है। बच्चों को आमंत्रित किया जाता है कि वो उस महिला के साथ जा कर स्कूल को देखें। फल्ली ने पहले कभी इतना बड़ा स्कूल नहीं देखा है। वहाँ पर हर जगह नये लोग हैं, और फल्ली को डर लगता है। पर जब वो महिला – फायमीन, जो उनको वहाँ पर लाई थी, बताती है कि यह स्कूल सभी बच्चों के लिए निःशुल्क है, तब फल्ली हिम्मत करती है, कि वो दोनों बहने शायद स्कूल जा सकें। बहनें अपनी दादी को स्कूल के बारे में बताती हैं।

''कृपया क्या हम स्कूल जा सकते हैं?''

''नहीं,'' दादी उत्तर देती है। ''जब तक तुम कचड़ा बटोरती रहोगी तब तक हम जीवित रहेंगे वरना हम भूखे मर

आरामदायक लेटने का वातावरण

फल्ली ने रंगीन ऑरीगैमी के फूल बनाये हैं और उनको उस पलंग के ऊपर छत पर लगाया है, जिस पर वो अपनी मित्र के साथ सोती है। बच्चे किसी भी चीज़ से फूल बना सकते हैं। फल्ली का सामान उसके पलंग के पीछे एक ताक पर रखा है – कला का सामान, पुस्तकें, फोटो एवं खिलौने। जब वो और किएन कचड़े के ढेर पर रहते थे तब उनके पास कुछ नहीं था। फल्ली अपना पैसा एक लाल पिगी बैंक में जमा करती है। वो समय–समय पर अतिरिक्त भोजन खरीदने के लिये उसको इस्तेमाल करती रहती है।

हस्त नृत्य
पारम्परिक कम्बोडिया के नृत्य हाथों के चलन से भरे हुए हैं, जिसका अभ्यास वो बहनें करती हैं।

बहनों की मुख्य रुचि नृत्य में है। वे पारम्परिक नृत्य करती हैं और 'हिप हॉप' भी। पी.आई.ओ. में एक नृत्य करने वाला समूह है जिसने मुख्य त्यौहारों पर और टी.वी. पर प्रस्तुतियाँ दी हैं। यह एक धन कमाने का ज़रिया है जो पैसा सीधा स्कूल एवं बाल गृह में जाता है।

जायेंगे।''

फल्ली रोती है और अपनी दादी से बराबर आग्रह करती रहती है:

''मैं अपनी सारी जिन्दगी कचड़े के ढेर पर काम करते हुये नहीं गुजारना चाहती!''

अन्त में, उसकी दादी मान जाती है। लड़कियों को स्कूल जाने की अनुमति मिल जाती है।

हर रोज स्कूल के बाद किएन और फल्ली वापस कचड़ा बटोरने जाते हैं। जब वो रात को अपने घर पर छोटे झोपड़े में पहुँचते हैं, तब वो घर का काम करते हैं जब कि उनकी दादी कचड़े में से सामान बीनती हैं। जब वो पढ़ने के लिए बैठतीं हैं तब उन्हें भय रहता है कि वो अपने पाठों में कक्षा के साथ न चल पायें, अतः वो घर पर अधिक से अधिक पढ़ाई करने की कोशिश करती हैं।

बहनों के दिन लम्बे होते हैं, और हर रोज़ वो थक जाती हैं। लेकिन यह सब वसूल हो जाता है। स्कूल जाना सबसे अच्छी बात है जो उनके साथ हुई है।

भूख हड़ताल

एक दिन जब किएन स्कूल से वापस घर लौटती है, तो उसकी दादी रोज़ की अपेक्षा अधिक बुरी तरह खाँस रही होती है। उसे टी.बी. की बीमारी है और वो बहुत कमज़ोर हो गई है। इसके अतिरिक्त, कचड़े का ढेर बन्द हो रहा है, और जो लोग उससे अपनी कमाई करते थे, वो फ्नॉम पेन्ह की सड़कों पर अकेले पड़े मिलेंगे।

किएन और फल्ली रास्ते भर मिनी बस में रोते जाते हैं। वो केवल यह चाहते हैं कि वो स्कूल में रुक जाएँ लेकिन उनकी दादी उनको अकेला नहीं छोड़ना चाहती।

वापस अपने गाँव वाले घर में, वे हर सवेरे उठते ही एक घन्टा चावल बोने का काम करते हैं। किएन अक्सर रोती है। वो स्कूल के बारे में सोचती है, और जैसे–जैसे दिन बीतते जाते हैं, वैसे–वैसे उसके बहुत से पाठ छूट जाते हैं।

किएन और पल्ली का परिवार उन लड़कियों की नहीं सुनता जब वो बहस और आग्रह करती हैं। फिर वो एक योजना बनाती हैं। वो कोई चीज़ नहीं खायेंगी जब तक उनको फ्नॉम पेन्ह नहीं भेजा जाता – स्कूल में। बहनों की भूख हड़ताल कई दिनों तक चलती है, और अन्त में, वो अपनी बात मनवाने में सफल होती हैं। वो एक–दूसरे का हाथ पकड़ती हैं और खुशी से फूल जाती हैं। वो बहुत भूखी हैं, बहुत भूखी!

अदभुत शैम्पू

वो वापस लम्बी सड़क पर यात्रा करके राजधानी वाले शहर को जाती हैं। उनकी दादी उनके साथ यह देखने के लिए जाती हैं कि वो पी.आई.ओ. के बाल गृह में दाखिल हो सकें।

पहली बार, वो लड़कियाँ अपने बालों को शैम्पू से धो पाती हैं।

''यह इतना अद्भुत है। मैंने कचड़े के ढेर पर इतने समय तक काम किया है, और मुझे हमेशा यह सोचने की आदत पड़ गई है कि मेरे पास से बदबू आती होगी और इसकी चिन्ता रहती है कि लोग सोचते होंगे कि मैं

बाल गृह की लड़कियों के पास आपस में बांटने के लिए एक बड़ा बैग होता है। वे नृत्य की प्रस्तुतियों से पूर्व एक–दूसरे का मेकअप करना सीख जाती हैं। सोमाली ने अन्य लड़कियों को सिखाया है कि इसे कैसे किया जाता है।

किएन एवं फल्ली के कपड़ों की अलमारी

दोनों बहनें एक ही आकार की हैं, और वे बाल गृह के एक संकरे रास्ते में रखी एक छोटी कपड़े की अलमारी को मिल कर इस्तेमाल करती हैं। जब वो कचड़े के ढेर पर काम करती थीं तब उनके पास वही वस्त्र होते थे जो वो पहने रहती थीं। अब उनके पास अनेकों वस्त्र हैं जिनको वो बदल–बदल कर पहन सकती हैं!

नृत्य वाले कपड़े
किएन और फल्ली को नृत्य करना प्रिय है, दोनों हिप हॉप एवं पारम्परिक नृत्य। सबसे प्रचलित नृत्यों में से एक नृत्य को 'रोबम निसात' कहते हैं और वो नदी के किनारे मछली पकड़ने एवं ज़िन्दगी बिताने के बारे में एक पूरी कहानी बताता है।

फल्ली और किएन को लंगड़ी टांग खेलना पसन्द है। बाल गृह के बाहर कंकरीट के फर्श पर एक लंगड़ी टांग

फल्ली और उसकी मित्र पिच स्कूल के दिन के अन्तिम घन्टे में पुस्तकालय से किताबें लेकर पढ़ते हैं। फल्ली को स्कूल जाना प्रिय है। जब उसकी दादी उसको और किएन को वापस अपने गाँव वाले घर में ले गई थी, तब बहनों ने एक भूख हड़ताल की थी जिससे वे वापस राजधानी वाले शहर में आ सकें और स्कूल में लौट आयें।

महक रही हूँ। पर अन्त में, अब मैं बिल. कुल स्वच्छ महसूस कर रही हूँ,'' फल्ली कहती है।

किएन और पल्ली के माता–पिता अब भी उनके गाँव वाले घर में रहते हैं। अप्रैल में, जब कम्बोडिया का नया वर्ष शुरू होता है, तब पहले बहनें घर मिलने के लिए जाती हैं। वो उत्सव को मनाने के लिए अपने माता–पिता की सहायता खाने बनाने और घर की सफाई करने में करती है। खुशहा. लियों के बीच में, एक बच्चों का समूह किएन के पास आता है।

''क्या तुम हमको अंग्रेजी बोलना सिखा सकती हो? और दिखा सकती हो कि कैसे वर्णमाला लिखते हैं?'' वे पूछते हैं।

किएन को बड़ा गर्व होता है। वो इस बात से बड़ी खुश होती है कि वो कुछ पढ़ा सकती है, और यह कि बच्चों को पढ़ने में मजा आता है। उसके माता–पिता देखते हैं जैसे वो बच्चों को दिखाती है कि अक्षरों को कैसे लिखा जाता है। उनके चेहरे गर्व से चमकते हैं।

''मैं सचमुच एक खुश लड़की हूँ अब क्योंकि मुझे स्कूल जाने का अवसर मिला है। यदि मैं पी.आई.ओ. नहीं आई होती तो मुझे यह नहीं पता कि मेरा भविष्य क्या रहा होता,'' किएन कहती है, अपनी कहानी समाप्त करते हुये।

पी.आई.ओ. की यूनीफार्म

स्कूल में, हर कोई वो यूनीफार्म पहनता है जो उसे पी.आई.ओ. से मिली थी। फल्ली इसको हर सुबह पहनती है।

कचड़े के ढेर में पहनने वाले कपड़े

स्रेनॉच के कचड़े के ढेर में पहनने वाले कपड़े। जो बच्चे कचड़े के ढेर पर काम करते हैं वो सदैव उन कपड़ों को पहनना चाहते हैं जो उनको अधिक से अधिक गन्दगी से बचाये रखें। वे चाहते हैं कि लम्बी आस्तीनों वाले टॉप एवं जूते पहनें, लेकिन यह सदैव सम्भव नहीं हो पाता। किएन को अक्सर चोट लग जाती थी जब वो कचड़े के ढेर पर काम करती थी, छोटी आस्तीनों वाला टॉप और बिना जूते पहने।

रोज़ पहनने वाले कपड़े

आम तौर से पैंट और टी–शर्ट्स।

विशेष अवसरो पर पहनने वाले कपड़े

किएन का सर्वप्रिय टॉप एवं जीन्स।

स्कूल की यूनीफार्म

दोपहर में, किएन पास के प्रदेशीय विद्यालय में जाती है, अतः वो वहाँ की यूनीफार्म को पहन लेती है जिसमें उसके स्कूल के टॉप पर दाहिनी ओर स्कूल का बैज लगा है।

किएन और फल्ली दोनों के पास स्वच्छता का सामान है। दाँत मांझने के ब्रश उनको उपहार में एक दन्त चिकित्सक से मिले हैं जो साल में एक बार सभी बच्चों के दाँतों की जाँच करने आता है। पी.आई.ओ. में बच्चे हर रोज़ अनेकों बार शॉवर से नहाते हैं। क्योंकि वो इतने लम्बे समय से बिना स्वच्छ पानी के रहते आये हैं, अतः उनको नहाना–धोना प्रिय है!

कूड़े के ढेर पर आखिरी

तापमान 40 डिग्री है और कचड़े के ढेर पर कोई छाया नहीं है। काँच के नुकीले टुकड़े प्लास्टिक के बैगों के बीच से निकले रहते हैं, और भोजन के टुकड़े मक्खियों के झुण्डों को आकर्षित करते हैं। स्रेनिच कचड़े में से सामान ढूँढने के लिए अपने हुक का प्रयोग करती है। उसको अभी तक नहीं मालूम कि आज उसका कचड़े के ढेर पर आखिरी दिन है...

Srey Nich, 14

सपना है: एक गायक बनने का
पसन्द है: अपने मित्र के बाल बनाना
सुरक्षित महसूस करती है: अपनी दादी माँ के साथ
छिपा हुआ कौशल: बिजली की तेज़ी से कपड़े बदल सकती है
डर लगता है: कचड़े के ढेर पर मशीनों से
क्रोधित होती है: इस बात से कि उसकी माँ उसकी देखभाल नहीं करती हैं।

स्रेनिच अपनी दादी के साथ कचड़े के ढेर के पास खूंटों पर टिके एक साधारण से झोंपड़े में रहती है।

''मैं अपनी माँ से इतनी नाराज़ हूँ कि उन्होंने मुझे छोड़ दिया। मैं उसको हर रोज़ देखती हूँ, लेकिन वो अपने नए पति के साथ रहती है और मेरी देखभाल नहीं करती।''

स्रेनिच जूते पहने है और एक लम्बी आस्तीन का टॉप भी जो उसकी काँच के टुकड़ों, सीरिन्जों, कीलों एवं नुकीली धातुओं से रक्षा करते हैं, लेकिन फिर भी कभी–कभी उसको चोट लग जाती है। वो तपते सूरज से अपने सिर की सुरक्षा करने के लिए टोपी पहनती है।

कचड़े के ढेर का आकार एक खड़ी चट्टान की तरह है। जैसे कचड़े के ढेर को ट्रैक्टरों द्वारा नीचे धकेला जाता है, वो गति पकड़ता है और एक हिमस्खलन की तरह अपने साथ सब कुछ समेटता हुआ नीचे आता है। जब ऐसा होता है तब कोई भी व्यक्ति उस कचड़े के पहाड़ के तले के पास यदि खड़ा होता है तो उसको कुछ ही क्षण स्वयं को कचड़े में दबने से बचाने के लिए मिलते हैं।

स्रेनिच ने तब से कचड़ा बटोरना शुरू किया जब वो दस वर्ष की थी, और अब वो 14 वर्ष की है। उसने लोगों को घायल होते हुये देखा है और मरते हुए भी।

''एक बार मैंने एक लड़के को एक कचड़े के पहाड़ में दबते हुए देखा था। जब तक लोग उस तक पहुँच पाते तब तक वो मर चुका था।''

जब कचड़े वाले ट्रक अपना कचड़ा ढेर पर गिराने के लिए आते हैं, तब खतरा मोल लेने वाले लोग (अक्सर लड़के) दौड़ कर उनके पास पहुँचते हैं। वे कचड़े में से सबसे बहुमूल्य चीज़ों को पाने के लिए जल्दी करते हैं और कभी–कभी उनके बीच हिंसक लड़ाईयाँ छिड़ जाती हैं। सबसे छोटे बच्चे एक सुरक्षित दूरी पर रहते हैं। वे बड़े लोगों से स्वयं की रक्षा नहीं कर सकते, और वे भाग भी नहीं सकते जब ट्रैक्टर कचड़े को खिसकाने के लिए आते हैं। अनेकों बच्चे एवं वयस्क कचड़े के ढेर पर गम्भीर रूप से घायल हो जाते हैं अथवा दुर्घटनाओं में मर जाते हैं।

गरीबों को पढ़ाना चाहती है

''कचड़े के ढेर पर पैदल चलना सचमुच बहुत कठिन होता है। मुझे कभी–कभी उस कांटे से चोट लग जाती है जिसे मैं कचड़ा बटोरने के लिए इस्तेमाल करती हूँ। मैंने अनेकों बार ट्रैक्टरों को बच्चों के ऊपर कचड़ा डालते हुए देखा है। मैं इसके बजाए स्कूल जाना चाहती हूँ। मैं दोनों अंग्रेजी एवं खमेर भाषाओं में पढ़ना और लिखना सीखना चाहती हूँ, और एक अध्यापक बनना चाहती हूँ। मैंने इतने सारे गरीब लोगों को देखा है जिनको शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता है।''

डोइन वियुथ, 13

दिन

एक बार जब वो अपनी डेस्क पर बैठी होती है, तब स्रेनिच को लगने लगता है कि वो सचमुच स्कूल जा सकेगी, और वो मुस्कुराने लगती है।

सपने साकार होते हैं

जब उसका परिवार गाँव वाले घर में रहता था, तब स्रेनिच को स्कूल जाने दिया जाता था। उसका सपना है कि वो अंग्रेजी पढ़ना, लिखना ओर बोलना सीखती रहे। सबसे अधिक वो एक गायक बनना चाहती है। इस विशेष दिन, उसके सपनों में से एक साकार होने जा रहा है।

सूरज लगभग अपनी चरम सीमा पर है जब फायमीन नाउन कचड़े के ढेर पर पहुँचती है। स्रेनिच को इस महिला के बारे में जानने की उत्सुकता है जो कचड़े के ढेर पर बच्चों से स्कूल के बारे में बोलती है। स्रेनिच की दादी को भी जिज्ञासा है। उसने पी.आई.ओ. के बारे में सुना है और देखा है कि बच्चों की ज़िन्दगियाँ वहाँ पर स्कूल जाना शुरू करने से बेहतर हो जाती हैं। उसको पता है कि बच्चों को ज़िन्दगी में अधिक अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं यदि वे स्कूल जाते हैं। स्रेनिच भी वहाँ जाना चाहती है।

''मैं एक शिक्षा प्राप्त करना चाहती हूँ, और मुझे सचमुच चीज़ों को सीखना प्रिय है,'' वो कहती है।

फायमीन के पास बाल गृह में एक पलंग उपलब्ध है, और वो स्रेनिच को स्वीकार करने के लिए मान जाती है। लेकिन उसके परिवार के अन्य सदस्यों को चिन्ता होती है। स्रेनिच की बुआ, काओ इएक, 20 वर्ष की है, उसको डाउन सिन्ड्रोम की बीमारी है, और वो बोल नहीं सकती। डेढ़ साल पहले, उसका यौन शोषण किया गया था और वो गर्भवती हो गयी थी। उसके पास अपने नौ महीने के बच्चे के लिए कोई स्तन का दूध नहीं है और उसे दूध खरीदना पड़ता है। वो उस पैसे को इस्तेमाल करती है जिसे स्रेनिच ने कचड़े के ढेर पर काम करके कमाया था और उससे अपने बच्चे के लिए दूध खरीदती है। अब आगे क्या होगा?

स्रेनिच के दादा भी नहीं चाहते कि वो जाए। वो अपनी घरेलु सहायता को नहीं खोना चाहते, जो उनके लिए सारा गृह कार्य करती है।

लेकिन उसकी दादी ने दृढ़ निश्चय किया है। वो स्रेनिच के दादा और बुआ से कहती है कि अब इस विषय पर और अधिक चर्चा नहीं होगी। स्रेनिच स्कूल जाएगी!

सुरक्षित और खुश

पी.आई.ओ. के स्कूल पर पहुँचने के लिये, स्रेनिच पहली बार कार से यात्रा करेगी। वो गाती और मुस्कुराती है, लेकिन जल्द ही वो यात्रा से थक जाती है।

उसकी दादी मुस्कुराती हैं। उन्होंने अपनी प्यारी पोती के लिए सपना देखा था कि उसे स्कूल जाने का अवसर मिले। पहली रात वो स्रेनिच को वहाँ पर सम्भल. ने एवं सुरक्षित महसूस करने के लिए उसके साथ रुकेंगी।

वे फर्श पर बैठ जाते हैं, और फायमीन उनको अन्य लोगों से मिलाती है जो बाल गृह में रहते हैं। सोमाली, जो लड़कियों के छात्रावास की देखभाल करती है, उसका स्वागत करती है। स्रेनिच कार की यात्रा करके थक गई है, और उसके दिमाग में अनेकों विचार घूम रहे हैं।

''मैं यहाँ पर सुरक्षित महसूस कर रही हूँ, और बहुत खुश हूँ,'' वो कहती है।

''मुझे लगता है कि अपने मित्रों के बाल बनाना मजेदार होता है, और मैंने एक तरीका निकाला है जिससे पुरानी चॉप स्टिकों को काट कर उनको बाल की क्लिपों में बदला जा सके।''

अगले दिन, जब वो अपनी मेज पर अपनी किताबें खोल कर बैठी होती है, और अपने अध्यापक की आवाज़ सुन रही होती है, तो स्रेनिच मुस्कुराती है।

सिर्फ स्कूल जाना चाहती है

''मैं बस यहाँ पर रहना चाहती हूँ। मुझे कभी खेलने को नहीं मिलता क्योंकि मैं हमेशा अपनी माँ की प्रतीक्षा करती रहती हूँ। मैं एक बार्बी डॉल लेना चाहूँगी, लेकिन मेरे पास कुछ नहीं है, सिवाय अपने गहने के। लेकिन मैं उसको बेचना नहीं चाहती। मुझे वो कचड़े के ढेर में मिला था। मैं सिर्फ स्कूल जाना चाहती हूँ। इसी लिए मैं रो रही हूँ। मैं बस वापस अपने गाँव जाना चाहती हूँ और स्कूल जाना चाहती हूँ।''

चीट नैरी, 5

स्रेनिच पी.आई.ओ. के बाल गृह में पहुँची है। यह पहली बार है कि वो किसी जगह अपनी दादी के बिना रहेगी।

TEXT: JOHANNA HALLIN & EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: ALEXANDRA ELLIS

स्कूल जाने और कचड़ा

लैंगेंग, 15, अपनी बहन पिच, 13, अपनी माँ और 17 सम्बन्धियों के साथ पुराने कचड़े वाले ढेर के किनारे एक झोंपड़े में रहता है। उसकी माँ गम्भीर रूप से घायल है, फिर भी वो मेहनत से काम करके यह निश्चित कर लेता है कि उसके परिवार को भोजन मिल जाए। संध्या के समय, लैंगेंग उसके साथ जाता है।

पहले स्थिति और भी खराब थी जब लैंगेंग छोटा था। तब वो स्कूल नहीं जाता था। वो सारे दिन एक कचड़ा उठाने वाले की तरह काम करता था। ''मैं हमेशा भूखा रहता था। मैं उन फलों के अंशों को उठा लेता था जो लोग फेंक देते थे और उन बोतलों की आखिरी बूंदों को भी पी जाता था जो मुझे मिलती थीं।''

लैंगेंग और उसकी बहन ने अन्य बच्चों को स्कूल की यूनीफार्म पहनने और स्कूल बैगों के साथ देखा। वो गिड़गिड़ाये और आग्रह किया, और अन्त में उनको पी.आई.ओ. में जाने की अनुमति मिल गयी।

''फुटबॉल खेलना, स्कूल जाना और मेरे मित्र मुझे खुश रखते हैं। लेकिन जब भी मैं अपनी माँ के बीमार होने के बारे में सोचता हूँ, तबे मुझे सचमुच दुखी होता है। इतना दुख कि मुझे गुस्सा आ जाता है।''

06.00 बजे प्रातः – उठो

लैंगेंग एवं पिच अपने परिवार वाले पलंग में सटे हुये सोते हैं। मच्छरदानी उनको उन मच्छरों से बचाती है जो वहाँ के ग्रीष्म वातावरण में पनपते हैं।

09.30 बजे प्रातः – टी.वी. देखने का अवकाश

अवकाश के समय, लैंगेंग और उसके मित्र स्कूल के किनारे लगे केयास्क पर जाते हैं और वहाँ समाचार देखते हैं।

06.30 बजे प्रातः – साफ सुथरा

हर बुधवार, पाठ शुरू होने से पहले, लैंगेंग कक्षा के फर्श को पोंछता है, जिससे वो निश्चित ही स्वच्छ मिले जब उसके सहपाठी स्कूल की सभा से कक्षा के अन्दर प्रवेश करें।

11.00 बजे प्रातः – तला हुआ भोजन, वाह!

सभी बच्चे स्कूल की छत पर दोपहर का भोजन करते हैं। इस भोजन के बिना, अनेकों बच्चे भूखे रह जाते। लैंगेंग के सर्वप्रिय भोजनों में से एक तली हुई सब्जियाँ है और खाने की मेज के चारों ओर बहुत सारा उल्लास है!

TEXT: JOHANNA HALLIN & EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: ALEXANDRA ELLIS

उठाने का लम्बा दिन

02.15 बजे सायं – बहुत थका, बहुत थका...
लैंगेंग लगभग हर दोपहर को भोजन के अवकाश में नींद की एक झपकी ले लेता है, लेकिन कभी–कभी वो इतना थका होता है कि दोपहर में अंग्रेजी के पाठ के समय सो जाता है। कल रात उसको केवल पांच घन्टे सोने को मिला था, क्योंकि वो देर रात सुबह तक काम कर रहा था।

03.00 बजे सायं – कम्प्यूटरों को चालू करो
दिन का आखिरी पाठ कम्प्यूटरों पर होता है, या फिर पुस्तकालय में।

05.00 बजे सायं – दस मिनट वॉलीबॉल के
स्कूल के बाद लैंगेंग कुछ चावल खाता है और कुछ मिनटों के लिए उसे वॉलीबॉल खेलने का अवसर मिलता है, इसके बाद वो काम में लग जाता है।

प्लास्टिक एवं रबर के जूते
यू.एस. डॉलर 0.10 प्रति किलो

प्लास्टिक की बोतलें
यू.एस. डॉलर 0.20 प्रति किलो

स्ट्रॉ
यू.एस. डॉलर 0.15 प्रति किलो

05.15 बजे सायं – शाम की शिफ्ट शुरू होती है
लैंगेंग अपने कचड़ा उठाने वाले वस्त्रों को पहन लेता है। फिर वो सिटी सेन्टर की ओर जाता है, उस खतरनाक ट्रैफिक से होता हुआ, कचड़ा बटोरने जाता है।

07.00 बजे सायं – काम का कूड़ा
शुरू में, लैंगेंग और उसकी माँ दोनों अपने–अपने काम करने की जगह ढूँढते हैं, लेकिन जब अन्धेरा हो जाता है, तब एक–दूसरे के पास होना ज्यादा सुरक्षित होता है। जल्द ही वे अपने सिर की टार्चों को जला देंगे, जिससे वे देख सकें जो वो ढूँढ रहे हैं। वो गत्ता, विभिन्न प्रकार की प्लास्टिक, कैन एवं अन्य धातु की वस्तुओं को बटोरते हैं, जिन्हें फिर वो एक थोक विक्रेता को बेच देते हैं। हर विक्रेता किसी विशेष प्रकार के कूड़े को रखता है, जिसे वो पुनः नवीनीकरण के लिए एकत्रित करता है।

कार्डबोर्ड
यू.एस. डॉलर 0.10 प्रति किलो

09.00 बजे सायं – अंधेरे में टहलना
अभी भी शाम को सड़कों पर भारी ट्रैफिक है। दुर्घटनाएँ अक्सर होती हैं। इसी संध्या को केवल, लैंगेंग ने शीशे और धातु के टूटने की तीव्र ध्वनि को तीन बार सुना है।

Langeng, 15

प्रिय है: फुटबॉल और वॉलीबॉल – मुझे जब भी समय मिलता है, मैं खेलता हूँ।
सबसे अच्छी बात: यह कि मैं कचड़े पर सबसे पहले पहुँचूँ जिसके जाने के रास्ते में सड़क पर जगह–जगह भोजनालय बने हैं।
सबसे बुरी बात: जब वयस्क सारा पैसा जुए में उड़ा देते हैं।
गुस्सा आता है: जब कोई मेरी माँ के बारे में बिना दया दृष्टि के बोलता है।
बनना चाहता हूँ: एक डॉक्टर।

12.30 बजे प्रातः – सोने से पहले नहाना
जब वो अन्त में घर पहुँचते हैं तब वो अपने कचड़े से भरे हुए ठेले को अपने झोंपड़े के किनारे खड़ा कर देते हैं। अपनी थकान के बावजूद, लैंगेंग नहा लेता है। अन्यथा वो सो नहीं पायेगा क्योंकि उसे सब जगह खुजली मचेगी। अन्य लोगों के रात्रि भोज में से बचे हुये चावलों को खाने के बाद, वो पलंग में सो जाता है।

कॉन्ग अपनी कहानी

स्रे कॉन्ग ने अपने परिवार की ज़िन्दगी को स्टंग मियान्चे के कचड़े वाले ढेर के पास अपने स्कूल की दीवार पर पेन्ट किया है। उसके परिवार के उपनाम, 'सोक' का मतलब होता है खुश रहना, लेकिन उसके दस भाई–बहनों में कभी खुशी नहीं रही है।

स्रे कॉन्ग, 15
"मेरे पास गणित का एक महान अध्यापक है, इस लिए यदि मैं किसी कठिनाई से जूझ रही होती हूँ तो मैं सीधे उससे पूछ सकती हूँ और उसकी सहायता ले सकती हूँ। जब मैं यहाँ पाँच वर्ष पहले आई थी, तब मैं अंग्रेजी का एक शब्द नहीं बोल सकती थी, और मैं न तो कुछ पढ़ सकती थी और न लिख सकती थी। मैं यह सब सीखने के बाद इतनी खुश हूँ। लेकिन मेरी सबसे प्रिय चीज़ पेन्टिंग है!"

सोक परिवार यात्रा करके राजधानी वाले शहर, फ्नॉम पेन्ह गया क्योंकि उनको अपने गाँव वाले घर में पर्याप्त भोजन नहीं मिल सका। उन्होंने राजधानी में एक बेहतर ज़िन्दगी की आशा की थी, लेकिन इसके बजाय वो कचड़े के ढेर पर जा पहुँचे। आज, उन बच्चों में से चार बच्चे पी.आई.ओ के स्कूल में जाते हैं। वहाँ पर, वो अपने सपनों को साकार करने के लिए लड़ते हैं। लेकिन उनका परिवार अब सिकुड़ गया है, और वहाँ पर बहुत दुख भर गया है।
बच्चों की माँ हेपेटाइटिस से बीमार हो गई थी। उसके लिए धीरे–धीरे भोजन करना और कठिन हो गया था और एक दिन जब बच्चे स्कूल से घर पहुँचे तो उनकी माँ जा चुकी थी। वो बिना किसी से गुडबाई कहे अपने गाँव वाले घर में लौट आई थी, और उसके कुछ समय बाद ही वो मर गई।
"मेरी माँ के मरने के बाद हमारे पिता हमारी देखभाल नहीं कर सके, अतः वे हम सबसे छोटे चार बच्चों को बाल गृह ले गये और वहाँ छोड़ दिया," स्रे कॉन्ग बताती है।

दुख और खुशी

कचड़े के ढेर पर काम करना कठिन, खतरनाक होता था और बहुत कम वेतन मिलता था, इस लिए जब मेरी बड़ी बहन फल्ली, को एक कपड़ा बनाने वाले कारखाने में नौकरी मिली, तो सब बहुत खुश हुए। लेकिन एक सुबह, जब वो कचड़े वाले ढेर के किनारे हमारे छोटे से घर से काम पर जाने के लिए निकली, तो उसको एक कूड़े वाले ट्रक ने टक्कर मार दी और वो मर गई। मेरी एक अन्य बहन एक आदमी से मिली। वो साथ–साथ यात्रा करके थाईलैण्ड गए। लेकिन उसको जल्द ही पता लगा कि उस आदमी ने उसको बेवकूफ बना दिया था, और वो उसके साथ बिल्कुल भी नहीं रहना चाहता था। इसके बजाय, उसने उसे एक कोठे में बेच दिया।
"मेरे परिवार के साथ इतनी सारी बुरी बातें हुईं, और कभी–कभी मुझे उनके बारे में सोच कर तकलीफ होती है। उन विचारों एवं यादों का चित्रण करने से मुझे सुकून मिलता है। मेरी बहनें स्रे कॉन्ग और सोमाली को ड्राइंग एवं पेन्टिंग प्रिय है। पी.आई.ओ. में, सारे कौशलों को बढ़ावा दिया जाता है, और बच्चों को वो कौशल सिखाये जाते हैं जिनमें उनकी रुचि होती है। हर रविवार, एक कलाकार बहनों की सहायता करने के लिए आता है जिससे वो अपने कौशलों को विभिन्न सामग्री एवं तकनीकी द्वारा विकसित कर सकें। उन्होंने मुरालों, विशाल पेन्टिंगों को स्कूल की दीवारों पर पेन्ट किया है।

का चित्रण करती है

स्रे कॉन्ग ने स्कूल की सबसे पुरानी इमारत पर पेन्ट किया है। फायमीन बीच में खड़ी है, और उसके चारों ओर कचड़े के ढेर पर, स्रे कॉन्ग ने अपने परिवार एवं मित्रों को पेन्ट किया है।

सोमाली, 16

"मैं पाँचवीं कक्षा तक स्कूल गई थी, अतः मैंने पढ़ने, लिखने और अंग्रेजी के आधार सीख लिए। तब से मैं यहाँ पर बाल गृह में काम करती रही हूँ, छोटी लड़कियों को सहारा देते हुये और औद्योगिक कौशलों को सीखते हुये। मेरी सर्वप्रिय चीज़ पेन्टिंग है। लेकिन मैंने बहुत सारी विभिन्न चीजें सीख ली हैं, जैसे बाल काटना और मेकअप लगाना।"

ब्रॉस पाव, 10

उसके नाम का अर्थ है 'छोटा भाई'। "यदि मेरे पास कम्बोडिया का अधिकार होता, तो मैं गरीबों की सहायता करता, क्योंकि यहाँ पर वो बहुत सारे हैं और उनकी ज़िन्दगी बहुत कठिन है। मुझे खेलना और गेंद वाले खेलों को खेलना पसन्द है, और मेरे बहुत सारे मित्र हैं। लेकिन मुझे लड़ना नहीं पसन्द है। मैंने बहुत लड़ाईयाँ देखी हैं। और मैं उन जगहों पर नहीं खेलना चाहता जहाँ हमें चोट लग सकती हो।"

फायमीन

"कूड़े के ढेर पर हमारी ज़िन्दगी"

पिन

"पिन मेरा मित्र तब से है जब हम कचड़े वाले ढेर पर काम करते थे। वो मुझ से दो वर्ष छोटा है। अब वो नये कचड़े के ढेर पर काम करता है," स्रे कॉन्ग बताती है।

लायट, 14

"मुझे याद है जब हम कचड़े के ढेर पर आये थे। वहाँ पर रहना कठिन होता था, और मैं हर समय वस्तुओं से चोट खा जाती थी। कुछ दिनों मैं भोजन करने भर का भी नहीं कमा पाती थी। मैं अक्सर अपनी बहन के बारे में सोचती हूँ जिसे थाईलैण्ड में बेच दिया गया। मुझे उसके लिए बहुत अफसोस है, और मुझे नहीं लगता कि अब वो वापस हमारे पास कभी आयेगी।"

कौशलों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए

हर रविवार, एक कलाकार स्रे कॉन्ग, सोमाली एवं अन्य बच्चों को कला सिखाने आता है जिनको पेन्टिंग में विशेष रुचि है।

TEXT: JOHANNA HALLIN & EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: ALEXANDRA ELLIS

फा और सिनेट पी.आई.ओ. के स्कूल में जाते हैं, उनकी माँ सिना प्लास्टिक खरीदती है जिसे वो उनके घर के बाहर एक नहाने के टब में धोती है। प्रतिदिन आठ घन्टे तक, वो 15 किलो प्लास्टिक के बैगों को धोती है और उनको ऊपर सूखने के लिए छोड़ देती है। वो प्लास्टिक के बैगों को एक पति–पत्नी से खरीदती है जो उनको सड़कों से बटोर कर लाते हैं।

प्लास्टिक से प्लास्टिक बनती है

TEXT: JOHANNA HALLIN & EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: ALEXANDRA ELLIS

''मुझे नहीं पता कि मेरे परिवार के साथ क्या हुआ था। अचानक, मेरे पिता मुझे छोड़ना चाहते थे,'' फा बताता है। ''उनको कोई और महिला मिली थी। मुझे एक पुरानी साइकिल पर बहुत लम्बे रास्ते से उनकी शादी में जाना पड़ा था। मैं वहाँ जाते समय रास्ते भर रोता हुआ गया था।'' एक–दूसरे से अलग होने से पहले, बच्चों ने देखा था कि उनके पिता ने उनकी माँ को अनेकों बार पीटा था।

''मैं रोई और अपनी माँ को उसकी पकड़ से बाहर निकालने की कोशिश की। लेकिन मैं बच्चा थी और उसको रोकने के लिए कुछ भी नहीं कर सकती थी,'' सिनेट कहती है।

फा को कचड़े वाले ढेर पर अपनी ज़िन्दगी याद आती है।

''लोगों ने मुझे गिरी नज़र से देखा था क्योंकि मैं वहाँ काम करता था और कचड़े वाले ढेर पर अन्य लोग मेरा पीछा करते थे और पिटाई करते थे,'' वो कहता है।

जब कचड़े का ढेर बन्द कर दिया गया, तब परिवार एक ठेला लेकर सड़कों पर पैदल चलने लगा, दोपहर के चार बजे से लेकर मध्य रात्रि तक। बाजार में चारों तरफ बटोरने के लिए बहुत कचड़ा होता था। लेकिन अक्सर लोग उन पर चिल्लाते थे।

''लोग मेरा नम्बर पूछते थे और मुझसे कहते थे कि मैं उनके साथ सोने के लिए आऊँ। मैं डर गई और भाग गई,'' सिनेट कहती है।

फा साइकिल से अपने घर 25 किलो चावल लेकर जाता है जो उसे पी.आई.ओ. से हर महीने मुफ्त मिलता है। इसका अर्थ यह हुआ कि उसको प्लास्टिक के काम में अपनी माँ की सहायता करने की आवश्यकता नहीं पड़ती और वो अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे सकता है।

सिनेट प्लास्टिक को सुखाने के लिए लटकाने में अपनी माँ की सहायता करता है।

सिनेट को पी.आई.ओ. स्कूल की ज़िन्दगी पसन्द

हर महीने, परिवार को 25 किलो चावल पी.आई.ओ. से मिलता है। यह एक बड़ा फर्क डालता है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण चीज जो उनको पी.आई.ओ. से मिलती है वो है शिक्षा।

''मुझे यहाँ पर अपनी ज़िन्दगी अच्छी लगती है। हमें चावल मिलते हैं, एक साइकिल, और स्कूल का शुल्क। भविष्य में मैं एक नेता बनना चाहूँगी, और इससे भी बेहतर, एक संस्था का निर्माण करना चाहूँगी जो मेरी माँ की तरह अन्य महिलाओं की सहायता करे। और शायद मैं एक पत्रकार बनना चाहूँ, क्योंकि मुझे अखबार पढ़ना और लोगों से बात करना अच्छा लगता है,'' सिनेट कहती है।

पुनः नवीनीकरण कैसे होता है

रतना को सब चीज़ें साफ–सुथरी अच्छी लगती हैं

10 दिसम्बर 2012 की दिनांक बच्चों के कमरे की दीवार पर लिखी है। यही दिनांक है जब वो अपनी माँ से अलग हुये थे।

रतना के कमरे की हरी दीवारों पर एक तारीख लिखी है – 10 दिसम्बर 2012। यही वो दिनांक है जब उसने अपनी माँ को गुडबाई कहा था। तब से वो एक छोटे कमरे में अपने छोटे भाई, बड़ी बहन और अपनी उम्र की एक सौतेली बहन के साथ रहती है।

''हमको अपना भोजन स्वयं पकाना पड़ता है। यहाँ पर हमारी सहायता करने के लिए कोई वयस्क नहीं हैं,'' रतना कहती है।

फर्श को अच्छे से पोंछ कर रखा गया है और उनकी सारी वस्तुएँ ठीक से ताक पर रखी हुई हैं। बच्चे फर्श पर बैठ कर खाना खाते हैं और गद्दों पर सोते हैं जिनको वो हर सुबह स्कूल जाने से पहले अलग रख देते हैं।

''मेरे लिये यह महत्वपूर्ण है कि मैं सब साफ–सुथरा रखूँ।''

रतना फ्नॉम पेन्ह तब आई थी जब वो नौ वर्ष की थी। वो अपनी माँ और छोटे भाई–बहन के साथ एक कूड़ा उठाने वाले की तरह काम करती थी। जब कूड़े का ढेर बन्द कर दिया गया, तब उसके माता–पिता ने थाइलैण्ड जाकर काम करने की सोची। उन्होने सोचा कि वो अपने बच्चों को हर महीने पैसा भेज कर उनको कूड़ा बटोरने से बचा लेंगे। लेकिन जो पैसा वो थाइलैण्ड में गाड़ियो को धोकर कमाते है वो पर्याप्त नहीं होता था। पी.आई.ओ. रतना को हर महीने एक बोरी चावल देती है। वो और उसके भाई–बहन को निःशुल्क शिक्षा भी मिलती है।

''मुझे छोटे बच्चों के साथ प्राथमिक कक्षा से शुरू करना पड़ा जब कि मैं काफी बड़ी थी। लेकिन मैंने परिश्रम से पढ़ा और अध्यापक ने मुझे ऊपर की कक्षा में चढ़ा दिया। मुझे अंग्रेजी एवं गणित प्रिय है।''

रतना को अपनी माँ की याद आती है, जो इस चित्र में है। वो थाइलैण्ड में काम कर रही है। हर शाम, सोने से पहले रतना उसके बारे में सोचती है।

माँ की याद आती है

बच्चों को अपनी माँ की बहुत याद आती है। रतना अपनी माँ की एक फोटो अपने स्कूल की पुस्तक में रखती है, और दीवारों पर भी उसकी बहुत सारी तस्वीरें लगी हुई हैं।

''उसको याद करके मुझे रोना आता है। वो ठीक नहीं है – उसके गले में एक ट्यूमर है। यदि मैं उसको टेलीफोन करती हूँ और वो उत्तर नहीं देती, तो मुझे चिन्ता हो जाती है कि उसे कुछ हो गया है।''

''दरवाज़े पर एक कुण्डा लगा है, लेकिन हर संध्या मुझे डर लगने लगता है। मुझे डर लगता है कि कोई मेरी साईकिल बाहर से चुरा लेगा और जब अंधेरा एवं सन्नाटा हो जाता है। मैं देर तक पढ़ाई करती हूँ, और हर रात देर से सोती हूँ।''

पर्यटकों को सिखाना चाहता है

हिन 13 वर्ष का है और वो तीन वर्षों तक पी.आई.ओ. के स्कूल में जाता रहा है। वो अपनी माता–पिता एवं छोटे भाइयों के साथ स्कूल के ठीक पीछे रहता है। अनेक वर्षों तक, सारा परिवार कूड़े वाले ढेर पर काम करता रहा, पर आजकल केवल उनके माता–पिता ही काम करते हैं।

''मैं एक पर्यटकों का मार्गदर्शक बनना चाहता हूँ और उनको कम्बोडिया की संस्कृति एवं परम्पराओं के बारे में बताना चाहता हूँ। वे साधारणतः इन्हीं चीज़ों में ही रुचि लेते है। उदाहरण के लिये, मैं तुमको दिखा सकता हूँ कि एक पारम्परिक अभिनन्दन कैसे किया जाता है।''

यदि तुम किसी साधु का स्वागत कर रहे हो, तो तुमको अपने हाथ बिलकुल ऊपर कर लेने चाहिए, अपनी नाक के ऊपर।

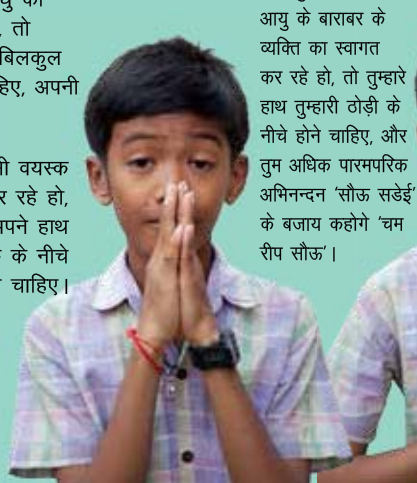

यदि तुम किसी वयस्क का स्वागत कर रहे हो, तो तुमको अपने हाथ अपनी नाक के नीचे कर लेने चाहिए।

यदि तुम किसी अपनी आयु के बाराबर के व्यक्ति का स्वागत कर रहे हो, तो तुम्हारे हाथ तुम्हारी ठोड़ी के नीचे होने चाहिए, और तुम अधिक पारमपरिक अभिनन्दन 'सौऊ सडेई' के बजाय कहोगे 'चम रीप सौऊ'।

जेवियर को क्यों नामित किया गया है?

बाल अधिकार हीरो नामित • पृष्ठ 52–71

Javier Stauring

जेवियर स्टौरिंग को सन् 2015 के 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़' के लिए नामित किया गया क्योंकि उसने 20 वर्षों तक लॉस एंजिलस में बन्दी बनाये गये बच्चों एवं उनके परिवारों के लिए और अपराधों से पीड़ित लोगों एवं उनके सम्बन्धियों के लिये संघर्ष किया है।

जेवियर चाहता है कि सबको दण्ड एवं बदले के बजाय समझौते एवं वार्ता द्वारा न्याय मिले। जेवियर जेल में बच्चों से मिलने से लेकर अपराधों द्वारा पीड़ित लोगों की सहायता करने तक का काम करता है तथा राजनीतिज्ञों एवं अन्य निर्णय लेने वाले लोगों को प्रभावित करता है जिससे अपराधिक न्याय प्रणाली में बच्चों के प्रति और अधिक मैत्री का बदलाव आ सके। जेवियर का कार्य कानूनों एवं नियमों को बदलने में सहायक रहा है, जिस क्रिया में उसने बन्दी बच्चों एवं अपराध से पीड़ितों की सहायता की है। वो सारे धर्मों के नेताओं की सहायता करता है, इसाईयों एवं मुसलमानों से लेकर बौद्धों तक, जिससे वो सब मिलकर बच्चों को लेकर उनके अधिकारों के लिए काम करें। जेवियर के कार्य ने अनेकों विधियों से सबको लाभ पहुँचाया है, जिसके कारण यह सम्भव हो सका कि दादा–दादी अपने बन्दी पोतों से मिल पायें और यहाँ तक कि नये, बाल मैत्रीपूर्ण कानूनों का निर्माण हो सका जिनके द्वारा उन बच्चों को मुक्त कराना सम्भव हो सका जिन्हें जेल में मृत्युदण्ड मिला था।

जेवियर के बारे में लिखी कहानियों में कुछ लोगों के नाम बदल दिये गये

जेवियर स्टौरिंग को झटका लगा जब पहली बार वो लॉस एंजिलस सेन्ट्रल जेल के एक बाल केन्द्र में गया था। उसने अन्धेरी कोठरियों में अकेले पड़े 14 वर्षीय बच्चों को देखा, जो उनमें हर रोज़ 24 घन्टे पड़े रहते थे, एक बार में कई महीनो तक। जेवियर ने इसका विरोध किया, लेकिन वो विश्व द्वारा इस पर तब तक प्रतिक्रिया नहीं करा पाया जब तक उनमें से दो बच्चों ने आत्महत्या करने की कोशिश नहीं की।

यह सब कैलीफोर्निया के राजनीतिज्ञों द्वारा शुरू किया गया था जिन्होंने निर्णय लिया था कि उन बच्चों के साथ बच्चों जैसा व्यवहार न किया जाय जिन्हें घोर अपराधों के लिए सजा दी गई थी, जैसे शस्त्र लूटना या किसी की हत्या करने का प्रयास करना। इसके बजाय, उनको एक वयस्क के न्यायालय में भेजा जाये जहाँ पर उन्हें उतना ही कठोर दण्ड दिया जाय जैसा कि वयस्कों को। राजनीतिज्ञों ने ऐसे कानून बनाये जिनका अर्थ यह निकलता था कि बच्चों को और अधिक जेल में उम्र कैद की सजा दी जा सकती थी, चाहे वो 14 वर्ष तक के क्यों न हों। अनेक वयस्कों ने कहा, "यदि बच्चे अपराध करने के लिए बड़े हो गये हैं, तो वो सजा काटने के लिए भी बड़े हो चुके हैं।"

जेवियर का यह भी मानना था कि जिन बच्चों ने घोर अपराध किये हैं उनको समाज की देख–रेख में रखा जाय जब तक वे अन्य लोगों एवं स्वयं के लिए खतरा न बने रह जायें। लेकिन साथ ही, उसे विश्वास था कि सही सहायता मिलने से, बच्चों में बदलाव लाया जा सकता है। उसने एक सामाजिक सुझावकर्ता के रूप में अनेकों वर्ष काम किया था। जेवियर ने उन बच्चों को सुना जो जेल अथवा युवा सुधार केन्द्रों में बन्द थे, और उसने उनके भविष्य की क्रियाओं के लिए जिम्मेदारी ली, और उनको एक ऐसी ज़िन्दगी बिताने का सपना दिखाया जिसमें हिंसा एवं अपराध न हो। लगभग सभी लोग जिनसे वो मिला जिनको हिंसा एवं दुराचार से अपने बचपन में गुजरना पड़ा था। जेवियर का विश्वास था कि उन्हें सहारे की आवश्यकता है, न कि दण्ड की। लेकिन राजनीतिज्ञों का विपरीत विचार था। उन्होंने कहा, "उनको ताले में बन्द कर दो और चाभी को फेंक दो और स्वयं को इस आधार पर सही बताया कि वोट देने वालों को इन हिंसक बच्चों से भय था। अखबारों एवं टी.वी. समाचारों को लम्बे समय से यह पता था कि उनके पाठक एवं श्रोता अधिक होते थे जब वे बच्चों और घोर अपराधों को रिपोर्ट करते थे। लोगों को यह उत्तेजनापूर्ण लगता था और भयानक भी। उन्होने सुरक्षित महसूस

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: JOSEPH RODRIGUEZ

अनेकों वयस्क कहते हैं, ''यदि बच्चे अपराध करने के लिए बड़े हो गये हैं, तो वो सजा काटने के लिए भी बड़े हो चुके हैं।''

किया जब राजनीतिज्ञों ने उनको वचन दिया कि वे बच्चों को सदैव के लिए बन्द कर देंगे।

स्कूल के बजाय जेल

सन् 2000 के शुरू में, दसों हजारों बच्चे कैलीफोर्निया के युवा सुधार केन्द्रों में बन्द पड़े थे, और सैंकड़ों बच्चों को उम्र कैद की सजा के कारण जेल में बन्द रखा गया था जहाँ से उनके निकलने की कोई आशा नहीं थी। 20 वर्षों से, बच्चों एवं अपराध से सम्बन्धित सभी नए नियमों को अधिक कठोर दण्डों की ओर ले जाया जा चुका था। और अधिक एवं बड़े बन्दीगृहों को बनाने में लाखों रुपये लगे थे – वो धनराशि उससे कहीं अधिक थी जो स्कूलों के निर्माण एवं बाल अपराधों को रोकने के कार्यक्रमों में लगती थी। साथ ही, स्कूलों ने पुलिस को उन अपराधों के लिए बुलाना शुरू कर दिया जिनसे बाल सुधार केन्द्रों द्वारा ही निपटा जाता था। बच्चों के माता–पिता से सम्पर्क करने के बजाय, स्कूल ने पुलिस को बुलाना शुरू कर दिया जब बच्चे स्कूल नहीं आते थे अथवा उसकी दीवार लाँघ कर चले जाते थे। गरीब परिवारों को बड़े आर्थिक दण्ड देने पड़ते थे, और युवा सुधार केन्द्रों में बहुत भीड़ हो जाती थी। एक ऊँचे स्तर के न्यायाधीश ने जेवियर को बताया, ''मुझे कानून को लेकर चलना पड़ता है, लेकिन जो हो रहा है वो गलत है। हम बच्चों को इसलिए दण्ड दे रहे हैं क्योंकि वो बच्चे हैं, और हम उनको अपनी गलती सुधारने का अवसर भी नहीं देते।''

'गड्ढे' में अकेले रहना

एक दिन जेवियर, मारिया नाम की किशोरी लड़की से मिलने गया जिससे

रंग से फर्क पड़ता है

अमरीका में, गिरफ्तार किये जाने और बन्दी बनाये जाने की आशंका कहीं अधिक है, यदि तुम काले हो (अफ्रीकी अमरीकन) या फिर तुम एक देशी अमरीकन हो सफेद बच्चों के लिए अन्य जातियों के बच्चों की अपेक्षा, गिरफ्तार होने और आरोप लगाये जाने से बचना बहुत आसान होता है चाहें उन्होंने वही अपराध क्यों न किये हों। यही बात सब चीजों में लागू है स्कूल में रस्सी से उछलने और भित्ति चित्रों से लेकर गम्भीर हिंसक अपराधों तक। काले बच्चों के लिए सबसे अधिक खतरा रहता है, सफेद बच्चों की तुलना में नौ गुना अधिक, एवं लैटिन बच्चों को चार गुना अधिक खतरा रहता है बन्दी बनाये जाने का चाहें उन्होंने वही अपराध किये हों।

वो एक युवा सुधार केन्द्र में मिला था। वो अपनी बड़ी बहन के साथ थी जब उसने एक पेंचकस दिखाकर एक महिला को उसके पैसों के लिए धमकाया था। मारिया को अब एक वयस्क जेल में भेज दिया गया था। जेवियर जानना चाहता था कि वहाँ पर बच्चों के साथ कैसा बर्ताव होता है, जिसका उसे और न ही उसके साथियों को पता था।

एक गार्ड जेवियर को वहाँ के लम्बे बरामदे और नीचे बहुत सारी सीढ़ियों से वहाँ के अकेले कमरे में ले गया। यह कक्ष जिसे 'गड्ढा' कहा जाता था, सारे जेल में सबसे खराब माना जाता था। यहाँ पर सबसे अधिक दण्डनीय अपराध करने वाले कैदियों को ले जाया जाता था, जैसे किसी अन्य बन्दी को गाली देना या सुरक्षाकर्मी पर आक्रमण करना। जेवियर असमन्जस्य में था। मारिया ने ऐसा क्या किया था जो उसे यहाँ लाया गया?

गार्ड एक धातु से बने द्वारों की एक लम्बी कतार के पास आकर रुक गया और उसमे से एक की ओर संकेत किया। जेवियर ने दरवाजे के एक छोटे छेद में से झांककर देखा कि मारिया एक पलंग पर सिमटी हुई पड़ी थी, एक स्टेनलेस स्टील का सिंक एवं टॉयलेट उसके बायीं ओर था। जेवियर ने उसे आवाज लगाई तो वो धीरे से उठी और दरवाजे की ओर लुढ़क गई, वो एक छड़ी की तरह पतली हो गई थी और एक चादर की तरह सफेद, और उसके लम्बे बाल उलझे हुए लटक रहे थे।

''मैं यहाँ पर क्यों हूँ?'' उसने एक सूखी आवाज से पूछा। ''मैं ठंडी हूँ।''

अंधेरे में स्वप्न

मारिया के पास कोठरी में कोई कम्बल नहीं था, बस केवल एक पतली प्लास्टिक की दरी। 'गड्ढे' में रहने वाले बन्दी अक्सर इतने अकेले और बेबस हो जाते थे कि वो मरना चाहते थे। इसीलिए उनको पलंग पर बिछाने वाले कपड़े नहीं दिये जाते थे – क्योंकि हो सकता था कि वे इनको स्वयं को लटका कर आत्महत्या करने के लिये इस्तेमाल करें। मारिया ने दरवाजे के छेद में से जेवियर से बात की। एक दिन जल्दी सुबह, उसे सीधे युवा सुधार केन्द्र से इस अन्धेरे कमरे में ले जाया गया था, बिना खिड़की वाली कोठरी में। जो भी रोशनी उस बरामदे में होती थी, वो इस दरवाजे के छेद में होकर आती थी। मैंने गार्डों से पूछा कि वो दिन में लाइटें क्यों नहीं जलाते। उन्होंने कहा, ''यह गड्ढा है। हम यहाँ पर कभी लाइटें नहीं जलाते।'' मारिया को एक महीने से अधिक समय तक उस कोठरी से नहीं जाने दिया गया, यहाँ तक कि नहाने या अपनी माँ से टेलीफोन द्वारा बात के लिए भी नहीं।

''मुझे लग रहा है कि मैं अपना दिमाग खो रही हूँ,'' मारिया ने कहा। उसको डर लगता था जब अन्य कोठरियों के वयस्क शोर मचाते थे और आपस में लड़ते थे। एक बन्दी ने दरवाजे के छेद में से अपना हाथ घुसाकर उसको छूने की कोशिश की थी। एक अन्य महिला बन्दी अक्सर उसको बताया करती थी कि कैसे उसने स्वयं अपनी बेटी को मारा था।

''हम किसी तरह से तुमको यहाँ से बाहर निकाल लेंगे,'' जेवियर कहता है।

जब मारिया एक किशोर हॉल में थी, तब वो स्कूल जा सकी और, इन्हीं लड़कियों की तरह उसे रविवार की प्रार्थना में शामिल होने दिया गया।

परिवर्तन के लिए माँगें

जेवियर ने बन्दीगृह के प्रबन्धकों से विरोध किया, लेकिन उन्होंने कहा कि उन्हें मारिया को अलग ही रखना था। एक साधारण कोठरी में रखने पर उसके साथ दुराचार किया जा सकता था, यहाँ तक कि बलात्कार भी। जेवियर ने एक वकील को पकड़ा जिसने उसे वचन दिया कि वो मारिया की सहायता करेगा। फिर जेवियर ने उन लड़कों से मिलने की भी इच्छा व्यक्त की, जो जेल के एक दूसरे भाग में बन्द पड़े थे। वो इतने सारे थे कि जेल ने एक विशेष बाल केन्द्र का निर्माण किया था जिसमें लगभग 40 बिना खिड़की वाली अलग–अलग कोठरियाँ बनी थीं। लड़कों को हर रोज़ कम से कम 23 घन्टे बन्द रखा जाता था, और उनको केवल नहाने के लिए बाहर आने दिया जाता था और जिससे वे समय–समय पर टेलीफोन द्वारा अपने घर वालों से बात कर सकें। सप्ताह में कुल मिला कर तीन घन्टे के लिए ही उनको छत पर बने एक छोटे कटघरे में चलने को मिलता था, एक के बाद एक, जिससे उन्हें कुछ दिन का प्रकाश मिल सके और उनके शरीर का व्यायाम हो सके। समय–समय पर एक अध्यापक आता था और उनको सलाखों के बीच से कुछ पढ़ाई का कार्य दे जाता था।

जेवियर एवं अनेकों अन्य जेल के सुधारक, युवा संस्थाएँ, न्यायाधीशों एवं वकीलों ने इस अमानवीय बर्ताव का विरोध किया। जिस वकील ने मारिया की सहायता की थी वो अन्त में उसको वापस युवा सुधार केन्द्र में

''अपने हाथ पीछे रखो'', कर्मचारी वर्ग बच्चों से कहता है।

आदम, 12, अपने परिवार को याद करता है।

इसी प्रकार के जेल की कोठरी के दरवाजे में बने खाना देने के खाँचे में से जेवियर मरिया से बात करता था।

PHOTO/PINELLAS COUNTY SHERIFF'S OFFICE/AP

लाने में कामयाब हुआ। लेकिन लड़के जेल में ही रहे, और जेवियर ने उनको देखा जैसे वे और अधिक पतले, दुबले और शान्त होते चले गये। उसने लॉस एंजिलस के सबसे बड़े अखबार को इस पर लिखने के लिए पकड़ा, लेकिन उनको नहीं लगा कि उनके पाठक इन अपराध करने वाले बच्चों में रुचि लेंगे। महीने वर्षों में बदल गये। और एक दिन, जो किसी ने नहीं सोचा था वो हुआ। दो 14 वर्षीय लड़कों ने अपनी कोठरियों में स्वयं को लटकाने की कोशिश की, लेकिन उन्हें आखिरी समय पर बचा लिया गया। अब जेवियर के लिए बहुत हो चुका था। उसने ठीक जेल के पास एक प्रेस सम्मेलन आयोजित किया, और फिर, अन्त में, पत्रकार आ गए।

"जो इन बच्चों के साथ जेल में किया जा रहा है वो गलत है," जेवियर ने कहा। अगले दिन जेल के लोगों ने उसे बुलाया और कहा, "अब यहाँ पर तुम्हारा स्वागत नहीं है।" वो नाराज़ थे क्योंकि जेवियर ने उनको वचन दिया था कि वो किसी को नहीं बतायेगा कि जेल में क्या हो रहा था। लेकिन जेवियर को बच्चों के माता–पिता से अनुमति मिल चुकी थी। उसने अपनी आज़ादी से बोलने के अधिकार का उल्लंघन करने के लिए जेल के विरुद्ध

⇨

मरिया को क्या हुआ?

मरिया को दिन की रोशनी की आदत नहीं थी जब वो वापस युवा सुधार केन्द्र में गई। जब बस जेल के गैराज से बाहर निकली और उसकी खिड़कियों पर धूप चमकी, तो उसकी नाक से खून बहने लगा। मरिया को चक्कर आने लगा, और उसकी आँखे दर्द करने लगी। बहुत समय तक उसको युवा सुधार केन्द्र के देखभाल करने वाले कक्ष में रहना पड़ा। सात महीने बाद, उसको छोड़ दिया गया और उसकी माँ आकर उसको ले गई।" मैंने वैन के फर्श पर बैठ कर यात्रा की और अपनी माँ से कहा कि वो पीछे वाले शीशे से देखती रहे। मैंने कहा "माँ, पीछे देखो, वो आयेंगे और मुझे ले जायेंगे।' लोगों से मिलने की आदत डालना बहुत कठिन था। और अब भी, वर्षों बाद, मुझे बन्द जगहों में रहने में परेशानी होती है।"

मरिया ने हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की और ज़ेवियर ने उसके गिरोह वाले टैटू (गोदाना) निकलवाने में उसकी सहायता की। आज वो एक भोजनालय में काम करती है और वो 'बेबी एल्मो' नामक परियोजना में शामिल है, जो बन्दी किशोर माता–पिता को अपने बच्चों की ज़िम्मेदारी लेने में सहायता करता है।

"मैं वहाँ जाता हूँ और माताओं से बात करता हूँ और उनसे कहता हूँ कि हमको यह चक्र को तोड़ना होगा। शिक्षा से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। मेरे दो बच्चे हैं और मेरा सबसे बड़ा भय यह है कि वो भी मेरी तरह गलती न कर दें। वो सड़क की जिन्दगी में नहीं फसेंगे, वो स्कूल जाएंगे।"

जेवियर को बच्चों से बात करके ऊर्जा मिलती है।

जेवियर को कठिन संघर्ष करना पड़ा जिससे बाद ही उसको जेल में दोबारा बच्चों से मिलने दिया गया। चित्रः जेनारो मोलीना

जेवियर कैसे काम करता है?

जेवियर बहुत सारे अन्य लोगों के साथ काम करता है – वकीलों, संस्थ.
ाओं एवं अधिकारियों – उसने अनेकों कार्य किये हैं जैसेः

- ऐसे कार्यक्रमों को विकसित करना जो बन्दी बच्चों को शिक्षा, सलाह, संस्कृति एवं खेल कूद उपलब्ध कराते हैं, जो उनको एक बेहतर जिन्दगी बिताने में सहायक हो सकते हैं।
- ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करना जिनमें अपराधों द्वारा पीड़ितों एवं बन्दी युवा लोगों के सम्बन्धी उनसे मिल सकते हैं और एक दूसरे की सहायता कर सकते हैं, चिकित्सा हरने वाली वार्ताओं द्वारा उनको अपनी जिन्दगी में आगे बढ़ने दें, न कि उनको दण्ड दें और उनसे बदला लें।
- बन्दी बच्चों को अपने दादा–दादी से मिलने का अवसर दें (न कि केवल उनके माता–पिता से, जैसा कि पहले होता था।) और मिलने के दिनों की संख्या भी बढ़ा दें।
- नये नियमों को लागू करवायें जो युवा लोगों को उम्र कैद काटने में सहायक हों, और जो बच्चों एवं युवा लोगों को हिंसा एवं दुराचार से बचायें जब उनको वयस्कों के साथ जेल में बन्द कर दिया जाय।
- बन्दी बच्चों को अकेले बन्द करने और अमानवीय व्यवहार करने को रोकने के लिए विरोध करें।
- विभिन्न धर्मों के नेताओं को मिलकर काम करने का अवसर दें जिससे वे बन्दी बच्चों, अपराधों के पीड़ितों, स्कूलों, विश्वविद्यालयों एवं संस्थ.
ाओं में परिवर्तन ला सकें।

मामला दर्ज किया। दो वर्षों बाद, जेवियर का मामला न्यायालय में सुना गया। जेल ने अपने कानून बदल दिये और उसको फिर से बच्चों से मिलने दिया गया। जल्द ही उसके बाद बच्चों का केन्द्र बन्द कर दिया गया और यह निर्णय लिया गया कि किसी को भी वयस्कों वाले जेल में न डाला जाए जब तक कि वो वयस्क न हो जाए।

सदैव एक बाहरी व्यक्ति

जेवियर लॉस एंजिलस में पैदा हुआ था, लेकिन वो मैक्सिको चला गया जब वो नौ वर्ष का था। उसके पिता के मरने बाद ही जेवियर को इस नये देश में लगने लगा कि वो एक बाहरी व्यक्ति है। वो अमरीकन था, वो 'ग्रिन्गो' जो उनकी तरह स्पैनिश भाषा नहीं बोल पाता था। स्कूल में हर किसी के घर में एक पिता था। अपनी किशोरावस्था में, जेवियर बड़े लड़कों के साथ समय बिताने लगा जो शहर में किसी से भी लड़ना शुरू कर देते थे, यह दिखाने के लिए कि वे कितने शक्तिशाली थे। जब 19 वर्ष का हुआ, तो उसका परिवार वापस लॉस एंजिलस आ गया।

''एकाएक मैं अमरीका में एक मैक्सिको का आप्रवासी हो गया था,'' आज जेवियर कहता है। ''मुझे सदैव लगता था कि मैं एक बाहरी व्यक्ति हूँ। मुझे लगता है कि इसी लिए मैं जेल में बच्चों को समझ नहीं पाया जब उन्होंने मुझको अपने अकेलेपन एवं कमजोरी का आभास दिलाया, तब मुझे लगा कि वे मुझ से भिन्न नहीं थे जब मैं भी एक बच्चा हुआ करता था।''

जेवियर की माँ को लगता था कि उसे जेल में बच्चों से मिलने के लिए नहीं जाना चाहिए। वो अपने चर्च में एक स्वयं सेवक थी और उसे लगा कि स्वयं सेवक का कार्य करने से जेवियर का भला हो जायेगा। उस समय वो एक गहने वाले कारोबार में एक विक्रेता की तरह भी काम कर रहा था।

''मुझे कोई फर्क नहीं पड़ रहा था,'' जेवियर कहता है। ''मैं हर सप्ताह के अन्तिम दिन को जेल में मिलने जाता था जबकि मैं आसानी से उस समय समुद्र के तट पर घूम सकता था अथवा टीवी पर फुटबाल देख सकता था। और मैं डरा हुआ था। मैंने उन बच्चों को समाचारों में देखा था, गिरोह के सदस्य बेगुनाह लोगों को मार रहे थे।''

आँखे खोलने वाला

पहली बार बच्चों से मिलने से पहले जेवियर घबराया हुआ था, लेकिन जल्द ही वो उन से हर सप्ताह अनेकों बार मिलने लगा।

''असली आँख खोलने वाली बात तब हुई जब मैं बच्चों के साथ न्यायालय गया। मैं उनको जान चुका था। और उनके नुकसान एवं पीड़ा की कहानियाँ सुन चुका था। जब उनको 75 वर्षों तक जेल में रहने की सजा सुनाई गई थी तब उनके साथ बैठे रहने ने मुझको चौंका दिया था। मुझे लगता था कि मुझे उनके अधिकारों के लिए संघर्ष करना चाहिए।''

कुछ वर्ष बाद, जेवियर ने अपनी अच्छी वेतन वाली नौकरी छोड़ दी।

''उससे काम नहीं बना, पहले वो उन विक्रेताओं से मिला जिनकी समस्या यह थी कि वो गहनों की बिक्री से पर्याप्त मात्रा में लाखों रुपये नहीं कमा पा रहे हैं। इसके बाद वो शाम को एक 14 वर्षीय लड़के को सांत्वना देने की कोशिश करता था जिसे अभी–अभी पता चला था कि उसे आजीवन कारागार में गुजारना पड़ेगा। मुझे लगता था कि मुझे अपना समय और ऊर्जा उस सब में लगाना चाहिए जिसका कुछ अर्थ हो।''

आजकल, जेवियर 'रेस्टोरेटिव जस्टिस' कार्यालय का सह–निर्देशक

एक युवा जेल के बाहर लगा संकेत सबको सचेत करता है कि इस क्षेत्र की सुरक्षा गश्त करते हुए गार्ड करते हैं जिनके पास कुत्ते हैं।

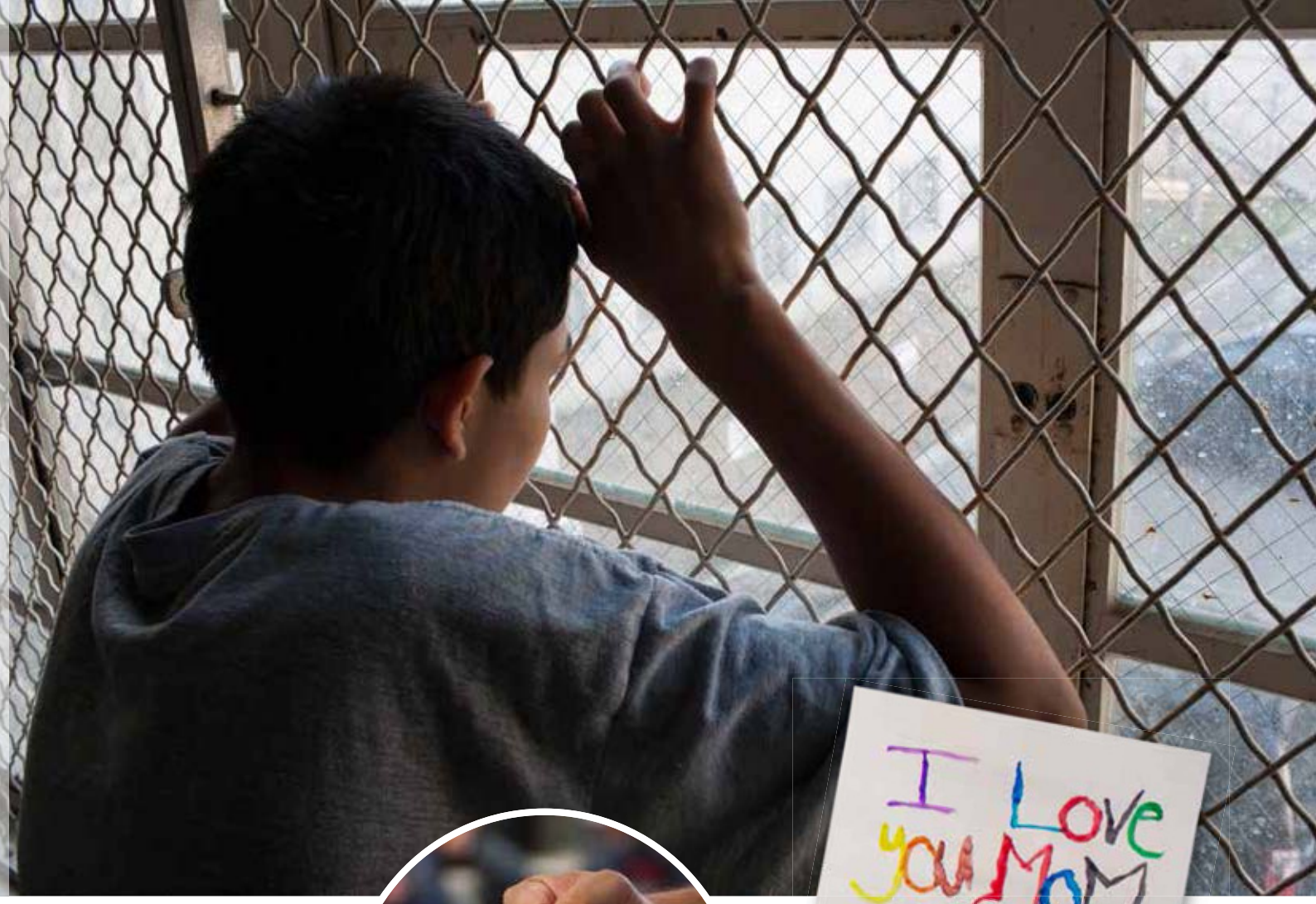

है, जो लॉस एंजिलस के 'कैथोलिक आर्चीडायोसीस' का एक भाग है। 'रेस्टोरेटिव जस्टिस' का अर्थ है कि बिना दण्ड दिये 'मरम्मत द्वारा' न्याय का निर्माण किया जाये अन्य विधियों से जैसे वार्ता, शिक्षा एंव समाज सेवा। ''यह आवश्यक है कि हमारी पहुँच सब लोगों तक हो जो अपराधों से प्रभावित हैं,'' जेवियर कहता है।

''हमारी सबसे महत्वपूर्ण क्रियाओं में से एक है हिंसक अपराधों के पीड़ितों के परिवारों के सदस्यों तथा जेल में रखे युवकों के साथ रोगवर्धक वार्ताओं का आयोजन करना। हमारे पास ऐसे समूह हैं जिनमें वो माताएँ हैं जिनके बच्चों को जिंदगी भर के लिए बन्दी रखा गया है और वो उन माताओं के साथ बैठती हैं जिनके बच्चों की हत्या कर दी गई है। उन सब ने अपने बच्चों को खोया है, जब वे आपस में अपनी कहानियों एवं दर्द को बांटती हैं जिसे वे समझती हैं और एक–दूसरे को सांत्वना देती हैं। यह एक बहुत शक्तिशाली एवं रोग हरने वाला तरीका है।''

जब से जेवियर एक निर्देशक बना, उसको अनेकों बैठकों में भाग लेना पड़ा है, राजनीतिज्ञों एवं शिक्षाविदों से मिलना पड़ा है, बहुत सा कागजी काम करना पड़ा है। लेकिन वो जेल में बन्द बच्चों से मिलना नहीं रोकेगा। वो अपनी पत्नी एवं तीन बच्चों का आभारी है जो उसको समर्थन देते हैं। यद्यपि उनके पिता अक्सर अपनी शाम एवं सप्ताह का अंत जेल में बिताते हैं।

''यह जेल में बन्द बच्चों के साथ का सम्बन्ध है और उनके परिवारों के साथ जो मुझे चलाए रखता है, यह मुझे हर कार्य करने की शक्ति देता है। उन्हें चाहिए कि वे जानें कि मैं एवं बहुत से अन्य लोग उनके लिए और उनके अच्छे भविष्य के लिए लड़ते हैं। यह कि उन्हें भूला नहीं गया है।'' 🌐

जेल में जेवियर और एक बच्चा एक–दूसरे से अपनी बन्द मुट्ठियों को टकरा कर एक–दूसरे का अभिनन्दन करते हैं।

वाद–विवाद जिसका प्रभाव पड़ता है

राजनीतिज्ञों एवं उनको वोटरों को उकसाने के लिए, जेवियर और उसके साथी दोनों आर्थिक एवं वैज्ञानिक तर्कों का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए सबसे आधुनिक मानसिक अनुसंधान के अनुसार हमारा दिमाग तब तक पूरी तरह विकसित नहीं हो जाता जब तक हम 25 वर्ष के नहीं हो जाते। किशोर लोग वयस्कों की अपेक्षा बिल्कुल अलग तरह का व्यवहार करते हैं और उनका दिमाग बिलकुल अलग तरह से काम करता है। यह विशेषता दिमाग के उन भागों के लिए सत्य है जो अनुभूति, आवेगों, और योजना बनाने और आगे के बारे में सोचने की क्षमता से सम्बन्धित होते हैं। लेकिन जिस बात ने राजनीतिज्ञों को वास्तव में सबसे अधिक प्रभावित किया वो यह थी कि उनके करोड़ो रुपये बच सकते थे यदि वे इतने सारे बच्चों को बन्दी न बनाते। सन् 1990 से, कैलिफोर्निया ने 6 करोड़ 60 लाख और 8 करोड़ 30 लाख डॉलरों के बीच की धनराशि उन लोगों को बन्दी बनाने में व्यय हो चुकी है जिन्हें उम्र कैद की सजा दी गई थी एवं उनके पेरोल की कोई सम्भावना नहीं थी, और जो अपराध उन्होंने तब किये थे जब वो बच्चे थे। जब तक वो जेल में मरते तब तक उनको जेल में रखने का व्यय लगभग 5 करोड़ डॉलर हो जाता।

बच्चों को दोबारा सुधरने का अवसर दो

कैलीफोर्निया में, 300 से अधिक युवा लोगों को आजीवन कारावास की सज़ा मिली है और उनके रिहा होने की कोई आशा नहीं है, उन अपराधों के लिए जो उन्होंने तब किये थे जब वो बच्चे थे। विश्व भर में लगभग दस लाख बच्चे जेलों में बन्द हैं, लेकिन संयुक्त राष्ट्र अमरीका ही अकेला देश है जो बच्चों को आजीवन कारावास का दण्ड देता है।

जेवियर के नेटवर्क से जुड़ी संस्थाओं के बच्चे, जैसे 'यूथ जस्टिस कोअलिशन' के सदस्यों ने बच्चों को उम्र कैद दिये जाने के विरुद्ध एक अभियान चलाया है।
चित्रः यूथ जस्टिस कोअलिशन

''यह एक ऐसा दण्ड है जो बद्तर से भी बद्तर है, और यह नहीं लगता कि इसे कभी बदला जाएगा,'' जेवियर कहता है। ''लेकिन बच्चे वयस्कों से अलग होते हैं, वे बढे होते हैं और तभी समझदार हो पाते हैं। कानून को इस बात को संज्ञान में लेना चाहिए।''

जेवियर और मानवाधिकार वकील एलिज़ाबेथ कॉल्विन ने अन्य वकीलों के साथ एक अभियान चलाया जिससे बच्चों को दोबारा स्वयं को सुधारने का अवसर मिल सके।

''हमने यह नहीं कहा कि यदि किसी को कोई गंभीर अपराध के लिये दण्डित किया गया हो तो उसे छोड़ दिया जाए। हम बस इतना ही चाहते थे कि उनको एक अवसर और दिया जाए जिसमें वो यह दिखा सकें कि बाद में वो बदल गये, शायद, कुछ वर्षों बाद। तब यदि वो समाज के लिए किसी तरह का खतरा नहीं रह जाते, तो उन्हें छोड़ देना चाहिये।''

हर कोई शामिल हो गया

बहुत सारे लोग इस अभियान में शामिल हो गये। जो बच्चे जेलों में रहे थे तथा अपराधों द्वारा पीड़ित लोग एवं उनके परिवारों को भी इस पर प्रशिक्षण दिया गया कि कैसे सभासदों एवं मीडिया से बात करें। फिर उन्होंने प्रेस सम्मेलन आयोजित किये, पत्र लिखे, और उन सब लोगों को आमंत्रित किया जो इस परिस्थिति में अपना प्रभाव डाल सकते थे। एक पिता ने कहा, ''मैं चाहता हूँ कि मेरे लड़के के हत्यारे को दण्ड मिले, लेकिन मैं यह भी चाहता हूँ कि उस व्यक्ति को स्वयं में परिवर्तन लाने का अवसर दिया जाए।''

भूतपूर्व पुलिस अधिकारी, जेल अधिकारी एवं सरकारी वकील भी इस अभियान में शामिल हो गये। साधारणतः यही लोग कठोर दण्ड देने का समर्थन करते थे। लेकिन उनमें से अनेकों ने अपनी आंखों से देखा था कि कैसे युवा लोग बड़े होकर बदल जाते थे। इसी लिए उन्हें विश्वास था कि इन लोगों को एक और अवसर मिलना चाहिए।

लम्बा संघर्ष

जेवियर ने चर्चों, मन्दिरों एवं मस्जिदों के मुखियों को बच्चों से मिलने के लिए आमंत्रित किया। उनमें से अनेकों को सही से नहीं पता था कि वो क्या करेंगे, लेकिन जल्द ही उन्होंने अपने विचार बदल दिये। चर्च के एक बुज़ुर्ग अधिकारी ने कहा, ''मैंने मार्टिन लूथर किंग के साथ पदयात्रा की, मैंने पूरी दुनिया घूमी, मैंने बहुत से राष्ट्रपतियों से हाथ मिलाया पर मुझे ऐसा एहसास कभी नहीं हुआ जैसा इन बच्चों के साथ बैठने से हुआ।'' एक इसाई पुजारी ने कहा, ''जीसस इन बच्चों को फेंक नहीं देते। वो नहीं कहते कि यह बेकार हैं।''

बहुत साल लग गये, लेकिन आज, अनेकों बाधाओं के बाद, कैलीफोर्निया में बहुत सारे नये नियम बन चुके हैं जो इन बच्चों की सहायता करते हैं। उनमें से एक, सन् 2014 का है, आजीवन कारावास वाले बच्चों को जेल में 25 वर्ष बिताने के बाद पेरोल पर रिहा किये जाने का अवसर मिलने के लिए आवेदन देने की अनुमति देता है, और इस प्रकार उनको एक बेहतर ज़िन्दगी बिताने का अवसर।

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: JOSEPH RODRIGUEZ

बच्चों की जेल में 24 घन्टे

कैलीफोर्निया के एक युवा सुधार केन्द्र की विशेष शाखा में, लगभग 40 लड़कों को एक व्यक्ति वाली कोठरियों में अलग–अलग रखा गया है। वहाँ की सुरक्षा व्यवस्था सब से अधिक है, वहाँ बुलेट–प्रूफ काँच, भारी फाटक और कंटीले तारों वाले सेंसर युक्त जाल लगे हैं। कुछ लड़कों का फैसला अभी बाकी है, जबकि अन्य लड़के लम्बे समय तक बन्द रहने की सज़ा काट चुके हैं।

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: JOSEPH RODRIGUEZ

06.15 बजे प्रातः – उठो

पीटर, 16, शौचालय को भागता है।

''हमारी कोठरियाँ पर सदैव ताला पड़ा रहता हैं। यदि हमें शौचालय जाने की जरूरत पड़ती है तो हमें जेल के कर्मचारियों से कहना होता है। हमें एसा लगता है मानो हम कुत्ते हों। कभी–कभी मैं उनकी सहायता नहीं लेना चाहता, तब मैं अपने तौलिये पर ही पेशाब कर देता हूँ।''

10.00 बजे रात्रिः – पर्यवेक्षण

कंट्रोल रूम के कर्मचारी सब लोगों एवं वस्तुओं पर अपनी नजर रखते हैं।

07.30 बजे प्रातः – तैयार होना

शौचालय मे लगी काँच की खिड़कियाँ स्वच्छ हैं और शौचालयों के बीच की दीवारें नीची हैं। प्रत्येक बन्दी को नहाने के लिए केवल तीन मिनट का समय मिलता है।

''सप्ताह में एक बार वो हमको एक स्वच्छ वस्त्रों एवं तौलिये का पैकेट बना कर देते हैं। सबसे बुरी बात यह होती है कि हमारे पास अपना स्वयं का कच्छा नहीं होता,'' टोमस कहता है। वो अपनी पैन्टों को अपने बिस्तर के नीचे दबा देता है जिससे वे प्रेस हो जाएं।

04.00 बजे प्रातः – यातायात

मार्कस, 15, न्यायालय जा रहा है। वो एक विशेष यातायात का 'जम्पसूट' पहने है और उसके हाथ–पैर में बेड़ियाँ लगी है। जल्द ही उसको एक बस के अन्दर रखे छोटे कटघरे में रख दिया जायेगा और फिर वो बस उसे न्यायालय ले जायेगी।

08.00 बजे प्रातः – सही क्रम में

एरिक, 17, अपना बिस्तर बनाता है।

''यह बिल्कुल सही से बनना चाहिए अन्यथा हमें इसे फिर से लगाना पड़ेगा।''

08.30 बजे प्रातः – स्कूल को या चर्च में सेवा करने के लिये जाना

जब युवा लोग स्कूल को या चर्च में सेवा करने के लिए जाते हैं, तब वो अपने हाथों को पीछे रखते हैं जिससे उनकी वहाँ के कर्मचारियों के संपर्क में आने या किसी से लड़ने की संभावना न रहे। लड़कियों और लड़कों को सुधार केन्द्र के अलग–अलग कक्षों में रखा जाता है।

01.00 बजे सायं – कक्षा में रहना या मिलना

मिलने का समय सप्ताह के अन्त में होता है। पहले ऐसा होता था कि केवल माता–पिता को ही अपने बच्चों से मिलने दिया जाता था, सप्ताह में एक दिन। जेवियर और उसकी टीम ने दादा–दादी को भी मिलवाने का प्रबन्ध किया, और सप्ताह में मिलने के समय को बढ़ा कर दो दिन कर दिया।

12.00 बजे सायं – दोपहर का भोजन

यहाँ एक बड़ा कमरा है जिसे भोजन करने के हॉल की तरह प्रयोग किया जाता है और एक कमरा अन्य क्रियाओं के लिये भी है। कुर्सियाँ और मेज़ें फर्श से जुड़ी हैं। कभी–कभी लोग बिखर जाते हैं, उदाहरण के लिए, जब उन्हें उम्र कैद की सजा सुनाई जाती है, और तब वो फर्नीचर को इधर–उधर फेंकने का प्रयास करते हैं। पर यहाँ यह सम्भव नहीं हो पाता।

03.30 बजे सायं – मनोरंजन

"हमें हर रोज़ एक घन्टे का अवकाश मिलता है। मुझे बाहर धूप में निकलना अच्छा लगता है," जेम्स, 15 कहता है।

अनेकों बच्चे अपनी कोठरियों में बड़ी लगन से शारीरिक अभ्यास करते हैं।

"हमारे लिये अच्छा होगा कि हम अपनी शक्ति बना लें इससे पहले कि हमें (वयस्कों के साथ) प्रदेश कारागार में भेजा जाए। वहाँ पर कुछ भी हो सकता है। हमें चाहिए कि हम स्वयं की रक्षा कर सकें," एक लड़का कहता है। कोठरियाँ 3.5 मीटर लम्बी और 3 मीटर चौड़ी हैं। बन्दियों को थोड़ा सा निजी सामान ले जाने दिया जाता है, जैसे पुस्तकें एवं पत्र, और अधिक से अधिक पांच फोटो।

कुछ बच्चों से शायद ही कोई मिलने आता है।

"मेरा बेटा मुझ से मिलने के लिए बहुत छोटा है," डेनियल, 17 कहता है जिसको 30 साल से अधिक समय की आजीवन कारावास की सजा मिली है। "जब वो बड़ा होगा तब मैं उससे कहूँगा कि वो मेरे पगचिन्हों पर न चले। वो स्वयं पर निर्भर रहे और कोई भी मूर्खता का काम करने से पहले सोचे। मैंने स्वयं को सुधारने की पूरी कोशिश की। मैं केवल अपने पड़ोस को 'चिज़्मो' दिखाने की ही परवाह करता था। ड्रग्स, क्रिस्टल मेथ ने मुझको एक बेकार, निराशापूर्ण आदमी बना दिया। जब मैं अपने अतीत को देखता हूँ, तो मुझे स्वयं से बड़ी निराशा होती है। अन्त में, मुझे अपना नकाब उतारने की शक्ति मिल गई, पर अब बहुत देर हो चुकी है।"

06.00 बजे सायं – जेवियर का मिलना

रात्रि भोज के बाद, जेवियर लड़कों को सहयोग देने आता है और उनसे उनकी ज़िन्दगी के भविष्य के बारे में पूछता है। एरिक, 17, कल न्यायालय जाएगा और वो डरा हुआ है। उसके मित्र और जेवियर उसको सहारा देते हैं।

08.00 बजे सायं – घर से बात करना
लड़के टेलीफोन की कॉलों को सुन नहीं सकते। उनको एक पेफोन एवं 'कॉल कलेक्ट' का प्रयोग करना पड़ता है। यह उनके परिवारों के लिए महंगा पड़ सकता है। बहुत से बच्चे टेलीफोन को इस्तेमाल करना चाहते हैं, अतः सबका बात करने का समय सीमित रहता है। वहाँ पर कम्प्यूटर अथवा ई–मेल नहीं है। परिवारों एवं मित्रों को भेजे एवं आये पत्र खोले जाते है और जेल कर्मचारी उनकी जांच करते हैं।

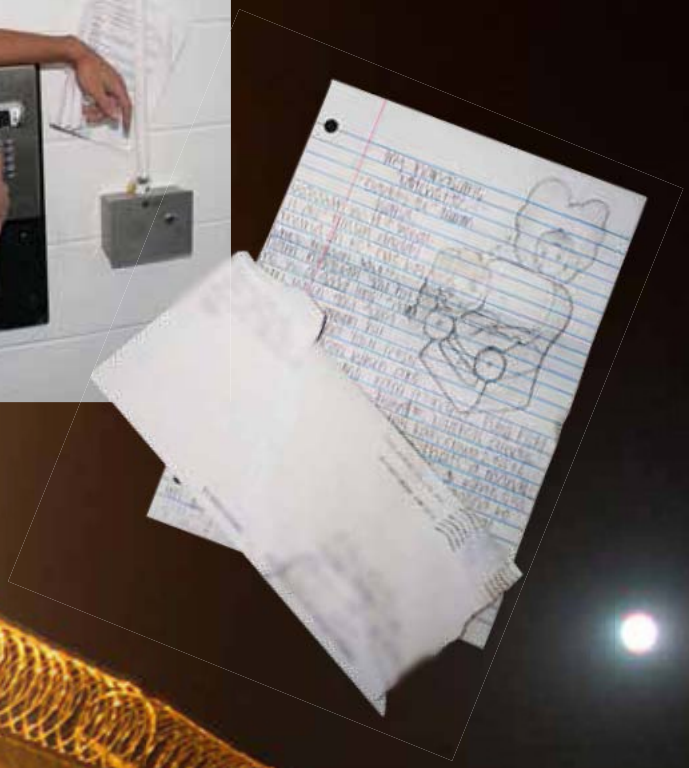

08.30 बजे सायं – बन्द कर दिये गये
माइकल उन कुछ लड़कों में से एक है जिनको स्वयं को सुधारने का दोबारा एक अवसर मिला है। जेल में ज़िन्दगी बिताने के बजाय उसे जल्द ही रिहा कर दिया जायेगा और वो छात्रावास वाले स्कूल में चला जायेगा जो गिरोहों एवं ड्रगों से बहुत दूर है। ''यह अन्य लड़कों को भी आशा देता है,'' वो कहता है।

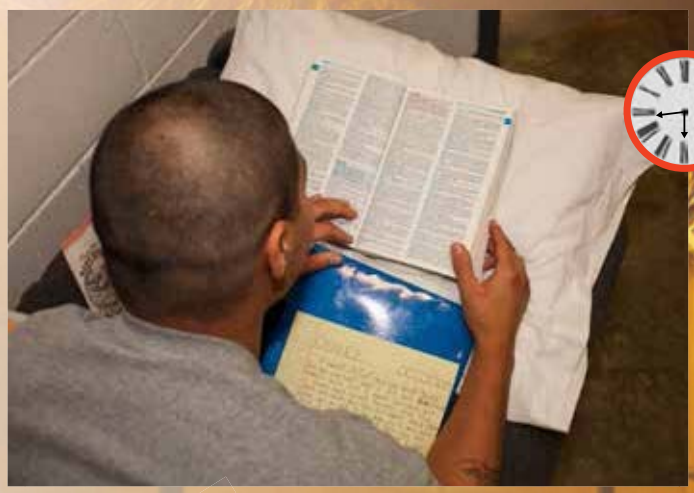

जोज़फ, 17 (नीचे) को अपने माता–पिता से फूल मिले है, और वो अपनी कोठरी में रोशनी आने के अन्तिम आधे घन्टे में एक कलाकृति बनाता है।

09.00 बजे सायं – लाइटें बन्द
अब दरवाजे कल तक के लिए बन्द हो गये। एरिक डरा हुआ है। वो कल के फैसले के लिए प्रार्थना करता है, कि उसको आजीवन कारावास न मिले। फिर वो लम्बे समय तक अंधकार में जगा रहता है।

तीन उम्र कैदों

डेविड की एक छोटी लड़की है जिसे उसने शायद ही कभी देखा है। ''उसकी माँ नहीं चाहती कि हमारा एक दूसरे से सम्पर्क रहे लेकिन फिर भी मैं उसके लिये पैसे निकाल कर उसे भेज दिया करता हूँ।''

डेविड 16 वर्ष का था जब उसके गिरोह के मित्रों में से एक ने सड़क पर दो लोगों पर गोली चलायी। किसी को गम्भीर चोट नहीं आई, और डेविड ही अकेला नहीं था हथियार पकड़े हुए। फिर भी, उसको हत्या करने का प्रयास करने के जुर्म में दोषी ठहराया गया और जेल में उम्रकैद की सजा दी गई, जिसमें आजादी का कोई अवसर नहीं था, कभी भी।

डेविड और उसके तीन छोटे भाई–बहन की परवरिश उनकी बुआ ने की। उनके पिता जेल के अन्दर बाहर आते–जाते रहते थे, लेकिन उनकी माँ कभी–कभी उनसे मिलने आया करती थी। एक दिन वो डेविड के छोटे भाई–बहन को लेकर कहीं चली गई। डेविड अकेला रह गया। रात को अक्सर वो जगा हुआ सोचता रहता था। ''वो मुझे क्यों नहीं चाहती?'' उसने अपने मन में अनेक कारण सोचे, लेकिन उसे कोई भी सही नहीं लगा। डेविड के सौतेले भाई–बहन उसको चिढ़ाते थे क्योंकि उसके कोई माता–पिता नहीं थे। जब वो सात वर्ष का हुआ, तो उसने अपनी बुआ से पूछा कि वो अपनी माँ के साथ क्यों नहीं रह सकता था।

''समय बहुत कठिन है,'' उसने उत्तर दिया।

कुछ वर्ष बाद, जब डेविड ग्यारह वर्ष का हुआ तो उसकी माँ वापस लौट कर आयी और उसको अपने साथ मैक्सिको ले गई। लेकिन वहाँ जाकर उसने उसको फिर से अकेला छोड़ दिया। उसके पिता शायद ही कभी जेल से बाहर इतने समय तक रहते थे कि वो उससे मिल सके। डेविड को इस बात का एहसास हो गया कि उसके माता–पिता उसकी देखभाल नहीं कर सकते।

एक नया परिवार

डेविड एक गरीब, खतरनाक क्षेत्र के बीच में रहता था। उसके चाचा एक गिरोह के सदस्य थे और डेविड उनको अपना आदर्श मानता था। वो गिरोह की कार्य प्रणाली एवं अटूट एकता से प्रभावित था। जब वो तेरह वर्ष का था, डेविड ने कहा कि वो गिरोह में शामिल होना चाहता है।

''नहीं, स्कूल जाना अधिक आवश्यक है,'' उसके चाचा ने कहा। गिरोह के अन्य सदस्यों ने सोचा कि अभी वो बहुत छोटा था। लेकिन डेविड ने स्कूल छोड़ दिया, एवं अन्त में उसको गिरोह में 'कूद' जाने दिया गया। उसका अर्थ यह हुआ कि गिरोह के दो सदस्यों उसे कुछ मिनट बुरी तरह पीटा और फिर

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: JOSEPH RODRIGUEZ

से अधिक

उसे एक बन्दूक दी और कहा कि वो किसी भी काम के लिए 'तैयार' रहे।

डेविड के चाचा दुखी थे।

''यदि तुम इसी रास्ते पर चलते रहोगे तो अन्त में तुम जेल में पहुँचोगे या मर जाओगे।''

उसी साल, एक गिरोह की लड़ाई में डेविड का एक पुराना स्कूल का सहपाठी गोली से मार दिया गया। लेकिन तब तक उसने इतने नशीले ड्रग लेने शुरू कर दिये थे कि उसको भय या दुख का एहसास नहीं हो पा रहा था।

अन्त की शुरूआत

गिरोह डेविड का परिवार बन गया जो उसके पास कभी नहीं था। जब वो अपने चाचा के साथ काम नहीं कर रहा होता था, तब वो दिन और रात अपने नए मित्रों के साथ समय बिताता था। एक सुबह, उन लोगों की लड़ाई एक दूसरे क्षेत्र के कुछ लड़कों से हो गई। गिरोह के एक बड़े सदस्य ने निर्णय लिया कि वो डेविड के पास जायें और उसकी बन्दूक ले आयें।

''मुझे यह एक बुरा विचार लगता है। हमको ऐसा नहीं करना चाहिए,'' डेविड ने कहा और अपनी बन्दूक दे दी। वो सही था। उसके कुछ समय बाद ही उसके मित्र ने उन दो लड़कों पर गोली चलाई जो उनमें से एक को लगी। डेविड उसके पास खड़ा था और उसने लड़के को गिरते हुए देखा। बाद में उसी दिन, पुलिस ने उसको गिरफ्तार कर लिया।

मुकदमा शुरू हुआ

जिस लड़के को गोली लगी थी उसे बहुत छोटी चोट आयी थी, और वो उसी दिन अस्पताल से छोड़ दिया गया। लेकिन फिर भी गोली चलाना एक हत्या करने का प्रयास माना गया है, और यह निर्णय लिया गया कि डेविड का मुकदमा एक वयस्कों वाले न्यायालय में चलाया जाये, जबकि वो सिर्फ सोलह साल का था। सरकारी वकील ने उससे एक समझौता किया।

''यदि तुम उम्र कैद के लिए राज़ी हो जाते हो तो तुम पर मुकदमा नहीं चलाया जायेगा, और तुमको 25 वर्ष बाद पेरोल पर छोड़ा जा सकता है।''

लेकिन डेविड नहीं माना। उसको कानून के बारे में अधिक नहीं मालूम था, लेकिन जब उसने किसी को गोली नहीं मारी थी, तो वो 25 साल के लिए जेल क्यों जाता?

डेविड को युवा सुधार केन्द्र में सात महीने के लिए रखा गया, उसके मुकदमें के पहले दिन तक। सुबह चार बजे, युवा सुधार केन्द्र की बस उसको न्यायालय ले गई, हाथ–पैर में बेड़ियाँ लगाये। उसकी रक्षा में जो वकील था उसने उसको पहनने के लिए एक सूट दिया और कहा कि वो अपने शरीर पर बने गिरोह के निशान को छिपाये रखे। जब डेविड न्यायालय में घुसा, तो वो इतना छोटा और पतला लग रहा था कि न्यायमूर्ति, जिसमें विभिन्न आयु की बारह पुरुष और महिलाएँ थीं, को उस पर तरस आया। लेकिन सरकारी वकील ने कहा:

''यह छोटा बच्चा इतना भोला नहीं है

David, 22

रहता है: कैलीफोर्निया जेल में।
पसन्द है: चित्रकला, कविताएँ लिखना, फुटबॉल खेलना।
दुखी होता हूँ: जब मैं अपने परिवार के बारे में सोचता हूँ, और यह कि मेरी ज़िन्दगी कैसी हो गई होती।
याद आती है: अपनी बेटी की।
सपना है: आज़ाद होने का।

जैसा कि लगता है।''

फिर उसने डेविड और उसके शरीर पर बने गिरोह के निशान, पुलिस द्वारा उपलब्ध पुराने फोटो में दिखाये। एक गिरोह के उस्ताद ने इस बात की पुष्टि की और बताया कि डेविड सबसे बद्तर में से बद्तर है।

निर्णायक दल का फैसला

मुकदमा डेढ़ हफ्ते तक चला। फिर निर्णायक दल अपना फैसला सुनाने से पहले आपस में निर्णय लेने के लिए चली गयी। डेविड अकेला एक छोटी, ठंडी कोठरी में प्रतीक्षा करता रहा। उसने अपनी आंखें कस के बन्द कीं और स्वयं से कहाः

''तैयार रहो, यह बहुत बुरा होगा।''

एक घन्टे बाद निर्णायक दल तैयार थी। डेविड को न्यायालय के कक्ष में वापस लाया गया और उसने देखा कि उसकी बुआ, उसकी माँ और उसकी लड़की मित्र वहाँ बैठी हुयी थीं।

''मैं तुम लोगों से प्यार करता हूँ,'' उसने कहा, जिसके बाद एक सुरक्षाकर्मी ने उसके हाथ कुर्सी से बांध दिये।

निर्णायक दल के सदस्यों में से एक खड़ा हुआ और कागज़ के एक टुकड़े को पढ़ने लगाः 'दोषी'। डेविड को अपने अन्दर से लगा कि वो बर्फ में बदल रहा है, हालाँकि वो यही सोच रहा था। महिला न्यायाधीश ने उसको देखा और उससे पूछा कि क्या उसको कठोर दण्ड मिलने पर बुरा लगेगा?

''तुम इतने आकर्षक हो, और देखने में इतने छोटे और निर्दोष लगते हो... तुम एक फरिश्ते की तरह लगते हो।''

उसके सुन्दर शब्दों ने डेविड को अस्मन्जस में डाल दिया। वो रुकी और फिर बोलती गईः

''लेकिन यही बात मुझे भयभीत करती है।''

कठोर दण्ड

न्यायाधीश ने कहा कि डेविड को एक दूसरा अपराध करने का अवसर कभी नहीं मिलेगा। उसको तीन आजीवन कारावासों के अतिरिक्त 20 वर्ष की सजा सुनाई गई, जिसमें उसके रिहा होने की कोई सम्भावना नहीं थी। उसको दिया गया दण्ड स्वतः कठोर था क्योंकि वो एक गिरोह का सदस्य था।

डेविड रोने लगा जब उसको कोठरी में ले जाया गया। सुरक्षाकर्मियों में से एक, जो एक खड़े बाल वाला बड़ा आदमी था, ने उसको 'च्विंग गम' के दो टुकड़े दिये और कहाः

''उस महिला की तरफ ध्यान मत दो। तुम्हें पता है कि तुम कौन हो। और शायद तुम इस फैसले को पलटवा दो।''

युवा सुधार केन्द्र और न्यायालय के बीच जाने के लिए प्रतिदिन सिर्फ दो बसें थीं, अतः डेविड को अपनी कोठरी में कई घन्टों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। उसने कंकरीट की बेन्च पर सोने की कोशिश की, लेकिन वो बहुत ठंडी थी। उसकी रक्षा वाला वकील थोड़ी देर के लिए उसके पास आया। वो उससे नाराज था।

''मैंने तुमसे कहा था कि तुम सरकारी वकील के समझौते को स्वीकार कर लो,'' उसने कहा।

जब डेविड वापस युवा सुधार केन्द्र में मध्य रात्रि में पहुँचा, तो सबको पता चला कि क्या हुआ। कर्मचारियों ने उसकी कोठरी के द्व ार पर एक नोट पर लिखा कि वो हर आधे घन्टे बाद उस पर नजर रखें, जिससे यह निश्चित हो कि वो अपनी स्वयं की ज़िन्दगी न ले।

कोई मिलने वाले नहीं

जब डेविड अट्ठारह वर्ष का हुआ तो युवा सुधार केन्द्र ने उसके जाने के लिए एक गुडबाई दावत आयोजित की। फिर उसको कैलीफोर्निया के सबसे बद्तर वयस्क जेलों में से एक में भेज दिया गया।

''मैं सचमुच डरा हुआ था,'' वो अब कहता है। ''लेकिन मैंने अपनी कोठरी एक अपने से बड़े व्यक्ति के साथ बांटी जिसने मुझे शान्त करने की कोशिश की।'' उसने कहा, ''तुम एक युवक हो, तुम्हारा गिरोह तुमको ढूँढेगा। बस तुम नशा, जुआ और लड़ाईयों से दूर रहो।''

कुछ सप्ताह बाद ही, जेल में विभिन्न गिरोहों के बीच हिंसक लड़ाईयाँ हो गयीं। अनेकों को चाकू लगे और ऐसे हथियारों से पीटा गया जिन्हें या तो तस्करी से जेल में लाया गया था या वहीं पर बनाये गये थे। कैदी और सुरक्षाकर्मी दोनों जख्मी हुए।

यद्यपि अधिकतर कैदी इसमें शामिल नहीं थे, फिर भी सभी जेल के बन्दियों को दण्डित किया गया कि एक वर्ष तक उनसे किसी को मिलने नहीं दिया गया और न ही उनसे टेलीफोन द्वारा बात करने दी गई। डेविड और अन्य बन्दियों को शायद ही कभी अपनी कोठरियों से बाहर जाने दिया जाता था।

''सुरक्षाकर्मी हमको 'भूत' कहा करते थे क्योंकि हम सब वहाँ पर रहकर बिल्कुल सफेद हो गये थे,

"यदि मैं यहाँ से कभी रिहा होऊँगा तो मैं बच्चो के साथ काम करना चाहूँगा, और उनकी सहायता करुँगा जिससे वो मुझसे अच्छे निर्णय ले सकें।"

बिना किसी धूप के।"

गिरोह से विदाई

डेविड को तब तक जेल में रहने की सजा मिली थी जब तक वो जीवित रहता। उसे आशा थी कि जिन नये कानूनों के बारे में जेवियर ने उसको बताया था उनके अर्न्तगत उसे 20 या 30 वर्षों में बाहर निकलने का अवसर मिल जाए। लेकिन यदि ऐसा होता है, तो उसे किसी भी तरह के गलत काम से दूर रहना होगा। इसीलिए वो अभी–अभी जेल के एक दूसरे भाग में रहने के लिए चला गया है, जहाँ पर उन लोगों की सुरक्षा की जा सकती हो जो गिरोह से मुक्त होना चाहते हैं। यह सचमुच एक बहुत कठिन निर्णय था।

"मेरा गिरोह बहुत लम्बे समय तक मेरा परिवार रहा, और वे बाहर से मुझे अन्दर ढूँढा करते थे। लेकिन मैं हर समय नकाब पहने थक गया था। वहाँ पर हर सप्ताह कम से कम एक बार चाकू भोंकने की खबर आती थी। मुझे लोगों को चोट लगते देखना अच्छा नहीं लगता था, और मैं किसी को चोट नहीं पहुँचाना चाहता था। मैं जिन्दा रहना चाहता था और मुझे उम्मीद थी कि शायद मैं अपनी लड़की को देख पाऊँगा। चाहे मुझे उस गिरोह से सम्बन्ध क्यों न तोड़ना पड़ता।"

"डेविड से शायद ही कोई मिलने आता है। उसके सारे सम्बन्धी वापस मैक्सिको चले गये थे। लेकिन जेवियर उससे मिलने आया करता है और यह उसके लिये बहुत मायने रखता है।"

"मेरा कोई पिता नहीं था, इसलिये जेवियर ने वो जगह भर दी। शुरू में मुझे शक था लेकिन उसने मुझे नहीं छोड़ा। वो मुझे आशा देता है और उसे मुझसे वो आशाएँ हैं जो मुझे स्वयं तक से नहीं हैं। जेवियर मुझे महसूस कराता है कि मुझे अभी भूला नहीं गया है।"

माइकल 15 वर्ष का था जब उसको पुलिस ने पाँच बार हत्या करने के प्रयास के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया। उसको आजीवन कारावास की सज़ा दी गई और जेल की ऊँची दीवारों और बिजली के बाड़ के अन्दर सारी जिन्दगी बन्द रहना पड़ेगा।

आजीवन कारावास की सजा दी गई

''मुझे परिस्थितियों में पड़े अन्य बच्चों की तरह गरीबी में बड़ा किया गया। मेरी माँ को शराब पीने की आदत थी और मेरा बाप गालियाँ देता था और नशा करता था। लेकिन मेरे पिता चले गये और अन्त में मुझे और मेरे भाई–बहनों को 'चाइल्ड प्रोटेक्टिव सर्विसेस' (सी.पी.एस.आई.) वाले ले गये और हम उनकी देखरेख में रख दिये गये। मेरी दादी हमको वापस ले आई इससे पहले कि वो हमको अलग–अलग घरों में रखते। मेरी माँ हम सबको वापस लाना चाहती थी लेकिन मेरी दादी ने केवल मुझे और मेरे छोटे भाई को ही ले जाने दिया।''

खाने के लिए चुराया

हम अपनी माँ के साथ अत्यधिक गरीबी में एक झोपड़े में रहने के लिए चले गये, वो मोहल्ला गिरोहों और नशा करने वालों से भरा हुआ था। हम एक ऐसे ट्रेलर में रहे जिसमें कोई खिड़की नहीं थी, उसमें केवल खाली बैग लटके थे जो देखने में खिड़कियों जैसे लगते थे। उसकी छत और फर्श बैठे जा रहे थे, और दरवाजों में कोई हैण्डिल नहीं थे क्योंकि उन पर पुलिस वालों ने लातें मारी थी।

मेरी माँ मुझे और मेरे छोटे भाई को अपने हाल पर कई सप्ताह तक छोड़कर चली जाया करती थी। हमारा भोजन पाने का मुख्य जरिया स्कूल जाना होता था जहाँ पर हमें मुफ्त में नाश्ता और दोपहर का खाना मिलता था। हर सप्ताह के अन्त में, रविवार को, मैं अपने भाई को पार्क ले जाता था जहाँ पर बेघर लोगों को भोजन मिलता था। अन्त में हमें अपनी देखभाल करने के लिए चोरी करनी पड़ी, जिससे हमें वस्त्र और भोजन मिल सके। मेरी माँ अब अधिक समय घर पर रहने लगी जब मैं लगभग 10 वर्ष का हो गया। उसे अच्छा नहीं लगता था कि मैं चोरी करके मेज पर भोजन रखूँ। तब वो मुझे लात मारकर बाहर भेज देती थी। तब से मैं अधिकतर सड़कों पर रहने लगा।

जीवित रहना सीख लिया

मैं एक गिरोह में फंस गया जब मैं ग्यारह वर्ष का था। गिरोह ने मुझे सिखाया कि मैं कैसे चोरी करके नशीले पदार्थों को बेचकर धन कमाऊँ। हमारे शत्रु भी थे जो हमें मारना चाहते थे अथवा किसी को जिसे मैं चाहता था। मुझे उनसे इतनी ईर्ष्या हो गयी कि मुझे यह नहीं दिखाई पड़ता था कि मैं कौन हूँ। अब मुझे पैसे की चिन्ता नहीं रहती थी। मैं बस यही चाहता था कि उनको अधिक से अधिक चोट पहुँचाऊँ जितनी बार वो मेरे रास्ते में आये या गोली चलायें या उन लोगों को मारें जो मेरे समीप थे।

मैंने भारी नशे का प्रयोग करना शुरू कर दिया जैसे क्रैक और मेथ। ग्यारह वर्ष की आयु में ही मैं वो बन गया जिसे लोग 'क्रैकहेड' कहते हैं। मेरी माँ मुझे घर के अन्दर नहीं आने देती थी, अतः मैं झाड़ियों में सोता था, पुलों के नीचे और पार्कों के विश्रामगृहों में। मेरे घर वाले मुझे घर के अन्दर तो नहीं आने देते थे लेकिन वो मुझे एक बन्दूक

माइकल, 20, को पाँच सालों के लिए जेल हो गई है।

माइकल बारह वर्ष का था जब उसको पहली बार गिरफ्तार किया गया। जब वो किशोर हॉल से न्यायालय ले जाया गया तो उसको नारंगी रंग का चोगा पहनना पड़ा उसके हाथों और पैरो में हथकड़ियाँ लगा दी गई जिन्हें उसकी कमर के चारों ओर एक चेन से जोड़ दिया गया।
''चलना बहुत मुश्किल होता है, तुमको आगे पैर घसीटना पड़ता है,'' वो बताता है।

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: JOSEPH RODRIGUEZ

दे देते थे और मुझसे कहते थे कि मैं अपनी रक्षा स्वयं करूँ।

पहली बार गिरफ्तार हुआ

मैं बारह वर्ष की आयु तक सड़कों पर रहा। फिर, किसी ने एक कार में से मुझ पर गोली चलाई लेकिन मैंने पहले गोली चला दी और अपनी जिन्दगी बचा ली। मुझे पकड़ लिया गया लेकिन मुझ पर केवल एक चलती गाड़ी पर बन्दूक चलाने का भी इल्जाम लगाया गया।

थोड़े समय तक जेल में रहने के बाद ही मुझे रिहा कर दिया गया। मेरी माँ नहीं चाहती थी कि मैं उसके घर में रहूँ। अतः मैं जल्द ही वापस अपने गिरोह में लौट आया। अब मैं 10 गुना अधिक अपराध करने लगा क्योंकि मैंने जेल में रहकर देख लिया था। मेरा जिन्दगी का नजरिया बदल चुका था। मैं सोचता था कि मैं जितना अधिक से अधिक अपने शत्रुओं को नुकसान पहुँचा सकूँ, तो मैं उनको अगले दिन मुझे अथवा मेरे किसी व्यक्ति को नुकसान पहुँचाने से रोक सकूँगा। अतः मैं उनको अधिक से अधिक हानि पहुँचाता चला गया। मैं भूल गया था कि मैं वास्तव में कौन था। मैं बस एक बारह वर्ष का बच्चा था।

सड़कों पर युद्ध

मेरे पेरोल अधिकारी का काम था कि वो मुझ पर नजर रखे जब मैं रिहा हो जाऊँ। उसने मुझे एक सुरक्षा गृह में भेज दिया क्योंकि मैं सड़कों पर भाग रहा था। मैं उस सुरक्षागृह में दो वर्षों तक रहा जिसके बाद मैं भाग गया और बहुत से नशीले पदार्थ बेचने लगा।

उस समय सड़कों पर युद्ध चल रहा था, बहुत ही खराब। निर्दोष लोगों पर गोली चलाई जाती थी और अक्सर वो मारे जाते थे। रातें सबसे खराब होती थीं, लेकिन हिंसा दिन के किसी भी समय हो सकती थी।

गिरोह कैसे होते हैं ?

माइक्ल लॉस एंजिलस (एल.ए.) में एक गिरोह में शामिल हुआ जब वो ग्यारह वर्ष का था। गिरोह लॉस एंजिलस में सन् 1940 से विद्यमान हैं। यह तब शुरू हुआ जब श्वेत वर्ण के लोगों के समूह जो मैक्सिकन अमरीकन क्षेत्रों में गये और उन्होंने वहाँ के युवा लोगों पर आक्रमण किया। पुलिस ने इस पर कोई कार्यवाही नहीं की। अतः अनेकों युवा लैटिनों ने अपने मित्रों के साथ मिलकर अपने मोहल्ले और एक–दूसरे की रक्षा की। धीरे–धीरे, इन मित्रों के गिराहों में से कुछ एक दूसरे से लड़ने लगे, इस बात पर कि कौन सा मोहल्ला सबसे अच्छा था और कौन सा सबसे शक्तिशाली। उनमें से कुछ अपराधिक गिरोहों में परिवर्तित हो गये, जो इस पर लड़ा करते थे कि किसको विशेष क्षेत्रों में नशीले पदार्थ बेचने की अनुमति मिले। सन् 1980 के दशक में अनेकों गिराहों ने और शस्त्रों का प्रयोग करना शुरू कर दिया और अधिक खतरनाक ड्रग्स बेचने शुरू कर दिये। आधुनिक वर्षों में अपराध कम हो गया है, फिर भी सैकड़ों गिरोह सारे लॉस एंजिलस में हैं, जो सभी तरह के जातीय समूहों के हैं। जो बच्चे इन क्षेत्रों में बड़े होते हैं जहाँ यह गिरोह शक्तिशाली हैं वो अक्सर मजबूरी में इनमें शामिल हो जाते हैं, जिससे उनके मित्र बन जाये और उन्हें सुरक्षा मिले। एक बार तुम उनमें शामिल हो गये, तो बिना दण्ड मिले उनको छोड़ना बहुत कठिन होता है।

अनेकों उच्च कोटि के गिरोहों के नेताओं को आजीवन कारावास मिल चुका है। लेकिन वे जेल में अन्दर से अपने गिरोह को अब भी चलाते हैं।

क्या तुमको पता था?

- यह कि जो लोग आजीवन कारावास की सज़ा काट रहे हैं उन हत्याओं के लिए जो अपने बचपन में थे, उनमें से लगभग आधे भौतिक रूप से उनमें शामिल नहीं थे – उदाहरण के लिए एक बन्दूक चलाकर। उनमें से कुछ दोषी व्यक्ति के पास में खड़े हुये थे। अन्य इधर–उधर घूम रहे थे, उदाहरण के लिए, एक दुकान के बाहर, जबकि उनके मित्रों ने एक सशस्त्र लूट–पाट की थी।
- यह कि उन मामलों में जहाँ किसी बच्चे के साथ एक बड़ा व्यक्ति था, तो उस वयस्क को बच्चों की अपेक्षा छोटी सज़ा दी गई आधे से अधिक मामलों में।
- यह कि कैलिफोर्निया में 85 प्रतिशत लोग जिनको अपने बचपन में अपराधों के लिए उम्रकैद की सज़ा दी गई है, काले (अफ्रीकन अमरीकी) अथवा लैटिनो (जिनकी जड़ें दक्षिण अमरीका में हैं) में हैं।

बच्चे वयस्कों के साथ बन्द कर दिये जाते हैं

संयुक्त राज्य अमरीका में, लगभग 2,50,000 बच्चों पर वयस्कों की तरह कानूनी कार्यवाही की जाती है, इसके बजाए कि उनके मामले को एक बाल एवं युवा कोर्ट में सुना जाए। हर रात, 10,000 बच्चे एक वयस्कों वाली जेल में रात बिताते है। अनेकों को तो अदालत में पेश तक नहीं किया गया है, उन पर केवल अपराध करने का शक है। फिर भी, उनको बड़े खतरे में डाल दिया जाता है और उनको उसी कारागार में रहकर वयस्कों की अपेक्षा, दुराचार एवं यौन हिंसा का कहीं अधिक जोखिम उठाना पड़ता है। वयस्कों की अपेक्षा, इस बात की भी आशंका बनी रहती है कि बच्चे मानसिक अवसाद के कारण आत्महत्या करने का प्रयास कर सकते हैं।

जब माइकल को हत्या करने के प्रयास में पकड़ा गया था तो उसने किसी की भी परवाह करना छोड़ दिया था। हर संध्या कचहरी के बाद वो अन्य बच्चों से लड़ता था और जुवेनाइल हॉल के कर्मचारियों से भी। उसको अक्सर 'बक्से में' अकेले रहने के लिए भेज़ दिया जाता था जिससे वो शान्त हो जाये।

हमको पागलपन सा लगता था, जैसे मानो तुम्हारे पीछे हर समय कोई लगा हो। मुझे स्टोर तक जाने में भी बिना बन्दूक लिये असुरक्षित महसूस होता था।

मुझे पुलिस ने नशीले पदार्थों और बन्दूक रखने के लिए गिरफ्तार कर लिया। मुझे छह महीने के लिए ''जुवेनाइल कैम्प'' भेज दिया गया, जहाँ पर मैं अन्य गिरोहों के लोगों से टकरा गया जिन्होंने मुझ पर गोली चलाई थी और जिन पर मैंने गोली चलाई थी। हम जितनी बार एक दूसरे को देखते थे लड़ते थे – जैसे मानों जानवर एक–दूसरे के गलों को चीर रहे हों, बिना यह सोचे कि वो वास्तव में एक दूसरे की शक्लों की छवियां हैं। हम एक जैसी परिस्थितियों में बड़े हुए थे, फिर भी हम एक–दूसरे से ईर्ष्या करते थे क्योंकि वो मुझसे तीन ब्लाक दूर रहते थे।

उन्होंने मुझे 14 वर्ष की आयु में रिहा कर दिया। मेरे पास कुछ नहीं था, अतः मैंने फिर से दो सप्ताह के भीतर नशीले पदार्थ बेचने शुरू कर दिये और मेरी माँ ने मुझे फिर से घर के बाहर निकाल दिया। मैं इतना नीचे गिर चुका था। मैं एक ऐसी गहरी अंधेरी जगह पर पड़ा था जहाँ मुझे जिन्दगी की परवाह नहीं थी, ना अपनी ना किसी और की। मुझे अपना क्रोध और निराशा निकालने का यही जरिया मिलता था कि मैं दूसरों को चोट पहुँचाऊँ। मैं अनेकों रात उस पुल के नीचे सोया। मैं स्वयं में रोया – मैं जिन्दगी को नहीं समझ पा रहा था। असमंजस में पड़े, ठण्डा और बिना दिल के, मैंने अपनी भावनाओं को उन लोगों पर उतारा जो मुझे अपने शत्रु दिखते थे।

फिर से पकड़ा गया

जब मैं 15 वर्ष का हुआ उसके तीन महीने बाद ही मुझे पाँच बार हत्या करने की कोशिश के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया गया। मेरे अपराध का साथी, जो मुझसे बड़ा था, ने सारा इल्जाम मुझ पर लगाया क्योंकि उसे लगा कि मैं कम समय में छूट जाऊँगा। लेकिन वहाँ यह निर्णय लिया गया कि मेरा मुकदमा एक वयस्कों के न्यायालय में चलाया जाये। मेरे खिलाफ सारे इल्जाम लगे थेः दो महिलायें, जो उन पीड़ितों में थीं, मेरे खिलाफ बयान दे रही थीं। मेरे अपराध का साथी मुझको 'गिरोह का निपुण' कहकर मेरी ओर संकेत कर रहा था। मेरा सार्वजनिक वकील मेरी रक्षा नहीं करना चाहता था क्योंकि मुझ पर घोर अपराध लगे थे। हर रात सुनवाई के बाद मैं किशोरों के हाल में लड़ाई करने लगता था, क्योंकि अब मैं बिल्कुल परवाह नहीं करता था।

लेकिन मुझे याद है कि एक बार जब उन लोगों ने मुझे एक 'बक्से', अर्थात् एक अकेली कोठरी में फेंक दिया क्योंकि मैं उनके कर्मचारियों से लड़ रहा था, तब अचानक मैने अपने मन में सोचाः ''यह मेरे साथ कोई और नहीं कर रहा है। मैं स्वयं के साथ ही ऐसा कर रहा हूँ। यदि यही मेरा घर जिन्दगी भर के लिये रहेगा, तो क्यों ना इसको और बद्तर बनाओ।''

मैंने किताबे पढ़ना शुरू कर दिया, और स्वयं को रखने के तरीके ढूँढ़े, जैसे फिल्में देखना। मुझे सारे विभिन्न स्थानों के बारे में पढ़ना अच्छा लगता है जहाँ

माइकल अब लगभग 3800 अन्य बन्दियों के साथ कैलिफैट्रिया के प्रदेशीय कारागार में बन्दी है। उनमें से लगभग आधे आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं। बन्दीगृह, मैक्सिको की सीमा के पास, मोजावे रेगिस्तान में है। गर्मियों के समय जेल के बरामदे में तापमान 47 डिग्री तक पहुँच जाता है।

मैं कभी नहीं गया हूँ। वो चीजे जो मैंने कभी नहीं देखी हैं। मैं उन लोगों के बारे में जानना चाहता हूँ जो दूसरे देशों में मुझसे बद्तर परिस्थिति में हैं। मुझे लगता है कि शिक्षा प्राप्त करना ही इसकी कुँजी है।

आजीवन कारावास

मैं अचम्भित नही हुआ जब मुझे आजीवन कारावास दिया गया। मैंने अपनी माँ से कहा जब वो मेरी सजा सुनाये जाने से एक सप्ताह पहले मुझसे मिलने आई थी। "तुम उन लोगों को वहाँ पर तुम्हें रोते हुये नहीं देखने देना। उस दिन मैं न्यायालय के कमरे में गया, इस आशा से कि निर्णायक दल आपस में समझौता नहीं कर पाई होगी, यह सोचते हुये कि ऐसा नहीं होगा। जब उन्होंने मुझे 'दोषी' कहा पहले हत्या के प्रयास के लिये, तो मैंने अपना सिर नीचे कर दिया, यह जानकर कि मेरा भविष्य अब पत्थर में बन्द हो गया था। पर फिर मैंने अपना सिर ऊपर उठाया, जिससे वे मुझे खोया हुआ सा ना देख सके। मैं यह दिखाने के लिए मुस्कुराया कि वे मुझे तोड़ नहीं सकते थे। लेकिन बाद में मैं रोया, जब वो वापस मुझे मेरी कोठरी में ले गये, क्योंकि मुझे अपने भविष्य का पता था।

अब मुझे पहले से अधिक शक्तिशाली महसूस होता है जैसा पहले कभी नहीं हुआ था। मेरे जैसे बच्चों की सहायता करने के लिए नये कानून बन रहे हैं। हम में से कुछ को नहीं लगता था कि हमारे पास कोई अन्य विकल्प है सिवाय इसके कि हम इसी तरह रहते रहें। शायद हम लोगों को यह समझने में सबसे बुरे दिन गुजारने पड़े यह जानने के लिए कि हम इस हालत में सबसे अच्छा क्या कर सकते हैं। जब तुम्हारे पास कुछ खोने को नहीं होता, तो तुमको हर चीज़ में लाभ दिखता है। जब तक तुम बैठ कर बुरा महसूस नहीं करोगे। हम सब के पास खुश रहने के लिए कुछ न कुछ होता है। हम स्वयं की सहायता कर सकते हैं।

माइकल ने अपनी माँ को दो वर्षों से नहीं देखा, लेकिन वो एक–दूसरे को चिट्ठियां लिखते हैं। "जब जेवियर यहाँ आता है तो ऐसा लगता है कि कोई मेहमान आया है," माइकल कहता है।

हम क्षमा कर देते हैं

इतज़ेल बारह वर्ष की थी जब उसकी बड़ी बहन जूरी को उसके लड़के मित्र ने मार डाला। परिवार ने उससे बदला लेने के बजाय उसको क्षमा कर देना बेहतर समझा। आज, वो जेवियर के साथ बदला लेने और लम्बे समय तक कारागार में बन्द रहने के दण्डों के विरुद्ध लड़ते हैं।

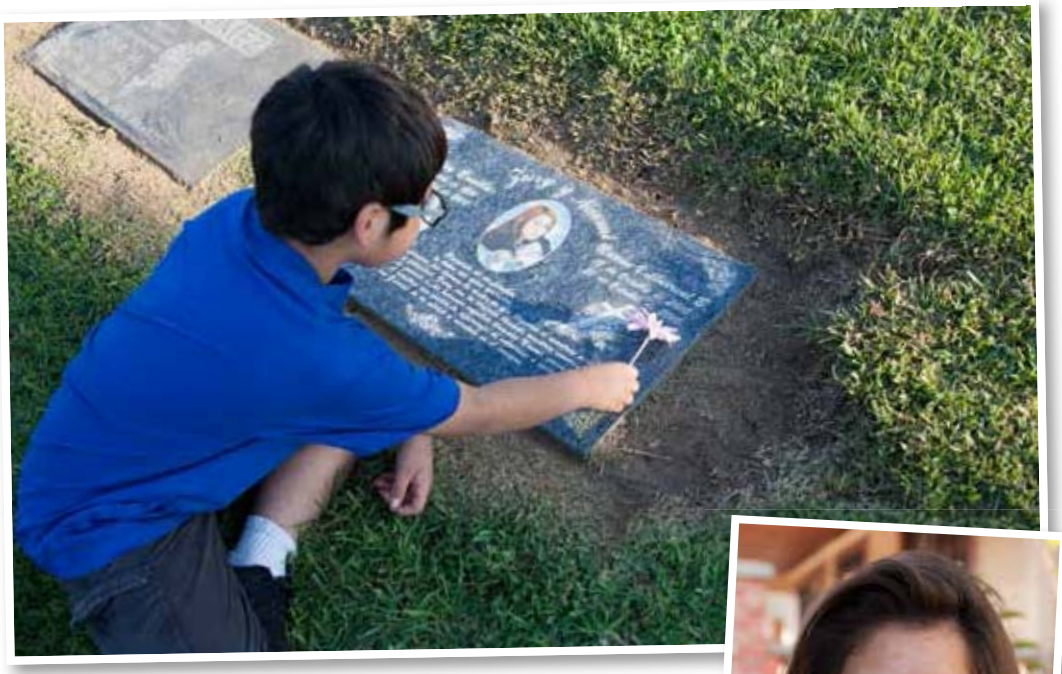

जैडेन तीन वर्ष की थी जब उसने अपनी माँ और छोटी बहन को खो दिया। वो अक्सर अपने परिवार के साथ उनकी कब्रों पर जाती है। ''मैं वो फूल चुन लेती हूँ जो मैं अपने साथ लेकर जाऊँगी,'' वो कहती है।

जूरी का लड़का मित्र, एड्डी, उससे बहुत ईर्ष्या करता था।

''उसे अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखने के लिए सलाहकार से मदद मिल रही थी, लेकिन उस दिन वो आपस में लड़ रहे थे। वे एक–दूसरे को चाहते थे लेकिन एड्डी निराश था और उसने कहा कि वो स्वयं को मार डालेगा,'' इतज़ेल स्मरण करती है।

उसी दिन देर शाम को, परिवार अपने मिले–जुले सोने के कमरे में इकट्ठा था। इतज़ेल, उसके माता–पिता और भाई–बहन, और जूरी का तीन वर्षीय लड़का और उसकी नवजात पुत्री। कोई सो नहीं पा रहा था। इतज़ेल अपनी माँ के साथ प्रार्थना कर रही थी कि एड्डी शान्त हो जाए। लेकिन मध्य रात्रि में, एक जोर की आवाज हुई। सारी लाइटें बन्द हो गयीं और फर्नीचर एवं प्लास्टिक उनके इधर–उधर गिरने लगा। एड्डी ने अपनी कार को सीधे घर के अन्दर घुसेड़ दिया था।

बदले के लिए आवाज़ उठाना

जूरी और उसकी 14 दिन की बेटी उस हादसे में मर गयीं। एड्डी गिरफ्तार कर लिया गया और उस पर दो हत्याओं एवं छह हत्याएँ करने की कोशिश का आरोप लगा। मित्रों एवं परिवार के सदस्यों ने इतज़ेल के परिवार को शान्त करने का प्रयास किया। अनेकों ने कहा, ''उसे मर जाना चाहिए जो उसने किया है!'' लेकिन इतज़ेल यह नहीं चाहती थी कि एड्डी मरे। एड्डी की छोटी बहन रूबी उसकी सबसे अच्छी दोस्त थी और उन दोनों को भरोसा था कि एड्डी स्वयं को छोड़कर किसी और को चोट नहीं पहुँचाना चाहता था।

''वो उखड़ गया, पगला गया और मरना चाहता था,'' इतज़ेल ने कहा। उसके माता–पिता को भी यही लगा।

जब एड्डी के परिवार वाले उनसे क्षमा मांगने आये, तो वो सब मिलकर रोये।

''तुम भी इस हादसे से पीड़ित हो, ठीक हमारी तरह,'' उसके पिता, टॉमस ने कहा। ''ईर्ष्या करने और बदला लेने से हमारे प्रिय जन वापस नहीं आ जाते हैं। इससे सिर्फ लोगों की आत्माओं में जहर भरता है।''

एड्डी के लिए बयान देना

मुकदमें के सरकारी वकील ने सोचा कि जूरी के परिवार को चाहिए कि वो एड्डी को कठोर से कठोर दण्ड दिलवाये, यहाँ तक कि मृत्यु दण्ड। लेकिन इसके बजाय, इतज़ेल के माता–पिता चाहते थे कि एड्डी को जेल में सहायता मिले। उसकी माँ ने कहा:

''मुझे हर रोज तकलीफ होती है, लेकिन मुझे यह जानकर कोई सुकून नहीं मिलेगा कि एक और माँ भुगतेगी, अपने लड़के की मौत का इंतिजार करते हुए।''

न ही उसके शब्द और न ही एड्डी के गहरे अफसोस करने से उसको सहायता मिली। जेवियर उसके मुकदमे के आखिरी दिन उनके साथ गया, और वो नाराज हो गया जब सरकारी वकील ने एड्डी के बारे में बुरी बातें कहीं, और उसने पीड़ितों के परिवार के बदला न लेने पर उनकी निन्दा की। दोनों ही परिवारों ने रोना शुरू कर दिया जब उन्हें लगा कि कोई उनकी परवाह नहीं करता था। मुकदमे के समाप्त होने से पहले, वो खड़े हो गये और न्यायालय के बाहर आ गये। उन्हें पहले ही पता चल चुका था कि एड्डी जेल में आजीवन मरने तक के लिए बन्द कर दिया जायेगा।

''मेरी बहन के मरने से पूर्व मुझे नहीं पता था कि मैं ज़िन्दगी में क्या करूँ, लेकिन अब मुझ में न्याय दिलाने की एक होड़ है। मैं एक वकील बनना चाहती हूँ और उससे परिवर्तन लाना चाहती हूँ,'' इतज़ेल कहती है।

इतज़ेल (सबसे दाहिनी ओर) एड्डी की माँ के साथ, उसकी माँ और उसकी सबसे अच्छी मित्र – एड्डी की बहन, रूबी। वे एक–दूसरे को सहारा देते हैं और अन्य परिवारों को भी जो हानि एवं दुख से प्रभावित हैं। वो चिढ़ने और बदला लेने की अपेक्षा क्षमा करने और आशा दिलाना चाहता हैं।

चार साल बीत चुके हैं, लेकिन इतज़ेल का परिवार अभी भी जूरी और नाओमी के बारे में रोज सोचती है।

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: JOSEPH RODRIGUEZ

बड़ा भाई चला गया

कभी–कभी लगता है कि इस्माईल का अब कोई बड़ा भाई नहीं है। उसके भाई ओमार को गिरफ्तार कर लिया गया था और आजीवन जेल में भेज दिया गया था जब वो 14 वर्ष का था। अब वे एक–दूसरे को एक साल में कुछ ही बार देख पाते हैं।

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: JOSEPH RODRIGUEZ

इस्माईल, 11, को नहीं पता कि ओमार जेल में क्यों है।

''मेरे माता–पिता अभी मुझे यह नहीं बताना चाहते। वो सोचते हैं कि मैं यह समझने के लिए बहुत छोटा हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि मैं अब बड़ा हो गया हूँ। इससे मेरे दिमाग पर जोर पड़ता है। कभी–कभी मुझे लगता है कि मेरे बच्चे से शरीर में एक वयस्क का दिमाग है। मैं चाहता हूँ कि मेरे घर पर मेरा एक बड़ा भाई होता, जो मुझे स्कूल का गृहकार्य कराता, मेरे साथ खेलता और मेरे जन्मदिन पर मौजूद होता। वो मेरे स्नातक होने पर नहीं होगा, और तब भी जब एक दिन मेरी शादी होगी। मुझे दुख होता है।''

''यह ऐसा है जैसे मानो हम साथ–साथ बड़े हुए और वो पीछे रह गया,'' उसकी बड़ी बहन येन्सी, 18, कहती है। ''यह सचमुच दुख देता है। कोई यह बात नहीं समझ सकता जब तक कि उसे स्वयं उसका अनुभव न हुआ हो।''

सदैव चिंतित

यह सब तब शुरू हुआ जब ओमार ने एक हिंसक गिरोह के कुछ बच्चों से मित्रता कर ली। वो देर तक बाहर रहने लगा और बदल गया – वो दुखी और क्रोधित हो जाता था। एक शाम पुलिस उसको घर पर ले आई। उसने उससे कहा कि वो अपनी कमीज़ ऊपर उठाये और अपने शरीर पर बने नए गिरोह का चिन्ह अपनी माँ को दिखाये जिसे देख कर उसकी माँ को बड़ा झटका लगा। अन्त में उसका परिवार ओमार को बचाने के लिए एक दूसरे मोहल्ले में रहने चला गया। तब उसने एक बैग में अपना सामान रखा और भाग हो गया। उसके माता–पिता उसको ढूँढने के लिए इधर–उधर गाड़ी चलाते रहे, लेकिन वो उसे नहीं ढूँढ पाये। कुछ समय बाद, उसको जेल में बन्द कर दिया गया।

बहुत दूर ले जाया गया

शुरू में ओमार को अपने परिवार के पास बन्दी बनाकर रखा गया और वो अक्सर एक–दूसरे से मिलते रहते थे। और फिर उसको कैलीफोर्निया के बद्तर बड़े जेल, पैलिकन बे, में भेज दिया गया, जहाँ पर उसके घर वालों का आना–जाना कम हो गया क्योंकि वहाँ पर कार से पहुँचने में 15 घन्टे लगते थे।

''कभी–कभी हम एक काँच वाली खिड़की के इधर–उधर बैठ जाते हैं, और एक के बाद एक, टेलीफोन पर बात करते हैं,'' इस्माईल कहता है। ''लेकिन मेरी माँ को हमेशा टेलीफोन चाहिए होता है! उससे मिलने वाले कमरे में मिलना बेहतर होता है, जहाँ पर हम उसको गले लगा सकते हैं और उससे बात कर सकते हैं।''

सदैव चिन्ता लगी रहती है

''मेरी चिन्ता मत करो,'' ओमार अपनी चिट्ठियों में यह बात हमेशा लिखता है, लेकिन उसके परिवार को हमेशा चिन्ता होती रहती है। ''वहाँ पर बहुत बुरा है, वो लड़ते रहते हैं। ओमार की नाक और उंगलियाँ टूट गईं थीं,'' इस्माईल कहता है। ''लेकिन वो बदल गया है, वो अब और तेज हो गया है और उसने स्कूल जाना शुरू कर दिया है। मेरा सपना है कि वो एक दिन मुक्त हो जायेगा।''

इस्माईल अपने भाई ओमार से मिलने की तैयारी कर रहा है, जिसे एक अपराध के लिए आजीवन कारावास की सजा मिली थी जब वो 14 साल का था।

इस्माईल को अपने भाई की याद आती है, जिसे जेल में उम्रकैद की सजा मिली थी।

ओमार एक चिट्ठी लिखता है: ''मैं उस जगह नहीं हूँ जहाँ मैं होना चाहता हूँ, लेकिन यह एक सजा है और मेरे लिए एक सबक जो मुझे अपने किये के लिए भोगना पड़ेगा... हमेशा ध्यान रखो कि तुम किसके साथ घूम रहे हो और सबसे अच्छा बर्ताव करो। मैं तुमको प्यार करता हूँ और मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है।''

Ismael, 11

चाहता है: अपने परिवार को
बजाता है: सैक्सोफोन एवं रिकार्डर
मुझे क्रोधित करता है: दूसरों को धौंस दिखाना और जातिवाद
बनना चाहता हूँ: एक वकील
याद आती है: अपने बड़े भाई की

कैलाश को क्यों नामित किया गया है?

बाल अधिकार हीरो नामित • पृष्ठ 72–92

Kailash Satyarthi

कैलाश सत्यार्थी को सन् 2015 के वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के लिए नामित किया गया है क्योंकि उसने बाल मजदूरी एवं दासता के विरुद्ध खतरनाक संघर्ष किया है, और सभी बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार के लिए भी।

जब कैलाश एक युवा पुरुष था, तब वो ईंट के भट्टों एवं कारखानों में दासों की तरह काम कर रहे बच्चों को मुक्त कराने के लिए स्वयं की जिन्दगी को खतरे में डालता था। उसने 'बचपन बचाओ आन्दोलन' (बी.बी.ए., 'सेव चाइल्डहुड मूवमेन्ट') की स्थापना की और मुक्त कराये गये दास बच्चों के लिए बाल गृह बनाने शुरू किये। उस समय, लगभग 30 साल पहले, भारत में शायद ही कोई इन बच्चों के अधिकारों के लिए आवाज उठाता था। कैलाश को मृत्यु की धमकियाँ मिलीं और उस पर आक्रमण किया गया, और उसके दो सहपाठियों को मार डाला गया, लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। इन दिनों, कैलाश और बी.बी.ए. 80,000 से अधिक बच्चों को मुक्त करा चुके हैं, और उसका 'ग्लोबल मार्च अगेन्स्ट चाइल्ड लेबर' नामक अभियान एक आन्दोलन का रूप ले चुका है जिसमें लाखों लोग शामिल हैं। उसके कार्य ने नये नियमों एवं कानूनों को स्वीकृति दिलाने में योगदान दिया है जिससे विश्व भर में बच्चों के अधिकारों की रक्षा की जा सके। कैलाश की बाल मजदूरी से रहित कालीनों के निर्माण के लिये 'गुडवीव' नामक लेबिल ने कालीन उद्योग में काम कर रहे बच्चों की संख्या को 10,00,000 से कम करके 2,50,000 कर दिया है और हजारों गरीब गाँवों को उससे सहायता मिली है जिस कारण वे 'चाइल्ड फ्रेन्डली' हो गये हैं। फरवरी 2014 में, डब्ल्यू.सी.पी. बाल न्यायमूर्ति ने कैलाश को सन् 2015 के वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज का एक प्रत्याशी के रूप में उसी वर्ष नवम्बर में चयन किया था। उसको मलाला यूसफज़ाई के साथ नोबेल शान्ति पुरस्कार मिला था।

कैलाश अपने राजस्थान के बाल आश्रम में अपने मोबाइल से एक सेल्फी खींचता है, जहाँ पर उसकी संस्था मुक्त कराये गये बाल दासों को रखती है।

दक्षिण भारत के एक ईंट के भट्टे में, 27 परिवारों को दासों की तरह बंधक बनाकर रखा गया है। छोटे बच्चे हर रोज़ हजारों ईंटें बनाते हैं, 16 घन्टे प्रतिदिन, तपते सूरज के नीचे काम करके। लेकिन आज, आसमान काला है और वर्षा तेज़ी से हो रही है। कैलाश फाटकों के बीच गाड़ी चलाता हुआ जाता है और एकदम से गाड़ी रोकता है। वो और उसके कार्यकर्ता बाल दासों को मुक्त कराने के लिए आये हैं।

जैसे कैलाश गाड़ी के बाहर कूदकर बाहर निकलता है, उस समय वो हिंसक प्रतिक्रिया के लिए तैयार है। भट्टे पर साधारणतः सशक्त सुरक्षाकर्मी रहते हैं। लेकिन अभी कुछ नहीं होता। जगह वीरान है। किसी ने मालिक को बता दिया है, और दास कार्यकर्ताओं को ले जाया जा चुका है।

अन्त में, कैलाश बच्चों को ढूँढ लेता हैं, सड़क के किनारे छोड़े गये, भट्टे से ज्यादा दूर नहीं। वे चिथड़े वस्त्रों में हैं और उनके ऊपर ईंटे की गर्द, धूल और गंदगी पड़ी है। उन्हें डर लगता है जब कैलाश उनके पास आता है, लेकिन वो इतने थक गये हैं कि भाग नहीं सकते।

''हम यहाँ पर तुम्हारी मदद करने आये हैं। अब तुम आज़ाद हो,'' कैलाश बताता है। बच्चे उसको घूरते हैं – लेकिन वो समझ नहीं पाते। उन्हें नहीं पता कि आज़ादी क्या होती है। लेकिन वो भोजन और जल मिलने के वायदे पर गाड़ियों में बैठने के लिए तैयार हो जाते हैं। सिवाय एक लड़की के जो जमीन पर पड़ी है। वो कमजोर है और उसका शरीर बुखार से तप रहा है, वो रोती है और चिल्लाकर कहती है, ''मम्मी, मेरी मदद करो!''

उस लड़की का नाम गुलाबो है और वो 14 वर्ष की है। वो इस ईंट के भट्टे पर पैदा हुयी थी और उसने अपनी सारी ज़िन्दगी यहाँ पर काम किया है। कई वर्षों तक ईंट की धूल मे सांस लेने से उसके फेफड़ नष्ट हो गये हैं, और कुछ घन्टों बाद ही वो मर जाती है।

कोई शिक्षा नहीं

जब गुलाबो के पिता अपनी बेटी के शरीर को दफनाने के लिए उसे लेने आते हैं, तो वो कहते हैं:

''यदि मुझे केवल पढ़ना और लिखना आता होता, तो हम कभी दास नहीं बने होते और मैंने अपनी पुत्री को नहीं खोया होता।'' वो कैलाश को बताता है कि एक मजदूरों के मालिक ने उसको बेवकूफ बनाकर उससे एक समझौते पर अंगूठा लगवाकर हस्ताक्षर करवा लिये जिसको वो पढ़ नहीं सकता था। इसी तरह उसका परिवार 17 वर्षों तक दास बना रहा। इस पिता के शब्द कैलाश को यह समझने में सहायक होते हैं कि शिक्षा ही दासता एवं निर्धनता को समाप्त करने की कुँजी है। किन्तु उसने हमेशा से यह माना है कि बाल मजदूरी गलत होती है।

कैलाश स्कूल शुरू करता है

कैलाश खुश भी था और घबराया हुआ भी जब उसने स्कूल शुरू किया था, उसे अपनी नई यूनीफार्म एवं बैग पर गर्व है। उसने अपनी आयु के एक लड़के को स्कूल के बाहर बैठे हुए देखा। उसके किनारे एक आदमी बैठा था, शायद उसका पिता, एक जूते पॉलिश करने का बक्सा लिये हुए। दोनों नंगे पैर थे और धूल वाले गन्दे कपड़े पहने थे।

अगले दिन, कैलाश ने अध्यापक से पूछा:

''यह कैसे हो रहा है कि हम लोग इस कक्षा में बैठे हुए हैं, और वो लड़का बाहर काम कर रहा है?''

अचम्भित होकर, अध्यापक ने कहा:

''वो गरीब हैं, और इस तरह के लड़कों के लिए काम करना साधारण बात है।'' पहली बार, कैलाश को पता चला कि विभिन्न बच्चों की बिल्कुल अलग ज़िन्दगियाँ हो सकती थीं।

उसका स्वयं का परिवार न तो अमीर था न गरीब। उनके पास पर्याप्त था, और वो एक अच्छी ज़िन्दगी बिताते थे।

हर रोज स्कूल जाते समय कैलाश उस बच्चे को बाहर बैठा देखता था। एक दिन उसने उसके पिता से बात करने का साहस जुटाया।

''तुम्हारा लड़का स्कूल क्यो नहीं जा सकता?''

उसका पिता उतना ही अचम्भित हुआ जितना कि अध्यापक हुआ था।

''किसी ने मुझसे कभी यह सवाल पहले नहीं किया। मैंने इसके बारे में कभी नहीं सोचा। मेरे पिता काम करते थे जब वो लड़के थे, और मैं भी, और अब मेरा लड़का काम करता है। हम काम करने के लिए ही पैदा हुए थे।''

यह उसको गलत लगा, लेकिन इसमें कैलाश क्या कर सकता था? वो अभी सिर्फ छह वर्ष का था।

मित्र गायब हो गये

जब कैलाश बारह वर्ष का था, तभी उसके अनेकों स्कूल के सहपाठियों को मजबूरी मे स्कूल जाना छोड़ना पड़ा। वे स्कूल का शुल्क और स्कूल की पुस्तकों का खर्च नहीं सहन कर सकते थे। तब कैलाश सारे शहर में लोगों से उनकी पुरानी पुस्तकों को मांगने के लिए पैदल घूमता रहा। केवल एक दिन में, उसने 2000 स्कूल की पुस्तकें इकट्ठा कर लीं। उसने गरीब बच्चों के लिए एक पुस्तकों का मेला शुरू किया, और चाय बेचकर, जूते पॉलिश करके तथा कुछ मित्रों के साथ समारोहों का आयोजन करके धन इकट्ठा किया।

गुलाबो, जो लड़की कैलाश के बाँहों में मर गई, हर रोज ईंट के भट्टे पर काम करती थी, ठीक इसी तरह जैसे यह ऋण वाली दास लड़की कर रही है।

JAVED DAR/XINHUA PRESS/CORBIS

अन्याय को देखकर कैलाश क्रोधित हो जाता था। सबसे अधिक, वो भारत की प्राचीन 'जाति प्रणाली' से ईर्ष्या करता था।

इस प्रणाली के अनुसार, हर कोई उसी 'जाति' में स्वतः पैदा होता है जो उसके परिवार की होती है – एक समूह जिसने समाज में एक स्तर स्थापित कर दिया है, ऊँचा या नीचा। लोगों की ज़िन्दगियाँ उन नियमों से निर्धारित होती हैं जिनके अनुसार वही काम कर सकते हैं जिनको करने की अनुमति उनकी 'जाति' उन्हें देती है, और उसी 'जाति' के अन्दर ही वो विवाह कर सकते हैं। 'जाति प्रणाली' को भारत में बहुत समय पहले ही बन्द करा दिया गया था, लेकिन वो अभी भी मौजूद है।

ऐसे भी लोग होते हैं जिनकी कोई जाति नहीं होती। वे 'बिना जाति के' अथवा 'जाति के बाहर वाले' समझे जाते हैं, और वो साधारणतः बहुत

PHILLIPE LISSAC/GODONG/CORBIS

कैलाश कैसे दासता एवं बाल मजदूरी से संघर्ष करता है

- कैलाश और उसकी संस्था, 'बचपन बचाओ आन्दोलन' (बी.बी.ए.), अथवा 'सेव्ड चाइल्डहुड', बच्चों की रक्षा करने और उन्हें शिक्षा दिलाने का काम करती है। एक सौ कार्यकर्ता, सामाजिक कार्यकर्ताओं से लेकर युवा कार्यकर्ताओं तक एवं अध्यापकों और अनुसंधान करने वालों तक, मिलकर काम करते हैं, जो भारत एवं विश्व के एक 80,000 स्वयंसेवकों के नेटवर्क के साथ जुड़ा हुआ है। वे राजनी. तिज्ञों का भी समर्थन करते हैं और अच्छे कानूनों के लिए भी संघर्ष करते हैं। सन् 1980 से 83,000 से अधिक बच्चों को मुक्त कराया जा चुका है और उनको बेहतर ज़िन्दगियाँ बिताने का समर्थन दिया गया है।
- दो घर, मुक्ति आश्रम दिल्ली में और बाल आश्रम राजस्थान में, आजाद किये गये बच्चो को शरण देते हैं, और साथ ही सहारा, प्यार और शिक्षा भी।
- हजारों गरीब भारत के गाँवों ने प्रण किया है कि वे 'चाइल्ड फ्रैंडली' बनेंगे, इसका अर्थ यह हुआ कि किसी भी बच्चे को काम पर नहीं जाना होगा और सभी बच्चे स्कूल जा सकते हैं।

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

कैलाश और उसकी संस्था ने 80,000 से अधिक बच्चों को खतरनाक जबरदस्ती की मजदूरी और दासता से मुक्त कराया है।

गरीब होते हैं, उनको सबसे गन्दे काम मिलते हैं, और उनके साथ सबसे खराब व्यवहार किया जाता है। पुराने विचारों वाले लोगों का कहना है कि बिना जाति वाले लोग 'अछूत' होते हैं। कैलाश की अपनी माँ ने उसको सिर्फ एक बार मारा था, जब वो पाँच वर्ष का था और उसने एक 'जातिहीन' बच्चे से एक डबलरोटी का टुकड़ा लिया था। उसको कोई चीज़ खाने नहीं दी जाती थी जिसको एक 'छुआछूत' में छुआ गया था।

गांधी जी के लिये दावत

जब वह 15 वर्ष का था, कैलाश एक दावत का आयोजन करना चाहता था जिसमें वो स्वतंत्रता के महारथी महात्मा गांधी के जन्म से अब तक के एक सौ वर्ष हो जाने का जश्न मनाना चाहता था। गांधी जी को भी 'जाति प्रणाली' से ईर्ष्या थी, और उन्होंने एक ऐसे भारत का सपना देखा था जहाँ हर किसी के साथ बराबर का व्यवहार हो। कैलाश ने एक रात्रि भोज में एक महत्वपूर्ण नेताओं के समूह को आयोजित किया जिसमें भोजन को 'अछूतों' द्वारा तैयार किया गया था। सबको साथ में बैठकर भोजन करना था, जो मित्रता एवं न्याय का एक प्रतीक समझा जाना था। कुछ ने कहा कि वे आयेंगे, लेकिन उस दिन कोई नहीं आया और इससे अधिक, उन नेताओं ने यह निर्णय लिया कि कैलाश के परिवार को अलग कर दिया जाए क्योंकि उन्होंने 'अछूतों' द्वारा बनाया भोजन खाया था। कैलाश क्रोधित हो गया।

''तुम मेरे परिवार को किसी ऐसी बात के लिए दण्ड नहीं दे सकते जिसे मैंने अपनी इच्छा से किया है,'' उसने कहा और उसने निर्णय लिया कि वो अपना उपनाम बदल देगा। कैलाश का परिवार दुखी था, लेकिन उस दिन से उसने स्वयं को कैलाश सत्यार्थी ही कहा है, जिसका अर्थ होता है 'सत्य का खोजकर्ता'।

अपनी नौकरी छोड़ दी

कैलाश की माँ ने सोचा कि यह तो स्पष्ट था क्योंकि कैलाश स्कूल में पढ़ने में अच्छा था, इसलिए उसको एक इंजीनियर अथवा डॉक्टर बनना चाहिए, और अपने परिवार की देखभाल करनी चाहिए। कैलाश ने एक इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की, लेकिन उसने एक वर्ष बाद ही अपनी अच्छी वेतन वाली नौकरी छोड़ दी। वो अपना सारा समय गरीब बच्चों को एक बेहतर ज़िन्दगी गुजारने में लगाना चाहता था।

''मेरी माँ वर्षों तक रोती रही,'' बाद में कैलाश ने कहा। ''लेकिन मुझे अपने दिल की सुननी थी।''

उन दिनों, लगभग 30 वर्ष पूर्व, भारत में शायद ही कोई बाल अधिकारों की परवाह करता था। बाल मजदूरी कानून के विरुद्ध थी, पर कोई इसकी परवाह नहीं करता था। कुछ लोगों ने सोचा कि कैलाश गलत था और कहाः

''गरीब परिवार कैसे जीवित रहेंगे अगर उनके बच्चे काम नहीं करेंगे? क्या यह अच्छा होगा कि वे भूखे मर जायें?'' लेकिन कैलाश को पता था कि अधिकतर बाल मजदूरों को हर सप्ताह केवल दो डॉलर ही मिल पाते थे, और इससे न तो वे और न उनके परिवार अपना खर्चा उठा पाते। और लाखों वयस्क बेरोजगार थे, सिर्फ इसलिए कि मालिक लोग चाहते थे कि वे बच्चों से काम लें, जो बिना शिकायत किये कम पैसों में उनके लिए काम करते थे।

बच्चों को मुक्त कराना शुरू किया

जब कैलाश भारत में यात्रा करने लगा तब उसको एक झटका लगा। बच्चों की स्थिति उससे कहीं बद्तर थी जो उसने सोची थी। बच्चों को सामान की तरह खरीदा जाता था और बेच दिया जाता था, और उनको कारखानों एवं खानों में दासों की तरह बंधक बनाकर रखा जाता था, अक्सर अपने परिवारों

BBA

पूर्व बाल दास मानव तस्करी पर एक प्रस्तुति दे रहे हैं।

से सैंकड़ों मील दूर। कुछ को अपने अभिभावकों द्वारा स्वयं बेचा गया था। अन्य का अपहरण किया गया था, या उनको यह बताकर बेवकूफ बनाया गया था कि उनको स्कूल जाने को मिलेगा। एक छोटी दास लड़की ने कैलाश से पूछा:

''एक दूध देने वाली गाय कितने की पड़ती है?''

''एक हजार और पन्द्रह सौ डॉलर के बीच में,'' कैलाश ने उत्तर दिया।

''मुझे तो सिर्फ एक सौ डॉलर में ही बेचा गया था,'' लड़की ने कहा।

कैलाश ने बच्चों की कहानियों को लिखा और उन्हें स्वयं की पत्रिका में प्रकाशित किया। उसने भाषण दिये और विवादों में भाग लिया जिससे वो सामान्य लोगों और शासकीय शक्ति वाले लोगों को प्रभावित कर सके। साथ ही, उसने अपना पहला बचाव अभियान शुरू किया जिससे काम करने वाले बच्चों को मुक्त कराया जा सके। कभी–कभी यह आशा रहित लगता था कि दस या सौ बच्चों को मुक्त कराया जाए, जबकि लाखों बच्चे अभी भी बन्दी थे। ''लेकिन यदि हम केवल एक बच्चे की ही ज़िन्दगी बचा सकें, तो वो अच्छा होगा,'' कैलाश ने कहा, और उसने बिना पुलिस या सामान्य लोगों की सहायता के कारखानों एवं खानों में जाना शुरू कर दिया। यह अत्यधिक खतरनाक था, पर उसने जल्द ही बहुत सारे सहायकों का समर्थन प्राप्त कर लिया, जो उसके इस संघर्ष से प्रोत्साहित थे।

खतरनाक अभियान

अपने पहले छापों में से एक मे, कैलाश और उसके कार्यकर्ताओं को सुरक्षाकर्मियों ने पीटकर लहूलुहान कर दिया, पर फिर भी वो 153 लोगों को

कैलाश सबसे ज्यादा तब खुश होता है जब उसे बाल आश्रम जाने का मौका मिलता है, जो राजस्थान में मुक्त कराये गये बाल दासों का केन्द्र है।

बचाने में सफल हुए।

कैलाश और उसके सहायक बच्चों को बचाते रहे जबकि उन पर गोलियाँ चलायी गयीं और आक्रमण किये गये। कैलाश को सिर और शरीर पर हाथों एवं लकड़ी की छड़ों से पीटा गया। एक दिन एक खान में छापा मारते समय, एक सुरक्षाकर्मी ने उसके एक बहुत ही नजदीकी सहयोगी को पीटकर मार डाला।

कैलाश कचहरी गया और उसने पुलिस से सहायता मांगी और बच्चों को बचाने का एक परमिट भी लिया। बिना इस परमिट के, सुरक्षाकर्मी कानून को अपनी तरफ रखकर कार्यकर्ताओं को पीटते रहते, क्योंकि कैलाश किसी की निजी जमीन पर पैर रख रहा था। अनेकों पुलिस अफसरों और यहाँ तक कि न्यायाधीशों को भी दासों के मालिकों ने घूस दी कि वो कैलाश की सहायता न करें। लेकिन अन्त में, उसने न्यायालय में अपनी मांगों को स्वीकृत करा लिया। अब वो और छापे डाल सकता था, और उसको अखबारों तथा टी.वी. पर बहुत सारा कवरेज मिलने लगा जो माफिया एवं राजनीतिज्ञ बाल मजदूरी से ध न कमाते थे वो डर गये और उन्होंने कैलाश को चिट्ठियों द्वारा और सड़क पर धमकी देना शुरू कर दिया। किसी ने उसके घर को जलाने की कोशिश की और एक सुबह जब उसके टेलीफोन की घन्टी बजी जिसको उसकी छोटी लड़की ने उठाया तो उध ार से आवाज आयी, ''अपने पिता से कह दो कि हम उसको मार डालने की तैयारी कर रहे हैं।''

कैलाश डरा हुआ था, खासतौर से अपने परिवार के लिए।

''लेकिन यह तथ्य कि मजदूरों के मालिक हम पर आक्रमण कर रहे हैं इस बात को साबित करता है कि हम सही रास्ते पर जा रहे हैं। यह और भी बुरा होता यदि कोई इसकी परवाह न करता,'' उसने अपनी पत्नी, सुमेडा से कहा, जिसने उसकी बात को माना।

बाल मजदूरी के विरुद्ध पदयात्रा

लगभग 20 वर्षों के कार्य के बाद, कैलाश और उसके सहपाठियों ने दसों हजारों बच्चों को मुक्त करा दिया है और काफी बदलाव लाने में सफल हुए हैं। लेकिन अब भी, कैलाश के अनुसार सब बातें बहुत धीरे–धीरे हो रही थीं।

''चलो गांधीजी के पग चिन्हों पर चलते हैं,'' उसने कहा। ''चलो एक अहिंसा का आन्दोलन शुरू करते हैं और सारे भारत में न्याय मांगते हुये पदयात्रा करते हैं!''

कैलाश ने बाल मजदूरी के विरुद्ध पहली पदयात्रा 1992 में शुरू की, जिसमें उसके साथ अन्य कार्यकर्ता और पूर्व बाल मजदूर थे। वो बिहार के गरीब प्रदेश से चले, जहाँ दसों हजार बच्चे कालीन के उद्योग में काम करते थे और 2000 किमी. पैदल चलकर देश की राजधानी दिल्ली में प्रशासनिक शक्ति के बरामदों में पहुँचे। रास्ते में, वो शहरों और गाँवों में भाषण देने, गाना गाने और संगीत बजाने के लिए रुकते गये। सैंकड़ों, कभी–कभी हजारों लोग अपने घर वाले गाँवों से कुछ रास्ते तक उनके साथ चले। रात को वे गरीब परिवारों के घरों में सो जाते थे।

भारत भर में अनेकों पैदल यात्राओं के बाद, कैलाश ने अपनी इस यात्रा में सारे विश्व को शामिल करने में सफलता प्राप्त की। उसकी आखिरी मंज़िल स्विटजरलैण्ड में जिनेवा थी जहाँ पर अन्तर्राष्ट्रीय श्रमित संस्था, आई.एल.ओ. का मुख्यालय था। सैंकड़ों हजारों बच्चे एवं अभिभावक एवं कार्यकर्ता ने इस 'ग्लोबल मार्च अगेन्स्ट चाइल्ड लेबर' में भाग लिया, हर कोई अपने देश के अन्दर चला लेकिन कुल मिलाकर सबने 103 देशों में चलकर 80,000 किमी. की दूरी तय की। कैलाश और उसके द्वारा मुक्त कराये गये बाल मजदूरों का एक समूह तब ही जिनेवा पहुँचा जब एक मुख्य आई. एल.ओ. का सम्मेलन शुरू होने वाला था। उनको बोलने के लिए आमंत्रित किया गया, और पहली बार, सैंकड़ों

BBA

एक भारतीय मंत्री (कैलाश के बांयी ओर) ने अपने एक महीने का वेतन बाल मजदूरी के विरुद्ध संघर्ष करने में दान कर दिया।

विश्व के नेताओं ने बाल मजदूरों की कहानियों को सुना। कुछ ही वर्ष बाद, एक नये अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्ताव को हस्तान्तिरित किया गया जिससे बाल मजदूरी के सबसे बद्तर रूपों को रोका जा सके और गैर कानूनी समझा जाये।

BBA

सन् 1998 में, कैलाश ने मुक्त कराये गये बाल दासों एवं विश्व भर से आये कार्यकर्ताओं के साथ, बाल मजदूरी एवं दासता के विरुद्ध एक पैदल विरोधी यात्रा की। यह ऐतिहासिक यात्रा अब एक विश्वस्तरीय आन्दोलन का रूप ले चुकी है जिसमें दसों–हजारों स्वयं सेवक और विश्व की सैंकड़ों संस्थायें शामिल हैं। यह आन्दोलन विरोधी नारे लगाता है, फिल्में दिखाता है, गाने बजाता है, विश्व स्तरीय नेताओं से बैठकें करता है, और सामाजिक मीडिया द्वारा अभियान चलाता है।

बच्चों के साथ

30 वर्षों बाद, कैलाश 83,000 बच्चों को मुक्त करा चुका है और उसने भारत तथा सारे विश्व भर में बच्चों की रक्षा करने एवं शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलने के लिए नये कानूनों एवं नियमों को लागू करवाया है। आज, कैलाश विश्व में यात्रा करते हुए राष्ट्रपतियों से बात करता है, संयुक्त राष्ट्र से तथा बड़ी–बड़ी कार्पोरेशनों के मुखियों से। लेकिन उसका सर्वप्रिय स्थान बाल आश्रम है, जो उसने अपनी पत्नी सुमेडा एवं अन्य कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर मुक्त कराये गये बाल मजदूरों के लिए बनाया।

"मैं ऊर्जापूर्ण महसूस करता हूँ जब बच्चों से मिलता हूँ और उनके विचारो एवं भविष्य के सपनों को सुनता हूँ" वो कहता है। "वो ईमानदार हैं और खुले विचारों के हैं और उनकी मित्रता मेरे लिए बहुत मायने रखती है। बच्चों और बचपन का सम्मान न करना मेरे लिए सबसे खराब बात है जो मुझे मालूम है, और यह मुख्य कारण है कि आज भी विश्व के बच्चों में से कम से कम 21 करोड़ 50 लाख बच्चे अभी भी काम कर रहे हैं। मैं तब तक आराम नहीं करूंगा जब तक यह संसार बाल मजदूरी और दासता से मुक्त नहीं हो जाता।"

आधुनिक दासता क्या है?

आज विश्व में लाखों बच्चे छह वर्ष की आयु से दास जैसी स्थितियों में काम करते हैं। वे प्रति सप्ताह के सातों दिन, 18 घन्टे प्रतिदिन काम करते हैं। उनको पर्याप्त भोजन नहीं मिल पाता। उनको धमकाया जाता है, पीटा जाता है, और कभी–कभी सिगरेटों अथवा गरम लोहे की छड़ों से जलाया जाता है। कुछ को बाँध दिया जाता है या उनमें जंजीर लगा दी जाती है। इनमें से कुछ बच्चे 'ऋण मजदूर' होते हैं। उनके परिवारों ने थोड़ा सा धन उधार लिया होता है, उदाहरण के लिए, दवाएँ खरीदने हेतु। ऋण का ब्याज बहुत अधिक होता है, और गरीब लोगों के लिए इसको वापस लौटाना असम्भव होता है। इसके बजाए ऋण को वापस करने के लिए उन्हें काम करना पड़ता है। कभी–कभी पूरे परिवार को मिलकर काम करना पड़ता है, लेकिन अक्सर एक बच्चे को बाहर काम करने के लिए जाना पड़ता है। ऊँचे ब्याज दर का मतलब होता है कि ऋण हमेशा बढ़ता रहता है, चाहे वो कितना भी काम करे। ऋण मजदूर बच्चे फिर कभी मुक्त नहीं हो पाते।

हर कोई फर्क डाल सकता है!

15 वर्ष पूर्व, कम से कम दस लाख बच्चे भारत, पाकिस्तान, नेपाल और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के कालीन उद्योग में काम करते थे। कैलाश ने एक विश्वस्तरीय अभियान शुरू किया जिससे यह बात जागरूक हो कि हाथों द्वारा बुने कालीन जो लोगों के सबसे अच्छे कमरों में पड़े होते हैं। वे अक्सर बाल मजदूरों द्वारा बनाये जाते हैं। उसने 'गुडवीव' नामक विश्व की सबसे पहली बाल श्रम से मुक्त कालीन बनाने का लेबल स्थापित किया, और सबको प्रोत्साहित किया कि वे उन्हीं कालीनों को खरीदें जो बिना बाल मजदूरी के बने हों। कैलाश ने विश्व भर से लोगों को बटोरा जो कारखानों से इस बात की गारन्टी लें कि वे बच्चों का शोषण नहीं करेंगे – न कि सिर्फ कालीन और दरी बनाने वाले, बल्कि फुटबॉलों, जूतों एवं वस्त्रों जैसी वस्तुओं के निर्माताओं से भी। कैलाश के इस अभियान तथा 'गुडवीव' के कारण अब कालीन उद्योग में काम कर रहे बच्चों की संख्या दस लाख से कम होकर 2,50,000 हो गई है।

खतर

कैलाश और उसके सहयोगी सुबह जल्दी कार्यालय में इकट्ठा होते हैं। वे कई सप्ताह से आज के बचाव अभियान की योजना बना रहे हैं। कैलाश को कहीं से पता चला है कि दिल्ली के एक विशेष क्षेत्र में बच्चे कारखानों एवं भूतल में कार्यशालाओं में काम कर रहे हैं। आज, वे अधिक से अधिक बच्चों को मुक्त करायेंगे।

इमारतें सटी हुयी बनी हैं और उनके बीच में संकरी गलियाँ हर दिशाओं में जा रही हैं। यहाँ पर खो जाना और तस्करों के जाल में फंस जाना सरल है। कैलाश नक्शे की ओर संकेत करता है।

"यह है वो जगह जहाँ पर कारखाने हैं! इसलिए हमको वहाँ पर जितनी भी जल्दी हो सके घुसना है और बाहर निकल कर आना है, इससे पहले कि वो हम पर आक्रमण करें।"

लगभग 30 पुलिस अधिकारी उनकी सहायता करेंगे। सब लोग नगर महापालिका की बिल्डिंग के बाहर एकत्रित होते हैं।

कैलाश की गाड़ियाँ आगे चलती हैं, और पुलिस उनके पीछे चलती है, लेकिन उनको सही से नहीं बताया जाता कि वो कहाँ जा रहे हैं। कुछ पुलिस अधिकारी कारखाने के मालिकों को सचेत करने के लिए उनसे घूस ले लेते हैं जिससे उन्हें बाल श्रमिकों को छिपाने का समय मिल जाए।

नाक अभियान

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

जब कैलाश सीढ़ियों से नीचे उतरता है, तो बच्चे डर जाते हैं और रोने लगते हैं। वो कौन है?

उनको पलंग के नीचे एक छोटा लड़का मिलता है। उसके मालिक ने उससे कहा है कि वो छुपा रहे, नहीं तो पुलिस उसको गिरफ्तार कर लेगी।

अब क्या होगा?

मुक्त कराये गये दास बच्चे कार की खिड़की में से बाहर देखते हैं, जब उनको सुरक्षित जगह ले जाया जा रहा होता है।

उन्हें जल्दी करनी है

लोग सड़क के चौराहों पर इकट्ठा होना शुरू हो गये हैं, वो उन्हें संदेहपूर्ण घूर रहे हैं। किसी भी क्षण लड़ाई छिड़ सकती है। बच्चों के चेहरे उनको सुरक्षित रखने के लिए ढंक दिये जाते हैं जिस समय कैलाश और बी.बी.ए. न्यायालय में दास मालिकों के विरुद्ध अपना मामला प्रस्तुत करते हैं।

दासों की अगरबत्ती

बच्चे अगरबत्ती बना रहे हैं और उसे पैक कर रहे हैं जिसे भारत और विदेश में बेचा जाता है।

बच्चों को पूछताछ के लिए एक सुरक्षागृह में ले जाया जाता है। तुम कहाँ से आये हो? तुम यहाँ पर कैसे पहुँचे? तुम्हारा आज काम करने का दिन कैसा बीता? अनेकों बच्चे बिहार जैसे गरीब प्रदेशों से दिल्ली के कारखानों में बेचे गये हैं।

लगभग 30 बच्चे आज बचाये गये हैं, और वे आज रात को सचमुच के पलंगों पर सो पायेंगे। अनेकों मालिकों को गिरफ्तार किया गया है और उनको 20 वर्षों का कारावास अथवा उम्रकैद की सजा झेलनी पड़ेगी।

इम्तियाज़ को एक दास बना कर

जब इम्तियाज़ नौ वर्ष का था, तब उसके पिता को काम की तलाश में घर छोड़कर यात्रा करके मजबूरी में जाना पड़ा। एक तूफान ने लगभग सारे गाँव को नष्ट कर दिया है। इम्तियाज़ का परिवार अत्यधिक गरीब है और उनको मिट्टी, फूस तथा बांस द्वारा अपने घर का पुर्ननिर्माण करने के लिए अपनी सारी जमा पूँजी लगानी पड़ी। इम्तियाज़ और उसके भाई–बहन फटे, पुराने कपड़े पहनते हैं और वो सदैव भूखे रहते हैं।

एक दिन एक पड़ोसी उससे मिलने आता है। इम्तियाज़ की माँ अचम्भित हो जाती है और थोड़ी डर भी जाती है। वो आदमी गाँव के सबसे धनी परिवार का है और वे साधारणतः गरीब गाँव वालों से बात नहीं करते। पर इस समय वो एक दयालु आवाज़ में मुस्कुराते हुये बोल रहा है।

''तुम्हारा लड़का यहाँ पर अपना समय बर्बाद कर रहा है,'' वो कहता है। ''मुझे इसको देश की राजधानी, नई दिल्ली ले जाने दो। मैं उसकी शिक्षा का खर्चा दूँगा यदि वो हर सप्ताह कुछ घन्टे काम करेगा जिससे उसके भोजन और रहने का खर्चा निकल सके। मुझे पता है कि इस समय तुम कठिन परिस्थिति में हो।''

इम्तियाज़ सचमुच राजधानी वाले शहर जाना चाहता है। उसमें चौड़ी सड़कें हैं और गगनचुम्बी इमारतें हैं। सारी बड़ी फिल्मों की शूटिंग यहाँ पर होती है। यहाँ तक कि वो किसी फिल्म के मशहूर कलाकारों से भी मिल सके!

इम्तियाज़ की माँ कभी स्कूल नहीं गई है, लेकिन वो चाहती है कि उसके बच्चों को शिक्षा मिल सके। वो अपने पड़ोसी के सुझाव को मान लेती है।

Imtyaz, 14

रहने वाला है: बिहार का।
सर्वप्रिय बातें: स्कूल जाना, गाना गाना, क्रिकेट खेलना और तैराकी।
बनना चाहता है: एक इंजीनियर।
आदर्श मानता है: क्रिकेट का सितारा 'मास्टर ब्लास्टर' सचिन तेंदुलकर।
सर्वप्रिय भोजन: आम, और मेरी माँ द्वारा बनाया भोजन।
सर्वप्रिय स्कूल का विषय: गणित।
सबसे अधिक सम्मान करता है: अपने माता–पिता एवं कैलाश का।
सपना देखता है: उस समय का जब किसी बच्चे को काम न करना पड़े।

रास्ते में

अगली सुबह, इम्तियाज़ और उसके छह मित्र सड़क के किनारे मिलते हैं, जहाँ उनका पड़ोसी एक ट्रक के साथ उनकी प्रतीक्षा कर रहा है। बच्चे ट्रक में पीछे चढ़ जाते हैं और वो ऊबड़–खाबड़ गन्दी सड़कों पर चलते हुए सबसे नजदीक के शहर की ओर निकल पड़ते हैं। बच्चे कसके पकड़े रहते हैं जिससे वे गिर न जायें, और वो अपनी आगे आने वाली ज़िन्दगी के बारे में बातें करते हैं। लेकिन दिल्ली को जाने वाली ट्रेन में, वो सब यात्रा से थककर बीमार हो जाते हैं। उनमें से किसी ने भी ट्रेन में पहले यात्रा नहीं की है और इम्तियाज़ बार–बार बीमार पड़ता है जैसे ट्रेन मुड़ते हुये चलती जाती है।

ट्रेन के स्टेशन से जाते समय इम्तियाज़ का गाँव एक दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र में है और वहाँ पर बिजली और बहता हुआ पानी दोनों नहीं है।

जब इम्तियाज़ नौ साल का होता है, तब वो गाँव के स्कूल में जाना बन्द कर देता है क्योंकि वहाँ पर अध्यापक शायद ही कभी आता है। इसके बजाए इम्तियाज़ घर पर और खेतों में अपनी माँ की सहायता करता है। इसके बाद अवकाश के समय वो अपने मित्रों के साथ खेलता है। वे जोखिम पर जाते हैं, क्रिकेट खेलते हैं, और पेड़ों पर चढ़ते हैं।

बेच दिया गया

इम्तियाज़ ऊँची इमारतें, मूर्तियाँ और गुलाबों से भरे सुन्दर पार्कों को कार की खिड़की से देखता है। वो इससे अचम्भित है कि कार का सफर इतना शान्त है, क्योंकि उसने कभी डामर वाली सड़क पर यात्रा नहीं की है। जल्द ही वो एक सकरी गलियों के जाल में घुसते हैं, और अन्त में, एक घर के सामने रुकते हैं जिसका रंग धूल–गर्द से भूरा हो गया है। पड़ोसी उनको एक छोटे कमरे में छोड़ देता है जहाँ वो खाना खाते हैं और टी.वी. देखते हैं और फिर सो जाते हैं।

रात का सपना शुरू होता है

इम्तियाज़ को एक लात मारकर उठाया जाता है। एक अंजान व्यक्ति उसको और उसके मित्रों में से एक, अमित को अपने साथ आने के लिए कहता है। वो सीढ़ियों से नीचे एक अंधेरे, बिना खिड़की वाले कमरे में जाते हैं। वहाँ पर कुछ लोग पालथी लगाये फर्श पर बैठे हैं, और एक लम्बे से कपड़े पर झुके हुये कढ़ाई कर रहे हैं। उनके शरीर पसीने से चमक रहे हैं क्योंकि वहाँ पर गर्मी है।

"यही है वो जगह जहाँ पर तुम काम करोगे," आदमी कहता है। वो दोनों को एक–एक सुई देता है और उनको दिखाता है कि उसे अपने अंगूठे और पहली उंगली के बीच में दबाकर कैसे पीछे और आगे घुमाना है। वो इसे करते रहते हैं, एक घन्टे के बाद दूसरे घन्टे, सुबह के तीन बजे तक।

"ऐसा करना तुम्हारी खाल को सख्त कर देता है," वयस्क कार्यकर्ताओं में से एक बताता है। "कल तुम लोग कढ़ाई करना शुरू करोगे।"

दास की तरह बेच दिया गया

गाँव वाले आदमी ने झूठ बोला था। उसने उनको मजदूरों की तरह बेच दिया है। इम्तियाज़ और अमित प्रतिदिन सोलह घन्टे काम करते हैं, बिना कोई छुट्टी लिये। यदि वो अपना मुँह खोलते हैं तो वयस्कों में से एक लात घूंसों से उनको चुप कर देता है। वो पथरीले फर्श पर इकट्ठा सोते हैं। कभी–कभी रात को इम्तियाज़ अमित के कान में फुसफुसाता है।

"हमको भाग निकलना है!"

"लेकिन हम कहाँ जायेंगे? यह शहर इतना बड़ा है," अमित कहता है। "हम यहाँ किसी को नहीं जानते। और हमारे पास कोई पैसा नहीं है।"

कुछ दिन बाद, इम्तियाज़ की पीठ और कन्धे दुख रहे हैं। उसकी आँखें सूज रही हैं और उसकी उंगलियाँ सुई

BBA

जब इम्तियाज़ दिल्ली में कारखाने में था, तब वो इसी तरह काम करता था जैसे ये बच्चे कर रहे हैं।

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

के चुभने से छलनी हो गयी हैं। कमरे की हवा धूल और गर्द से भारी है, जिससे इम्तियाज़ को खाँसी आती है। उसके चेहरे पर गुस्सा भरा दिखता है। वो विरोध करता है:

''यहाँ पर बहुत गर्मी है, हमें पंखे चाहिए और ज्यादा पानी। मेरे पड़ोसी ने वायदा किया था कि मैं स्कूल जा सकूँगा!''

कारखाने का मालिक गुस्से से आगबबूला हो जाता है। वो इम्तियाज़ को एक छोटे कमरे में घसीटकर लाता है और उसके सारे शरीर पर उसको पीटता है। इम्तियाज़ एक गेंद के रूप में स्वयं को मोड़ लेता है और अपने हाथों से अपने सिर को बचाने की कोशिश करता है। ''मैं मर जाऊँगा,'' वो सोचता है, जिसके बाद उसके आगे अन्धेरा छा जाता है।

BBA

जब वो सोकर उठता है तब रात हो गयी है। वो वापस अपने कमरे में आता है और हर कोई गहरी नींद में सो रहा है। ''मैं यहाँ से कभी बाहर नहीं निकल पाऊँगा। मैं अपने परिवार को दुबारा नहीं देख पाऊँगा,'' वो सोचता है, और चुपके–चुपके रोता है। कुछ सप्ताह बाद, जब इम्तियाज़ एक दिन सुबह उठता है तब उसको बुखार हो गया है। वो बिल्कुल सुई को पकड़ नहीं पा रहा है, उससे सीधी रेखा में सिलना तो दूर की बात। वो अपना माथा अपने हाथ पर एक क्षण के लिए रखता है, जबकि यह वहाँ के नियमों के विरुद्ध है, और सो जाता है। कुछ क्षण बाद वो इस एहसास से उठ जाता है कि उसकी आँखं में जलन हो रही है। उसके चेहरे पर खून बह रहा है और उसको दिखाई नहीं दे रहा। पर्यवेक्षकों में से एक ने कैंची से उसकी आँख के बालों को काटने की कोशिश की है।

''तुम क्या कर रहे हो?'' इम्तियाज़ डरा हुआ, चिल्लाकर पूछता है।

''तुमको सजा मिलनी चाहिए। तुम

इस लड़के को बेवकूफ बनाकर एक दास बना दिया गया, ठीक इम्तियाज़ की तरह।

काम करते समय सो गये थे,'' आदमी चिल्लाकर कहता है।

पुलिस से भयभीत

गर्मी के समय तापमान लगभग 50 डिग्री सेंटीग्रेट तक पहुँच जाता है, और इम्तियाज़ को रविवारों पर दो घन्टे की छुट्टी मिलती है। उसे और अमित को पीने और खाने के लिए कुछ रुपये मिलते हैं, लेकिन वो बहुत दूर जाने की हिम्मत नहीं कर सकते।

''किसी से बात नहीं करना,'' कारखाने का मालिक उनको सचेत करता है। ''यदि लोगों का पता चल जायेगा कि तुम लोग काम कर रहे हो, तो पुलिस आ जायेगी और तुमको जेल में डाल देगी।''

एक दिन कारखाने का मालिक एकदम से अन्दर आता है और इम्तियाज़ और अमित को दबोचकर बगीचे में ले जाता है जहाँ उसका लड़का अपने स्कूल से मिला गृहकार्य कर रहा है। वो दोनों को एक–एक पुस्तक फेंकता है और कहता है: ''बनो कि तुम पढ़ रहे हो''। कुछ क्षण बाद दो पुलिस अधिकारी मोड़ से आते हैं और भूतल में चले जाते हैं। वो यहाँ यह जांच करने आये हैं कि यह कारखाना बाल श्रमिकों को इस्तेमाल तो नहीं कर रहा। जैसे ही पुलिस चली जाती है, इम्तियाज़ और अमित को वापस काम पर लग जाना है।

इम्तियाज़ अपने माता, पिता, छोटे भाई एवं बहन, और बड़ी बहन के साथ, जिसकी शादी हो चुकी है और उसके एक बच्चा है।

''मेरी छोटी बहन स्कूल जाती है, वो सचमुच होशियार है,'' इम्तियाज़ गर्व से कहता है।

लगभग एक वर्ष बाद, इम्तियाज़ को बाहर अचानक एक हलचल सी सुनाई देती है। दरवाजा एकदम से खुलता है और उसमें अनेकों पुलिस अधिकारी प्रवेश करते हैं। इम्तियाज़ का मित्र रोना शुरू कर देता है और खड़ा हो जाता है।

''भागो, वो हमको जेल में डाल देंगे,'' वो कहता है। लेकिन इम्तियाज़ शान्त होकर बैठा रहता है।

''मुझे नहीं परवाह कि हमें वो कहाँ ले जाते हैं और हमारे साथ क्या करते हैं। इससे बद्तर और कुछ नहीं हो सकता।''

घर लौट आया

यह बचाव अभियान कैलाश की संस्था, बी.बी.ए. ने पुलिस की सहायता से चलाया था। उस दिन, उन्होंने लगभग 90 बच्चों को मुक्त कराया। उन्हें इम्तियाज़ के गाँव के मित्र उसी क्षेत्र में एक दूसरे कारखाने में मिलते हैं। सभी बच्चों की चिकित्सीय देखरेख की जाती है और उन्हें एक विशेष बालगृह में सम्हलने के लिए सहायता दी जाती

है। फिर इम्तियाज़ घर जा पाता है। वो और उसके परिवार वाले मिलकर रोते हैं। पहले उनके आंसू खुशी के होते हैं, और फिर दुख के जब वो अपनी कारखाने की ज़िन्दगी के बारे में बताता है। लेकिन वो गरीब हैं, और उनका पड़ोसी जिसने इम्तियाज़ को बेचा था वो धनी और शक्तिशाली है। उनकी हिम्मत नहीं कि वो उससे बहस कर सकें।

इस बात का भय सदैव बना रहता है कि जिन बच्चों को बचाया जाता है वो निर्धनता के कारण पुनः अपनी पुरानी परिस्थिति में वापस लौट जायें। एक वर्ष बाद, एक बी.बी.ए. का कार्यकर्ता उनसे मिलने आता है। इम्तियाज़ अभी भी स्कूल नहीं जा रहा।

''बिना शिक्षा के इम्तियाज़ का कोई भविष्य नहीं है,'' कार्यकर्ता कहता है।

''वो बाल आश्रम में आकर रह सकता है, जो हमारा मुक्त कराये गये बाल श्रमिकों के लिए घर है, और वहाँ पर स्कूल जा सकता है।

उसके बाद क्या हुआ?

यह इम्तियाज़ के लिए एक कठिन निर्णय था कि वो बाल आश्रम में जाए, जो उसके घर से कई सौ मील दूर थां। लेकिन अब वो यहाँ पर चार वर्षों से रह रहा है।

''मैं इतना दुखी नहीं हूँ, क्योंकि मुझे मालूम है कि मैं एक शिक्षित आदमी बनकर वापस आऊँगा और अपने परिवार एवं गाँव की सहायता कर सकूँगा। यहाँ पर अध्यापक और बच्चे मेरे लिए एक दूसरे परिवार की तरह हैं। अब मुझे स्वयं पर भरोसा है और अपने भविष्य पर विश्वास है।''

''मुझे अपनी बकरी की बहुत याद आयी! हम पक्के दोस्त हैं।''

कैलाश तथा अन्य बच्चों के साथ मिलकर, वो बाल मजदूरी तथा बाल दासता के विरुद्ध लड़ता है।

''मैं इस लड़ाई में कभी हार नहीं मानूँगा, चाहे मुझे एक इंजीनियर जैसी अच्छी नौकरी क्यों न मिल जाये!'' वो कहता है। ''मेरी सर्वप्रिय यादों में से एक है जब हम महत्वपूर्ण कार्यविधियों से उनके घर पर मिले थे और उनको अपनी ज़िन्दगियों के बारे में बताया था। उनके घर महलों की तरह बने थे! उनमें से कुछ क्रोधित हो गये और हमको बाहर फेंक दिया, लेकिन अन्य ने हमको चाय दी और हमारी बात सुनी। कैलाश ने हमसे कहा था कि हम राजनीतिज्ञों से आग्रह करें कि वो बाल मजदूरी में सुधार लाने के लिए बने नियम को वोट दें। बाद में, कानून लागू हो गया, और मुझे लगता है कि इसका श्रेय हम सबको मिला।''

इम्तियाज़ की कपड़ों की अलमारी

बड़ी शान से कुर्ता पहने हुए, जो एक लम्बी हिन्दुस्तानी पोशाक है और उससे मिलता हुआ पैजामा।

लुन्गी एक लम्बा सा कपड़ा होता है जिसे कमर के चारों ओर बांध लिया जाता है – वो आसान और आरामदायक होता है।

उसे स्कूल की यूनीफार्म को साफ रखना पड़ता है और उसको प्रेस करना पड़ता है।

जब इम्तियाज़ गाँव की मस्जिद में जाता है, तब वो एक टोपी पहन लेता है।

''कैलाश मेरे लिए बहुत मायने रखता है,'' इम्तियाज़ कहता है। ''यदि मुझे एक मित्र की आवश्यकता होती है, तो कैलाश मेरा मित्र है। जब मुझे अपने पिता की याद आती है, तो कैलाश मेरे पिता समान हैं। जो भी कमी मेरे अन्दर है, कैलाश मेरी मदद करने की कोशिश करता है। वो मेरा आदर्श है।''

गाँव वापस जाते समय इम्तियाज़ घबराया हुआ है। क्या होगा अगर बैठक में कोई उसका भाषण सुनने के लिए नहीं आता।

सारा गाँव इम्तियाज़ की प्रतीक्षा कर रहा है।

जब इम्तियाज़ वापस अपने गाँव आता है, तो उसके पुराने मित्र उससे मिलने आते हैं। वो उसके गले में फूलों की मालाएँ डालते हैं।

अपने भाषण से पहले, इम्तियाज़ घबराया हुआ है, लेकिन जब वो देखता है कि लोग उसे सुन रहे हैं और उनमें से कुछ रो तक रहे हैं, तब उसे शान्ति लगती है।

गाँव में घर वापस जाना

इम्तियाज़ बिहार में अपने परिवार से मिलने के लिए हर साल कम से कम एक बार जाता है, पर इस बार वो कैलाश के साथ पहली बार जा रहा है। सारे गाँव को तस्करी और बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार पर हो रही एक बड़ी बैठक में आमन्त्रित किया गया है। इम्तियाज़ घबराया हुआ है। क्या होगा अगर कोई नहीं आया।

दिल्ली से यात्रा लगभग 24 घन्टे लेती है, और रास्ते में इम्तियाज़ अपने गाँव के बारे में गाड़ी में बात करता है। ''वहाँ पर कोई बिजली या बहता हुआ पानी नहीं है। सब घर आसपास हैं और उनमें से अधिकतर मिट्टी के बने हुए हैं। वहाँ पर एक मस्जिद और एक मन्दिर है, क्योंकि आधे गाँव वाले मेरी तरह मुसलमान हैं, और आधे गाँव वाले हिन्दू हैं। मेरे गाँव के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि हर कोई आपस में मेलजोल रखता है, जबकि हमारे अलग धर्म हैं।''

यात्रा के अन्तिम चरण में, सड़क इतनी खराब है कि हमको कार छोड़कर पैदल जाना पड़ता है। जैसे वो गाँव के पास पहुँचते हैं, उन्हें एक चिल्लाने की आवाज़ सुनाई देती है।

''वो आ गया!'' इम्तियाज़ के मित्र उसकी तरफ फूलों की मालाएँ लेकर दौड़ते हुए आते हैं और उसके गले में डाल देते हैं। उनके पीछे उसका परिवार है, और गाँव के ठीक बाहर एक भीड़ इकट्ठा हो गई है। हर कोई इम्तियाज़ को देखने के लिए आया हुआ है।

इम्तियाज़ एक भाषण देता है

हर कोई एक छोटे मंच पर इकट्ठा हो जाता है जिसकी छत छप्पर की है, और

तस्करों के लिए निर्धनता एक अच्छा सौदा है

बिहार भारत के सबसे गरीब प्रदेशों में से एक है। यह बच्चों को तस्करों के लिए एक आसान निशाना बना देता है। हर साल, हजारों बच्चे अपने घरों से गायब हो जाते हैं और उनको ठीक इम्तियाज़ की तरह जबरदस्ती काम करना पड़ता है, सारे भारत में। अनेकों लड़कियों को सेक्स दासियों की तरह भी बेचा जाता है। इस स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए, कैलाश ने बिहार में राजनीतिज्ञों और धार्मिक नेताओं के साथ अनेकों बैठकें कीं।

''जब वे बाल मजदूरी से जागरूक हो जाते हैं, तब वो सहायता करना चाहते हैं। उनकी सहायता से हम बहुत अधिक बच्चों की रक्षा कर सकते हैं, और उनको वो शिक्षा दे सकते हैं जो उनका अधिकार है।''

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

अपने भाषण से पहले, इम्तियाज़ घबराया हुआ है, लेकिन जब वो देखता है कि लोग उसे सुन रहे हैं और उनमें से कुछ रो तक रहे हैं, तब उसे शान्ति लगती है।

इम्तियाज़ को अपने परिवार के आम के पेड़ों के आम खाना पसन्द है।

जिसे गाँव के बड़े लोग बैठकों के लिए आमतौर से इस्तेमाल करते हैं। गाँव के बड़ों ने आगे की सीटें ले ली हैं, किन्तु कैलाश उनसे सम्मानपूर्वक आग्रह करता है कि वे अपनी जगह बच्चों को बिठा दें।

''आखिर, हम यहाँ पर उनकी ज़िन्दगियों और भविष्य के बारे में बात करने के लिए ही तो आये हैं,'' वो कहता है।

बड़े लोगों को झटका सा लगता है। उन्होंने पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं किया है। लेकिन वो अपनी जगह बच्चों को दे देते हैं।

जब इम्तियाज़ माकक्रोफोन को पक. ड़ता है, तो उसका दिल उसके मुँह में आ जाता है। उसने बड़े श्रोताओं को पहले भी भाषण दिये हैं, लेकिन अपने घर के गाँव में कभी नहीं। अचानक, वो उस आदमी को देखता है जिसने उसे फैक्ट्री के लिए बेच दिया था, भीड़ के बीच में। इम्तियाज़ एक गहरी सांस लेता है और फैसला करता है, ''मैं तुमसे बिल्कुल नहीं डरता।'' फिर वो बोलना शुरू करता है:

''मैं एक दास की तरह बिक गया, और वो गलत था। बच्चों से काम नहीं करवाना चाहिए। उन्हें स्कूल जाना चाहिए, खेलना चाहिए, और उनका एक भविष्य होना चाहिए,'' वो कहता है।

भीड़ में जमा लोग उसे चुपचाप सुनते हैं जब इम्तियाज़ उनको बताता है कि कैसे उसके साथ दुराचार किया गया और फिर उसको मुक्त कराया गया और उसने स्कूल जाना शुरू किया। फिर वो अपना हाथ उठाता है और जोर से कहता है:

''बाल मजदूरी रोको। सब बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए!''

भीड़ में बच्चे इम्तियाज़ के शब्दों को दोहराते हैं, और जल्द ही वयस्क भी उनमें शामिल हो जाते हैं।

''दासता बन्द करो!'', सब लोग अपने हाथ उठाकर, मिलकर जोर से बोलते हैं।

बाद में, अपने परिवार और कैलाश के साथ अपने घर की ओर जाते हुए, कैलाश खुश है।

''मुझे एक अध्यापक जैसा लगा, जैसे मानो गाँव वाले मेरे विद्यार्थी हों। बहुत सारे लोग रोये, इसलिये मुझे लगा कि वो समझ गये कि मैं क्या कहना चाह रहा था।''

मुक्त हुए बच्चों के लिए गृह

कैलाश ने उन बच्चों के लिए दो गृह बनाये हैं जिन्हें बाल मजदूरी एवं ऋण दासता से मुक्त कराया गया है: मुक्ति आश्रम और बाल आश्रम।

आश्रम एक हिन्दी शब्द है, और उसको अर्थ होता है एक शान्त, एकान्त स्थान जहाँ विश्राम किया जा सकता है। मुक्ति आश्रम नई दिल्ली में है, जहाँ बच्चों को चिकित्सा देखरेख एवं सुरक्षा दी जाती है जैसे ही उनको मुक्त करा दिया जाता है। उसके बाद जितनी जल्दी सम्भव हो पाता है उनको उनके परिवारों से मिला दिया जाता है। लेकिन कुछ बच्चे वापस अपने घर नहीं जा सकते, क्योंकि वो निर्धन हैं या क्योंकि उनके माता–पिता उनकी देखभाल नहीं कर सकते। इन बच्चों को बाल आश्रम में एक नया घर मिलता है जिसमें 100 बच्चों को रखने की जगह है। जो बच्चे यहाँ आते हैं वो बहुत बुरे अनुभवों से गुजर चुके होते हैं। उनकी सहायता अध्यापकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा की जाती है और वो एक दूसरे की मदद भी करते हैं जिससे उनमें आत्मविश्वास जाग्रत हो और उनका अपने भविष्य में विश्वास बने। कुछ बच्चों को यहाँ पर कुछ ही महीने के लिए रहने की जरूरत पड़ती है, जबकि अन्य बच्चे तब तक यहाँ रहते हैं जब तक वो वयस्क नहीं हो जाते और अपनी स्वयं की देखभाल नहीं करने लगते।

इम्तियाज़ को सुनना

''मेरी न तो माँ है न पिता और मैं अपने बड़े भाई के साथ रहती हूँ। फिर भी मैं स्कूल जाती हूँ। मैंने इम्तियाज़ को बोलते हुए सुना कि शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण होती है।''
नुवशबा, 8

अभिभावकों को समझना चाहिए

''तुमको बस सोचना चाहिए कि तुम्हें इतनी अच्छी चीजें मिलें और बहुत सारी गायें। यह बेहतर होता है कि हम पहले स्कूल जायें और कुछ सीखें। मैं एक डॉक्टर बनना चाहता हूँ और गाँव के लोगों की सहायता करना चाहता हूँ। यहाँ पर बहुत सारे लोग हैं जिनको मेरी मदद चाहिए। यह मेरे ऊपर था। मैं निश्चित करता कि भारत में बेहतर कानून और नियम होते, जिससे हर कोई स्कूल जा सकता। यदि सारे अभिभावक शिक्षा का महत्व समझें और बाल मजदूरी से होने वाली हानियाँ, तो समस्या का समाधान हो जायेगा।''
नोगार्ने, 13

स्कूल जाना प्रिय है

''बच्चों को कारखानों में नहीं होना चाहिए। मुझे स्कूल अच्छा लगता है, वहाँ पर घर से ज्यादा अच्छा होता है। मैं अपने छोटे भाई को हर समय पकड़े नहीं रहना चाहती, लेकिन हर रोज स्कूल के बाद मेरी माँ मुझसे यह करने को कहती है। इसके बदले मैं लंगड़ी टांग खेलना चाहती हूँ। बड़ी होकर मैं एक अध्यापिका बनना चाहती हूँ और गाँव वालों को पढ़ाना चाहती हूँ।''
खातुम, 8

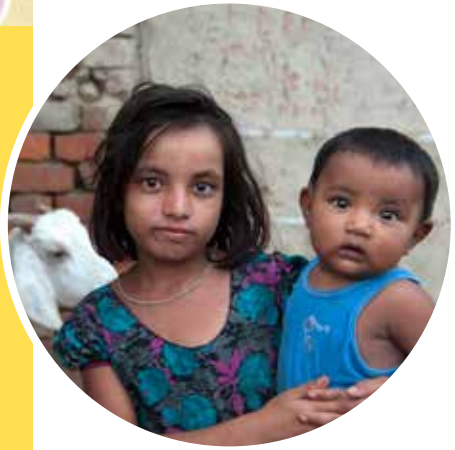

4:45 प्रातः संगीत वाली अच्छी सुबह
इम्तियाज़ अपने मित्रों से एक चौथाई घन्टे पहले उठ जाता है। वो अपनी सर्वप्रिय चीज का अभ्यास करना चाहता है – संगीत।

बाल आश्रम में एक दिन

इम्तियाज़ बाल आश्रम में रहता है जो कैलाश का उन बच्चों के लिए घर है जिनको दासता से मुक्त कराया गया है। वो ग्रामीण राजस्थान के सुन्दर वृक्षों और पहाड़ियों के बीच एक गाँव की तरह बना हुआ है, इसमें हॉस्टल हैं, एक स्कूल, एक पुस्तकालय, भोजन करने का हॉल और खेलने की जगहें हैं। कुछ बच्चे पास के शहर में स्कूल जाते हैं, जबकि अन्य बच्चों को बाल आश्रम में व्यवसायिक प्रशिक्षण मिलता है।

5.00 प्रातः सबके लिए पर्याप्त धूप
पलंगों को ठीक करने और जल्दी से सफाई करने के बाद, बच्चे एक खेल की पिच पर इकट्ठा हो जाते हैं। क्योंकि उनके अलग–अलग धर्म हैं, अतः वो एक मिली हुई सुबह की प्रार्थना सूर्य को सम्बोधित करते हुए करते हैं न कि विभिन्न देवताओं को। ''आखिर, सूरज सबको गर्मी और ऊर्जा देता है,'' इम्तियाज़ कहता है।

7.00 प्रातः मिलकर काम करना
हर कोई स्कूल के क्षेत्र की जिम्मेदारी लेता है, और एक दूसरे की भी। इम्तियाज़ और उसका सबसे अच्छा दोस्त एक ही कार्य समूहों में हैं। वो सफाई करने, कूड़ा उठाने और पेड़ पौधों की देखभाल करने में सहायता करते हैं।
''यदि कोई दुखी होता है, बीमार होता है, या उसको कोई समस्या होती है, तो हम उसका मिलकर समाधान करते हैं,'' इम्तियाज़

7.30 प्रातः बरररर
शावर का पानी ठन्डा है, लेकिन इम्तियाज़ स्वयं को कहता है कि वह उसे ताजा कर देता है।

9.00 प्रातः क्या हो रहा है?
कक्षा में इकट्ठा होने का समय और सब मिलकर अखबार पढ़ेंगे। भारत में और सारे विश्व में क्या हुआ है?

8.00 प्रातः आइना झूठ नहीं बोलता
नाश्ते से पहले बालों की स्टाइल पर अन्तिम छुअन...

10.00 प्रातः संगीत के पाठ
इम्तियाज़ को अपने अध्यापक से अच्छी सलाह मिलती है, उसको भी कैलाश ने बाल मजदूरी से आजाद कराया गया था।

1.30 सायं स्वयं को ठन्डा करना

सूरज ऊँचा है और बाहर खतरनाक गर्मी है। आज, एक ताल को पानी से भरा गया है, और हर कोई उसमें नहाने का अवसर प्राप्त करता है जिसके बाद उस पानी से पेड़ पौधों और सब्जियों को सींचने में इस्तेमाल कर लिया जाता है।

1.00 सायं दोपहर के खाने का समय

हर कोई अपनी प्लेट धोता है।

4.00 सायं जीवन की शैलियाँ

इम्तियाज़ और उसके मित्र प्रस्तुतियाँ बनाने, वार्तालाप की शैलियाँ, और समस्याओं को सुलझाने का अभ्यास करते हैं।

5.30 सायं अन्दर या बाहर?

एक नाश्ते के बाद, क्रिकेट एक सर्वप्रिय अवकाश है।

8.00 सायं दावत का समय

कैलाश ने बच्चों के लिए एक दावत आयोजित की है, जिसमें प्रस्तुतियाँ, नाच एवं गाना है। बहुत सी हँसाने वाली कहानियाँ भी सुनायी जाती हैं!

7.00 सायं एक शान्त क्षण

इम्तियाज़ ने बाल आश्रम में अन्तर्ध्यान करना सीख लिया है। उसका मानना है कि यह उसके विचारों को साफ करने में सहायक होता है और वो अपने स्कूल के कार्य में अपना ध्यान बेहतर लगा पाता है।

9.00 सायं गुड नाइट!

इम्तियाज़ अपने सात मित्रों के साथ कमरा बाँटता है और जल्द ही अपने बँकर वाले पलंग में सो जाता है।

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

अखिलेश आज़ादी में जश्न मनाता है

अखिलेश आशाओं से भरा हुआ सोकर उठता है। बस एक सप्ताह पहले ही, उसको दासता से मुक्त कराया गया था। वो अभी भी सहमा हुआ है क्योंकि उसने अनेकों महीने प्रतिदिन 18 घन्टे नगों को पॉलिश करते हुए बिताये हैं। लेकिन अब वो पहली बार अपना जन्मदिन मनाने की सोच रहा है।

Akilesh, 13

रहने वाला है: बिहार का।
याद आती है: अपने परिवार की।
नहीं चाहता: यह कि बच्चों को काम करना पड़ता है।
सर्वप्रिय गीत: भोजपुरी गाने। उनके बोल सब इसके बारे में होते हैं कि ज़िन्दगी कैसे अच्छी गुजरनी चाहिए।
पसन्द करता है: स्कूल जाना। नाचना।
आदर्श मानता है: कैलाश को

▲ अखिलेश का कार्य नगों को पॉलिश करना था, ठीक जैसा लड़का इस चित्र में है। उसके बाद उन नगों को गहने बनाने वाले लोगों को बेच दिया जाता था। शायद उन नगों में से कुछ उन गहनों में पहुँचते थे जो तुम या तुम्हारे मित्रों में से एक पहने हुए है?

अखिलेश और अन्य जन्मदिन वाले लड़के एवं लड़कियों को नये वस्त्र दिये गये हैं, एक टी–शर्ट, पैन्टें और जूते।
▼

अखिलेश को नहीं मालूम कि वो किस दिन और किस साल पैदा हुआ था।

"लेकिन मेरी माँ को लगता है कि मैं 13 वर्ष का हूँ।" वो कहता है।

शायद ही किसी बच्चे को बाल आश्रम में यह पता है कि उसकी आयु क्या है, और वो किस दिन पैदा हुआ था। इसलिए हर बच्चे को कोई दिन अपना जन्मदिन मनाने के लिए निर्धारित कर दिया जाता है, कैलाश साल भर में नए बच्चों के लिए कुछ बार विशेष दावतों का आयोजन करता है। दावत की दिनांक उनकी नई जन्मतिथि बन जाती है।

स्कूल जाने की सोच भी नहीं सकता था

बड़े होते समय, अखिलेश कभी–कभी बच्चों को स्कूल जाते हुए देखता था।

"लेकिन मेरे और मेरे भाई–बहनों के लिए स्कूल एक सपना तक नहीं था। हम गरीब थे और हमेशा भूखे रहते थे। हमारे घर की छत टूटी थी और बरसात के मौसम में उस पर पानी भर जाता और जमा हो जाता था। मेरे पिता एक कारखाने में काम करते थे, लेकिन वो हर महीने, अपना सारा वेतन शराब पीने में उड़ा देते थे।"

जब अखिलेश 11 वर्ष का था तो उसके पिता ने एक अजनबी के साथ एक साझा किया था जो उस समय गाँव आया हुआ था। इसमें यह था कि अखिलेश स्कूल जा सकेगा लेकिन उसके बदले में उसको नौ महीने तक हर रोज दो घन्टा काम करना होगा। कारखाना उसके घर से सैंकड़ों मील दूर था। वेतन, जो कि 4 यू.एस. डॉलर प्रतिदिन, उसके परिवार को रोज भेज दिया जाता था।

"मैं घबराया हुआ था, क्योंकि मैं कभी अपने गाँव वाले घर से बाहर नहीं गया था," अखिलेश याद करता है। "पर मैं वास्तव में स्कूल जाना चाहता था और अपने परिवार की सहायता करना चाहता था।

बेवकूफ बनाकर दास बनाया गया

जल्द ही यह साफ हो गया कि साझे में सब कुछ झूठ लिखा था। अखिलेश को स्कूल जाने को नहीं मिला। इसके बजाय उसको एक छोटे,
अन्धेरे कमरे में पाँच अन्य बच्चों के साथ बन्द कर दिया गया और उससे जबरदस्ती जेवरों के लिए नगों को पॉलिश करवाया गया, सुबह 7 बजे से मध्यरात्रि तक, सप्ताह के हर रोज।

"मेरा सारा शरीर दर्द करता था। मेरी उंगलियों की नोकें छितरा गयीं थीं और मेरी आँखों में हमेशा चुभन रहती थीं और उनसे पानी निकलता रहता था," अखिलेश कहता है। "यदि मैं गलती करता था तो वो मुझे पीटते थे। यह मुझे क्रोधित करता था और मैं उनसे लड़ना चाहता था, लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता था। मैंने भाग निकलने की सोची, लेकिन मैं कहाँ जाता

अन्त में घर वापस? कारखाने के मालिक ने बताया कि यदि हम किसी को बतायेंगे कि हम कारखाने में काम करते हैं तो पुलिस हमको गिरफ्तार कर लेगी। अब हमको मालूम है कि यह सच नहीं था, लेकिन उस समय मैं भयभीत था। और मेरी हिम्मत नहीं थी

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

कि किसी से सहायता के लिए कहूँ।

अन्त में घर पर

नौ महीने बाद, अखिलेश को घर जाने दिया गया। लेकिन उसकी घर वापस लौटने की खुशी समाप्त हो गई जब उसकी माँ ने उसे बताया कि उसके पिता ने अपने पैसों के अलावा अखिलेश के वेतनों को भी पीने में उड़ा दिया। ''पर उन्होंने छत जरूर ठीक करायी थी,'' उसकी माँ ने शर्मिन्दा होते हुए कहा। ''लेकिन बाकी सारा पैसा शराब में चला गया।''

अखिलेश रोया जैसे उसने अपने परिवार को वहाँ के भारी कार्यभार के बारे में बताया, और यह कि स्कूल भेजने का वायदा झूठा था। उसने अपने हाथों पर लगे ज़ख्मों को दिखाया और उसकी माँ भी रोई। पर कुछ ही सप्ताह के बाद, अखिलेश के पिता ने कहा कि उसे वापस कारखाने में जाना होगा। और जल्द ही वो वापस वहाँ पहुँच गया, उसी अन्धेरे कमरे में।

अखिलेश को बचा लिया गया

कारखाने में आठ महीने काम करने के बाद, अखिलेश पूरी तरह निराश हो गया था। लेकिन एक दिन, दरवाजा तोड़ दिया गया और पुलिस इमारत में लाठियाँ उठाये हुये घुस गयी।

''मैं भयभीत हो गया,'' अखिलेश कहता है। ''पर फिर कैलाश के कार्यकर्ताओं में से एक अन्दर आया और उसने बताया कि वो हमको मुक्त कराने आये हैं।''

उस कार्यकर्ता ने अखिलेश को बाहर निकलने में सहायता की और बाहर एक प्रतीक्षा कर रही कार में बैठा दिया। अखिलेश की आँखें धूप की तेज़ रोशनी में चौंधा गयीं क्योंकि वो महीनों से अन्धेरे कमरे में बन्द रहा था। क्योंकि इस बात की बड़ी आशंका थी कि यदि वो वापस गाँव गया तो उसके पिता उसको जबरदस्ती इसी काम में भेज देंगे, अतः उसको बाल आश्रम में रहने के लिए भेज दिया गया। ''और आज सुबह मुझे पता चला कि मेरा और अन्य नये आये लड़कों का जन्मदिन मनाया जायेगा! किसी ने पहले कभी मेरा जन्मदिन नहीं मनाया।''

कैलाश और उसकी पत्नी सुमेडा जन्म दिवस के जश्न का नेतृत्व करते हैं, एक उद्घाटन समारोह से शुरूआत करते हुए।

हर कोई शुभ जन्मदिन गाता है और उसका जश्न नाच और गाने से चलता है। ''मैं पहले कभी अपनी ज़िन्दगी में इतना खुश नहीं रहा हूँ,'' अखिलेश कहता है। ''यह एक बिल्कुल नया एहसास है।'' किसी ने मुझे पहले कभी इस तरह नहीं मनाया है।''

आग जला दी जाती है और उसका धुआँ निकलकर छत पर चला जाता है। अखिलेश आग में डीज़ल छिड़कता है जिससे आग में चिटचिट होती है।''सूरज हम सबको धरती पर बराबर धूप देता है,'' कैलाश कहता है। ''आग भी वही करती है, वो हम सबको गर्माहट देती है।''

''क्या तुमको लगता है कि तुम्हारी नसों में अलग खून बह रहा है, इसलिए कि तुम मुसलमान हो या हिन्दू? कैलाश पूछता है। अखिलेश शक्ति से उत्तर देता है 'नहीं'।

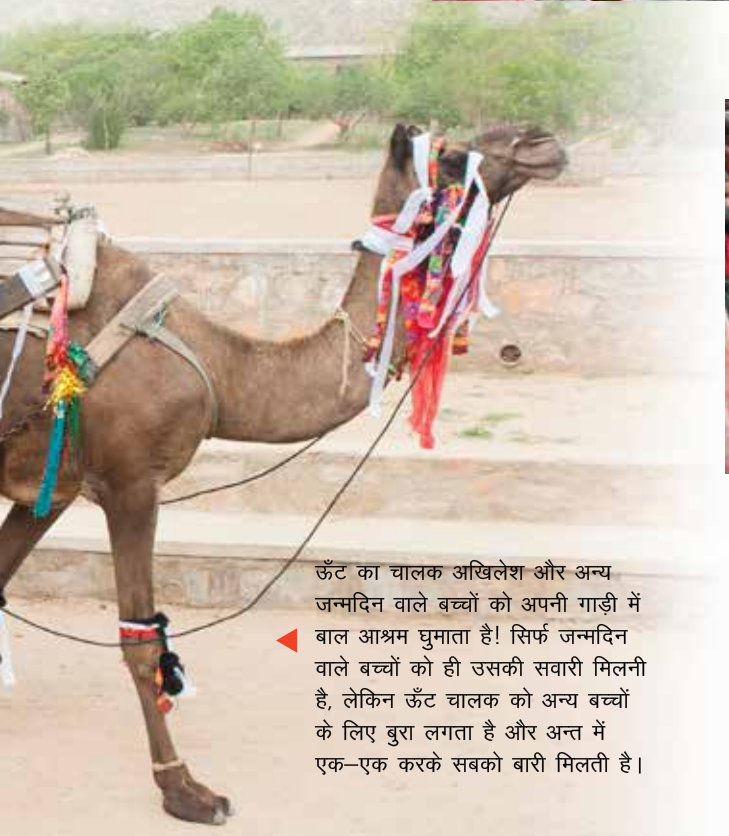

ऊँट का चालक अखिलेश और अन्य जन्मदिन वाले बच्चों को अपनी गाड़ी में बाल आश्रम घुमाता है! सिर्फ जन्मदिन वाले बच्चों को ही उसकी सवारी मिलनी है, लेकिन ऊँट चालक को अन्य बच्चों के लिए बुरा लगता है और अन्त में एक–एक करके सबको बारी मिलती है।

भारत में, वयस्क अक्सर एक–दूसरे की बातें नहीं मानते क्योंकि उनके अलग धर्म होते हैं। कभी–कभी वो एक–दूसरे को मार तक डालते हैं। लेकिन बाल आश्रम में सब एक–दूसरे से अच्छा व्यवहार करते हैं, चाहे वो अलग देवताओं में विश्वास करते हों। ''आज हम किसी ईश्वर की प्रार्थना नहीं कर रहे हैं। हम समाज की प्रार्थना कर रहे हैं,'' कैलाश बताता है। ''हम सबके भोजन, जल, खेलने एवं शिक्षा प्राप्त करने के अधिकारों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।'' बच्चे मिलकर गाते हैं! ''मैं सारे समाज के लिए प्रार्थना करता हूँ, सिर्फ अपने लिए नहीं बल्कि विश्व में सबके लिए। हमारी देखभाल करो, हमें आर्शीवाद दो, और हमारी सहायता करो कि हम बहादुर बनें और सारे मजदूर बच्चों को मुक्त करा सकें।''

बच्चे अपने हाथों को कटोरी की तरह जोड़े हुए उनमें पानी रोके हैं। कैलाश ने अखिलेश की कलाई पर एक ब्रेसलेट बाँधी है। यह भारत में किसी का स्वागत करने का तरीका है।

मीना एक घरेलू दासी थी:

मीना केवल बारह वर्ष की थी जब उसे एक घरेलु दासी की तरह बेच दिया गया। उसको जबरदस्ती काम करना पड़ा लेकिन उसने एक बेहतर ज़िन्दगी जीने की आशा कभी नहीं छोड़ी।

AP/JACQUELYN MARTIN

"यदि तुमको बेच दिया जाए तो तुम भाग निकलो!"

जब मीना छोटी थी, तब उसकी माँ के नये पति ने कहा कि वो उसे पिता बुलाया करे। "मेरे पास एक पिता है, और वो तुम नहीं हो," मीना कहती है। उसका सौतेला पिता क्रोधित हो उठता है और उसको मारता है। कभी–कभी वो उसका हाथ पकड़ लेता है और उस पर एक छड़ी से मारता है जब तक उसका हाथ गन्दा और खून से लथपथ नहीं हो जाता। फिर मीना की माँ मर गई और वो अपनी मौसी के साथ रहने के लिए चली जाती है। लेकिन उसके हाथों पर गहरे निशान उसको हमेशा उसके सौतेले पिता की याद दिलाते रहेंगे।

300 यू.एस. डॉलर में बेच दिया गया

जब मीना बारह वर्ष की हुई, तब एक स्टीवेन नाम के आदमी ने उससे कहा कि वो उसे देश की राजधानी दिल्ली में एक अच्छी नौकरी दिला सकता है। जो धन वो कमायेगी वो उसके परिवार की सहायता करेगा। उसकी मौसी गरीब थी, इसलिए उसने मीना को स्टीवेन के साथ भेज दिया। दिल्ली में, उसने एक घरेलु नौकरों की एजेन्सी को 300 यू.एस. डॉलर में बेच दिया।

MITCHELL KANASHKEVICH/CORBIS

मीना को 40 अन्य लड़कियों के साथ एक कमरे में बैठना पड़ा। कोई नहीं जानता था कि आगे क्या होने वाला है, और वो सब डरे हुए थे। मीना बस अपने घर जाना चाहती थी, लेकिन एक वयस्क आया और उसने उससे प्रश्न पूछने शुरू कर दिये:

"क्या तुम अच्छा भोजन बना लेती हो? क्या तुम्हें सफाई करना आता हैं?"

"मुझे नहीं मालूम इसे कैसे करते हैं," मीना कहती है, लगभग चिल्लाते हुए। वो फिर से घर वापस जाने के लिए कहती है लेकिन कोई उसकी नहीं सुनता। इसके बजाय, कुछ दिन बाद, उसको वो परिवार लेने के लिए आता है जिसने उसे खरीदा है।

भागने का प्रयास करती है

मीना भाग जाती है और उस क्षेत्र में एक घर में छिप जाती है, लेकिन जल्द

मीना को कैलाश और उसकी संस्था बी.बी.ए. ने दास मजदूरी से मुक्त कराया। वो जल्द ही स्कूल जाने के सपने देख रही है, और उसको नाचना अच्छा लगता है!

मीना की रक्षा करने के लिए, इन चित्रों में उसका चेहरा नहीं दिखाया गया है।

DAVID H. WELLS/ALL OVER PRESS

जब मीना 12 वर्ष की थी तब उसको एक घरेलु दासी की तरह एक परिवार को बेच दिया गया था और उसको इस चित्र में दर्शायी गयी लड़की की तरह खाना बनाना पड़ता था, सफाई करनी पड़ती थी और कपड़े धोने पड़ते थे। मीना सप्ताह के सातों दिन, प्रतिदिन 19 घन्टे काम करती थी।

ही उसको ढूँढ निकाला जाता है और उसे एजेन्सी वापस पहुँचा दिया जातो है। वहाँ पर वयस्क उसकी पिटाई करते हैं और उससे कहते हैं कि वो यह भूल जाये कि वो कहाँ से आई थी।

''तुम अपने गाँव वाले घर को कभी नहीं देख पाओगी। तुम काम करोगी, यही अब तुम्हारी ज़िन्दगी होगी।''

उसके अगले दिन, मीना को फिर से बेच दिया जाता है, एक नए परिवार को। हर सुबह वो पाँच बजे उठकर सफाई करती है, फूलों में पानी देती है, कपड़े धोती है और खाना बनाती है। उसको केवल डबलरोटी खाने को मिलती है। वो रसोई के पीछे एक छोटी अलमारी में सोती है, लेकिन वो शायद ही कभी रात के दो बजे से पहले सोती है। वो सदैव थकी और भूखी रहती है। जब वो शिकायत करती है तो उसको थोड़ा सा चावल दे दिया जाता है, लेकिन यह वो चावल नहीं होता जो परिवार वाले खाते हैं। वो उसके लिए एक सस्ता चावल खरीदते हैं।

मीना पर आक्रमण होता है

हर रोज़, एक सब्जी वाला रसोई में सब्जियाँ देने के लिए आता है। वो परिवार उससे कई वर्षों से सब्जियाँ खरीदता रहा है। वो मीना को देखता है और हमेशा उससे बोलने की कोशिश करता है। एक दिन, जब घर में कोई नहीं होता, तब वो आदमी मीना के पीछे एक कमरे में जाता है और दरवाजा बन्द कर देता है। वो अपना हाथ उसके मुँह पर रख देता है। वो उसे इतनी कसकर दबाता है कि वो कोई आवाज़ नहीं कर पाती। अपने दूसरे हाथ से वो मीना के दोनों हाथों को उसके पीछे पकड़ लेता है। वो लातें चलाती है और मचलती है, लेकिन वो आदमी उससे बहुत तगड़ा है।

जब परिवार घर आता है, तो मीना उस घर की मालकिन को बताती है कि क्या हुआ। वो क्रोधित हो जाती है और सारा इल्ज़ाम मीना पर लगाती है।

''तुमने उसको फंसाया,'' वो कहती है। मीना को पता है कि यह सच नहीं है, और वो अन्य लोगों को बताती है। उस मालकिन की नन्द सुनती है, और सब्जी वाले को झिड़कती है। वो उससे कहती है कि वो मीना को अकेला छोड़ दे। लेकिन वो तब भी उससे सब्जियाँ लेते रहते हैं, और कोई मीना की रक्षा नहीं करता जब वो आदमी बराबर उसके पीछे लगा रहता है। मीना उससे अपने को अलग रखती है और एक ताला डालकर स्वयं को बन्द कर लेती है जब घर में कोई नहीं होता है।

कुछ महीने बाद, मीना के बहुत सारा खून बहने लगता है। यह पता चलता है कि वो गर्भवती हो गई थी जब उसके साथ बलात्कार किया गया था, अब उसका गर्भपात हो गया। वो निराश होकर रोती है और घर जाने के लिए तरसती है, लेकिन कोई उसकी सहायता नहीं करता।

कैलाश द्वारा मुक्त की गई

जब मीना 17 वर्ष की थी, कैलाश और बी.बी.ए. को पता चला कि उसे बन्दी बनाकर रखा गया है। उन्होंने एक बचाव अभियान चलाया और उसको मुक्त कराने में कामयाब हुए और उसको एक सुरक्षागृह में ले गये। शुरू में, मीना चुप रही और शर्माती रही। उसे आदत पड़ चुकी थी कि वो अगर बड़ों से बात करेगी तो उसकी पिटाई की जायेगी।

''लेकिन कुछ महीने बाद कैलाश के साथ, मुझे लगा कि लोग मुझसे पूछते थे कि मुझे क्या चाहिए: मैं क्या खाना चाहती थी, क्या मुझे एक गिलास पानी चाहिए था। वो जानना चाहते थे कि मुझे क्या चाहिए, और मुझे लगा कि सब कुछ बदल गया है। यदि उन्होंने मुझे बचाया नहीं होता तो मैं मर गई होती। कैलाश मेरा आदर्श है, क्योंकि उसकी तरह मैं भी मानती हूँ कि बच्चों को आज़ाद रहना चाहिए। यह तभी सम्भव है जब मुझे एक अच्छी शिक्षा मिले। कैलाश कहता है कि मुझे बहादुर बनना चाहिए और लड़ना चाहिए, और चुनौतियाँ ज़िन्दगी का एक भाग हैं। यह मुझको प्रोत्साहित करता है।''

''अब मुझे अच्छा लगता है क्योंकि मैं उन लोगों के साथ रह सकती हूँ जिनके साथ मेरा मन लगता है। मुझे ऐसा अनुभव पहले कभी नहीं हुआ। अपनी सारी ज़िन्दगी मुझे उन लोगों के साथ रहना पड़ा जिनके साथ मैं नहीं रहना चाहती थी।''

बाहर निकलो!

अनेकों वर्ष संघर्ष करने के बाद, बी.बी.ए. एवं कैलाश को भारत सरकार द्वारा नियमों में परिवर्तन लाने में सफलता मिली जिससे बच्चों को बेहतर जीवन मिल सके और तस्करों को बड़ी सजा मिल सके। अब दोनों स्टीवेन, जिसने मीना को बेचा था, और उस बलात्कारी को अपने अपराधों के लिए जेल में डाल दिया गया है, इन नए कानूनों के तहत। यह कानून मजदूर कार्यकर्ताओं को वित्तीय सहायता का अधिकार देता है, इसलिए मीना को कुल मिलाकर उतना रुपया मिला है जितना वेतन उसने कमाया होता जब वो काम करती थी। वो इस धन को अपनी शिक्षा में व्यय करना चाहती है।

''केवल शिक्षा ही मेरी ज़िन्दगी बदल सकती है। जिन बच्चों को जबरदस्ती दासों की तरह काम करना पड़ता है, उनको मेरी सलाह यह है कि वे सीधे बाहर निकलने के लिए जो कुछ भी कर सकते हों करें! अधिकतर बच्चों को अपने अधिकार नहीं पता होते। यदि तुम अपने परिवार के साथ रह रहे हो और कोई तुमको कहीं जाने के लिए पैसे देता है, तुम भी याद रखना कि जो वायदा वो लोग तुमको अपने परिवार से अलग करके एक बड़े शहर में बेहतर ज़िन्दगी गुजारने का कर रहे हैं, वो सच नहीं है! घर पर रहो और अपने स्कूल जाने के अधिकार के लिए लड़ों,'' मीना कहती है। 🌐

निरभ्या की याद में

सन् 2012 में, एक निरभ्या नामक युवा महिला का नई दिल्ली में एक बस के अन्दर कुछ लोगों ने बलात्कार किया और हत्या कर दी। इस मामले ने सारे विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। भारत में, सैंकड़ों हजारों लोगों ने प्रदर्शन किया, दोनों महिलाओं और पुरुषों ने और महिलाओं एवं लड़कियों के सम्मान की मांग की। सन् 2013 में, भारत सरकार ने उसकी याद में 'निरभ्या फाउन्डेशन' की शुरूआत की। यह संस्था अपराध के पीड़ितों को धन देगी और उन योजनाओं को भी जो लड़कियों एवं महिलाओं के विरुद्ध हो रही यौन हिंसा को रोकेंगी। मीना पहली लड़की है जिसको अपनी पीड़ा का समायोजन करने के लिए इस संस्था से धन प्राप्त हुआ है।

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

हर कोई पायल को सुनता है

जब 13 वर्षीय पायल बोलती है, तो वयस्क और बच्चे दोनों उसको सुनते हैं। उसका गाँव, एक बच्चों को प्यार करने वाला गाँव है, जिसने उसको अपने बाल सांसद नेता के रूप में चुना है।

''एक अच्छा नेता ईमानदार होता है और रीझने के बजाय समस्याओं को हल करता है,'' पायल कहती है। यहाँ पर वो सारे गाँव को भाषण दे रही है।

''मुझे गर्व हुआ जब मुझे पता लगा कि इतने सारे लोगों ने मुझे अपना मतदान दिया,'' पायल कहती है। ''मैं बच्चों के लिए संघर्ष करना चाहती थी, विशेषतः लड़कियों के लिए। यहाँ राजस्थान में, बहुत सारी लड़कियों को कठिन परिश्रम करना पड़ता है और उनकी शादी कर दी जाती है जब वो केवल बारह वर्ष की होती हैं। मुझे बाल विवाह नहीं अच्छा लगता। हम बच्चों से घर पर मिलते हैं और उनके माता–पिता को बताते हैं कि स्कूल जाना क्यों जरूरी होता है। हम उनके पिताओं से भी कहते हैं कि वे अपने बच्चों या पत्नियों को न मारा करें। इसके बजाय यदि वे उन्हें प्यार करेंगे, तो सबके लिए स्थिति बेहतर होगी।''

शौचालय लड़कियों को सहायक है

पायल तथा बाल सांसद को इस बात का श्रेय मिलता है कि अब स्कूल के गाँव में एक शौचालय है।

''इससे पहले, बहुत सारी लड़कियों को स्कूल नहीं जाने दिया जाता था। उनके अभिभावकों को भय था कि यदि वे लड़कों की तरह, घर के बाहर शौच करने जातीं तो उन पर आक्रमण हो सकता था। लेकिन अब सभी लड़कियाँ स्कूल जा सकती हैं,'' पायल बताती है।

बाल सांसद में महत्वपूर्ण बैठक

बाल सांसद इस पर चर्चा कर रहा है कि गाँव का विद्यालय कैसे किसी बच्चे को अधिक वर्षों तक शिक्षा दे सकता है, जिससे लड़कियाँ अधिक लम्बे समय तक अपनी शिक्षा ग्रहण कर सकती हैं। उनको एक नया चौका भी चाहिए।

''यदि हमारी यह मांगें पूरी नहीं होतीं, तो हम शहर के राजनीतिज्ञों के पास पैदल जायेंगे और सारी ट्रैफिक रोक देंगे,'' पायल सुझाव देती है।

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

पायल स्वयं की रक्षा करती है

भारतीय गाँवों में जो लड़कियाँ अकेली पानी के पम्प पर अथवा स्कूल को जाती हैं उन्हें अक्सर बड़े लड़के एवं पुरुष परेशान करते हैं, वो उनसे बुरी बातें कहते हैं और उनके वस्त्रों पर उनकी खिंचाई करते हैं।

''लेकिन यदि कोई मुझसे ऐसा करने की कोशिश करता है तो मैं बस उसको चिल्लाकर कहती हूँ कि वो उसी समय रुक जाये,'' पायल कहती है।

एक अभिमानी माँ

मीना, जो कैलाश की कार्यकर्ताओं में से एक है, पायल और उसकी माँ से मिलती है, जो कभी स्कूल नहीं गयी। उसे अपनी होशियार बेटी पर गर्व है। ''मीना और कैलाश मेरे आदर्श हैं,'' पायल कहती है।

नेताओं के बीच में

गाँव में वयस्कों की सांसद का नेता अक्सर पायल और उसकी मित्रों से सलाह लेता है।

''वयस्क हमारी सुनते हैं और सहायता करते हैं,'' वो कहती है।

बाल मैत्री वाले गाँव

कैलाश ने सैंकड़ों गाँवों को 'बाल मैत्री वाले गाँवों' में परिवर्तित करने में सहायता की है, जहाँ किसी बच्चे को पीटा नहीं जाता न ही उसे काम करना पड़ता है न शादी करनी पड़ती है। एक गाँव को बाल मैत्री वाला बनने में तीन वर्ष तक लग सकते हैं। इसमें यह शामिल होता है कि हर किसी को प्रशिक्षण दिया जाता है, और एक बाल सांसद होती है जो सारे गाँव के कार्यों में सहायता करती है।

केवल बाल मैत्री वाले गाँवों को कैलाश से ऐसा चिन्ह मिलता है!

काम करने से अच्छा खेलना लगता है

जिन बच्चों को काम नहीं करना पड़ता वे स्कूल जा सकते हैं और उन्हें खेलने का समय भी मिल जाता है। भावना, 14, को यह मालूम है। वो राजधानी दिल्ली के एक गरीब क्षेत्र की बाल सांसद की एक सदस्य है।

''यदि हम बच्चों को काम करते देखते हैं, तो हम उनके माता–पिता से आग्रह करते हैं कि वो इसके बजाय उन्हें स्कूल जाने दें। अभी तक हम 32 बच्चों की सहायता कर चुके हैं!''

भावना का मानना है कि शक्तिशाली लोगों के लिए यह समझना बहुत कठिन होता है कि निर्धन रहने में कैसा लगता है।

''यह इस प्रकार है कि जब तुमको किसी चीज़ की बहुत आवश्यकता होती है, लेकिन तुम उसको नहीं पा सकते। यदि तुम एक धनवान व्यक्ति को यह समझाना चाहते हो, तो वो उन्हें ऐसा लगेगा कि तुम उनसे पूछ रहे हो कि यदि उसे एक बड़ी अद्भुत कार चाहिए हो, लेकिन वो उसे नहीं प्राप्त कर सकता,'' भावना कहती है।

खो–खो

बच्चे दो टीमों में विभाजित हो जाते हैं – एक पकड़ने वाली टीम और एक रोकने वाली टीम। पकड़ने वाले लोग एक पंक्ति में बैठते हैं, अलग–अलग दिशाओं में मुँह करे हुए। रोकने वाले लोग एक बार में तीन के समूह में पिच पर दौड़ते हैं। उनमें से कोई भी पकड़ने वालों द्वारा यदि पकड़ा जाता है, तो वो बाहर हो जाता है।

आकाश, 13 और नितिन, 12 'गट्टा' खेल रहे हैं। वे कंकड़ों को फेंकते हैं और उनको अपनी हथेली के पीछे के भाग से उठाने की कोशिश करते हैं। जो सबसे पहले कंकड़ गिराता है वो हारा माना जाता है!

गायत्री, 12, और भावना, 14, 'गोमोकू' खेल रही हैं।

''हम बच्चों के लिए लड़ते हैं कि उनको खेलने दिया जाए और स्कूल जाने दिया जाए।''

किट–किट

गूनन, 11, लंगड़ी टांग खेल रही है जिसको भारत में 'किट–किट' कहते हैं!

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

रमेश आज़ाद होकर भाग निकला

रमेश अक्सर बत्तखों को बाल आश्रम में टहलाने के लिए ले जाता है। उसको सचमुच इन बत्तखों की देखभाल करना अच्छा लगता है। ''क्योंकि जब मैं छोटा था और मुझे दास मजदूरी से मुक्त कराया गया था, तब मेरी देखभाल करने के लिए सदैव कोई न कोई होता था,'' वो बताता है।

रमेश को बाल आश्रम में बत्तखों की देखभाल करना अच्छा लगता है। उसे टहलते समय गहरे विचार करना अच्छा लगता है। ''मैं कभी धनवान नहीं होना चाहता था। ईमानदार और गरीब होना बेहतर है। मुझे धनी लोगों का रहन–सहन और बर्बादी नहीं पसन्द है,'' रमेश कहता है, जो एक बाल दास हुआ करता था।

रमेश को बी.बी.ए. द्वारा मुक्त कराया गया था जब वो सात वर्ष का था और एक ईंट के भट्टे पर एक वर्ष से काम कर रहा था। उसका काम होता था कि वो जलते सूरज में एक के बाद एक ईंटों को घुमाता रहे, और जब वे सूख जायें तब उनको इकट्ठा करके लगा दे। प्रत्येक ईंट का वज़न 2.5 किलो था।

फिर से काम करना पड़ा

कुछ महीने बाद आश्रम में बिताने के बाद रमेश वापस घर आ गया। वो बड़े लड़कों के साथ घूमने लगा जो धूम्रपान करते थे और एक–दूसरे से लड़ते थे। उसके पिता नाराज़ हो गये और उन्होंने उसको नेपाल भेज दिया। रमेश को एक भोजनालय में काम करना पड़ता था, दिन में बारह घन्टे बर्तन धोने और मांझने पड़ते थे।

''मालिक मुझे छोटी सी भी गलती के लिए पीटता था,'' रमेश कहता है। ''रातें बहुत खराब होती थीं। मैं दो बेन्चों को सटाकर उन पर सोता था, लेकिन कभी–कभी मैं उनसे गिर जाता था। फिर मेरा मालिक तेजी से अन्दर आता था और मुझे पीटता था।''

हर जगह खून

एक दिन, रमेश एक दीवाल पेन्ट कर रहा था जब पेन्ट की एक बूँद भोजनालय के मालिक के खाने में गिर गई।

''मुझे नहीं याद कि उसने मुझे कितनी बार घूंसा मारा जिसके बाद मैं गिर गया। मैं अपने हाथों के सहारे गिरा और मेरा एक नाखून सीधा मेरी एक उंगली में घुस गया। सब जगह खून और पेन्ट था।''

उसी समय, रमेश, जो कि उस समय नौ वर्ष का था, ने भाग निकलने का निर्णय लिया। लेकिन बाल आश्रम कई दिन की यात्रा के बराबर दूर था।

रमेश ने भोजनालय में दूसरे लड़के को वहाँ के भोजन, खेलों और स्कूल के बारे में बताया, लेकिन उसका मित्र उसके साथ जुड़ने से बहुत डरा हुआ था। अन्त में रमेश विवश हो गया और उसने उससे झूठ बोला: ''तुमको मालूम है वहाँ बाल आश्रम में और क्या है? हवाई जहाज! कभी–कभी वो वहाँ उतरते हैं और तुम उनको देख सकते हो!''

लम्बी यात्रा

अगले ही दिन, दोनों लड़के भाग निकले।

''हम एक ट्रेन में घुस गये और उसके कंडक्टर से छिप गये। यदि कोई हमको ढूँढ लेता तो हम चलती ट्रेन में से कूद जाते।''

एक बार नई दिल्ली पहुँच गये, तो उन्होंने अन्त में सही बस ढूँढ ली। 24 घन्टे यात्रा करने के बाद, एक ऊँची–नीची सड़क पर बस की यात्रा उनको आखिरी मीलों पर चलाती ले गई। रमेश को बिल्कुल ठीक से पता था कि वो कहाँ पर है – यह वो ही जगह थी जहाँ पर उसने बाल दासता के विरुद्ध एक पद यात्रा में भाग लिया था!

''मेरा हृदय और तेज़ धड़कने लगा जब हम बाल आश्रम के फाटकों पर पहुँचे, तो मैंने अपने पुराने अध्यापकों में से एक को देखा। मैं बहुत खुश था लेकिन मेरा मित्र रोने लगा जब उसे पता लगा कि वहाँ कोई हवाई जहाज नहीं थे!''

''मैं एक वकील बनना चाहता हूँ और भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ना चाहता हूँ।''

न्याय मिलने के सपने देखता है

रमेश की बड़ी बहन की हत्या उसके अपने पति ने ही की थी। ''वो बहुत सुन्दर थी। गाँव के सबसे धनवान आदमी ने उससे शादी कर ली और उसके एक पुत्री हुई। जब वो लड़की छह वर्ष की थी तब उसने कुछ चीनी मांगी और इस बात पर उसके पिता को क्रोध से आगबबूला हो गया। उसने उसको पीट–पीटकर मार डाला। एक वर्ष बाद, जब मेंरी बहन खाना पका रही थी तब उससे कुछ पानी फर्श पर गिर गया। उसके पति का भांजा उस पर फिसल गया, और उसके पति को इतना गुस्सा आया कि उसने मेरी बहन की गर्दन तोड़ दी। जब किसी ने उसको पांच दिन तक नहीं देखा, तब वो उसके घर पर गये। मेरी बहन फर्श पर टूटी हुई गर्दन के साथ पड़ी थी। वो हिल नहीं सकती थी और उसने कुछ खाया नहीं था। दो सप्ताह के अन्दर, वो मर गई। हममे से कोई भी पुलिस के पास नहीं गया क्योंकि वो आदमी अमीर है और हम गरीब हैं। मेरा सपना है कि उसको सजा दी जाये।''

TEXT: EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: KIM NAYLOR

समान अधिकारों के लिए लड़ो!

बाल अधिकार सभी बच्चों पर लागू होते हैं। लेकिन अक्सर लड़कियों के साथ लड़कों से भिन्न व्यवहार किया जाता है। विश्व के आधे बच्चे लड़कियाँ हैं, लेकिन उनसे कहीं अधिक लड़के स्कूल जाते हैं, भोजन पाते हैं, खेलते हैं और डॉक्टर के पास जाते हैं जब वे बीमार पड़ते हैं। पृष्ठों 94–113 पर तुम लड़कियों से मिल सकते हो – और लड़कों से भी–जो बाल अधिकार राजदूत हैं और बच्चों के समान अधिकारों के लिए लड़ते हैं।

एक निष्पक्ष संसार में, केवल लड़कियाँ ही नहीं पनपतीं। उनके पिता, भाई, भविष्य के पति एवं पुत्र भी अच्छी परिस्थितियों में होते हैं। आज के विश्व में, लड़कियाँ अधिक गृह कार्य करती हैं और उन्हें खेलने के लिए कम समय मिलता है। वो लड़कों की अपेक्षा हिंसा का शिकार अधिक बनती हैं, और कभी–कभी उनका जबरदस्ती विवाह कर दिया जाता है जब वो बच्ची होती हैं। लड़कियों के लिए अपनी आवाजों को सुनवाना और अपनी जिन्दगी के निर्णयों को लेना भी कठिन होता है। क्या तुम्हें लगता है कि यह भी अन्यायपूर्ण है? क्यों न तुम एक बाल अधिकार राजदूत बन जाओ, एक डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार क्लब शुरू करो, और हमारे साथ दुनियाँ को बदल दो!

महत्वपूर्ण एवं मनोरंजक

तुम दि ग्लोब को पढ़ने में समय देकर और अपने देश एवं पूरे संसार के बाल अधिकार तथ्यों का अध्ययन करके एक बाल अधिकार राजदूत बन सकते हो। एक बार तुम्हें बाल अधिकारों के बारे में बहुत सारी जानकारी मिल जाती है, तो तुमको चित्रों के साथ एक मिलकर एक बाल अधिकार क्लब शुरू कर सकते हो। इस क्लब में तुम मनोरंजन के साथ एक ऐसी चीज को मिला सकते हो जो अति महत्वपूर्ण है। तुम डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम को साथ ही साथ चला सकते हो और उसमें और अधिक विद्यार्थियों को शामिल कर सकते हो। एक बार तुम चलने लगोगे, तो तुम और अधिक मित्रों को आमंत्रित कर सकते हो।

एक बाल अधिकार क्लब में तुमः

- बाल अधिकारों एवं लड़कियों के समान अधिकारों के लिए जागरूकता उत्पन्न कर सकते हो।
- उनकी आवाजें सुनवाओ और बाल अधिकारों के सम्मान मांगो।
- बाल अधिकारों पर पोस्टर एवं फ्लेयर्स बनाओ तथा सोशल मीडिया का इस्तेमाल करो।
- प्रतियोगिताओं एवं वाद–विवादों को आयोजित करो।
- एक नाटक, एक कविता अथवा एक गीत लिखो जो लोगों को बच्चों की जिन्दगी के बारे में बताता हो।
- स्थानीय राजनीतिज्ञों, मीडिया, और अपने परिवारों को अपने स्कूल तथा विश्व मतदान दिवस के दिनों में आमंत्रित करो।
- एक वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्रेस कॉन्फ्रेन्स (विश्व बाल विज्ञप्ति सम्मेलन) आयोजित करो।
- बाल अधिकार हीरो तथा अपने अधिकारों को अपने स्वयं के डब्ल्यू.सी.पी. समारोह में मनाओ।

शुरू हो जाओ!

डब्ल्यू.सी.पी. वेबसाइट पर तुम अन्य बच्चों से सलाह ले सकते हो और अधिक सुझाव एवं विचार इन सब पर प्राप्त कर सकते होः

- कैसे एक बाल अधिकार राजदूत बनें
- कैसे एक डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार क्लब शुरू करें और चलायें
- बाल अधिकारों, लड़कियों के अधिकारों तथा यौन शोषण व्यापार, लाभदायक तथ्यों एवं आंकड़ों सहित।

दस लाख लड़कियों को सशक्त किया जा चुका है!

'राइट्स एण्ड डेमोक्रेसी फॉर ए मिलियन गर्ल्स' नामक परियोजना के जरिये, डब्ल्यू.सी.पी. ने सात देशों में दस लाख से अधिक लड़कियों के समान अधिकारों पर शिक्षा दी है, और उनको लड़कियों के अधिकारों का सम्मान मांगने के लिए सशक्त किया है। साथ ही, बीस लाख से अधिक लड़कों ने दि ग्लोब के जरिये लड़कियों के समान अधिकारों के बारे में जाना है। इस परियोजना ने यौन शोषण व्यापार पर भी जागरूकता उत्पन्न की है। सैंकड़ों लड़कियों को बाल अधिकार राजदूत बनने का प्रशिक्षण मिला है और दर्सों हजारों बाल अधिकार क्लबों को शुरू करने के लिए लड़कियों की सहायता की गई है। यह परियोजना डब्ल्यू.सी.पी. तथा ई.सी.पी.ए.टी. स्वीडन के सहयोग से चलाया गया था, जिसे स्वीडिश पोस्टकोड लॉटरी का समर्थन मिला था।

सैनिकों की दास अब एक बाल अधिकार राजदूत है

एक वर्ष पहले, डी.आर. कॉन्गो के एक सशस्त्र समूह ने मेरेल्ली का अपहरण किया और उसका एक दास की तरह यौन शोषण किया। आज, वो एक वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ बाल अधिकार राजदूत है जो लड़कियों के अधिकारों के लिए संघर्ष करती है। ''किसी भी लड़की को मेरे जैसा अनुभव नहीं होना चाहिए। मैं उसके लिए मरते दम तक लड़ती रहूँगी!'' मेरेल्ली, 16 कहती है।

बाजार वाले दिन ही शाम को भयानक हादसा शुरू हुआ था। रोज की तरह, हम अपने घर के बाहर बैठे हुए रात का भोजन कर रहे थे, आपस में हँस बोल रहे थे। सारे गाँव में ऐसा ही वातावरण था। बड़े लोग सबकी देखभाल कर रहे थे और बच्चे हँस रहे थे और खेल रहे थे। वो एक प्यारी शाम थी।

लेकिन अचानक सब कुछ रुक गया। जंगल के छोर पर, गाँव के कसावा के खेतों से हमें मशीनगन चलने की आवाज सुनाई दी। पहले वो दूर से आ रही थी, फिर वो और तेज हो गयी। मुझे मालूम था कि कॉन्गो में युद्ध चल रहा था। मुझे पता था कि सैनिक गाँवों पर आक्रमण करते थे और लोगों का अपहरण करते थे एवं लोगों को मार डालते थे। लेकिन मैं सदैव सोचती थी कि इस तरह की घटनायें अन्य लोगों के साथ होती थीं – मेरे साथ नहीं। बहुत दूर के स्थानों में, न कि मेरे गाँव में। मैं पहले कभी युद्ध से नहीं डरी थी।

दासों की तरह

घबराहट में, लोगों ने अपने बच्चों और अपने बर्तनों एवं प्लेटों को बटोरने का प्रयास किया। हमने अपनी आगें और लालटेनें बुझा दीं, और हम सब लोग छिपने के लिए अपने घरों के अन्दर भागे। हमें लगा कि यदि हम चुप रहेंगे और सोने का नाटक करेंगे, तो शायद वो हमको चुपचाप रहने दें। हम चद्दरों के अन्दर घुस गये, लेकिन मेरे छोटे भाई–बहन रोना नहीं बन्द कर सके। हमने उनको शान्त करने की कोशिश की। मैंने उनको प्यार किया, उनको थपथपाया और सांत्वना दी और अन्त में मैं इसमें सफल हुई। हम लोगों को घरों के बीच में चलते हुए सुन सकते थे। मैं भयभीत थी, लेकिन मैंने यह जाहिर नहीं होने दिया जिससे छोटे बच्चे चिन्तित न हों।

अचानक किसी ने लात मारकर हमारा दरवाजा गिरा दिया फिर दो सैनिक मशीनगनें पकड़े और बड़ी 'मैचेट' छुरियाँ लिये हमारे सोने वाले कमरे में घुस आये। उन्होंने अपनी टॉर्चों की रोशनी सीधे हमारे चेहरों पर लगायी। जब सैनिकों ने मुझे देखा तो उन्होंने मुझसे उठने के लिए कहा। लेकिन मैं इतनी डरी हुई थी, कि मैं हिल नहीं सकी फिर उन्होंने मेरी माँ से मुझे झटके से अलग करते हुए कहाः

''यदि तुम रोओगी या चिल्लाओगी, तो हम तुम्हें मार डालेंगे!''

वो मेरी दो बहनों को उठा कर ले गये, जो 11 वर्ष और 7 वर्ष की थीं। सैनिकों ने हमारे हाथ पीछे बांध दिये और हमको एक साथ एक पँक्ति में एक रस्सी से बांध दिया। जैसा कि लोग अपने दासों के साथ बहुत समय पहले किया करते थे।

''रोज की तरह, हम अपने घर के बाहर बैठे हुए रात का भोजन कर रहे थे, आपस में हँस बोल रहे थे। लेकिन अचानक हमें मशीनगन चलने की आवाज सुनाई दी।''

अपहरण किया गया

हमारी माँ रोयी और उसने सैनिकों से विनती की कि वो हमको छोड़ दें। उन्होंने कहा कि यदि वो उनको पैसे देगी तो वो हमारी रस्सी खोल देंगे और हमें आजाद कर देंगे लेकिन हमारी माँ ने बताया कि हम सब बहुत गरीब हैं और हमारे पास कोई पैसा नहीं है। अतः सैनिकों ने हमें दरवाजे के बाहर ढकेल दिया। हम सीधे गिरे क्योंकि हमारे हाथ पैर बंधे हुए थे। जब हम दरवाजे के बाहर निकले तब हमने बहुत सारी लड़कियाँ देखीं जो हमारी तरह बंधी हुयी थीं। हम

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: JOHAN BJERKE

दास की रस्सी

सैनिकों ने इसी तरह की रस्सी को लेकर मेरेल्ली को बांधा था, उसकी बहनों एवं अन्य लड़कियों को। "ठीक उसी प्रकार जैसे लोग पहले दासों के साथ बर्ताव किया करते थे," मेरेल्ली कहती है।

कुल मिलाकर सोलह थे, और अन्य लड़कियों में से अनेकों मेरी मित्र थीं। वहाँ पर बहुत सारे सैनिक थे, शायद एक सौ! कोई हमारे ऊपर चिल्लाया कि हम चलना शुरू करें।

तब देर शाम हो चुकी थी जब हमारी लम्बी पँक्ति वर्षा वाले जंगल में घुसी, पर्वतों की ओर जाते हुए। उस समय अन्धेरा था, और हमें यह दिखाई नहीं दे रहा था कि हम अपने पैर कहाँ रख रहे हैं। हम बराबर गिरते रहे और स्वयं को चोट पहुँचाते रहे। लेकिन सैनिक हम पर बस चिल्लाते रहे कि हम चलते रहें।

शोषण किया गया

कई घन्टे तक चलने के बाद सैनिकों ने हमको रुकने का आदेश दिया। उन्होंने हमारे हाथ खोल दिये, हमारे कपड़े फाड़ दिये और हमको जमीन पर गिरा दिया। जब हम रोये और सहायता के लिए चिल्लाये, तो सैनिकों ने अपनी बन्दूक के पुट्ठों से हमको कसके मारा। साथ ही उन्होंने चिल्लाकर कहा कि वो हमें मार डालेंगे यदि हम चुप नहीं हुये, या हमने भागने की कोशिश की। फिर उन्होंने हमारा बलात्कार किया। मेरी छोटी बहनें ठीक मेरे किनारे थीं लेकिन मैं उनकी मदद नहीं कर सकी। सैनिकों ने बारी बारी सेक्स किया। जब एक समाप्त हो जाता था, तो दूसरा आ जाता था। यह निरन्तर चलता रहा।

हमको स्वयं को धोने नहीं दिया गया और न ही पानी पीने दिया गया। लेकिन उन्होंने हमको सैनिकों की वर्दियाँ दीं जो हमसे बहुत बड़ी थीं। लगभग हम सभी को अपनी आस्तीने और पैन्टें मोड़नी पड़ीं। उन्होंने हमको जूते नहीं दिये, अतः हमको वर्षा वाले जंगल में नंगे पैर चलना पड़ा। जैसे हम चल रहे थे, अनेकों लड़कियाँ रो रही थीं लेकिन जब सैनिकों ने हमको धमकाया तो वो चुप हो गयीं। सब सिवाय एक के।

मित्र को गोली मारी

मेरी मित्रों में से एक, जिसके साथ मैं अपने गाँव के कुएँ से पानी लाती थी, अपना रोना नहीं बन्द कर सकी। वो स्वयं एक बच्चा ही थी, लेकिन वो एक नई माँ भी थी। वो दुख में चिल्लायी और रोयी क्योंकि उसको उसके नये बच्चे से अलग किया गया था। सैनिक अधिक और अधिक चिढ़ गये थे। उन्होंने उसको चेतावनी दी थी कि वो चुप रहे अन्यथा उसकी

Mireille, 16

चाहती है: स्कूल जाना और सबको पढ़ाना।

नफरत करती है: युद्ध एवं अपहरण से।

सबसे अच्छी बात जो हुई: तब तक भोजन करना जब तक हमारा पेट न भर जाये।

सबसे बुरी बात जो हुई: जब सैनिकों ने मेरा अपहरण किया और मेरे साथ दुराचार किया।

बनना चाहती हूँ: एक चिकित्सक।

सपना है: इंग्लैण्ड जाने का, जो मुझे लगता है कि एक सुन्दर, धनवान और शान्त देश है।

चीखें उनके शत्रुओं को उनकी स्थिति बता देंगी। अन्त में उन्होंने उसे गोली मार दी और उसको रास्ते में ही पड़ा छोड़ दिया। वो ठीक मेरे सामने थी, इसलिए मैंने सब कुछ देखा। मुझे यह वास्तव में होता हुआ नहीं लग रहा था।

अगली सुबह हम पेड़ों में छिप गये। हम भूखे और प्यासे थे, लेकिन सैनिकों ने हमें कुछ नहीं दिया। उस शाम हमने फिर से चलना शुरू कर दिया। उस रात भी सैनिकों ने हमको उसी तरह इस्तेमाल किया।

भाग निकले

अगली सुबह जल्द ही, मुझे पता लगा कि मेरे पीछे वाले सैनिक थोड़ी दूरी पर थे। हर कोई थका हुआ था और बहुत धीमे चल रहा था। मुझे लगा कि हमारे पास भाग निकलने का एक अवसर है। या तो अभी या फिर कभी नहीं। अपनी बहनों में से एक के साथ जो मेरे बिल्कुल पास चल रही थी। मैं घूमी और जंगल में दौड़ने लगी, जितनी तेजी से मैं दौड़ सकती थी। मेरी सबसे छोटी बहन पँक्ति में कही और थी और वो हमारे साथ नहीं आयी।

सैनिकों ने गोली चलानी शुरू कर

अपनी जान बचाने के लिए भागे

"जब सैनिकों ने हमको पेड़ों के बीच गायब होते हुए देखा, तो उन्होंने गोली चलानी शुरू कर दी। गोलियाँ मेरे इधर–उधर जा रही थीं।

दी, और गोलियाँ मेरे इधर–उधर जा रही थीं। हर जगह गोलियाँ चल रही थीं। मैं भयभीत थी, और मैं जमीन पर लेट गई। मेरा हृदय मेरी हलक में था। मुझे विश्वास था कि मेरी बहन को गोली लग गयी थी। सैनिकों को लगा होगा कि हम भी मर गये हैं, क्योंकि हमारे पीछे कोई नहीं आया। हमें वो पहाड़ों की ओर जाते हुए सुनायी दे रहे थे। मैं बहुत देर तक जमीन पर पड़ी रही जो घन्टों जैसा लगा, उसके बाद मैं सावधानी से खड़ी हुई। मेरे बहन भी खड़ी हो गई। वो सारे समय मुझसे बस दो मीटर ही दूर पड़ी रही थी। मैं इतनी खुश थी।

बचा लिया गया

शुरू में हम जितनी तेज दौड़ सकते थे दौड़े, पर जल्द ही हम जैसे–तैसे गिरते–पड़ते चलते गये। हम भयभीत थे कि हम कुछ सैनिकों से न टकरा जायें। मैंने अपनी बहन को शान्त करने की कोशिश की, लेकिन मैं स्वयं इतनी दुखी थी। मैं सिर्फ अपनी छोटी बहन के बारे में सोच पा रही थी, जो अभी भी सैनिकों के साथ थी। मुझे लगा कि हम लोगों के भाग जाने के दण्ड के रूप में उन्होंने उसे मार डाला होगा। शुरू में हमें बिल्कुल भी अन्दाजा नहीं था कि हम कहाँ हैं, लेकिन धीरे–धीरे हम अपने इलाके को पहचानने लगे। हम सूर्यास्त होने की दिशा में चलते गये, और उस दिन देर शाम को अपने गाँव पहुँच गये। जब मैंने अपनी माँ को देखा तो मैंने रोना शुरू कर दिया और भाग कर उसके पास चली गई। हम एक दूसरे को बहुत देर तक पकड़े रहे। हमारी माँ ने हम लोगों के लिए आग पर खाना पकाया। उसने उगाली नामक भुट्टे का दलिया और कसावा बनाया। वो सबसे अच्छा भोजन था जो मुझे अभी तक मिला था।

मुझे बहुत खराब लग रहा था और

सर्वप्रिय वस्तु

एक पड़ोसी ने मुझे यह स्कर्ट दी थी, और यह सबसे सुन्दर वस्तु है जो मेरे पास है। यह अकेली स्कर्ट है जो मेरे पास है। मुझे वस्त्र प्रिय हैं, और मैं इसके अलावा और अधिक वस्त्र रखना चाहूँगी।

इसको बदलना होगा!

कॉन्गो में, हर समय लड़कियों के अधिकारों का उल्लंघन होता रहता है। अनेकों लड़कियों को यह तक नहीं पता कि जो हो रहा है वो गलत है। "एक बाल अधिकार राजदूत होने के नाते, यह मेरा फर्ज़ है कि मैं लड़कियों को उनके अधिकारों के बारे में बताऊँ जिससे हम स्वयं की रक्षा कर सकें! यहाँ पर कॉन्गो में हो रहे लड़कियों के अधिकारों के सबसे सर्व साधारण उल्लंघनों का वर्णन है," मेरेल्ली कहती है।

- लड़कियों का सशस्त्र समूहों द्वारा अपहरण कर लिया जाता है और उनका दासों की तरह यौन शोषण किया जाता है। उनमें से कुछ गर्भवती हो जाती हैं, हालाँकि वो स्वयं बच्ची होती हैं। अनेकों लड़कियाँ जो सैनिकों द्वारा ले जायी जा चुकी होती हैं, को एड्स की बीमारी लग जाती है और वो मर जाती हैं। मैं भाग्यशाली थी कि मैं स्वस्थ रही और गर्भवती नहीं हुई।
- लड़कियाँ लगभग सारा गृहकार्य करती हैं, जैसे खाना पकाना, पानी भर कर लाना, कपड़े धोना, सफाई करना और खेतों में काम करना। लड़कों को आराम करने को मिलता है और वो फुटबॉल खेलते हैं।
- लड़कियों के लिए स्कूल जाना अधिक कठिन होता है। गरीब परिवार अपने लड़कों की शिक्षा में पैसे खर्च करते हैं। माता–पिता को लगता है कि उनकी बेटियों की एक दिन कहीं शादी हो जायेगी, अतः उनके स्कूल का शुल्क देना पैसा बर्बाद करना है।

जंगल से डरना

"जो मेरे साथ हुआ, उसके बाद से मैं जंगल जाने में डरती हूँ और मैं वहाँ कभी नहीं जाती," मेरेल्ली कहती है।

मैं सो नहीं पायी। मुझे सपने आ रहे थे और मैं बार–बार उठ रही थी क्योंकि मैं इस बात से दुखी थी कि मैं अपनी छोटी बहन की रक्षा नहीं कर पायी।

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़

हमारे कसावा के खेत के पास सैनिक थे, इसलिए हमारे माता–पिता की हिम्मत नहीं हुई कि वो खेत में जायें और काम करें। उन्हें अपहरण किये जाने और मार डाले जाने का भय था क्योंकि हम कुछ पैसा नहीं कमा सकते थे, इसलिए मुझे और मेरे भाई–बहनों को भी स्कूल छोड़ना पड़ा। इसका मुझे बहुत दुख हुआ। मुझे स्कूल जाना प्रिय था।

हम डरे हुए थे कि सैनिक हमको ढूँढते हुए आयेंगे, इसलिए हम अपने दादा–दादी के साथ रहने चले गये, जो कहीं और रहते थे। अपने पुराने घर में रहना मुझे दुखी करता था क्योंकि वो मुझे उन बुरी घटनाओं की याद दिलाता था जो मेरे साथ हुयीं थीं। वहाँ से जाने के बाद, मुझे थोड़ा सुरक्षित लगा, लेकिन मुझे अच्छा नहीं लगता था और न ही मैं खुश रहती थी। एक दिन किसी संस्था के लोग यहाँ आये जो उन लड़कियों को सहारा देती है जिनका कठिन समय गुजर रहा होता है। वो यह जानना चाहते थे कि वो किस प्रकार हमारी सहायता कर सकते थे। उन्होंने हमको लड़कियों के अधिकारों के बारे में बताया, और हमको दि ग्लोब पत्रिका की एक कॉपी दी। मैंने वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के बारे में भी सब कुछ जाना, और मुझे सचमुच अच्छा लगा जो मैंने सुना!

बाल अधिकार राजदूत

"दि ग्लोब को पढ़ने से पहले मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि हम लड़कियों के भी अधिकार होते हैं। अचानक मुझे लगा कि जो सैनिकों ने मेरे एवं अन्य लड़कियों के साथ किया था वो सिर्फ भयभीत करने वाला काम ही नहीं था, बल्कि वो हमारे अधिकारों का उल्लंघन भी था। कुछ देर बाद, उन्होंने पूछा यदि हम लड़कियों के अधिकारों के लिए बने बाल अधिकार राजदूत नामक समूह में शामिल होना चाहते हैं। मैंने सीधे, अपने हृदय के अन्दर से उत्तर दिया, हाँ!

अब हम राजदूत हर महीने एक बार मिला करते हैं। हम दि ग्लोब को मिलकर पढ़ते हैं और बच्चों के अधिकारों के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं। फिर हम आपस में वो बातें करते हैं जो हमने दूसरों के साथ सीखीं हैं। मैंने एक डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार क्लब अपने क्षेत्र में शुरू किया है, और हम अपने घर पर हर मंगलवार और शनिवार को मिलते हैं। शुरू में मैंने उस समूह को बहुत कुछ बताया था जो मेरे साथ हुआ था जब सैनिकों ने मेरा अपहरण किया था। ऐसा करके मुझे आशा है कि अन्य लड़कियों की सहायता कर सकूँगी जिससे वे स्वयं की रक्षा कर सकें। मैं नहीं चाहती कि किसी को भी इस प्रकार का अनुभव हो। अब मैं दि ग्लोब का बहुत प्रयोग करती हूँ और लोगों को बाल अधिकारों के बारे में वो सब बताती हूँ जो मुझे मालूम है, खासतौर से लड़कियों के अधिकार। हम उसे मिल कर पढ़ते हैं और आपस में बात करते हैं, और हम एक–दूसरे की सहायता करते हैं।

मेरी छोटी बहन कहाँ है?

"मुझे अभी भी पता नहीं कि मेरी छोटी बहन कहाँ है, या उसके साथ क्या हुआ है। यह भयभीत करने वाला है। एक दिन भी नहीं गुजरता जब मैं उसके बारे में नहीं सोचती। मुझे अक्सर रात को सपने आते हैं और मैं सोने के लिए मचलती हूँ," मेरेल्ली कहती है।

हमें इस सहारे की जरूरत पड़ती है क्योंकि कॉन्गो में एक लड़की के लिए रहना बहुत मुश्किल होता है।"

लड़कियों के अधिकार

"लड़कियों के अधिकारों का उल्लंघन युद्ध के समय होता है क्योंकि इस समय कॉन्गो में युद्ध चल रहा है, इसलिए बहुत सी लड़कियाँ इससे पीड़ित हैं। अनेकों का सैनिकों द्वारा अपहरण कर लिया जाता है और उनके साथ वैसे ही दुराचार किया जाता है जैसा मेरे साथ किया गया था। इसी लिए यह अति महत्वपूर्ण है कि मैं यहाँ पर एक बाल अधिकार राजदूत बनकर रहूँ, और लोगों को बताऊँ कि हमें यह अधिकार है कि हमारे साथ अच्छा बर्ताव किया जाए।

अनेकों लड़कियाँ जिन्होंने सैनिकों के हाथों उत्पीड़न सहन किया है, इसके बारे में बात नहीं करती हैं। यद्यपि इसमें उनका कोई दोष नहीं है, फिर भी उनको इस बात पर शर्म आती है जो उनके साथ हुआ था। यदि इस बात का पता किसी को चलता है कि उस लड़की के साथ दुराचार किया गया है, तो उसको विवाह करने में अधिक कठिनाई होगी। कोई उसको नहीं चाहेगा। यह मेरे लिए भी कठिन होगा, लेकिन मैं फिर भी उसके बारे में बोलती हूँ। यह इतना महत्वपूर्ण है कि मैं चुप नहीं रह सकती। दि ग्लोब पत्रिका ने इन बहादुर लड़कियों के बारे में पढ़कर, जो अन्य लोगों को पढ़ाती हैं और उनकी सहायता करती हैं, मुझे इस पर बात करने का साहस दिया है। यह मुझे प्रोत्साहित करता है। मैं जब तक जीवित रहूँगी तब तक लड़कियों के अधिकारों के लिए लड़ती रहूँगी!"

मेरेल्ली, 16, डी.आर. कॉन्गो

बहादुर लड़कियाँ प्रोत्साहित करती हैं

"हर कोई हमारे बाल अधिकार क्लब में दि ग्लोब पत्रिका में इन सब बहादुर लड़कियों के बारे में पढ़कर प्रोत्साहित हो रहा है," मेरेल्ली कहती है।

गौरवपूर्ण बाल अधिकार राजदूत

"एक बाल अधिकार राजदूत होने के नाते, यह मेरा फर्ज़ है कि मैं लड़कियों को उनके अधिकारों के बारे में बताऊँ," मेरेल्ली कहती है।

बैमबुटी की लडकी दोहरी तरह वंचित

– ''एक बाल अधिकार राजदूत बनने तथा दि ग्लोब पत्रिका को पढ़ने से पहले, मुझे नहीं पता था कि लड़कियों या बैमबुटी लोगों के कोई अधिकार हैं,'' फातुमा कहती है।

हम मित्र हैं!

''मैं बैमबुटी की राजदूत लड़कियों को उसी नजर से देखती हूँ जिस नजर से मैं अपने अन्य मित्रों को देखती हूँ। मेरे लिए, उनके बीच कोई फर्क नहीं है,'' मेरेल्ली कहती है। चित्र में बांये से दायें, मेरे मित्र लिलियेन, 16, मेरेल्ली, 16, एलाइन, 16, फातुमा, 14 एवं जियेनिन, 17 दिखाई दे रहे हैं।

मैं बैमबुटी जाति की हूँ और हमारे विरुद्ध अक्सर मतभेद किया जाता है। अनेकों बैमबुटी लोग कभी स्कूल नहीं गये हैं और वो पढ़–लिख नहीं सकते, इसलिए हम लोगों को नौकरी मिलना कठिन होता है। कभी–कभी जब हम वर्षा वाले जंगल में अपने गाँव को छोड़कर जाते हैं और शहर में बस जाते हैं, तब कॉन्गो वासी हमारे ऊपर हंसते हैं। मुझे लगता है कि वो इसलिए ऐसा करते हैं क्योंकि हमारा कद उनसे छोटा है। जो लोग हम पर हंसते हैं वो कहते हैं कि हम किसी काम के नहीं हैं और बेकार हैं। इस तरह की बातें सुनना बहुत बुरा लगता है। यह मेरे हृदय को चोट पहुँचाता है और मुझे सचमुच दुखी कर देता है। यह बहुत गलत बात है कि वो यह नहीं सोचते कि हम बराबर हैं, या हमारे भी वही अधिकार हैं जो सबके हैं।

लेकिन हर कोई हमसे बुरा व्यवहार नहीं करता, और मेरे समूह में मेरेल्ली नाम की एक लड़की है जो बैमबुटी जाति की नहीं है। हम मित्र हैं, और वो मुझे अलग नहीं समझती। हम सब एक जैसे हैं।

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ को बहुत धन्यवाद कि हम इस तरह मिल सकते हैं। हम सचमुच उन लोगों से मित्रता करना चाहते हैं जो बैमबुटी के नहीं हैं लेकिन यह इतना आसान नहीं है, क्योंकि हम अन्य समूहों से अक्सर नहीं मिलते। डब्ल्यू.सी.पी. के जरिये, हम एक प्राकृतिक तरह से एक दूसरे से मिल सकते हैं। मुझे सचमुच यह बात अच्छी लगती है कि राजदूतों का समूह बैमबुटी एवं कॉन्गो की लड़कियों से बना है। जब अन्य लोग देखते हैं कि हम मित्र हैं तो वो शायद हमसे व्यवहार करने का तरीका बदल देंगे। भविष्य में, लोग शायद सोचें कि हम वास्तव में समान हैं, और यह कि हमारे वही अधिकार हैं जो सबके।

एक लड़की होना कठिन है

एक बैमबुटी व्यक्ति एवं लड़की होने के कारण, मेरी जिन्दगी अधिक कठिन है। कॉन्गो में लड़कियों के अधिकारों का बिल्कुल भी सम्मान नहीं किया जाता। यह यहाँ पर मेरे गाँव में भी सच है, मेरे स्वयं के लोगों के बीच। यही बात हर जगह है। हमारे साथ सशस्त्र समूहों द्व ारा दुराचार किया जाता है, और हमको सारे भौतिक घरेलु काम जबरदस्ती करने पड़ते हैं, जैसे जंगल में लकड़ियाँ काटना, पानी भर कर लाना और खाना पकाना। यदि लड़के शिकार नहीं कर रहे होते, तो वो खेल सकते हैं और आराम कर सकते हैं। हम लड़कियों को कभी आराम करने को नहीं मिलता और न ही अपना मनोरंजन करने को। यह सही नहीं है।

एक राजदूत की तरह मैं अन्य बच्चों से लड़कियों के बारे में पूछती हूँ। यदि हम कॉन्गो में लड़कियों का भविष्य बेहतर चाहते हैं, तो यह सचमुच महत्वपूर्ण है।

एक बाल अधिकार राजदूत बनने और दि ग्लोब पत्रिका को पढ़ने से पहले मुझे नहीं पता था कि लड़कियों को कोई अधिकार होते हैं। अब मुझे यह मालूम है, और मैं आगे एक बेहतर जिन्दगी बिताने के लिए संघर्ष करती रहूंगी।

फातुमा, 14

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: JOHAN BJERKE

बैमबुटी के विरुद्ध मतभेद!

बैमबुटी लोग वर्षा वाले जंगल में शिकार बटोरते हैं, और वो हमेशा से वंचित रहे हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि वो शायद ही मानव हैं, अतः उनके साथ बुरा बर्ताव करना चलेगा। क्योंकि बैमबुटी लोगों को किसी और की अपेक्षा जंगलों की बेहतर जानकारी है, अतः उनका अक्सर सशस्त्र समूहों द्वारा अपहरण कर लिया जाता है जो उनको मार्गदर्शक के रू‍प में इस्तेमाल करते हैं। बहुतों को मार डाला गया है। यदि बैमबुटी लोग अन्य कॉन्गो वासियों के लिए काम करते हैं, तो उनको अक्सर कम पैसे मिलते हैं अथवा पैसे की जगह शराब दे दी जाती है। जैसा कि विश्व में अनेकों स्वदेशी लोगों के साथ होता है। शराब की लत एवं निर्धन होना बैमबुटी लोगों में साधारण बात है।

सम्मानपूर्ण क्लब

मैं मेरेल्ली के बाल अधिकार क्लब का एक सदस्य दो महीने से हूँ। हम प्रति सप्ताह दो बार मिलते हैं जिससे हम लड़कियों के अधिकारों के बारे में और सीखें। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ पर हमारे अधिकारों का उल्लंघन सदैव होता रहता है। जरा इस पर ध्यान दो कि कैसे मेरेल्ली का अपहरण और दुराचार सैनिकों द्वारा किया गया। इस तरह की घटनायें यहाँ बहुत होती हैं। मैं सोचती हूँ कि वो कितनी बहादुर है कि वो खड़े होकर अपने बारे में सबको बताती है। अनेकों लड़कियाँ नहीं बतातीं, क्योंकि यहाँ पर लोग उनको अस्वीकार करते हैं जिनके साथ दुराचार हुआ है। यह बहुत गलत है! हमें इन लड़कियों की देखभाल करनी होगी।

मैं क्लब में बहुत कुछ सीखती हूँ जो मैं अन्य लोगों को बता सकती हूँ, जैसे मेरा परिवार, पड़ोसी, मित्र, सहपाठी और यहाँ तक कि लड़के भी। एक बार पर्याप्त लोगों को पता चल जाता है कि हम लड़कियों के भी अधिकार होते हैं तो हम लोगों की जिन्दगी बेहतर हो जायेगी।

क्लब में, हम महत्वपूर्ण विषयों पर बात करते हैं लेकिन हम बहुत सारे मजे भी करते हैं। हम मित्र हैं जो एक दूसरे का सम्मान करते हैं और उनकी सुनते हैं। हर किसी को अपनी

राय देने का अवसर मिलता है। जब हम लड़कों के साथ स्कूल में होते हैं, तब हमको कभी गम्भीरता से नहीं लिया जाता। कोई हमारे विचारों को नहीं सुनता। यदि हम कहते हैं कि हमारे सचमुच अधिकार हैं, तो लड़के कहते हैं 'क्या? तुम्हारे कोई अधिकार नहीं हैं!' फिर वो बस हंसते हैं और चले जाते हैं। यहाँ पर बाल अधिकार क्लब में बात अलग है। यहाँ सबके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाता है। इस तरह की जगह रहना अच्छा लगता है। हम एक समूह की तरह अधिक सशक्त हैं अलग–अलग होने के बजाय जब हम यह मांग करते हैं कि हमारे साथ अच्छा व्यवहार किया जाये। यह हमारे परिवारों, स्कूलों, गाँवों, अथवा सारे समाज में सच है। भविष्य में एक डॉक्टर बनना चाहती हूँ।

डोरकॉस, 16

मरेल्ली मलाला की तरह है

जब मेरेल्ली सैनिकों से भागने में कामयाब हुई, तो उसने लोगों को वो सब बताया जो उसके साथ हुआ था, यद्यपि उसको मालूम था कि इससे उसको हानि पहुँच सकती है। लेकिन उसने यह और लोगों की सहायता करने के लिए किया। मुझे लगता है कि वो बहुत बहादुर है। इस तरह वो मलाला की तरह है, जो पाकिस्तान में लड़कियों के स्कूल जाने के अधिकार के लिए लड़ती है। हम दि ग्लोब में पढ़ते हैं कि उसको धमकाया गया और गोली मारी गई, लेकिन वो फिर भी लड़ती रही। दोनों मेरेल्ली एवं मलाला सचमुच बहादुर हैं।

बाल अधिकारों और दि ग्लोब के लिए आवाजें

पूर्वी डी.आर. कॉन्गो में बकावो के सभी बच्चे भली भाँति जानते हैं कि हिंसा और बाल अधिकारों के उल्लंघनों का क्या अर्थ है।

दि ग्लोब मेरी बाल अधिकारों की पाठ्य पुस्तक है

जहाँ मैं रहती हूँ, वहाँ पर बहुत सारी लड़कियाँ स्कूल नहीं जातीं और कुछ यौन हिंसा एवं दुराचार से पीड़ित हैं। मैं सरकार से कह रही हूँ कि वो बलात्कार से निपटें और हर लड़की के स्कूल जाने के अधिकार का समर्थन करें। डब्ल्यू.सी.पी. के जरिये मैंने अपने अधिकारों को जाना है और उन लोगों से मिली हूँ जो बाल अधिकारों की रक्षा करते हैं। दि ग्लोब बाल अधिकारों पर मेरी पहली पाठ्य पुस्तक है।

निशोबोले, 12

लड़कियों के अधिकारों की असली पत्रिका है

बच्चे सड़कों निर्धनता के कारण पर रह रहे हैं जिसका कारण पूर्वी डी.आर. कॉन्गो में चल रहा युद्ध है। उनके शिक्षा एवं सुरक्षा के अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है। भविष्य में, मैं स्कूलों का निर्माण करने के लिए लडूंगा और इन बच्चों के लिए घर ढूँढूगा। मैं चाहता हूँ कि हमारे देश की सरकार सड़क के बच्चों के लिए स्कूल और घर बनाये। दि ग्लोब लड़कियों के अधिकारों की असली पत्रिका है!

कटचुंगा, 12

मैं वयस्कों की निंदा करती हूँ और दि ग्लोब मुझे प्रिय है

मैं बच्चों को सड़क पर सोते हुए देखती हूँ। मैं उन वयस्कों की निन्दा करती हूँ जो गाँवों में 'कबंगा' नामक रस्सी से बच्चों को मार देते हैं और उनको कोई दण्ड नहीं मिलता। मैं कम रोशनी वाले स्कूलों को देखता हूँ जिनमें कोई शौचालय अथवा खेलने की जगह नहीं है। मैं कॉन्गो की सरकार से आग्रह करती हूँ जो उन लोगों को दण्ड दे जो बाल अधिकारों का उल्लंघन करते हैं। वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम की लम्बी आयु हो। मुझे दि ग्लोब पत्रिका प्रिय है और उसे मैं अपने मित्रों के साथ पढ़ती हूँ।

अस्सुज़ा, 12

मेरेल्ली एवं अन्य बाल अधिकार राजदूतों के कार्य का एक महत्वपूर्ण अंश दोनों बच्चों एवं वयस्कों को बाल अधिकारों के बारे में पढ़ना है, विशेषतः लड़कियों के अधिकार। आज उनमें से कुछ ने विभिन्न व्यवसाय के लिए एक प्रशिक्षण का दिन रखा था जैसे राजनीतिज्ञ, अध्यापक, पुलिस एवं कस्टम अधिकारी।
''मैं वास्तव में घबरायी नहीं थी, बस खुश थी!'' नोएल्ला, 15 कहती है।

बच्चे वयस्कों को पढ़ा रहे हैं

यह बहुत अच्छा लगता था कि हर किसी को यह बतायें कि लड़कियों के अधिकार हैं, और यह कि हमको भी वही आदर मिलना चाहिए जो लड़कों को मिलता है। लोगों को यह बता कर कि आज कॉन्गो में लड़कियों की जिन्दगी कैसी है, मैं सचमुच सोचता हूँ कि हम अपने लिए एक बेहतर भविष्य बनाना शुरू कर सकते हैं। और राजनीतिज्ञों को यह बताना महत्वपूर्ण है। यहाँ पर एक कथन है, कि सबसे अच्छा सिर से शुरू करना होता है और पूंछ से खत्म करना। राजनीतिज्ञ ही सिर हैं क्योंकि वही लोग हैं जिनके पास वास्तव में शक्ति है कि वो निर्णय लें और बदलाव लायें। उदाहरण के लिए, यदि राजनीतिज्ञ गम्भीरता से कहें कि सभी लड़कियों को स्कूल जाना होगा, तो हमारे माता–पिता, अध्यापक और हर कोई उनकी बात मानेगा।

आज, हम बच्चे वयस्कों को अपने अधिकारों के बारे में बता रहे थे, और मुझे सचमुच लगा कि उन्होंने हमें गम्भीरता से सुना। लेकिन ऐसी परिस्थिति यहाँ पर हर समय नहीं होती। लोग सचमुच बच्चों को नहीं सुनते। शायद दस में एक वयस्क बच्चों को सुनता होगा और उनको गम्भीरता से लेता होगा। हम लड़कियों के लिए अपनी आवाजों को सुनवाना सबसे कठिन होता है। हमारी राय सुनने में किसी को रुचि नहीं होती। हमारे परिवारों में नहीं, स्कूलों में नहीं, लड़कों में नहीं, और कहीं नहीं। हम अधिकतर अपने विचारों को अपने पास ही रखते हैं। लेकिन जब से हमने दि ग्लोब को पढ़ना शुरू किया, तब से हमें लगा कि हम लड़कियों का भी अधिकार है कि हम अपने मन की बात कहें। दि ग्लोब की कहानियों ने हमें प्रोत्साहित एवं सशक्त किया है कि हम अपनी राय दे सकें।

एक लड़कियों के लिए बाल अधिकार राजदूत होने के नाते, हमारे पास एक सचमुच महत्वपूर्ण कार्य है। यहाँ कॉन्गो में, लोग सोचते हैं कि केवल लड़के ही राष्ट्रपति एवं नेता बन सकते हैं। लेकिन हम लड़कियाँ भी बन सकती हैं! वास्तव में यह हमारा अधिकार है! राजदूतों की तरह, यह हमारा फर्ज बनता है कि हम लोगों को इसके बारे में बतायें।

नोएल्ला, 15, डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूत, बेनी इन्स्टीटयूट, डी.आर. कॉन्गो

लड़कियों के अधिकारों के दिवस पर स्वागत!

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ बाल अधिकार राजदूत, प्रिस्का, 12 (बांये) एवं कटोन्गू, 14, अपने लड़कियों के अधिकारों के दिवस पर राजनीतिज्ञों एवं अन्य लोगों का स्वागत करती हैं।

हम बाल यौन शोषण व्यापार के विरुद्ध लड़ते हैं!

''आज मैंने बाल यौन शोषण व्यापार के बारे में भी बोला, जो यहाँ पर साधारण बात है। गरीब लड़कियाँ लायी जाती हैं ओर उन्हें बेच दिया जाता है ओर वयस्क पुरुषों द्वारा उनका शोषण किया जाता है। यह मुझे बहुत क्रोधित करता है! यहाँ पर सैनिकों द्वारा भी लड़कियों का सेक्स मजदूरों की तरह शोषण किया जाता है। यह बाल सेक्स व्यापार का एक भाग है। एक राजदूत होने के नाते यह आवश्यक है कि मैं इसके विरुद्ध संघर्ष करूं,'' नोएल्ला कहती है।

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: JOHAN BJERKE

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ हमारा वकील है

मुझे लड़कियों के विरुद्ध हिंसा नहीं स्वीकार है। डी. आर. कॉन्गो में बच्चों को वयस्कों द्वारा अपमानित किया जाता है। मैं उस युद्ध के विरुद्ध लडूँगी जो लड़कियों के अधिकारों के विस्तारपूर्वक उल्लंघनों का मूल कारण है। मुझे वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम प्रिय है – वो हमारा वकील है! दि ग्लोब वो पुस्तक है जो हमें अपने अधिकारों के लिए चाहिए।

एस्टा, 11

बच्चों की आवाज़ों के लिए मेरी पाठ्य पुस्तक

यहाँ पर कुछ स्कूलों में लड़कियाँ अभी भी 'सेक्स द्व रा अंक प्राप्त करने की प्रणाली' से पीड़ित हैं। मैं चाहती हूँ की कॉन्गो की सरकार वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम का समर्थन करे और उन संस्थाओं का भी जो लड़कियों के अधिकारों के लिए लड़ती हैं। मुझे लगता है कि डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम रोचक है, और वो हमारे देश में बाल अधिकारों की रक्षा करना सम्भव करता है। दि ग्लोब पहली पाठ्य पुस्तक है जिसमें मैंने बच्चों को अपनी आवाजें सुनवाने की तस्वीरें देखी हैं।

सोकी, 18

उत्पीड़न के विरुद्ध विरोध

मैं उस उत्पीड़न का विरोध करना चाहती हूँ जो मुझे भोगना पड़ा, एवं बलात्कार और युवा लड़कियों के विरुद्ध सभी प्रकार की हिंसा का भी। और जिस तरह से सशस्त्र समूहों ने लड़कियों के साथ दुराचार किया और बच्चों के साथ दुराचार किया जो बाल यौन व्यापार का भाग है। इसके अतिरिक्त मैं इसका भी विरोध करती हूँ कि बच्चे सड़कों पर सोते हैं, छोटी आयु में लड़कियाँ वयस्कों द्वारा गर्भवती हो जाती हैं, और सौतेली माँयें सौतेले बच्चों के साथ दुराचार करती हैं। मैं कॉन्गो की सरकार से आग्रह करती हूँ कि वो उन सबको दण्ड दे जो बाल अधिकारों का उल्लंघन करते हैं और बाल अधिकारों के लिए जागरूकता उत्पन्न करे। मुझे दि ग्लोब में बच्चों की तस्वीरें अच्छी लगती हैं।

ग्रेस, 14

लड़कियों के अधिकारों

पंजीकृत मतदाताओं को चिन्हित करना।

मतदान कक्ष में अकेला।

मतदान पेटी में मेरा मतदान।

मतदान में बेईमानी को रोकने के लिए स्याही का निशान, जिससे कोई दोबारा मतदान न दे सके।

आज हमारे स्कूल में विश्व मतदान आयोजित किया गया, और मैं आयोजकों में से एक था। मैं एक नाटक में भी था जो हमने अन्य छात्रों के लिए प्रस्तुत किया जब मतदान हो चुका। यह इस पर था कि लड़कियों को भी स्कूल जाने का अधिकार है।

मैं एक बड़े भाई का किरदार अदा कर रहा हूँ जिसे स्कूल जाने की अनुमति होती है, जबकि उसकी दो बहनों को घर पर रहना होता है और सारा गृहकार्य करना पड़ता है। वो एक सुन्दर साधारण लड़का है। हर रोज स्कूल से घर पहुँचने पर है जो पहला काम वो करता है, अपनी बहनों को निर्देश देता है कि वो उसके लिए चाय बनायें। और उसके माता–पिता को उससे इस बात से बिल्कुल भी परेशानी नहीं होती। वो बहनों से कहते हैं, चाय के बाद, यह निश्चित रखना कि तुम अपने भाई के लिए रात का भोजन बनाओ, वो स्कूल में दिन भर रह कर थक गया है। फिर, जब बहनें भोजन लेकर आती हैं, तब उनका भाई उन्हें अपने साथ रुक कर खाने नहीं देता। इसके बजाय, वो उन्हें वापस रसोई भेज देता है जहाँ पर उसे लगता है कि लड़कियों और औरतों को होना चाहिए। आखिर, यही वो जगह है जहाँ वो अन्त में पहुँचेंगी जब उनकी शादी हो जायेगी। बड़ा भाई किसी भी चीज में अपनी बहनों की सहायता नहीं करता। वो स्वतंत्र है और वो जो भी चाहे कर सकता है।

दूसरे विचार

एक दिन, लड़कियों की मित्रों में से एक उनसे मिलने आती हैं और इस पर आश्चर्य करती हैं कि वो स्कूल क्यों नहीं जातीं। लड़की मित्र में स्कूल में दि ग्लोब पढ़ी है और लड़कियों के अधिकारों के बारे में जाना है। दिवो सारे परिवार को पत्रिका दिखाती है, विशेषकर यू.एन. कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड और अनुच्छेद 2 के पृष्ठों को। वो बताती हैं कि लड़कियों को स्कूल जाने का भी अधिकार है जैसे लड़कों को और उनके साथ बराबर का व्यवहार किया जाना चाहिए।

जब परिवार में पिता दि ग्लोब को पढ़ता है तब उसे लगता है कि वो गलत है। वो क्षमा मांगता है और अपनी लड़कियों से वादा करता है कि वो उनको स्कूल जाने देगा। वो कहता है कि उसे लड़कियों के अधिकारों के बारे

लड़कियों को चुप करा दिया गया

"जैसे ही यहाँ पर लड़कियाँ कुछ कहने की कोशिश करती हैं, तभी उन्हें चुप करा दिया जाता है, परिवारों में, स्कूल में, वास्तव में समाज के हर भाग में," शैडरैक कहता है।

के लिए बड़ा भाई

शैडरैक और अन्य छात्र कभी–कभी श्रोताओं के लिए दि ग्लोब में से जोर से पढ़ते हैं, एक नाटक के बीच में, जिसमें एक परिवार में भाई और पिता लड़कियों के समान अधिकारों के लिए जागरूक हो जाते हैं।

में नहीं पता था, पर अब उसे बेहतर जानकारी है। मेरा पात्र, परिवार में भाई का, बहनों से अच्छा बर्ताव नहीं करने के लिए उनसे क्षमा मांगता है। फिर वो भाई इसके बजाय अपनी बहनों की सहायता करना चाहता है।

असल जिन्दगी में मेरी परिस्थिति वास्तव में बिल्कुल इस नाटक जैसी थी। दि ग्लोब को पढ़ने से पहले, मुझे यह नहीं मालूम था कि लड़कियों के भी वही अधिकार हैं जो लड़कों के। अब मुझे यह एहसास हुआ है कि हमने अपनी माताओं, बहनों एवं अन्य लड़कियों को पीड़ित होने दिया है। अब मैं अपनी दो बहनों से बिल्कुल अलग तरह का व्यवहार करता हूँ, और वो स्कूल भी जाती हैं। अब मैं उनकी सहायता करता हूँ। अगर उनमें से एक घर में फर्श पोंछ रही होती है, तो मैं पानी भर कर लाता हूँ। यदि वो कपड़े धो रही होती हैं, तो मैं रात का भोजन पकाता हूँ। यह मुझको अच्छा और बेहतर लगता है।

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़

''वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ और मतदान दिवस अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनमें हम उन लोगों का समर्थन करते हैं जो इसमें अपना सब कुछ लगा देते हैं और हम बच्चों के लिए अपनी जिन्दगियों को जोखिम में डालते हैं। लेकिन यह इतना ही महत्वपूर्ण है कि हम अपने अधिकारों के बारे में सब जान लें जब हम दि ग्लोब को पढ़ें और अपने मतदान की तैयारी करें। यह कार्यक्रम यहाँ कॉन्गो में हम लड़कियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमारे बेहतर भविष्य को बनाने में सहायता करता है। जितने अधिक लोग दि ग्लोब को पढ़ेंगे और बाल अधिकारों के बारे में जानेंगे, उतनी ही बेहतर जिन्दगी सब लड़कियों के लिए हो जायेगी। जब तुम एक लड़का होते हुए दि ग्लोब को पढ़ते हो, तो वो तुमको प्रभावित करती है। अचानक तुम्हें लगने लगता है कि तुम्हें अपने बर्ताव में परिवर्तन लाना होगा।''

शैडरैक, 16, बेनी इन्स्टीट्यूट, डी. आर. कॉन्गो

इतिहास के सबसे भयानक युद्धों में से एक

- डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कॉन्गो का युद्ध विश्व के इतिहास के सबसे बड़े एवं क्रूर युद्धों में से एक है। वो सन् 1998 से चल रहा है। सन् 2003 में एक शान्ति समझौता हुआ था, लेकिन आज तक इस देश के पूर्वी भागों में संघर्ष जारी है, जहाँ मेरैल्ली रहती है।
- लगभग 60 लाख लोग मारे जा चुके हैं अथवा भूखमरी एवं बीमारी के कारण मर गये हैं जो युद्ध का सीधा परिणाम है।
- अपनी चरम सीमा पर, देश में 30,000 से अधिक बाल सैनिक थे। अनेक बाल सैनिक अभी भी अपने परिवारों से पुनः नहीं मिल पाये हैं और वो विभिन्न सशस्त्र समूहों में रहते हैं।
- अनेकों लड़कियाँ, मेरेल्ली का सैनिकों द्वारा अपहरण किया जा चुका है और उनका सेक्स मजदूरों की तरह शोषण किया गया है। लगभग 20 लाख लड़कियों एवं महिलाओं का बलात्कार किया जा चुका है जब से युद्ध शुरू हुआ था।
- सन् 2013 तक, कम से कम 26 लाख लोग डी.आर. कॉन्गो में अपने घरों को मजबूरी में छोड़कर भागना पड़ा, एवं 4,50,000 कॉन्गोवासी पड़ोसी देशों में भाग गये।
- 50 लाख से अधिक बच्चे डी.आर. कॉन्गो में स्कूल नहीं जाते हैं।

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: JOHAN BJERKE

आतंक के स्कूल में लड़कियों के राजदूत

''हमारे स्कूल में लड़कियों से एक युद्ध चल रहा है। कुछ अध्यापक, प्रधानाचार्य, लड़कियों को परीक्षा में उत्तीर्ण कराने और अच्छे अंक दिलाने के बदले में उनका शोषण करते हैं। यदि हम मना करते हैं, तो हम अगली कक्षा में नहीं चढ़ाये जाते। यह बाल सेक्स व्यापार का एक भाग है,'' मरीया रोसा, 17, ने दि ग्लोब के पिछले वर्ष के संस्करण में कहा था। वो एक डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूत है नमाचा, मोज़ाम्बीक के एक छात्रावास में रहती है।

लड़कियों से युद्ध

''एक दिन मुझे प्रधानाचार्य के कार्यालय में बुलाया गया। उसने मुझसे दरवाजा बन्द करने के लिए कहा और अपने कम्प्यूटर पर अश्लील फिल्में चलाने लगा। जब मैंने उससे पूछा कि वो क्यों मुझे यह चीजें दिखा रहा था, तो उसने उत्तर दिया कि उसे पहले से सब कुछ मालूम है कि लोग इस तरह की फिल्मों में क्या करते हैं।''

मरीया रोसा के वापस लौटने से पहले, प्रधानाचार्य ने चेतावनी दी कि वो किसी अन्य व्यक्ति को उनकी वार्ता के बारे में न बताये।

''अगर तुम बताओगी, तो मैं तुमको स्कूल के बाहर लात मार कर फेंक दूँगा और यह निश्चित करूंगा कि तुम जब तक जीवित रहो तब तक मोज़ाम्बीक के किसी अन्य स्कूल में दाखिला न ले पाओ!''

उस दिन, प्रधानाचार्य ने स्कूल की सभी लड़कियों को अपने कार्यालय में बुलाया और वही बात कही।

भय गायब हो गया

''लेकिन प्रधानाचार्य के कार्यालय में पूछताछ किया जाना, सबसे बद्तर बात नहीं है जो स्कूल में होती है। अध्यापक हमें धमकाते हैं और कहते हैं कि हम अपनी परीक्षाओं में पास नहीं होंगे अथवा स्नातक नहीं बन पायेंगे जब तक हम उनके साथ सोयेंगे नहीं। प्रधानाचार्य भी वही बात कहता है। मैं अपने स्कूल में अच्छा नहीं कर पा रही हूँ क्योंकि मैं वो सब के लिए मना कर देती हूँ जो प्रधानाचार्य मुझसे करवाना चाहता है। बहुत लम्बे समय से, मैं उन सब खराब चीजों के विरुद्ध लड़ना चाह रही हूँ जो मेरे स्कूल में होती हैं, लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि मैं यह कैसे करूं। लेकिन एक दिन मुझे बाल अधिकार राजदूत का प्रशिक्षण लेने के लिए वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ द्वारा भेजा गया। मुझे लगा कि हम अब उस दुराचार को बिल्कुल भी सहन नहीं कर सकते जो हमारे स्कूल में हो रहा है। यह कि हमको दि ग्लोब में अन्य लड़कियों की तरह बनना था, जो स्वयं एवं अन्य लोगों के अधिकारों के लिए लड़ती हैं। हम अपनी राय देने में डरा करते थे। लेकिन वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ ने हमारा भय गायब कर दिया।''

राजदूतों से नफरत करते हैं

जिस दिन से हम बाल अधिकार राजदूत अपने प्रशिक्षण से वापस लौटे जिसके बाद हमने अपने स्कूल में एक डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम आयोजित किया, उस दिन अध्यापक एवं मुख्य अध्यापन ने वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ से नफरत करना शुरू कर दिया।

वे नहीं चाहते थे कि हम अन्य लड़कियों और लड़कों को उनके अधिकारों के बारे में पढ़ायें, क्योंकि वो हमारा शोषण करते रहना चाहते हैं। वो चाहते थे कि हम लड़कियाँ अनजान बनी रहें। आज हमारे स्कूल में विश्व मतदान दिवस हुआ, लेकिन प्रधानाचार्य एवं बहुत सारे अन्य अध्यापकों ने हमारे मतदान का शुरू से विरोध किया। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि स्कूल वाले हमारी सबसे महत्वपूर्ण बात को सीखने के विचार के विरुद्ध है – हमारे अधिकार।

वयस्कों ने हर प्रकार से हमारा विरोध किया, लेकिन हमारे लिए यह अत्यधिक महत्वपूर्ण था कि हम अपने विश्व मतदान का आयोजन करें और स्कूल में बाल अधिकारों को मनायें। क्योंकि हमें मालूम है कि प्रधानाचार्य और अन्य अध्यापक जो कर रहे हैं वो बाल सेक्स व्यापार का भाग है। वो अपनी शक्ति का प्रयोग हमारे विरुद्ध करते हैं जिससे उन्हें वो मिल सके जो वो चाहते हैं।

हम लोगों को लड़कियों के अधिकारों के बारे में बताना नहीं रोकेंगे जब तक हम अपने स्कूल एवं सभी अन्य स्कूलों में हो रहे दुराचार पर रोक नहीं लगा देते।

मरीया रोसा, 17, डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूत, नमाचा सेकेण्डरी स्कूल, मोज़ाम्बीक

नोट!
नमाचा सेकेण्डरी स्कूल के सभी अध्यापक लड़कियों से दुराचार नहीं करते।

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: JOHAN BJERKE

"मैं मोज़ाम्बीक के वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के सभी राजदूतों का स्वीडन के पुरस्कार समारोह में इतनी प्रसन्न एवं गौरवपूर्ण थी। यहाँ की स्थिति, मेरे स्कूल की अपेक्षा, इतनी भिन्न थी, जहाँ पर हम लड़कियों के अधिकारों का उल्लंघन निरन्तर होता रहता है। यहाँ पर मैं स्वीडन में एक मंच पर थी, सभी लड़कियों का प्रतिनिधित्व करती हुई और अपने संघर्ष के लिए सम्मानित की जाती हूँ। इसको महसूस करना मेरे लिए एक सपने जैसा था, लेकिन बिल्कुल अद्भुत!" मीला कहती है, जो नमाचा स्कूल में पढ़ती है। सन् 2013 के डब्ल्यू.सी.पी. समारोह में उसको क्राउन प्रिंसेस विक्टोरिया से डब्ल्यू.सी.पी. ग्लोब मिला था।

मेज़ाम्बीक के बाल अधिकार राजदूत को लड़कियों के समान अधिकार दिलाने के लिए किये गये कार्य के सम्मान में, यह वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ दिया जाता है।

प्रधानाचार्य द्वारा दुराचार

जब मैं अपने कपड़े धो रही थी जब प्रधानाचार्य ने अपने कार मेरे पास खड़ी की। उसने मुझे रसोई से एक प्लेट भर भोजन लाने के लिए कहा। जब मैंने उसको प्लेट दी तो उसने मुझसे कार में अन्दर आने के लिए कहा। मैं समझ नहीं पाई क्यों, लेकिन उसने कहा कि यदि मैं उसकी बात नहीं मानूंगी तो वो मुझे स्कूल के बाहर लात मार कर निकाल देगा। जब मैं उसके पास बैठ गई तो वो मेरे पैरों को छूने लगा और उसने मेरी 'कपूलाना', मेरी 'सरॉन्ग स्कर्ट' को खोल दिया। मेरी कमर के नीचे नंगी थी। प्रधानाचार्य ने अपना मोबाइल फोन बाहर निकाला और मेरी नग्न अवस्था में तस्वीरें खींची। साथ ही, उसने मुझे छुआ और स्वयं को भी। मैं डर गई। जब वो समाप्त हो गया तो उसने मुझे एक बिस्कुटों का पैकेट दिया और एक पीने का ड्रिंक दिया और मुझसे कहा कि किसी को नहीं बता सकती कि मेरे साथ क्या हुआ था। यदि मैं ऐसा करती, तो मेरी पिटाई होती और फिर मुझे स्कूल के बाहर फेंक दिया जाता।

सारा, 17, डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूत, नमाचा सेकेण्डरी स्कूल, मोज़ाम्बीक

छात्रावास में खतरा

"जब मैं इस स्कूल में चार वर्ष पहले आई थी, तब अध्यापकों ने हमें एक महीने तक सम्मान दिया था। फिर सब कुछ बदल गया। अध्यापकों ने मुझे पकड़ना शुरू कर दिया, यह कहते हुए, 'यदि तुम मेरे सोने वाले कमरे में नहीं आओगी, तो तुम अपनी पहली महत्वपूर्ण परीक्षा में नहीं बैठ पाओगी।' उस समय मैं सिर्फ चौदह वर्ष की थी।
जो लड़कियाँ अपने अध्यापकों के साथ सोती हैं उन्हें अच्छे अंक मिलते हैं और वो बिना किसी समस्या के परीक्षाओं में पास हो जाती हैं। जिन लड़कियों के खराब अंक नहीं आते, वो अक्सर परीक्षाओं में फेल हो जाती हैं, और उनको उस वर्ष को दोहराना पड़ता है। अध्यापक हममें से उन लड़कियों के साथ ऐसा करते हैं जो स्कूल में रहती हैं क्योंकि हम गरीब हैं। सेक्स के बदले में, अध्यापक अच्छे अंक, अच्छा भोजन और धन देते हैं। अध्यापक हमारे छात्रावासों में जब चाहें आ सकते हैं और लड़कियों को अपने सोने वाले कमरे में ले जा सकते हैं। हम यहाँ पर कभी सुरक्षित नहीं महसूस करते।"

फातिमा, 17, डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूत, नमाचा सेकेण्डरी स्कूल, मोज़ाम्बीक

राजदूतों की पदयात्रा
उन अध्यापकों के विरुद्ध जो लड़कियों से बुरा बर्ताव करते हैं।

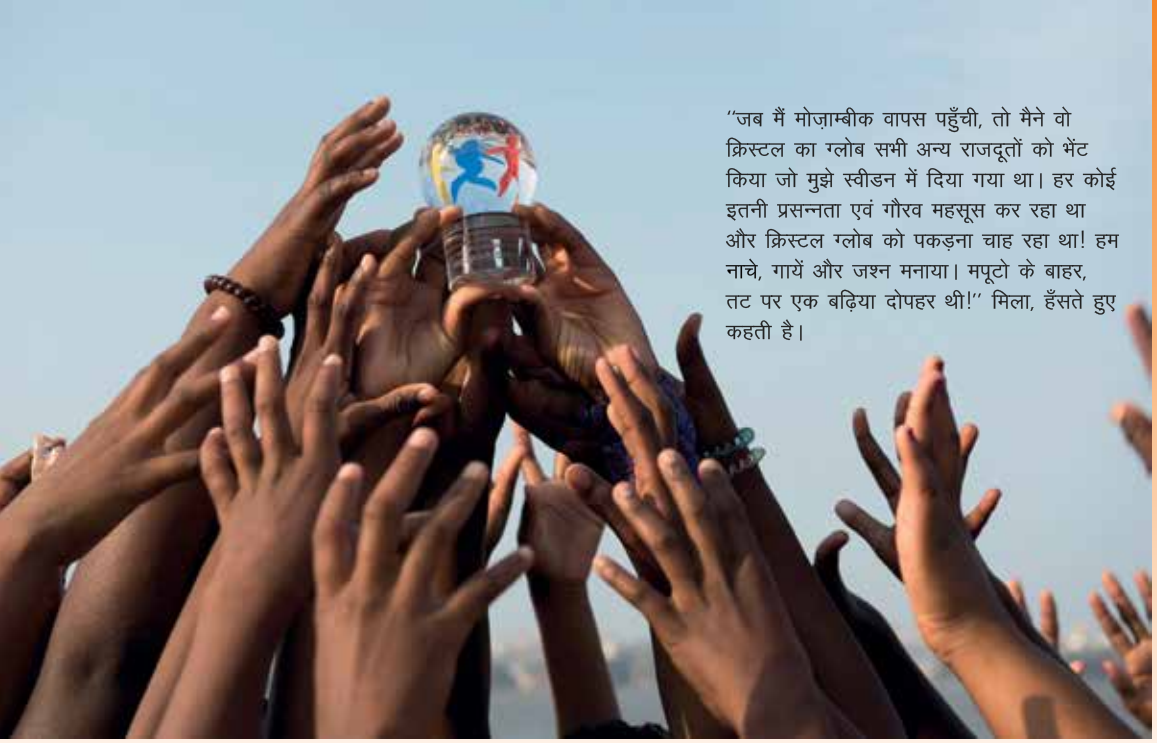

''जब मैं मोज़ाम्बीक वापस पहुँची, तो मैने वो क्रिस्टल का ग्लोब सभी अन्य राजदूतों को भेंट किया जो मुझे स्वीडन में दिया गया था। हर कोई इतनी प्रसन्नता एवं गौरव महसूस कर रहा था और क्रिस्टल ग्लोब को पकड़ना चाह रहा था! हम नाचे, गायें और जश्न मनाया। मपूटो के बाहर, तट पर एक बढ़िया दोपहर थी!'' मिला, हँसते हुए कहती है।

आतंक के स्कूल के प्रधानाचार्य को बर्खास्त कर दिया गया

जब मोज़ाम्बीक के शिक्षा मन्त्रालय ने डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूतों के बारे में 'आतंक के स्कूल' के बारे में पिछले वर्ष की दि ग्लोब पत्रिका में पढ़ा, तो वह बहुत चिन्तित हुए। ''पर्यवेक्षक हमारे स्कूल में आये और उसके बाद सबकुछ बहुत तेज़ी से हुआ,'' मरीया रोसा कहती है।

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: JOHAN BJERKE

सबसे पहले, शिक्षा मंत्रालय हम राजदूतों से मिलना चाहता था यह पता लगाने के लिए कि जो बाते हमने कही थी वो वास्तव में सच थी। अपनी स्वयं की सुरक्षा के लिए, हम एक गुप्त स्थान पर मिले। उसे बैठक के बाद, मंत्रालय में पर्यवेक्षकों को हमारी कहानी का सत्यापन करने के लिए स्कूल भेजा। पर्यवेक्षकों ने प्रधानाचार्य, अन्य अध्यापकों एवं छात्रों का साक्षात्कार लिया। साक्षात्कारों में छात्रों ने बताया कि कौन से अध्यापक स्कूल में लड़कियों का शोषण कर रहे थे। एक नामों की सूची बनाई गई फिर कुछ निपुण लोगों ने अध्यापक के कम्प्यूटर की जाँच की। उनको उसमें स्कूल की जनाना छात्रों की अश्लील फिल्में एवं नग्न तस्वीरें मिले। ठीक जैसे हमने बताया था।

उनको प्रमाण मिला कि हमारी रिपोर्ट सच थी, और प्रधानाचार्य को बर्खास्त कर दिया गया। शिक्षा मंत्रालय अब उसके द्वारा किये गये अपराधों के कारण उसके विरुद्ध कार्यवाही कर रहा है।

संतुष्ट राजदूत! वो प्रसन्न है कि प्रदेशीय निर्देशक ने उनकी बात सुनी और उनको गम्भीरता से लिया।

मत्रांलय में बैठक

लेकिन अभी तक जिन अध्यापकों ने स्कूल मे में लड़कियों का शोषण किया था उनमें से अभी तक निलम्बित नहीं किया गया है। यह ठीक नहीं है! इसीलिए मैंने विभिन्न देशों के 50 से अधिक बाल अधिकार राजदूतों से मिलकर अपने प्रदेश के शिक्षा निर्देशक से आमने सामने बात की। हम उससे कहना चाहते थे कि वो मोज़ाम्बीक के स्कूलों में जिन समस्याओं से लड़कियां जूझ रही हैं उनको सुलझाने में हमारी सहायता करें। और हम उसको यह सब अपने शब्दों में बताना चाहते थे, जिससे उसको यह लगे कि जो हम कह रहे हैं वो सच है।

प्रदेशीय निर्देशक ने हमारा स्वागत किया। अनेकों राजदूतों ने इस पर बात की कि उनका यौन शोषण कैसे किया था और उनको शारीरिक एवं मानसिक दुराचार कैसे सहना पड़ा था। अनेकों लड़कियों ने बताया कैसे उनको स्नातक नहीं बनने दिया गया, जबकि उनके उत्तम अंक थे, जबतक उन्होंने अपने अध्यापकों के साथ सेक्स नहीं किया। और कैसे उनके अंको को कम कर दिया गया यदि उन्होंने मना किया। अनेकों राजदूत लड़कियां रोई और उन्होंने सहायता के लिए आग्रह किया। हमने दोषी अध्यापकों के नाम बता दिये हैं। और हमें आशा है कि उनको स्कूलों में से निलम्बित कर दिया जायेगा और उनकी योग्यताओं को रद्द कर दिया जायेगा जिससे वे बच्चों को ना पढ़ा सकें।

प्रदेशीय नागरिक ने सावधानी से बाल अधिकार राजदूतों के कथनों को रिकार्ड किया जिनमें अध्यापकों ने छात्रों को ऊँचे दर्जे में डालने के लिए सेक्स की मांग थी।

बहादुर राजदूत

मुझे नहीं पता कि अब क्या होगा। लेकिन मुझे मालूम है कि मंत्रालय इसको गम्भीरता से ले रहा है उन्होंने यह प्रधानाचार्य को बर्खास्त करके दिखा दिया। प्रदेशीय निर्देशक ने सभी लड़कियों के कथन लिख लिए, उनके विरुद्ध किये गये अपराधों को, एवं अध्यापकों के नाम। उन्होंने वचन दिया कि वो शिक्षा मंत्रालय के साथ मिलकर इस समस्या से निपटेंगे। और मुझे उनपर विश्वास है। मुझे आशा है कि जिन प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों ने लड़कियो के साथ दुराचार किया है उनको नौकरी से निकाल दिया जायेगा और उनपर कार्यवाही की जायेगी, ठीक उसी प्रकार जैसा हमारे प्रधानाचार्य के साथ किया गया।

हमें अपनी कहानियां बताना दर्दनाक था। वहाँ पर खड़े होकर अपने अनुभवों को महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली व्यक्तियों के सम्मुख बोलना आसान नहीं था। हम घबराये हुए थे और शर्म आ रही थी। यह एक बहुत निज़ी बात है। लेकिन वो आवश्यक था। यह लड़कियों के साथ दुराचार अब बन्द हो जाना चाहिए! यह शीघ्र होना चाहिए, क्योंकि बहुत सारी लड़कियां इसके कारण स्कूल जाना छोड़ रही हैं।

यद्यपि शिक्षा मंत्रालय से बात करना कठिन था, फिर भी 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़' ने हम राजदूतों को वो ज्ञान, शक्ति एवं साहस दिया है कि हम अपने अधिकारों के खड़े हो सकें। और मिलकर हम सशक्त हैं। यद्यपि कभी–कभी हमारी लड़कियों के अधिकारों के लिए लड़ाई ईर्ष्या एवं विरोधी लोगों से बाधित हो जाती है, लेकिन हम कभी हार नहीं मानेंगे! अब तो उप मंत्री भी हमारे स्कूल में इसके लिए धन्यवाद देने को आ चुके हैं जो हमने किया।

फुलमाया बिकाऊ नहीं है

फुलमाया, 11, ध्यान से सुनती है जो दिपा, 14, को उससे लड़कियों के अधिकारों एवं बाल सेक्स अधिकारों के बारे में कहना होता है। वो एक ही गाँव में रहते हैं और कवरेपालनचौक, नेपाल के एक ही स्कूल में जाते हैं। यहाँ पर गरीब लड़कियों को तस्करी किये जाने का खतरा रहता है। दिपा ने अभी–अभी प्रशिक्षण लेकर एक बाल अधिकार राजदूत बनी है, जिससे वो अपने गाँव में लड़कियों को अपने अधिकारों को जानने में प्रशिक्षित और सशक्त करे।

फुलमाया स्कूल जाने से पहले और उसके बाद कई घन्टे काम करती है। वो तड़के सुबह उठती है और जानवरों को चारा खिलाती है – एक गाय, एक बछड़ा और एक बकरी। फिर वो खाना पकाने के लिए आब जलाती है।

''मेरे पास खेलने के लिए कोई समय नहीं होता। लेकिन यहाँ पर लड़के इधर–उधर दौड़ सकते हैं और फुटबॉल खेलते हैं। यह ठीक नहीं है,'' फुलमाया कहती है। हर रोज उसे कपड़े धोने पड़ते हैं, घर की सफाई करनी पड़ती है, बर्तन धोने पड़ते हैं, खाना पकाना पड़ता है, पानी लाना पड़ता है तथा पशुओं की देखभाल करनी पड़ती है। सबसे खराब काम दिन भर का गाय का गोबर इकट्ठा करना होता है।

दिपा से सीखना

हाल में फुलमाया ने दिपा के बारे में बहुत बताया है। एक नये प्रशिक्षित बाल अधिकार राजदूत की तरह, वो अन्य बच्चों को बाल अधिकारों एवं तस्करी के बारे में ही नहीं बताती – वो माता–पिता एवं अध्यापकों को भी बताती है। वो उनमें जागरूकता उत्पन्न करने के लिए अन्य बाल अधिकार राजदूतों के साथ खड़े पर्वतीय मार्गों पर पैदल चल कर एक गाँव से दूसरे गाँव जाती है। यह सब तस्करी को रोकने के लिए और लोगों को समझाने के लिए कि लड़कियों के भी वही अधिकार होते हैं जो लड़कों के।

फुलमाया के अनेकों कार्यों में से एक घास काटना है जिसे पशुओं को दिन में अनेकों बार खिलाया जा सके।

एक बार फुलमाया गायों को चारा खिला देती है, पानी भर कर ले आती है, बर्तन धो देती है और चावल पका देती है, तब वो अपने स्कूल की यूनीफार्म पहन लेती है और जल्दी से स्कूल चली जाती है।

''दिपा ने हमें बताया कि हमारी कदर उतनी ही है जितनी लड़कों की हम लडकियों को भी अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। लड़कियों की जल्दी शादी कर देना भी गलत है, सिर्फ इसलिए, कि उनके माता–पिता सोचते हैं कि वो उनका खर्च नहीं उठा सकते,'' फुलमाया कहती हे।

लड़कियाँ गायब हो जाती हैं

नेपाल मेँ, यह बहुत साधारण बात है कि गरीब परिवारों की लड़कियों से अन्य देशों में अच्छे वेतन वाली नौकरियों के वादे किये जाते हैं, अक्सर पड़ोसी देश भारत में। लेकिन इन लड़कियों और उनके परिवारों को धोखा दिया जा रहा है। अन्त में लड़कियाँ परिवार वाले घरों अथवा होटलों एवं भोजनालयों में घरेलु दासियाँ बन जाती हैं। या, इससे भी बद्तर, वो कोठों में सेक्स मजदूर भी बनँ सकती हैं। लगभग बारह हजार लड़कियाँ, उनमें से अनेकों सोलह वर्ष से कम और कुछ यहाँ तक आठ वर्ष की, हर साल नेपाल से गायब हो जाती हैं।

इनमें से अधिकतर लड़कियाँ कभी वापस घर नहीं आती। इसी बात को दिपा रोकना चाहती है।

फुलमाया जैसी लड़कियों को इस बात की आशंका बनी रहती है,'' दिपा कहती है। ''उसका परिवार बहुत गरीब है और वो बिल्कुल अज्ञान है कि तस्करी कितनी साधारण बात है। उनको आसानी से फुसलाया जा सकता है कि उनको पैसे के बदले में अपनी लड़की को दे दें।''

इसके अतिरिक्त, फुलमाया, तमांग नामक ग्रामीण समूह की सदस्य है, जिनकी बेटियों को सुन्दर माना जाता है और वो तस्करों को विशेष रूप से आकर्षित करती हैं।

स्वाभिमानी माँ

दिपा की माँ, कभी स्वयं स्कूल नहीं गयी है।

''सबसे महत्वपूर्ण चीज शिक्षा है,'' वो कहती है। ''मुझे इतना गर्व है कि दिपा एक बाल अधिकार राजदूत है।''

दिपा स्कूल में अच्छा कर रही है। उसके सर्वप्रिय विषय विज्ञान एवं लिखना है। वो एक डॉक्टर बनना चाहती है।

''यह इसलिए क्योंकि मैं लोगों की सहायता करना चाहती हूँ,'' वो कहती है। ''मैंने तस्करी और बाल दासता के बारे में रेडियो पर सुनाऔर अखबारों में पढ़ा और मुझे बहुत दुख है कि बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा है। मैं कुछ करना चाहती थी अतः मैंने मैटी नामक एक संस्था से संपर्क किया, जो वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के साथ मिलकर बाल अधिकार राजदूतों को प्रशिक्षण देती हूँ।''

अलीशा, 17, जो स्वयं एक बाल अधिकार राजदूत है, वो इस पाठ्यक्रम में दिपा की अध्यापकों में से एक थी। वो सिर्फ पाँच वर्ष की थी जब उसे एक अन्य परिवार को एक घरेलु दासी की तरह बेच दिया गया। उसे स्कूल नहीं जाने दिया गया और उसके

जब फुलमाया एक आग जलाती है, तब रसोई कड़वे धुंये से भर जाती है। वहाँ कोई चिमनी नहीं है।

जब फुलमाया घर का सारा काम खत्म कर देती है तभी वो अपने स्कूल का गृहकार्य कर सकती है। उसका सर्वप्रिय विषय नेपाली है।

TEXT: EVA-PIA WORLAND PHOTOS: KIM NAYLOR

''लड़कियों के भी अच्छे स्कूलों में जाने के वही अधिकार हैं जो लड़कों के! लेकिन अनेकों माता–पिता अपनी लड़कियों का खर्चा नहीं उठाना चाहते, क्योंकि वो कम आयु में ही उनका विवाह कर देंगे और वो अपने पति के परिवार में चली जायेंगी,'' फुलमाया कहती है।

साथ दुराचार किया गया और उसका शोषण किया गया, लेकिन वो भाग निकलने में कामयाब हुई जब वो नौ वर्ष की थी।

''एक बाल अधिकार राजदूत की भूमिका अदा करने ने मुझे बहुत परिवर्तित कर दिया है, और मुझमें आत्मविश्वास जगाया है,'' अलीशा बताती है, जो दिपा और फुलमाया के गाँव में दिपा को बाल अधिकार राजदूत नियुक्त करने जा रही है।

बच्चों को मत मारो!

दिपा अपने पहले बाल अधिकार प्रशिक्षण के अधिवेशन को आयोजित करने जा रही है। वो अपने स्कूल के सहपाठियों को बाल अधिकारों के बारे में बतायेगी। और बाद में, वो अध्यापकों के लिए एक वार्ता आयोजित करेगी।

''मैं थोड़ी घबराई हुई हूँ, लेकिन बहुत ज्यादा नहीं,'' वो कहती है।

अलीशा एवं अन्य राजदूत जो इस गाँव में जा रहे हैं वो दिपा की सहायता करते हैं ओर यह देखते हैं कि वो अच्छे से तैयार हैं।

कक्षा में, दिपा बताती है कि बच्चों को स्कूल में मारना गलत है। अलीशा तस्करी पर बात करती है और कैसे लड़कियों का यौन शोषण किया जाता है, जो अक्सर कोठों पर पहुँच जाती हैं। फुलमाया एवं अन्य छात्र उसे गम्भीरता एवं ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

जब दोपहर में अध्यापकों की बारी आती है, तब वो स्वयं को एक अजीब सी, उल्टी स्थिति में पाते हैं। वो पहले कभी कतारों में बैठकर बच्चों द्वारा नहीं पढ़ाये गये हैं। उनमें से कुछ यह जानकर अचम्भित हैं कि तस्करी अन्य देशों में भी होती है न कि सिर्फ नेपाल में। अन्य लोग चॉकबोर्ड पर लेखी में गलतियों पर टिप्पणी देते हैं।

दिपा, जो एक नव–प्रशिक्षित बाल अधिकार राजदूत है, यह निश्चित करना चाहती है कि न तो फुलमाया और न ही उस गाँव की कोई अन्य लड़की को तस्करों द्वारा ले जायो जाये। बारह हजार लड़कियाँ हर साल नेपाल से गायब हो जाती हैं। दिपा अभिमान से अपना प्रमाण पत्र दिखाती है।

वो दो बाल अधिकार राजदूत दिपा और अलीशा, फुलमाया को बाल अधिकारों के बारे में बताते हैं और तस्करी के भय से सचेत करते हैं। अलीशा स्वयं एक घरेलु दासी रही है।

बाल अधिकार राजदूत अलीशा अध्यापकों से बाल अधिकारों के बारे में कहती है, विशेषतः लड़कियों के अधिकार और यह बात कि नेपाल में अनेकों लड़कियाँ मानव तस्करी का शिकार हो सकती हैं।

राजदूतों से लेकर प्रधान मंत्री तक

एक बेहतर विश्व के लिए शिक्षा

''एक बाल अधिकार राजदूत की तरह, मैं प्रत्येक बच्चे के शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार पर ध्यान देती हूँ, क्योंकि यह एक बेहतर जिन्दगी दिलाता है। यह एक बेहतर विश्व भी बनाता है। यदि मुझे आज प्रधानमंत्री मिलें, तो मैं उनसे कहूंगी कि वो ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूल जाना अनिवार्य निःशुल्क कर दें, जिससे हर किसी को शिक्षा मिल सके।''

लक्ष्मी, 20

तस्करी के विरुद्ध लड़ना

''मैं बच्चों के अधिकारों के लिए लड़ती हूँ और खासतौर से उन बच्चों के लिए जिनका तस्करों द्वारा शोषण किया गया है। यह एक गम्भीर समस्या है जो नेपाल एवं विश्व के अन्य भागों में बढ़ती रहती है। मैं प्रधानमंत्री से कहना चाहती हूँ कि वो हर परिवार के कम से कम एक सदस्य को शिक्षा एवं औद्योगिक प्रशिक्षण मिलना चाहिए जिससे वो अपने परिवार का खर्चा उठा सके।''

पूनम, 18

सरकार क्यों नहीं खर्चा करती?

''एक बाल अधिकार राजदूत की तरह, मैं ग्रामीण क्षेत्रों में काम करना चाहूँगी जिससे मैं सब बच्चों को बाल अधिकारों के बारे में जागरूक कर सकूँ। मैं प्रधानमंत्री से पूछना चाहूंगी कि हमारी सरकार बाल अधिकारों में पैसा क्यों नहीं खर्च करती।''

अलीशा, 17

पुरुषों का आधिपत्य रोको

''एक वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ राजदूत की तरह, मैं पुरुषों के आधिपत्य एवं महिलाओं के विरुद्ध मतभेद पर रोक लगाना चाहती हूँ। हम यह शिक्षा द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।''

शर्मीला, 15

गरीब बच्चे भी नागरिक हैं

''मैं शिक्षा के लिए अपनी आवाज उठाना चाहती हूँ। सब बच्चों को निःशुल्क शिक्षा मिलनी चाहिए क्योंकि शिक्षा द्वारा हम अपने देश को एक बेहतर स्थान बनाने में अपना योगदान दे सकते हैं। हमें निःशुल्क शिक्षा, भोजन और रहने की जगह चाहिए, और बच्चों का शोषण बन्द हो जाना चाहिए। मैं चाहती हूँ कि प्रधानमंत्री यह निश्चित करें कि गरीब बच्चों का भी सदैव नागरिकों की तरह पंजीकरण किया जाये।''

मनचला, 15

''औरतें काम करती हैं, आदमी चाय पीते हैं''

''यहाँ हमारे गाँव में, औरतें मेहनत से काम करती हैं जबकि पुरुष बैठे रहते हैं और चाय पीते हैं। यहाँ पर औरतों के विरुद्ध बहुत मतभेद है। मुझे बाल अधिकारों के बारे में जानकर उसमें बड़ी रुचि उत्पन्न हुई है। यह कि दोनों लिंग बराबर होते हैं। हमारी सरकार को अभिभावकों को प्रभावित करने के लिए और प्रयास करने चाहिये। यदि यहाँ पर और अधिक बाल अधिकार राजदूत होते तो स्थिति कुछ और होती। मेरी बहन, जो बारह वर्ष की है, हमारे घर में बहुत काम करती है, लेकिन मैं भी सहायता करता हूँ। यदि एक लड़की बर्तन धो सकती है तो एक लड़का भी अवश्य धो सकता है।''

संतोष, 17

''लड़के खेलते हैं, लड़कियाँ गृहकार्य करती हैं''

''लड़कियों और लड़कों के बीच कोई मतभेद नहीं होना चाहिए! और किसी भी बच्चे के अधिकारों का उल्लंघन नहीं होना चाहिए। उदाहरण के लिए, तुमको बच्चों को पीटना नहीं चाहिए, इसके बजाय तुम्हें उससे बात करनी चाहिए। घर पर, मेरी दो बहनें घर का अधिकतर कार्य करती हैं, लेकिन मैं बर्तन धोता हूँ और पानी लेकर आता हूँ। यहाँ पर अक्सर लड़के इधर–उधर दौड़ते हैं और खेलते हैं, जबकि लड़कियाँ कपड़े एवं बर्तन धोती हैं। और लड़कों को लड़कियों की अपेक्षा अधिक कपड़े मिलते हैं। यह ठीक नहीं है।''

बिरज, 12

TEXT: EVA-PIA WORLAND PHOTOS: KIM NAYLOR

हम सबका बराबर मूल्य है!

मेरे माता–पिता मेरे भाई को अधिक चाहते हैं

''मैं हमेशा थकी रहती हूँ, और कभी–कभी मुझे पाठ के बीच में नींद आ जाती है,'' अनीता कहती है। ''आमतौर से मुझे रात में पाँच घन्टे ही सोने को मिल पाता है।''

''यदि मैं एक लड़का होती, तो मेरे माता–पिता मुझे इतना प्यार करते जितना वो मेरे भाई को करते हैं, अनीता, 15 कहती है। ''मुझे भी वही अवसर मिलते चाहिए जो उसे मिले हैं, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। हम लड़कियों को बस शादी करनी होती है और जल्दी से जल्दी अपने पतियों के परिवारों में जाना होता है।''

हर रोज पाँच बजे, घड़ी का अलार्म बजता है। अनीता बिस्तर ठीक करती है और परिवार के लिए चाय बनाती है। फिर वो अपने भाई को उसके स्कूल से मिले गृहकार्य को करने में उसकी सहायता करती है और चावल, लेंटल स्टू एवं सब्जियाँ पकाती है। एक बार सब भोजन कर लेते हैं, तब वो अपने भाई को कपड़े पहनने में मदद करती है और यह देखती है कि उसके पास जरूरत की सब चीजें हैं जिसके बाद वो उसको पैदल स्कूल ले जाती है।

अनीता का भाई दोपहर में अतिरिक्त पाठ पढ़ने जाता है, और उसके आखिरी पाठ के बाद अनीता को उसे लेने के लिए जाना होता है। उसके बाद वो खाना पकाती है, अपने भाई को परोसती है और उसके स्कूल के गृहकार्य को करने में उसकी मदद करती है। वो बर्तन धोती है, सफाई करती है, और अपने छोटे भाई को पलंग में सुलाती है। जब उसकी माँ लगभग नौ बजे घर वापस लौटती है, तब वो दोनों मिलकर भोजन करते हैं, जिसके बाद अनीता बर्तनों को धोती है और फिर से सफाई करती है। अब रात के दस बजे हैं जब अनीता के पास एक अवसर है कि वो अपना स्वयं का स्कूल वाला गृहकार्य करे, और वो मध्य रात्रि तक अपनी लाइट नहीं बन्द करती।

''कभी–कभी मैं कोशिश करती हूँ कि मेरा भाई घर पर मदद करे, लेकिन वो मना कर देता है। यदि मैं उस पर चिल्लाती हूँ, तो वो मम्मी को बता देता है जो फिर मुझे परेशान करती हैं।''

अनीता का सपना है कि वो एक डॉक्टर बने और गरीब बच्चों की मदद कर सके। और वो गरीब गाँवों में दवाखाने भी बनाना चाहेगी।

''यदि मेरा पति मुझे अनुमति देगा, तभी,'' वो कहती है। ''और अगर वो नहीं मानता, तो मुझे उससे आग्रह करना पड़ेगा।''

मेरी दादी नहीं चाहती कि मैं अपनी बहन की सहायता करूं

''मेरी छोटी बहन घर पर लगभग सारा गृहकार्य करती है। वो अभी सिर्फ दस वर्ष की है, और मुझे उसके लिए बहुत अफसोस होता है। वो हर रोज सफाई करती है और पानी भर कर लाती है और छह लोगों के लिए खाना पकाती है। मेरी माँ घर पर नहीं है क्योंकि वो कुवैत में काम कर रही है। मैं अपनी बहन की जितनी मदद कर सकता हूँ उतनी करता हूँ, लेकिन मेरी दादी मुझे मना करती है। वो कहती है कि मेरी बहन को सारा काम करना चाहिए।''

सुरेश, 12

''वही अधिकार जो लड़कों के हैं!''

''यदि मैं एक लड़का होती, तो मैं कहीं पर भी चली जाती जहाँ मेरा मन करता। मैं एक बेहतर स्कूल में जाती और मुझे बुरे लड़के चिढ़ाते और परेशान नहीं करते जो लड़कियों की बिल्कुल इज्जत नहीं करते। मेरे पिता की एक नई पत्नी है और अब वो मेरी और मेरी बहन की बिल्कुल भी परवाह नहीं करते। यह बिल्कुल भी ऐसा नहीं रहा होता यदि मैं एक लड़का होती। हम लड़कियों को भी वही अधिकार मिलने चाहिए जो लड़कों को मिलते हैं!''

सुशीला, 14

''बर्तन मांझने में शर्म आती है,'' लड़के कहते हैं

''मेरा भाई काठमांडू के एक छात्रावास वाले स्कूल में पढ़ता है, लेकिन मुझे यहाँ के गाँव वाले स्कूल में जाना पड़ता है। यहाँ पर यह साधारण बात है। एक अन्य अन्तर लड़के और लड़कियों के बीच में यह है कि हम लड़कियों को सारा गृहकार्य करना पड़ता है और साथ ही पढ़ना भी पड़ता है। लेकिन लड़कों को ऐसा नहीं करना पड़ता। उनमें से अनेकों वास्तव में ऐसा सोचते हैं कि एक पुरुष के लिए बर्तन धोना शर्मनाक है।''

पब्रिता,15

''हमें लड़कियों की इज्जत करनी चाहिए''

''पुरुष इस सोच के साथ बड़े होते हैं कि वो औरतों से श्रेष्ठ हैं, लेकिन उनको चाहिए कि वो सबके साथ न्याय करें। हमें लड़कियों का सम्मान करना चाहिए और उनके बारे में बुरी बातें नहीं कहनी चाहिए। अनेकें लड़कियों को स्कूल तक नहीं जाने दिया जाता। मेरे परिवार में, हम सबको समान समझा जाता है, और मेरी बहन और मैं बारी–बारी से गृहकार्य को करते हैं।''

सविन, 16

बाल अधिकारों के लिए

''दो वर्ष पहले, हमने अपने स्कूल में एक बाल अधिकार बैण्ड शुरू किया था। इस बैण्ड सियानगोबा कहते हैं और इसके सभी सदस्य डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूतों की तरह प्रशिक्षण ले चुके हैं। हम लड़कियों को समान अधिकार दिलाने के लिए एवं बाल सेक्स व्यापार के विरुद्ध लड़ते हैं,'' अमाण्डा, 17, दक्षिण अफ्रीका से कहती है।

अमाण्डा और बैण्ड के अधिकतर सदस्य खायेलिट्शा में रहते हैं, जो केप्टाउन के बाहरी इलाकों में एक गरीब बस्ती है।

''मैं एक 'आज़ाद पैदा' हूँ। मेरी पीढ़ी के लोग मुझे यही कह कर बुलाते हैं क्योंकि हम वो बच्चे हैं जो सन् 1994 के बाद पैदा हुए हैं जब रंगभेद का अंत हुआ और नेल्सन मंडेला राष्ट्रपति बना,'' अमाण्डा बताती है।

लड़कियों के लिए कठिन

''खायेलिट्शा रंगभेद के समय बना था, जब काले लोगों को जबरदस्ती बहुत बेकार जगहों पर रहना पड़ता था। आजकल, खायेलिट्शा में बेरोजगार लोग भरे हुए हैं तथा अत्यधिक निर्धन लोग जो झोंपड़ियों में रहते हैं और उन्हें पानी लाने के लिए बहुत दूर पैदल जाना पड़ता है। बच्चे सबसे अधिक निर्धनता से प्रभावित हैं, और उन अपराधों से भी जो वयस्क उनके प्रति करते हैं, जिसमें लड़कियों पर किये गये दुराचार शामिल हैं।

रंगभेद के समय, खायेलिट्शावासियों ने उन सभी नियमों का विरोध किया था जो उनको जबरदस्ती श्वेत लोगों का दास बनाते थे। उनके विरोध करने के तरीकों में से एक यह था कि वो सड़कों पर कारों के टायर जला दिया करते थे। एक दिन जब हम अपने बैण्ड का अभ्यास करके वापस घर लौट रहे थे, तब सड़कें जलते हुए टायरों से भरी हुयी थीं जो चालू शौचालयों की कमी होने एवं बिजली के महंगे होने पर विरोध के लिए किया गया था। हममें से अधिकतर लोगों के वहाँ कोई प्रकाश नहीं होता जब सूरज ढल जाता है।''

राजदूतों को प्रशिक्षण देना

अमाण्डा ने अपने स्कूल में एक डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूत बनने के लिए एक प्रशिक्षण में भाग लिया था।

''तब से मैंने अपनी आवाज का प्रयोग करके अन्य लोगों को अपने स्कूल में बाल अधिकारों के बारे में बताया है, और विश्व भर में तथा जहाँ मैं रहती हूँ वहाँ चल रहे बाल सेक्स व्यापार के बारे में। मैं अपनी आवाज का प्रयोग गाने और कहानियाँ सुनाने में करती हूँ, और मैं एक दिन एक टी.वी. पत्रकार बनने का सपना देखती हूँ।

सर्वप्रथम जब हमने अपना बाल अधिकार बैण्ड शुरू किया, तब हमारे स्कूल में हमारे बारे में बहुत कम लोगों को मालूम था, लेकिन अब हर कोई हमारी प्रस्तुतियों को देखने के लिए उत्सुक रहता है और हमारे बैण्ड में शामिल होना चाहता है।

मेरी माँ मर गई जब मैं बहुत छोटी थी और मेरा अपने पिता से कोई संपर्क नहीं है, अतः मुझे मालूम है कि लड़कियों को अपनी रक्षा करने के लिए कितनी कठिनाई होती है। लेकिन एक बाल

TEXT: MARLENE WINBERG PHOTOS: SOFIA MARCETIC & SHEN WINBERG

''एक दिन जब हम अभ्यास करके अपने घर वापस लौट रहे थे, तब लोग उसी तरह विरोध कर रहे थे जैसा कि रंगभेद के समय, जब दक्षिण अफ्रीका में जातिभेद के विरोध में प्रदर्शन करके कार के टायरों को जलाया जा रहा था। अब लोग वही करते हैं क्योंकि हमारे पास शौचालय, बहता हुआ पानी तथा बिजली नहीं है।''

बैण्ड

अब अन्त में वो समय आ गया है जब अमाण्डा और उसके सियानगोबा मित्र मेरीफ्रेड, स्वीडन में ग्रिपशॉम कॉसल के डब्ल्यू.सी.पी. समारोह में प्रस्तुति दें। यहाँ पर वे 'वीपिंग' नामक गीत अपने नए वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ संरक्षकों – वूसी महालासेला एवं लॉरीन के साथ गा रहे हैं।

"बैण्ड के सदस्य एवं बाल अधिकार राजदूतों ने अपना विश्व मतदान क्रिस हैनी सेकेण्डरी स्कूल में आयोजित किया।"

अधिकार राजदूत बनने पर मुझमें वो आत्मविश्वास जगा है कि मैं श्रोता के सामने खड़ी हूँ और अपने विचारों को व्यक्त करूं। अब मैं एक बाल अधिकार प्रशिक्षक हूँ, और अभी हाल में मैंने अपने स्कूल में अन्य लोगों के लिए एक कोर्स आयोजित किया था जो बाल अधिकार राजदूत बनना चाहते थे। मेरे अनुमान से काफी अधिक लोग इसमें आये और हमार बाल अधिकार क्लब बढ़ रहा है।"

टी.वी. पर विश्व मतदान

"हम बाल अधिकार राजदूतों ने अपने स्कूल में विश्व मतदान दिवस मनाया। हमने एक टी.वी. पत्रकार को आमंत्रित किया, जो अपनी मंडली को लेकर आया। उस शाम हम टी.वी. पर दिखाई दे रहे थे और लाखों लोगों ने दक्षिण अफ्रीका में, सारे अफ्रीका एवं लंदन में देखा कि हम, खायेलिट्शा में बाल अधिकार राजदूतों ने, कैसे अपना विश्व मतदान दिया!

हम सब लोगों के लिए स्वीडन की यात्रा करना, बाल न्यायमूर्ति दल एवं मलाला से मिलना, तथा डब्ल्यू.सी.पी. समारोह में प्रस्तुति देना एक अद्भुत अनुभव था।"

लॉरीन एवं वूसी महालासेला डब्ल्यू.सी.पी. विजेता मलाला के साथ।

लॉरीन एवं वूसी नये संरक्षक

डब्ल्यू.सी.पी. समारोह में गायक लॉरीन, स्वीडन से व वूसी महालासेला, दक्षिण अफ्रीका से, वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के नये संरक्षक बन गये।

डब्ल्यू.सी.पी. संरक्षक, जो कि 'ऑनरेरी एडल्ट फ्रेन्ड्स' भी हैं, ने पांच नोबेल पुरस्कार विजेता एवं तीन विश्व प्रख्यात व्यक्ति – नेल्सन मंडेला, ऑन्ग सैंग सू काई बर्मा से, एवं ज़नाना गुस्माओ ईस्ट इमोर से, शामिल हैं। अन्य संरक्षकों में स्वीडन की महारानी सिल्विया एवं एवं विश्व नेता तथा 'दि एल्डर्स' के सदस्य, ग्रेसा मैचेल एवं डेसमन्ड टूटू शामिल हैं।

लॉरीन एक मानवाधिकार कार्यकर्ता है और वूसी, जिसको 'दि वॉइस' भी कहा जाता है, की एक संस्था है जिसमें वंचित बच्चों को संगीतकार बनने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

स्वीडन की महारानी सिल्विया

डेसमन्ड टूटू

ऑन्ग सैंग सू काई

मण्डेला के लिए अमान्डा का गीत

डब्ल्यू.सी.पी. समारोह में, अमाण्डा ने डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार हीरो एवं संरक्षक, नेल्सन मंडेला के लिए अपना गीत गाया।

"मैंने उसे अपने बाल अधिकार हीरो, नेल्सन मंडेला के लिए लिखा था, यह कहने के लिए हम अभी भी उसे याद करते हैं और जिस बात के लिए वो खड़ा हुआ था। मैंने यह गीत इसलिए लिखा क्योंकि बहुत सारे लोग यह भूल गये हैं कि उसने क्या कहा था, और वो बच्चों के साथ बुरा व्यवहार करते रहते हैं। हमारी संस्कृति में, एक कहानी है कि जो लोग मर जाते हैं वो चाँद पर चले जाते हैं। मेरा गाना इस प्रकार है:

वो चाँद में खड़ा है
"उसे हमेशा से पता था कि वो क्या करे
उसने अपनी योजनाओं को पूरा किया
वो अच्छे के लिए चला गया
अब लोग उसे निराश करते हैं
हम खुशी से उसका सम्मान करते हैं
अपने दिलों में अभी भी उसे याद करते हैं
हम अब भी तुम्हें याद करते हैं!"

एक विश्व बाल पत्रकार सम्मेलन आयोजित करो

PHOTOS: SOFIA MARCETIC & KIM NAYLOR

''यहाँ मपूटो में बाल पत्रकार सम्मेलन में तुम्हारा स्वागत है,'' एलीसा, 16, ने कहा, जब उसने मोज़ाम्बीक के पत्रकार सम्मेलन की अध्यक्षता, लैरिस्सा एवं यारा के साथ की थी, और कहा, ''यहाँ पर अध्यापकों के लिये छात्रों को अच्छे अंक देना और एक वर्ष ऊपर चढ़ाने के बदले में उनका शोषण करना साधारण बात है। इसे बन्द करना होगा!''

तुम और तुम्हारे मित्र एक विश्व बाल पत्रकार सम्मेलन भी आयोजित कर सकते हो।

पत्रकार सम्मेलनों में केवल बच्चे ही बोलें, और पत्रकारों द्वारा केवल बच्चों का ही साक्षात्कार लिया जाना चाहिए, जिनका आयोजन विश्व भर में बच्चों द्वारा एक ही समय पर किया जाता है। वो डब्लू.सी.पी. प्रोग्राम कार्यकाल के अन्त में आयोजित किये जाते हैं, बच्चों ने अपना मतदान देकर यह निर्णय ले लिया होता है कि किसको बाल अधिकारों के लिए पुरस्कार मिलने चाहिए।

''प्रति वर्ष, लगभग 10,000–20,000 नेपाली लड़कियों की तस्करी की जाती है। इसे रोकना होगा!'' पूनम, काठमांडू, नेपाल में विश्व बाल पत्रकार सम्मेलन में कहती है।

उसको कैसे करें:

1. समय और स्थान

यदि सम्भव हो सके तो अपने पत्रकार सम्मेलन के लिए अपने क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण इमारत को चुनो, जिससे यह पता लगे कि बाल अधिकार महत्वपूर्ण होते हैं! अन्यथा तुम उसको अपने स्कूल में भी आयोजित कर सकते हो! तुम उसकी तिथि को डब्लू.सी.पी. वेबसाइट पर जान सकते हो।

2. मीडिया को आमंत्रित करो

सभी अखबारों, पत्रिकाओं एवं टी.वी तथा रेडियो स्टेशनों को अग्रिम में आमंत्रित करो। समय और स्थान को साफ साफ लिखो। ई–मेल का प्रयोग करना अच्छा होता है, लेकिन यह निश्चित रखो कि तुम उन पत्रकारों को भी बुलाओ जिनका तुमको लगता है कि आने में रुचि होगी! उनको टेलीफोन द्वारा अथवा पत्रकार सम्मेलन होने से एक दिन पहले याद दिला दें।

3. तैयारी करो

जो तुमने कहना चाहोगे उसे लिख लो। अपने देश में तुमको बाल अधिकारों के बारे में जो कहना है उसकी तैयारी करने के लिए स्वयं को पर्याप्त समय दो। प्रेस कॉन्फ्रेन्स से कुछ ही समय पहले तुमको वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के बाल अधिकार हीरो के बारे में गोपनीय जानकारी मिलेगी, जिसको तुम्हें पत्रकार सम्मेलन में बताना होगा।

4. पत्रकार सम्मेलन को आयोजित करो

यदि सम्भव हो सके, तो गाने और नाच से शुरूआत करो, और सबको यह बताओ कि विश्व भर में अन्य बच्चे भी इसी समय पत्रकार सम्मेलनों को आयोजित कर रहे हैं। फिर पत्रकार सम्मेलन में कुछ इस प्रकार करो:

- वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज के तथ्यों की जानकारी दो और यदि सम्भव हो सके तो एक छोटी डब्लू.सी.पी. के बारे में जानकारी देने वाली फिल्म को दिखाओ।
- यह बताओ कि तुम्हारे देश में किस प्रकार बाल अधिकारों का उल्लंघन होता है।
- अपनी माँगों को बताओ – तुम किस प्रकार चाहते हो कि राजनीतिज्ञ एवं अन्य वयस्क तुम्हारे देश में बाल अधिकारों के सम्मान को बढायें।
- उस दिन का बड़ा समाचार घोषित करो, बाल अधिकार हीरो के बारे में।
- पत्रकारों को अपने देश की एक प्रेस विज्ञप्ति एवं डब्लू.सी.पी. का तथ्यपत्र देकर कार्यक्रम को समाप्त करो। दोनो चीज़ें तुमको वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ से प्राप्त हो जाएंगी।

worldschildrensprize.org पर तुमको मिलेगा:
अपने देश के बाल अधिकारों के तथ्य के कागज, पत्रकारों को आमंत्रित करने पर सलाह, राजनीतिज्ञों के लिए प्रश्न एवं अन्य सुझाव। वेबसाइट में प्रेस के चित्र भी हैं जिनको पत्रकार डाउनलोड कर सकते हैं।
यदि अनेकों स्कूल एक ही मीडिया से सम्पर्क कर रहे हैं, तब क्यो न एक सम्मिलित पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया जाए? प्रत्येक स्कूल का एक प्रतिनिधि मंच पर उपस्थित हो सकता है।

वार्षिक पुरस्कार समारोह का आयोजन मेरिफ्रेड, स्वीडन के ग्रिपशॉम कॉसल में किया गया था। कनाडा की एम्मा मोगस मास्टर ऑफ सेरेमनीज़ थी एवं 15 देशों के बाल निर्णायक दल के बच्चों ने भी उसका नेतृत्व करने में सहायता की थी। स्वीडन की महारानी सिल्विया ने उनको पुरस्कार भेंट करने में सहायता की।

हम बाल अधिकार मना रहे हैं!

बाल निर्णायक दल के बच्चे हमूदी एलसलामीन, फिलस्तीन से एवं नेट्टा, एलेक्ज़ेन्ड्री इजराइल से ने पुरस्कृत विजेताओं को पुरस्कार भेंट किये।

पाकिस्तान से मलाला को लड़कियों के शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार के लिए संघर्ष करने हेतु सन् 2014 का वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ फॉर दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड से पुरस्कृत किया गया था।

''यह पुरस्कार दर्शाता है कि बच्चे अपने अधिकारों के लिए खड़े हो सकते हैं। वो चुपचाप नहीं बैठे रह सकते, वो अपनी आावाजें सुनवा कर मानेंगे... हम बाल अधिकारों का उल्लंघन नहीं सहन कर सकते,'' मलाला कहती है।

''मैं उन लाखों स्कूल के बच्चों जिन्होंने वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ मे भाग लिया है, को यह वचन देता हूँ: हम तुम्हारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर एक ऐसा संसार बनाने के लिए लड़ेंगे जहाँ बाल अधिकारों को सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त एवं सम्मानित किया जायेगा,'' स्टीफन लोफवेन, स्वीडन का प्रधानमंत्री कहते हैं।

वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स ऑनरेरी पुरस्कार को संयुक्त राज्य अमरीका के जॉन वुड एवं 'रूम टू रीड' संस्था को संयुक्त रूप से उनके इस बात पर संघर्ष करने के लिए दिया गया कि बच्चों को पुस्तकें एवं शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है, और...

हर कोई अंतिम गीत में शामिल हो गया, बाल निर्णायक दल के बच्चे, नये समर्थक लारीन एवं वूसी, दक्षिण अफ्रीका का बैण्ड सियानगोबा, साइमन वोयरेनबेकेर क्लांग और 'सिक्सटेन एण्ड दि कपकेक्स'।

...नेपाल की इन्दिरा रानामगर को बन्दी बच्चों के लिए संघर्ष करने हेतु। रोशनी उन बच्चों में से एक है जिसको इन्दिरा ने बचाया।

THE Globe

Globen • Le Globe
El Globo • O Globo • विश्व

WORLD'S CHILDREN'S PRIZE MAGAZINE www.worldschildrensprize.org

Thanks! Tack! Merci! ¡Gracias! Obrigado! !مهرباني CẢM ƠN
धन्यवाद நன்றி سپاس !شكراً ขอบคุณ တၢ်ဘျုး ကျေးဇူး !شکریہ

स्वीडन की महारानी सिल्विया | स्वीडिश पोस्ट कोड लॉटरी
सर्वे फैमिली फाउन्डेशन | गिविन्ग विंग्स
फ्यूचुरा फाउन्डे न्स | ई.सी.पी.ए.टी. स्वीडन | ईवर्क
क्रॉनप्रिन्सेस्सेन मारग्रेटासा मिनिस्फॉन्ड

एक्सिसन जॉनसन्स स्टिफटेल्से बेन्जनॉरमेन | एल्टोर | गुड मोशन | डैहिस्ट्रॉम्का स्टिफटेल्सेन माइक्रोसॉफ्ट | गूगल | ट्विच हेल्थ कैपिटल | फोरसाइट ग्रुप | पूनामुस्ता | सेन्टॉस डिक क्जिीलबर्ग मॉन्टेज | सिमॉब–स्पोर्ट | गॉटेनबर्ग फिल्म स्टूडियोज | एल्सास स्कफ्फेरी स्कोमाकारगार्डेन | रोडा मैगासीनेट | एरिक एरिक्सनहैल्लेन | लिल्ला एकेडेमीन
सभी बाल अधिकार प्रायोजक एवं दानकर्ता।

SVENSKA POSTKOD LOTTERIET
The Lottery for a better world